Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन
के द्वारा प्रायोजित ग्रन्थमाला

सर्ववेदरुद्राध्याय संग्रहः

प्रधान सम्पादकः
प्रो० ओम्प्रकाश पाण्डेयः

संपादिका एवं व्याख्याकर्त्री
डॉ० प्रज्ञा पाण्डेय

NAG PUBLISHERS
नाग पब्लिशर्स

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

'सर्ववेदरुद्राध्याय-संग्रहः' की संपादिका एवं व्याख्याकर्त्री डॉ० प्रज्ञा पाण्डेय को वैदिक वाङ्मय के संस्कार एवं संस्कृत-साहित्य का वैदुष्य आनुवंशिक रूप से प्राप्त हुए। लगभग २८ वर्षीया सुश्री पाण्डेय ने प्राच्य एवं आधुनिक दोनों ही परम्पराओं से वैदिक एवं संस्कृत का अध्ययन कर लखनऊ विश्वविद्यालय से एम० ए, पी-एच०डी० एवं साहित्याचार्य की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। स्नातकोत्तर अध्ययन काल में उन्हें बहुसंख्यक स्वर्णपदक एवं सम्मान प्राप्त हुए। प्रतिष्ठान से प्रकाशित उनका 'ब्राह्मण ग्रन्थों में आचार-दर्शन' शीर्षक ग्रन्थ उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान से पुरस्कृत है। शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, उज्जैन में उन्होंने अतिथि-प्राध्यापिका के रूप में अनेक वर्षों तक परास्नातक कक्षाओं को अध्यापन किया है। सम्प्रति वे लखनऊ विश्वविद्यालय से डी० लिट्० उपाधि-हेतु 'संस्कृत-कवियों के काव्य-सिद्धान्त' विपय पर अनुसन्धानरत हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन के द्वारा
प्रायोजित गन्थमाला

सर्ववेदरुद्राध्याय-संग्रहः

प्रधान सम्पादकः
प्रो० ओमप्रकाश पाण्डेयः
(सदस्यसचिवः)
संपादिका एवं व्याख्याकर्त्री
डॉ० प्रज्ञा पाण्डेय
एम० ए०, साहित्याचार्य, पी-एच.डी.

NAG PUBLISHERS

नाग पब्लिशर्स
११ ए/ यू० ए०, जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
(भारत)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाग पब्लिशर्स
(१) ११ए/यू. ए. जवाहर नगर, दिल्ली-११०००७
टेलिफोन-०११-२३८५५८८३, २३८५७९७५
(२) जलालपुर माफी (चुनार-मिर्जापुर) उ०प्र०

© महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

ISBN :81-7081 626-2

प्रथम संस्करण : २००६

मूल्य : रुपये २३०.००

श्री सुरेन्द्र प्रताप द्वारा नाग पब्लिशर्स ११ ए०/यू० ए०, जवाहर नगर, दिल्ली ११०००७ द्वारा प्रकाशित तथा जी. प्रिंट. प्रोसेस, ३०८/२ शहजादा बाग, दयाबस्ती दिल्ली ११००३५ द्वारा मुद्रित। अक्षरयोजक ए० आर० प्रिंटर्स, डी-१०२ न्यू सीलमपुर, दिल्ली-११००५३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भूमिका

भगवान् शिव का यथार्थ स्वरूप जानना बहुत कठिन है, जैसा कि महाकवि कालिदास ने 'कुमारसम्भव' में कहा है – 'न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः' (५.७७)। कृष्ण यजुर्वेदीय श्वेताश्वतर उपनिषद् (४.१८) के अनुसार सृष्टि के आदि में जब कहीं कुछ नहीं था, तब भी केवल शिव का ही अस्तित्व था – 'यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्नचासच्छिव एव केवलः।' यही उपनिषत् शिव का निरूपण अद्वितीय, निराकार, प्रपञ्चरहित शान्त और शुद्ध ब्रह्म के रूप में करती है – तथा 'एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुः।' अन्यत्र भी 'शिवैकं निष्कलं ब्रह्म' तथा 'शिवैको ब्रह्मरूपत्वान्निष्कलः परिकीर्तितः' के रूप में इसी अवधारणा का उपबृंहण हुआ है।

अथर्ववेदीय कैवल्योपनिषत् भी शिव को मन और अन्य इन्द्रियों से न जानने योग्य, अनन्त, आनन्दस्वरूप बतलाती है –

अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तरूपं शिवं प्रशान्तममृतं ब्रह्मयोनिं
तमादिमध्यान्तविहीनमेकं विभुं चिदानन्दमरूपमद्भुतम्।
स एव सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यं सनातनम्
ज्ञात्वा तं मृत्युमत्येति नान्यः पन्था विमुक्तये।। (१.६,८)

पद्मपुराण, स्कन्दपुराण तथा शिवपुराण के परिशीलन से ज्ञात होता है कि सृष्टि-रचना के लिए उत्सुक शिव के मध्यभाग से रुद्रों की उत्पत्ति हुई – 'मध्यतो रुद्रमीशानं जनयामास शङ्करः।'

ब्राह्मण ग्रन्थों में 'रुद्र' शब्द की बहुसंख्यक निर्वचनात्मक व्याख्याएँ प्राप्त होती हैं। रोने या रुलाने से इनका विशेष सम्बन्ध स्थापित दिखाई देता है – 'यदरोदीत् तस्माद् रुद्रः' (शत० ब्रा० ६.१.३.१०)। कौषीतकि ब्राह्मण के अनुसार रुद्र घोर या भयानक देव हैं – 'घोरो वै रुद्रः' (१६.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

७)। यही ब्राह्मण आगे कहता है कि वैदिक देवों में रुद्र अशान्त देव हैं, जिनकी शान्ति के लिए विविध कृत्य निर्धारित हैं - 'रुद्रो ह वा एष देवानामशान्तः संचितो भवति तमेवैतच्छमयति' (कौषी० ब्रा० १९.४)। शतपथ ब्राह्मण में भी इनके भयानक रूप का उल्लेख है - 'तद् यद् रुदितात् समभवँस्तस्माद रुद्राः सोऽयं शतशीर्षा रुद्रः सहस्राक्षः शतेषु रधिज्यधन्वा प्रतिहितायी भीषयमाणोऽतिष्ठदन्नमिच्छमानस्तस्माद् देवा अबिभयुः (९.१.१.६)। जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण का कथन है कि हमारे प्राण ही रुद्र हैं - वे ही [अन्त में] रुलाते हैं - 'प्राणा वै रुद्राः। प्राणा हीदं सर्वं रोदयन्ति' (४.२.६)। शतपथ ब्राह्मण में भी इसी प्रकार का उल्लेख है कि मानव-शरीर में दस प्राणों और एक आत्मा को मिलाकर ग्यारह रुद्रों की स्थिति है - ये जब इस मर्त्य शरीर से मृत्यु के समय बाहर निकलते हैं, तब ये प्राणी को रुला देते हैं - यही इनकी रुद्रता है -

'कतमे रुद्रा इति। दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशस्ते यदस्मात् मर्त्याच्छरीराराद् उत्क्रामत्यथ रोदयन्ति तद् यद् रोदयन्ति तस्माद् रुद्रा इति (११.६.३.७)।

इन दश प्राणों में प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और धनञ्जय का परिगणन होता है।

कुछ आचार्यों ने पञ्च ज्ञानेन्द्रियों, पञ्च कर्मेन्द्रियों और मन में अधिष्ठित प्राणों के आधार पर ग्यारह रुद्रों की व्याख्या करने का प्रयत्न किया है।

पुराणों में ग्यारह रुद्रों का शिव के अवतारों के रूप में वर्णन है। इनका आविर्भाव दैत्यों से पीड़ित देवताओं की प्रार्थना पर हुआ था। ये हैं - कपाली, पिङ्गल, भीम, विरूपाक्ष, विलोहित, शास्ता, अजपाद, अहिर्बुध्न्य, शम्भु, चण्ड तथा भव। ये कश्यप और सुरभी की सन्तान माने जाते हैं।

शतपथ ने एक स्थान पर अग्नि को ही रुद्र बतलाया है - 'अग्निर्वै रुद्रः' (५.३.१.१०)। अम्बिका को रुद्र की बहन कहा गया है - 'अम्बिका ह वै नामास्य स्वसा' (शत० ब्रा. २.६.२.९)। वीर भावनाओं के व्यञ्जक त्रिष्टुप् छन्द को गोपथ ब्राह्मण ने रुद्रों से विशेष रूप से सम्बद्ध किया है - 'त्रिष्टुब् रुद्राणां पत्नी' (२.२.९)। ऋग्वेद के एक मन्त्र में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मरुद्गण इनके पुत्र बतलाये गये हैं - 'आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु' (ऋ० सं. २.३३.१)। रुद्रों की विशेष दिशा है उत्तर - 'एषा (उदीची) वै रुद्रस्य दिक्' (तैत्तिरीय ब्राह्मण १.७.८.६) तथा - 'यदुदञ्चः प्रेत्य त्र्यम्बकैश्चरन्ति रुद्रमेव तत् स्वायां दिशि प्रीणन्ति' (कौषी० ब्रा. ५.७)।

इससे स्पष्ट है कि वैदिक देवों में रुद्र एक प्रमुख देव हैं। मूल संहिताओं में से सभी में रुद्रविषयक अनेक सूक्त और बहुसंख्यक मन्त्र हैं। उन्हीं के विशेष नियोजनपूर्वक रुद्राध्यायों की योजना प्रायः वेदों की सभी शाखाओं में है। इनमें रुद्र से सम्बद्ध विभिन्न सूक्तों अथवा मन्त्रों को एक स्थान पर एकत्र कर दिया गया है। इस क्रम में सर्वप्रथम ऋग्वेदीय रुद्राध्याय में पठित मन्त्रों के सन्दर्भ ये हैं -

ऋ० सं० १.४३ (ऋषि कण्व घौर); १.११४ (ऋषि कुत्स आङ्गिरस); २.३३ (ऋषि गृत्समद तथा भार्गव शौनक); ४.३.१ (वामदेव गौतम); ५.३.३ (वसुश्रुत आत्रेय); ५.४२.११ (भौम अत्रि); ६.७४. १-४ (बार्हस्पत्य भरद्वाज); ७.४६. १-४; (मैत्रावरुणि-वसिष्ठ); ७.५९.१२ (मैत्रावरुणि वसिष्ठ); ८.६३.१२ (प्रगाथ काण्व); १.९१.१-२३ (गोतम राहूगण); ९.६७.१-३२ (१-३ भरद्वाज बार्हस्पत्य, ४-६ कश्यप मारीच, ७-९ गोतम राहूगण, १०-१२ अत्रि भौम, १३-१५ विश्वामित्र गाथिन, १६-१८ जमदग्नि भार्गव, १९-२१ वसिष्ठ मैत्रावरुणि, २२-३२ पवित्र आङ्गिरस या वसिष्ठ); ९.१११.१-३ (अनानत पारुच्छेपि); १०.९० १-१६ (पुरुषसूक्त, नारायण); १०.१२८. १-९ (विहव्य आङ्गिरस); अथर्वसंहिता ५.३.११ (अवञ्चिम् इन्द्रममुतो हवामहे, अथर्वा बृहद्दिव); ऋ० सं० १०.१४१. १-६ (तापस अग्नि); १.२७.१३ (नमो महद्भ्यो नमः अर्भकेभ्यः, आजीगर्ति शुनःशेप)

इस प्रकार ऋग्वेदीय रुद्राध्याय में कुल १०६ मन्त्र हैं, जिनमें से एक मन्त्र अथर्ववेदीय है (सम्भव है, यह ऋग्वेद की किसी शाकलेतर शाखा में रहा हो), शेष १०५ मन्त्र पूर्णतया ऋग्वेदीय हैं। इन सभी में केवल रुद्र की ही स्तुति नहीं है। बीच-बीच में बहुत से मन्त्रों में, अग्नि, मित्र, वरुण की भी स्तुतियाँ हैं। ऋग्वेद के नवम मण्डल से, सोमविषयक लगभग ४० मन्त्र भी इसमें सम्मिलित हैं। पुरुषसूक्त का भी रुद्र से सीधा सम्बन्ध नहीं है। लेकिन वह ऋग्वेद के साथ शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राध्याय में भी मिलता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृष्णयजुर्वेदीय रुद्राध्याय का परिमाण अपेक्षाकृत कम है। इसकी अनुक्रमणी में सम्पूर्ण रुद्राध्याय का ही ऋषि परमेष्ठी को बताया गया है। इसके हस्तलेखों में पुरुषसूक्त का योग नहीं दिखाई देता है। सम्भव है, पाठ करते समय उसे भी जोड़ लिया जाता हो। कृष्णयजुर्वेदीय रुद्राध्याय के अधिकांश मन्त्र वही हैं, जो शुक्लयजुर्वेद संहिता के १६वें अध्याय में उपलब्ध होते हैं। केवल चार मन्त्र ऐसे हैं, जो शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राध्याय में नहीं मिलते हैं।

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राध्याय में शिवसङ्कल्प सूक्त भी सम्मिलित है। नमक और चमकाध्याय तो हैं ही।

शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राध्याय में उपलब्ध मन्त्रों का पूर्ण विवरण इस प्रकार है –

शुक्ल यजु० सं० २३.१९ (गणानान्त्वा); २३.३३-३४ (गायत्री....., द्विपदाया.....); ३४.४९ (सहस्तोमा) ३४.१-६ (यज्जाग्रतो); ३१.१-१६ (पुरुषसूक्त); ३१.१७-२२ (अद्भ्यः ....); १७.३३.४९ (आशुः शिशानो ....); ३३.३४-४३ (बिभ्राड् बृहत् पिबतु....); १६.१-६६ (नमस्ते रुद्रमन्यवे - जम्भे दध्मः); ३.५६-६३ (वयं सोम व्रते तव - सुवीर्य्याय); १७. ३१-३२ (न तं विदाथ; ..... पुरुत्रा); ३९.७.१३ (उग्रश्च) १८.१-२९ (वाजश्च.....) प्रारम्भ में मिलनेवाली अनुक्रमणिका में ऋषि, देवता और छन्दों का विशेष विवरण है।

इस प्रकार शुक्लयजुर्वेदीय माध्यन्दिन रुद्राध्याय में प्रायः १६८ मन्त्र हैं।

अथर्ववेदीय रुद्राध्याय में मन्त्रों का विवरण इस प्रकार है –

(शौनकीय) अथर्वसंहिता २.२७.६ (कपिञ्जल); ३.२६.१-६ (अथर्वा) ३.२७.१-६ (अथर्वा); ४.३.१-७ (अथर्वा); ४.२८.१-७ (मृगोर अथवा अथर्वा); ५.६. १-१४ (अथर्वा); ६.५५.२-३ (ब्रह्मा); ६.५९. १-३ (अथर्वा); ६.६१. १-३ (अथर्वा); ६.६१. १-३ (अथर्वा); ६.९०. १-३ (अथर्वा); ६.६९. १-३ (शान्ताति); ७.८७.१ (अथर्वा); ११.२. १-३१ (अथर्वा); १५.४.१-१८ (अथर्वा); १५.५.१-१८ (अथर्वा)।

इन सभी मन्त्रों का कुलयोग १२६ होता है। इसके अन्त में व्रात्य प्रकरण के भी कुछ अंश सम्मिलित हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामवेदीय रुद्राध्याय का प्रचलन आर्चिक भाग से न होकर गानभाग से है। कौथुमीया के साथ ही जैमिनीय रुद्रसाम गान और उसके साथ चमक प्रकरण यहाँ सम्मिलित किया गया है।

सभी वेदों में, इसप्रकार, रुद्राध्यायों की उपलब्धि होने पर भी और तत्तद्शाखीय वैदिकों और उनके अनुयायियों में उनका प्रचलन होने पर भी, अधिक प्रचार शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राष्टाध्यायी का ही है। अतएव इसके विस्तृत विवेचन की आवश्यकता यहाँ प्रतीत होती है। 'शिवपुराण' में कहा गया है कि इस रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रों के पाठ के साथ शिवलिङ्ग का जल, दुग्ध, पञ्चामृत, आम्ररस, इक्षुरस, नारिकेलरस तथा गङ्गाजल इत्यादि से अभिषेक करने पर विशेष फल प्राप्त होता है–

मनसा कर्मणा वाचा शुचिः संगविवर्जितः।
कुर्याद् रुद्राभिषेकं च प्रीतये शूलपाणिनः॥
सर्वान् कामानवाप्नोति लभते परमां गतिम्।
नन्दते च कुलं पुंसां श्रीमच्छंभुप्रसादतः॥

परम्परा से शुक्लयजुर्वेदीय रुद्री अथवा रुद्राष्टाध्यायी के ये छह अंग सुनिश्चित हैं –

शिवसङ्कल्पहृदयं सूक्तं स्यात् पौरुषं शिरः।
प्राहुर्नारायणीयञ्च शिखा स्याच्चोत्तराभिधम्॥
आशुः शिशानः कवचं नेत्रं बिभ्राड् बृहत्स्मृतम्।
शतरुद्रियमस्त्रं स्यात् षडङ्गक्रम ईरितः॥
हृच्छिरस्तु शिखा वर्म नेत्रं चास्त्रं महामते।
प्राहुर्विधिज्ञा रुद्रस्य षडङ्गानि स्वशास्त्रतः॥

इसके अनुसार रुद्री का हृदय शिवसङ्कल्पसूक्त है। इसका शिर पुरुषसूक्त एवं शिखा उत्तरनारायणसूक्त ('अद्भ्यः' इत्यादि; २ य अध्यायगत) है। अप्रतिरथ सूक्त (तृतीय अध्यायगत) कवच है। मैत्र सूक्त (चतुर्थ अध्या०) नेत्र एवं शतरुद्रिय सूक्त (५ माध्यायगत) अस्त्र है।

पारम्परिक रूप से प्रथम अध्याय के अधिष्ठातृ देवता गणेश हैं। द्वितीय अध्याय विष्णु देवत्य है। तृतीयाध्याय, जिसमें अप्रतिरथसूक्त है, इन्द्रदेवत्य है। मैत्रसूक्त में सूर्य की स्तुति है। रुद्री का केन्द्रीय सूक्त

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शतरुद्रिय है, जिसमें ६६ मन्त्र हैं। इसमें रुद्र के १०० नाम हैं, इसीलिए इसका नाम 'शतरुद्रिय' के रूप में प्रसिद्ध है – 'शतसंख्याता रुद्रदेवता अस्येति शतरुद्रियम्' कैवल्योपनिषद् के वचनानुसार इसके अध्ययन से मनुष्य अनेक पातकों से मुक्त हो जाता है –

'यः शतरुद्रियमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स आत्मपूतो भवति स सुरापानात्पूतो भवति स ब्रह्महत्यायाः पूतो भवति।'

'जाबालोपनिषद्' में, ब्रह्मचारियों के अमरताविषयक प्रश्न का उत्तर देते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य के भी कथन में शतरुद्रिय को अमृतत्व लाभ का साधन माना गया है –

'अथ हैनं ब्रह्मचारिण ऊचुः किं जप्येनामृतत्वं ब्रूहि इति। स होवाच याज्ञवल्क्यः – शतरुद्रियेणेत्येतान्येव ह वा अमृतस्य नामानि। एतैर्हवा अमृतो भवतीति।'

कर्मकाण्डीय मान्यतानुसार पञ्चमाध्याय की ११ बार आवृत्तियों और अन्य अध्यायों की एक आवृत्ति से एक 'रुद्र' या 'रुद्री' सम्पन्न होती है। इसके साथ ही अभिषेक भी करना चाहिए। यह 'एकादशिनी' नाम से भी इसीकारण प्रसिद्ध है। एकादश रुद्री से लघुरुद्र, एकादश लघुरुद्र से महारुद्र एवं एकादश महारुद्र से अतिरुद्र का अनुष्ठान सम्पन्न होता है।

शतरुद्रिय में रुद्रदेव के गिरीश, अधिवक्ता, सुमङ्गल, नीलग्रीव, सहस्राक्ष, कपर्दी, मीढुष्टुम, हिरण्यबाहु, सेनानी, हरिकेश, अन्नपति, जगत्पति, क्षेत्रपति, वनपति, वृक्षपति, औषधिपति, सत्त्वपति, पापीपति, स्तेनपति, तस्कर, गिरिचर, सभापति, श्वपति, गणपति, व्रातपति, विरूप, विश्वरूप, भव, शर्व, शितिकण्ठ, शतधन्वा, ह्रस्व, वामन, बृहत्, वृद्ध, ज्येष्ठ, कनिष्ठ, श्लोक्य, आशुषेण, आशुरथ, कवची, श्रुतसेन, सुधन्वा, सोम, उग्र, भीम, शम्भु, शंकर, शिव, तीर्थ्य, व्रज्य, नीललोहित, पिनाकधारी, सहस्रबाहु तथा ईशानप्रभृति विविध रूपों का वर्णन है। इस अध्याय के परिशीलन से यह तथ्य प्रकट होता है कि रुद्रदेव को स्थावर-जंगम सर्वपदार्थरूप, सर्ववर्णीय, सर्वजातीय, मनुष्य-देव-पशु और वनस्पति स्वरूप मान करके उनके सर्वान्तर्यामित्व और सर्वात्मभाव पर बल दिया गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भगवद्गीता में जिस प्रकार भगवान् कृष्ण अपने विश्वरूप को प्रकट करते हैं, और श्रीदुर्गासप्तशती में भगवती के विश्वरूप, जिसमें तृष्णा, लज्जा, क्षुधा, घृणा, चिति, चेतना, दया, कृपा, ममता प्रभृति देवी के समस्त स्वरूपों का समावेश हो जाता है, उसी प्रकार 'शतरुद्रिय' में रुद्र के विश्वरूप का अनावरण किया गया है। जीवन में पुण्य-पाप शिव-अशिव, मंगल-अमंगल, राग-द्वेष, प्रेम-घृणा, कुछ भी ऐसा नहीं है, जो रुद्र के निरूपित स्वरूपों में अप्राप्य हो। उनके क्रोध और शस्त्रास्त्रों से बचने-बचाने का बार-बार अनुरोध है। जीवन के भयानक पक्षों से रुद्र को जोड़कर उनसे पौनः पुन्येन दया करने का निवेदन किया गया है। रुद्र का यह स्वरूप-निरूपण वास्तव में जीवन की समग्रता की स्वीकृति है। जीवन जैसा भी है, आपदाओं और उत्सवों का मिला-जुला रूप, आग और राग का सम्मिलित संगीत, हर्ष और विषाद का समवेत स्वर - सब कुछ रुद्रमय रूप में वर्णित है। कर्मकाण्ड से थोड़ा हटकर यदि सोचा जाये, तो रुद्र जीवन का यथार्थ है, वह सुरूप भी है और कुरूप भी। शृङ्गार भी है और बीभत्स भी हैं, वीर भी है भयावह भी है, सर्जक भी है और संहारक भी है - 'भव' और 'शर्व' नामों से यही तथ्य उद्घाटित है।

रुद्री के षष्ठाध्याय की 'महच्छिर' के रूप में प्रसिद्धि है। सुप्रसिद्ध महामृत्युञ्जय मन्त्र इसी अध्याय में है।

सप्तमाध्याय 'जटा' के नाम से जाना जाता है। इस अध्याय के 'लोमभ्यः स्वाहा' से 'यमाय स्वाहा' तक के मन्त्रों को कुछ विद्वज्जन अभिषेक में सम्मिलित नहीं करते, क्योंकि अन्त्येष्टि संस्कारान्तर्गत चिता-होम में भी इन मन्त्रों से आहुतियाँ दी जाती हैं।

अष्टमाध्याय 'चमकाध्याय' के रूप में सुख्यात है क्योंकि इसके प्रत्येक मन्त्र में 'च' कार एवं 'मे' का बाहुल्य है। इस अध्याय के प्रत्येक मन्त्र के अन्त में 'यज्ञेन कल्पन्ताम्' यह वाक्यांश आता है।

रुद्री के उपसंहारस्वरूप शान्त्यध्याय अथवा शान्तिपाठ मिलता है, जिसमें सबको मित्रदृष्टि से देखने का अनुरोध मुखरित है -

'ॐ दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। 'मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वास्तव में रुद्रदेव, जिस रोदन अथवा क्रन्दन, भय, क्रोध, रोष से जुड़े हैं, उससे बचने का मूलभूत उपाय यही मैत्रीभाव की साधना है - जिसे रुद्रपाठ का फलितार्थ मानना चाहिए।

पुनश्च - भगवान् महाकाल की इस प्राचीनतम नगरी उज्जयिनी से 'सर्ववेदरुद्राध्याय-संग्रह' का यह प्रकाशन पाठकों के लिए अत्यन्त उपादेय सिद्ध होगा, इसका मुझे विश्वास है। इस प्रकाशन के लिए सर्वाधिक अनुरोध जयपुर के डॉ० गिरिधारी लाल शर्मा जी का रहा। वे वैदिक विद्वान् होने के साथ ही प्रख्यात हृदयरोगचिकित्सक भी हैं। मैं उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। डॉ० प्रज्ञा पाण्डेय ने मन्त्रों का अनुवाद बड़े परिश्रम और मनोयोग से किया है, उन्हें मैं सारस्वत क्षेत्र में अभ्युन्नति - हेतु शुभाशीर्वाद देता हूँ।

प्रतिष्ठान में कार्यरत विद्वानों की अपनी टीम को भी मैं इस अवसर पर साधुवाद देता हूँ। इनमें डॉ० अमलधारी सिंहजी (विशेष कार्याधिकारी), डॉ० जितेन्द्र कुमार तिवारी, डॉ अनूप मिश्र तथा डॉ० मीनाक्षी श्रीवास्तव मुख्य हैं। व्यवस्था के सन्दर्भ में पवन सिंह नेगी तथा संजय श्रीवास्तव के नाम भी उल्लेख हैं। अमित तिवारी एवं सुरेश चावड़ा भी आशीस् के आस्पद हैं। नागप्रकाशन के श्री सुरेन्द्र और नरेन्द्र जी के सहयोग के बिना यह कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता था, इसलिए उन्हें भी मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

ओम्प्रकाश पाण्डेय

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अनुक्रमः

भूमिका	iii
ऋग्वेदीय रुद्राध्यायः (सानुवादः)	१-३३
कृष्ण यजुर्वेदीय रुद्राध्यायः (सानुवादः)	३४-४१
शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्राध्यायः (सानुवादः)	४२-१११
सामवेदीय रुद्राध्यायः (कौथुमीयः)	११२-२१९
जैमिनिशाखीय सामवेदीय रुद्राध्यायः	२२०-२३०
अथर्ववेदीय रुद्राध्यायः (सानुवादः)	२३१-२५८
शिवस्तोत्रावली	२५९-२९२

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

अथ आश्वलायन रुद्रपद्धत्यनुसारी ऋग्वेदीयो 'रुद्रः'

॥ तत्र प्रथमं ऋषिच्छन्दो देवता विनियोगाः ॥

(१) कद्रुद्रायेति नवानां घौरः कण्वो रुद्रो गायत्री, अन्त्याऽनुष्टुप्।

(२) इमा रुद्राय तवसेत्येकादशानां कुत्स आङ्गिरसो रुद्रो जगती, दशमीं एकादशी त्रिष्टुप्।

(३) आते पितरिति पञ्चदशानां भार्गवः शौनको रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(४) आ वो राजानं वामदेवो गौतमो रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(५) तवश्रियेति वसुश्रुत आत्रेयो रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(६) तमुष्टुहि भौमोत्री रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(७) सोमारुद्रेति चतुर्णां बार्हस्पत्यो भरद्वाजो रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(८) इमारुद्रायेति चतुर्णां मैत्रावरुणिर्वसिष्ठो रुद्रोजगती, अन्त्या त्रिष्टुप्।

(९) त्र्यम्बकं मैत्रवरुणिर्वसिष्ठो रुद्रोऽनुष्टुप्।

(१०) अस्मे रुद्रा प्रगाथः काण्वो रुद्रस्त्रिष्टुप्।

(११) त्वं सोमेति त्रयोविशानां गोतमो राहूगणो रुद्रस्त्रिष्टुप्, पञ्चमी षोडशी गायत्री, सप्तदशी उष्णिक्।

(१२) त्वंसोमासीति द्वात्रिंशानां भरद्वाजो बार्हस्पत्यः कश्यपो मारीचो गोतमो राहूगणोऽत्रिर्भौमो विश्वामित्रो गाथिनो जमदाग्निर्भार्गवो वसिष्ठोमैत्रावरुणिः पवित्र आङ्गिरसो रुद्रो गायत्री, नित्यद्विपदा गायत्री पुर उष्णिगनुष्टुप्।

(१३) अयारुचेति त्रयाणामनानतः पारुच्छेपी रुंद्रोऽत्यष्टिः।

(१४) सहस्त्रशीर्षा षोळश नारायणः पौरुषमानुष्टुभं त्रिष्टुवन्तम्।

(१५) ममाग्ने वर्च इति दशानां विहव्य आङ्गिरसो रुद्रस्त्रिष्टुप् अन्त्ये द्वे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगती।

(१६) अग्ने अच्छेति षण्णामग्निस्तापसो रुद्रोऽनुष्टुप्।

(१७) नमो महद्भ्य इत्याजीगर्तिः शुनः शेपो रुद्रस्त्रिष्टुप्। श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे-पाठे-अभिषेके हवने-तर्पणे-मार्जने स्वाध्याये वा विनियोगः।

।। तत्रादौ शान्तिपाठः।।

ॐ अग्नइळानमइळा नम ऋषिभ्यो मन्त्र कृद्भ्यो मन्त्रपतिभ्यो नमौवो अस्तु देवेभ्यः शिवानः शन्तमा भवसुमृळीका सरस्वति मातेव्यौमसंदृशि।। ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।। स्थिरैरङ्गैः स्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितंयदायुः।

ॐ स्वस्तिन इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।। तन्मामवतु तद्वक्तारमवत्ववतुमामवतुवक्तारमवतुवक्तारम्।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

कण्वो घौरः। रुद्रः, मित्रावरुणौ च

(१)

हरिः ॐ १/४३ ऋ०

[ऋ०सं० १.४३, ऋषिकण्व घौर, देवता-रुद्र, मित्रावरुण तथा सोम छन्द (१-८) गायत्री नवम मन्त्र में अनुष्टुप्]

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीळ्हुष्टमाय तव्यसे। वोचेम शंतमं हृदे।।१।।

– (प्रचेतसे) विशिष्ट ज्ञानी, (मीळ्हुष्टमाय) अति सुखदायक, (तव्यसे) बल को बढ़ानेवाले (रुद्राय) रुद्रदेव के लिए हम कब हृदय से शान्तिकारक वचन बोलेंगे?

यथा नो अदितिः करत् पश्वे नृभ्यो यथा गवे।
यथा तोकाय रुद्रियम्।।२।।

– देवमाता अदिति जैसे स्वयं हमारे गाय-बैल प्रभृति पशुओं और लोगों [का उपकार] करती है, उसी प्रकार वह हमारे बाल-बच्चों के लिए [भी] रुद्रदेव की कृपा से [कल्याणकारी उपाय कराये]।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यथा नो मित्रो वरुणो यथा रुद्रश्चिकेतति।
यथा विश्वे सजोषसः।।३।।

– मित्र और वरुण जिसप्रकार हमारे लिए [हितकारी उपायों को] जानते हैं, विश्वेदेवता जिसप्रकार [हमारा कल्याण करने के लिए उद्यत और उत्साहित रहते हैं] उसी प्रकार रुद्रदेव भी [हमारा किस प्रकार कल्याण होना चाहिए, इसे भलीभाँति] जानते-समझते हैं। [और तदनुरूप हमारा भला करते रहते हैं।]

गाथपतिं मेधपतिं रुद्रं जलाषभेषजम्।
तच्छंयोः सुम्नमीमहे।।४।।

– [वीर] गाथाओं के महानायक, बुद्धिमान और यज्ञों के स्वामी, जलचिकित्सा से रोगों के निवारक रुद्रदेव से हम वह सुख प्राप्त करना चाहते हैं जो अनिष्ट-निवारणपूर्वक शान्ति-स्थापना से प्राप्त होता है।

यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते।
श्रेष्ठो देवानां वसुः।।५।।

जो सूर्य के समान शुक्लवर्ण तथा तेजस्वी है और जिसकी दीप्ति स्वर्ण की भाँति है, वही [रुद्र] देवों में [सर्वाधिक तथा] श्रेष्ठ वैभव से सम्पन्न है।

शं नः करत्यर्वते सुगं मेषाय मेष्ये।
नृभ्यो नारिभ्यो गवे।।६।।

[रुद्रदेव] हमारे घोड़ों, मेढों-मेढ़ियों, पुरुषों, स्त्रियों और गाय-बैल प्रभृति पशुओं के लिए कल्याणकारी हैं – वह इन सबको [सदैव] गतिशील बनाये रखते हैं।

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम्।
महि श्रवस्तुविनृम्णम्।।७।।

– हे सोमदेव! हमे सैकड़ों मनुष्यों [की उदरपूर्ति] के लिए पर्याप्त, बढ़िया और बलकारक अन्न तथा [विपुल] धनराशि प्रदान करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त।
आ न इन्दो वाजे भज॥८॥

– हे सोमदेव! [तुम्हारी कृपा से] विघ्न-बाधा करने वाले दुष्टजन हमें [किसी प्रकार का] कष्ट न दे सकें तथा [हमारे] शत्रुगण भी हमें किसी प्रकार का आघात न पहुँचा सकें। तुम [निरन्तर] हमारा बल-संवर्धन करते रहो।

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य।
मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः॥९॥

– सत्य और अमृत से परिपूर्ण परमधाम में विद्यमान हे सोमदेव! ये जो [तुम्हारा] सम्पूर्ण सम्मान करने वाले तुम्हारे प्रजाजन हैं, ये [तुम्हारे अनुग्रह से] ज्ञान के उच्च शिखर पर और उसके केन्द्र में [सदैव] बने रहें।

(२)

[ऋ० सं० १.११४; ऋषि-कुत्स आङ्गिरस, देवता-रुद्र, छन्द-१.९ जगती, १०-११ त्रिष्टुप्]

कुत्स आङ्गिरसः। रुद्रः। जगती, १०-११ त्रिष्टुप्।
१/११४ ऋ०

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्॥१॥

बलवान्, जटाजूटधारी और वीरों को आश्रय प्रदान करने वाले रुद्रदेव [को प्रसन्न करने] के लिए हम इन मन्त्रों का पाठ इसलिए कर रहे हैं, ताकि हमारे इस ग्राम [अथवा नगर] में सभी लोग हृष्ट-पुष्ट तथा नीरोगी रहें, सभी मनुष्यों और चौपाये पशुओं को सुख-शान्ति प्राप्त हों।

मृळा नो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेम ते।
यच्छं च योश्च मनुरायेजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतिषु॥२॥

वीरों को आश्रय प्रदान करने वाले हे रुद्रदेव! हम तुम्हारी स्तुति करते हैं। तुम हम सबको सुखी रखो, [सदैव] रोगों से मुक्त रखो, तुमने मनुष्यों का [सदैव] परिपालन किया है, तुम उन्हें शान्ति और रोगनिवारक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शक्ति प्रदान करते रहे हो। तुम्हारी विशिष्ट नीतियों [की छत्रछाया] में हम उन्हें [आगे भी] प्राप्त करते रहें।

अश्याम ते सुमतिं देवयज्यया क्षयद्वीरस्य तव रुद्र मीढ्वः।
सुम्नायन्निद् विशो अस्माकमा चरारिष्टवीरा जुहवाम ते हविः।।३।।

– (मीढ्वः) हे सुखदायक रुद्र! (देवयज्यया) देवयाग के अनुष्ठान से हम वीरों को आश्रय देनेवाली तुम्हारी सद्बुद्धि [और सद् विचार] को प्राप्त करें। (सुम्नायन्) हमें सुख प्रदान करते हुए तुम ऐसा अनुकूल आचरण और व्यवहार करो, जिससे हमारे पक्ष के वीरों की हानि न हो और हम तुम्हें [निरन्तर] हवि-समर्पण करते रहें।

त्वेषं वयं रुद्रं यज्ञसाधं वङ्कुं कविमवसे नि ह्वयामहे।
आरे अस्मद् दैव्यं हेळो अस्यतु सुमतिमिद् वयमस्या वृणीमहे।।४।।

– तेजस्वी, सत्कर्मों के अनुष्ठाता, स्फूर्ति युक्त, महाज्ञानी रुद्र का हम सुरक्षा-हेतु आह्वान करते हैं। देवों का क्रोध हमसे दूर रहे। हम रुद्र की सद्बुद्धि का वरण करते हैं।

दिवो वराहमरुषं कपर्दिनं त्वेषं रूपं नमसा नि ह्वयामहे।
हस्ते बिभ्रद् भेषजा वार्याणि शर्म वर्म च्छर्दिरस्मभ्यं यंसत्।।५।।

– (वराहं) उत्तम आहार ग्रहण करने वाले, तेजस्वी (त्वेषं), (अरुषं रूपम्) सुन्दर स्वरूप वाले, (कपर्दिनम्) जटाजूटधारी रुद्र को (दिवः नमसा निह्वयामहे) हम द्युलोक से अभिवादनपूर्वक आमन्त्रित करते हैं। (हस्ते वार्याणि भेषजा बिभ्रत्) वे अपने हाथों में श्रेष्ठ रोगनिवारक औषधियाँ धारण करते हैं। हमारा कल्याण करते हैं, जिन चीजों से हमें हानि हो सकती है, उन पर रोक लगाते हैं [और आवश्यकतानुसार] वमनविरेचनादि की प्रक्रिया से दोषों को दूर करते हैं।

इदं पित्रे मरुतामुच्यते वचः स्वादोः स्वादीयो रुद्राय वर्धनम्।
रास्वा च नो अमृत मर्तभोजनं त्मने तोकाय तनयाय मृळ।।६।।

(मरुतां पित्रे रुद्राय) मरुतों के पिता रुद्र के लिए (स्वादोः स्वादीयः) स्वादिष्ट पदार्थों से भी अधिक प्रीतिकर और (वर्धनम्) वर्धापक (इदं वचः उच्यते) इस प्रार्थना का उच्चारण किया जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अमृत) हे अमर देव! (नः मर्त्यभोजनं रास्व) तुम हमें मानवोचित भोजन प्रदान करो तथा (त्मने तनयाय तोकाय मृळ) मुझे और मेरे बाल-बच्चों को [सदैव] सुखी रखो।

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्।
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः॥७॥

—हे रुद्रदेव! (नः महान्तं मा वधीः) तुम हमारे वयोवृद्ध और सम्मानित जनों को मत मारो। (नः अर्भकं मा) हमारे बाल-बच्चों को भी मत मारो। (नः उक्षन्तं मा) हमारे पक्ष के जो लोग ऊपर उठ रहे हैं, [उन्हें आघात] मत [पहुँचाओ]। हमारे माता-पिता और आत्मीयजनों को भी पीड़ित मत करो।

मा नस्तोके तनये मा न आयौ मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः।
वीरान् मा नो रुद्र भामितो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे ॥८॥

—हे रुद्रदेव! हमारे बाल-बच्चों (तोके) आदमियों (आयौ) गायों और घोड़ो में (रीरिषः) दुर्बलता उत्पन्न न करो। (भामितः नः वीरान् मावधीः) क्रोध के कारण हमारे वीरों की हिंसा मत करो। हवि-समर्पण करने के लिए हम आपका आह्वान करते हैं।

उप ते स्तोमान् पशुपा इवाकरं रास्वा पितर्मरुतां सुम्नमस्मे।
भद्रा हि ते सुमतिर्मृळयत्तमाथा वयमव इत्ते वृणीमहे॥९॥

हे मरुतों के पिता रुद्रदेव! (पशुपा इव) जैसे कोई पशुपालक या चरवाहा [अपने पशुओं को हर प्रकार से सुखी रखता है] उसी प्रकार (अस्मे सुम्नं रास्व) हमें तुम उत्तम सुख प्रदान करो। (ते स्तोमान् उप आकरम्) तुम्हारी हम स्तुति करते हैं। (हि ते सुमतिः मृळयत्तमा) क्योंकि तुम्हारी सुमति हमें सुख देने वाली है। (अथ वयं ते अवः इत् वृणीमहे) इसीलिए हम तुमसे सुरक्षा का वरण करते हैं।

आरे ते गोघ्नमुत पूरुषघ्नं क्षयद्वीर सुम्नमस्मे ते अस्तु।
मृळा च नो अधि च ब्रूहि देवा धा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥१०॥

(क्षयद्वीर) वीरों को आश्रय देने वाले हे रुद्रदेव! (ते गोघ्नं पुरुषघ्नं आरे) धरती को तहस-नहस कर देने वाले और पुरुषों को भी मार देने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वाले अपने शस्त्र को हम से दूर रखो। हमें तुम्हारा सौमनस्य सुलभ हो। हमें (मृळ) तुम सुखी करो। (अधि ब्रूहि) हमें मार्गदर्शक उपदेश करो। (द्विबर्हाः शर्म यच्छ) तुम्हारी दो प्रकार की शक्तियाँ [अनुग्रहात्मक तथा निग्रहात्मक] हैं, [तुम उन दोनों से हमारा] कल्याण करो।

अवोचाम नमो अस्मा अवस्यवः शृणोतु नो हवं रुद्रो मरुत्वान्।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः।।११।।

(अस्मै नमः) इस (रुद्र) देव के लिए नमस्कार! (अवस्यवः अवोचाम) सुरक्षा की इच्छा से हम निवेदन कर रहे हैं, जिसे मरुतों से युक्त रुद्र सुनें। मित्र, वरुण, अदिति, सिन्धु, पृथिवी और द्युलोक हमारी इस प्रार्थना का अनुमोदन करें।

(३)

गृत्समदः भार्गवः शौनकः, रुद्रः, त्रिष्टुप् २/३३ ऋ०

[ऋषिः - गृत्समद (आङ्गिरस शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गव शौनक, देवता रुद्र, छन्दः त्रिष्टुप्; ऋ० सं० २.३३]

ॐ आ ते पितर्मरुतां सुम्नमेतु मा नः सूर्यस्य संदृशो युयोथाः।
अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत प्रजायेमहि रुद्र प्रजाभिः।।१।।

हे मरुतों के पिता रुद्र! (ते सुम्नम् आ एतु) तुमसे हमें सुख प्राप्त हो। तुम हमें सूर्य के दर्शन से पृथक् मत करो। (अर्वति नः वीरः क्षमेत) शत्रुओं पर हमारे वीर पुत्र हावी हो जायें। (प्रजाभिः प्रजायेमहि) सन्तानों से हमारी वंशवृद्धि होती रहे।

त्वादत्तेभी रुद्र शंतमेभिः शतं हिमा अशीय भेषजेभिः।
व्य१स्मद् द्वेषो वितरं व्यंहो व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः।।२।।

– हे रुद्रदेव! तुम्हारे द्वारा प्रदत्त अति कल्याणकारी औषधियों के द्वारा हम सौ हेमन्त ऋतुओं को व्याप्त करें अर्थात् तब तक जीवित रहें। हमसे द्वेष करने वालों को तुम नष्ट कर दो। (अंहः वि) पाप को दूर हटा दो। (विषूचीः अमीवाः चातयस्व) सारे शरीर में [नाना प्रकार से] व्याप्त होने वाले रोगों को [भी] नष्ट कर दो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रेष्ठो जातस्य रुद्र श्रियासि तवस्तमस्तवसां वज्रबाहो।
पर्षि णः पारमंहसः स्वस्ति विश्वा अभीती रपसो युयोधि॥३॥

– हे रुद्र! [इस सम्पूर्ण] उत्पन्न हुए [जगत में] अपने ऐश्वर्य के कारण तुम सर्वश्रेष्ठ हो। हाथों में वज्र लिए हुए हे रुद्र! बलशाली व्यक्तियों में तुम सर्वाधिक बलवान् हो। कल्याणपूर्वक तुम हमें पाप के पार उतार दो। (रपसः विश्वाः अभीति युयोधि) पाप की ओर ले जाने वाले सभी मार्गों को हमसे दूर रखो।

मा त्वा रुद्र चुक्रुधामा नमोभिर्मा दुष्टुती वृषभ मा सहूती।
उन्नो वीराँ अर्पय भेषजेभिर्भिषक्तमं त्वा भिषजां शृणोमि॥४॥

हे रुद्र! हम तुम्हें (नमोभिः मा चुक्रुधाम) अनुचित प्रकार से नमस्कार करके क्रोधित न करें। (दुष्टुतीमा) बुरी स्तुतियों से भी हम तुम्हें क्रोधित न करें। (वृषभ) हे बलशाली रुद्र! (सहूतीमो) अन्य साधारण लोगों के साथ तुम्हें आमन्त्रित करके भी हम क्रोधित न करें। तुम हमसे जुड़े वीर पुरुषों को औषधियों से सबल कर दो। मैं सुनता हूँ कि तुम चिकित्सकों के मध्य सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक हो।

हवीमभिर्हवते यो हविर्भिरव स्तोमेभी रुद्रं दिषीय।
ऋदूदरः सुहवो मा नो अस्यै बभ्रुः सुशिप्रो रीरधन्मनायै॥५॥

– जिस रुद्र को हवियों से युक्त स्तुतियों के द्वारा बुलाया जाता है, उसके क्रोध का निवारण मैं अपनी प्रार्थनाओं से करता हूँ। कोमल हृदयवाला, भलीभाँति आह्वान के योग्य, भरण-पोषण कर्ता तथा सुन्दर हनुवाला [यह] रुद्र (मनायै) हिंसा के विचार से ग्रस्त होकर हमें न मारे।

उन्मा ममन्द वृषभो मरुत्वान् त्वक्षीयसा वयसा नाधमानम्।
घृणीव च्छायामरपा अशीयाऽविवासेयं रुद्रस्य सुम्नम्॥६॥

– (वृषभ) बलवान् और मरुतों से युक्त रुद्र (नाधमानं मा) मुझ याचक को (त्वक्षीयसा वयसा) तेजोमय अन्न से (उन्ममन्द) तृप्त करे। (अरपा) निष्पाप होकर मैं (रुद्रस्य सुम्नम् अशीय) रुद्र के सुख को [उसी प्रकार] प्राप्त करूँ जिस प्रकार (घृणि छायाम् इव) धूप से पीड़ित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यक्ति छाया का आश्रय लेता है। [इस सुख को प्राप्त करने के लिए मैं (आ विवासेयम्) रुद्रदेव की परिचर्या करूँ।

क्व १ स्य ते रुद्र मृळयाकुर्हस्तो यो अस्ति भेषजो जलाषः
अपभर्ता रपसो दैव्यस्याभी नु मा वृषभ चक्षमीथाः।।७।।

– हे रुद्र! तुम्हारा वह (हस्तः) हाथ कहाँ है, जो (भेषजः जलाषः मृळयाकुः) रोगनिवारक, सबके लिए सुखद तथा जीवनदाता है? हे बलवान् देव! (दैव्यस्य रपसः अपभर्ता) मुझमें दैवात् आ गये दुर्व्यसनों को दूर कर तुम (मा अभि चक्षमीथाः) मेरे अपराधों को क्षमा कर दो।

प्र बभ्रवे वृषभाय श्वितीचे महो महीं सुष्टुतिमीरयामि।
नमस्या कल्मलीकिनं नमोभिर्गृणीमसि त्वेषं रुद्रस्य नाम।।८।।

(बभ्रवे वृषभाय श्वितीचे) सबका भरण-पोषण करने वाले, बलवान् और श्वेतवर्णवाले रुद्र के लिए मैं (महः महीं सुस्तुतिं प्रईरयामि) बड़ी-से-बड़ी स्तुति करता हूँ। (कल्मलीकिनम् नमोभिः नमस्य) अत्यन्त तेजोमय इस रुद्र को [मित्रों!] अपने अभिवादनों से प्रसन्न करो। (त्वेषं नाम गृणीमसि) हम रुद्र के तेजस्वी नाम की स्तुति करते हैं।

स्थिरेभिरङ्गैः पुरुरूप उग्रो बभ्रुः शुक्रेभिः पिपिशे हिरण्यैः।
ईशानादस्य भुवनस्य भूरे र्न वा उ योषद् रुद्रादसुर्यम्।।९।।

– स्थिर अंगों से युक्त, [आठ मूर्तियों वाले] बहुविध रूपों वाला, (उग्रः बभ्रुः) उग्र और भरण-पोषण कर्ता रुद्र (शुक्रेभिः हिरण्यैः पिपिशे) उज्ज्वल स्वर्णालङ्कारों से विभूषित है। (अस्य भुवनस्य भूरेः) इस भुवन के भरणपोषण करने वाले, (ईशानात्) सबके नियन्त्रक (रुद्रात्) रुद्र से (असुर्यंन वा उ योषत्) असुरों का संहारक बल कभी पृथक् नहीं होता।

अर्हन् बिभर्षि सायकानि धन्वार्हन्निष्कं यजतं विश्वरूपम्।
अर्हन्निदं दयसे विश्वमभ्वं न वा ओजीयो रुद्र त्वदस्ति।।१०।।

– हे रुद्र! तुम अपनी योगयता अथवा क्षमता के आधार पर धनुष और बाणों को धारण करते हो। इसी योग्यता के कारण ही तुम यज्ञानुष्ठान में प्रयोज्य और अनेक रूपों वाले स्वर्णालङ्कार को धारण करते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हो। अपनी योग्यता से ही तुम इस अति विस्तृत जगत् की रक्षा करते हो अथवा उस पर दया करते हो। हे रुद्र! निश्चय ही तुम से अधिक ओजस्वी कोई अन्य नहीं है।

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगं न भीममुपहत्नुमुग्रम्।
मृळा जरित्रे रुद्र स्तवानोऽन्यं ते अस्मन्निवपन्तु सेनाः॥११॥

– [हे भक्तप्रवर!] तुम प्रख्यात, रथ पर आसीन, नित्य युवा, सिंह के समान भयङ्कर, शत्रुहन्ता और उग्रस्वरूप वाले रुद्रदेव की स्तुति करो। हे रुद्र! स्तुति किये जाते हुए तुम [मुझ] स्तुतिकर्ता को सुखी करो। तुम्हारी सेनाएँ हमारे अतिरिक्त दूसरों अर्थात् शत्रुओं को नष्ट कर दें।

कुमारश्चित् पितरं वन्दमानं प्रति नानाम रुद्रोपयन्तम्।
भूरेर्दातारं सत्पतिं गृणीषे स्तुतस्त्वं भेषजा रास्यस्मे॥१२॥

– आशीर्वाद देते हुए वन्दनीय पिता को जिस प्रकार कोई बालक प्रणाम करता है, उसीप्रकार हे रुद्र! तुम ज्यों-ज्यों मेरे समीप आते हो, मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। बहुत अधिक धन देनेवाले और सज्जनों के परिपालक हे रुद्र! हम तुम्हारी स्तुति करते हैं। इस स्तुति से [प्रसन्न हो कर] तुम हमें [नीरोग करनेवाली] औषधियाँ प्रदान करो।

या वो भेषजा मरुतः शुचीनि या शंतमा वृषणो या मयोभु।
यानि मनुरवृणीता पिता न स्ता शं च योश्च रुद्रस्य वश्मि॥१३॥

हे मरुद्देवों! (वृषणः) हे कामनाओं की वर्षा करने वालों! तुम्हारी जो अत्यन्त निर्मल, सुखप्रद और कल्याणभाव की उत्पादक औषधियाँ हैं तथा जिन औषधियों को हमारे पिता (पूर्वज) मनु ने हमारे लिए वरण किया था, मैं उन सभी औषधियों को चाहता हूँ, क्योंकि रुद्रदेवता से सम्बद्ध होने के कारण वे रोगों को शान्त करने वाली और भय को दूर करने वाली हैं।

परि णो हेती रुद्रस्य वृज्याः परि त्वेषस्य दुर्मतिर्मही गात्।
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृळ॥१४॥

– महादेव रुद्र के शस्त्रास्त्र हमें छोड़ दें। तेजस्वी रुद्र की [क्रोधमुखी] दुर्बुद्धि दूर या दूसरी जगह चली जाये। हे सुखद रुद्र! तुम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपने सुदृढ़ धनुषों को ऐश्वर्य सम्पन्न लोगों के लिए शिथिल कर दो तथा हमारे पुत्र और पुत्रों को सुखी करो।

एवा बंभ्रो वृषभ चेकितान् यथा देव न हृणीषे न हंसि।
हवनश्रुन्नो रुद्रेह बोधि बृहद् वदेम विदथे सुवीराः।।१५।।

– (बभ्रो)हे जगत् का पालन करने वाले, (वृषभ) बलवान्, (चेकितान) सब कुछ जानने वाले देव! (नः इह बोधि) तुम हमें वह उपाय बता दो, जिससे (न हृणीषे न हंसि) तुम न तो हम पर क्रुद्ध हो और ना ही हमें मारो-पीटो। हम भी (सुवीराः) भाइयों और पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर (विदथे) विद्वत्सभा अथवा यज्ञ में (बृहत् वदेम) तुम्हारे विषय में अच्छी-अच्छी बातें बोलें।

(४)

वामदेवो गौतमः ४/३/१ ऋ०

[ऋ०सं० ४.३.१; ऋषि-वामदेव गौतम, छन्द-त्रिष्टुप्]

ॐ आ वो राजानमध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः।
अग्निं पुरा तनयित्नोरचित्ताद्धिरण्यरूपमवसे कृणुध्वम्।।१।।

– [हे मनुष्यों!] तुम लोग अपनी रक्षा के लिए अग्नि को उत्पन्न करो। [अचितात् स्तनयित्नोः पुरा) चंचल विद्युत् की उत्पत्ति से पूर्व [अर्थात् बरसात के आने से पहले ही यह अग्नि-उत्पादन का काम सम्पन्न हो जाना चाहिए]। [उत्पन्न होने वाली अग्नि] यज्ञ को प्रदीप्त करने वाली, देवों का आह्वान करने वाली, (रुद्रम्) शत्रुओं को रुलाने वाली, (रोदस्योः सत्ययजम्) द्युलोक और पृथिवी के मध्य सत्ययज्ञ का अनुष्ठान करने वाली तथा सुवर्ण के सदृश दीप्तिमयी होती है।

(५)

५/३/३ ऋ०

[ऋ० सं० ५.३.३; ऋषि-वसुश्रुत आत्रेय; देवतामरुत्, रुद्र और विष्णु; छन्द-त्रिष्टुप्]

ॐ तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत्ते जनिम चारु चित्रम्।
पदं यद् विष्णोरुपमं निधायि तेन पासि गुह्यं नाम गोनाम्।।१।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

– हे रुद्र देव! मरुद्‌गण तुम्हारी शोभा-हेतु तुम्हारा परिष्कार करते हैं, तुम्हारा जन्म सुन्दर और विलक्षण है। विष्णु का जो उपमायोग्य धाम निर्धारित किया गया है, उससे तुम जलों के गोपनीय स्थान की सुरक्षा करते हो।

(६)

५/४२/११ ऋ०

[ऋ० सं० ५.४२.११; ऋषि-भौम अत्रि; छन्द-त्रिष्टुप्]

ॐ तमु ष्टुहि यः स्विषुः सुधन्वा यो विश्वस्य क्षयति भेषजस्य।
यक्ष्वा महे सौमनसाय रुद्रं नमोभिर्देवमसुरं दुवस्य।।१।।

–[हे भक्तप्रवर!] तुम उन रुद्रदेव की स्तुति करो, जिनके पास उत्तम धनुष-बाण हैं, जिनके पास सभी [रोगों की] औषधियों का भण्डार है। श्रेष्ठ मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी तुम रुद्रदेव का यजन-पूजन करो। इस बलवान् रुद्र को बार-बार अभिवादन [करके प्रसन्न] करो।

(७)

६/७४/१-४ ऋ०

[ऋ० सं० ६.७४; ऋषि-बार्हस्पत्य भरद्वाज, देवता सोम और रुद्र; छन्द-त्रिष्टुप्]

ॐ सोमारुद्रा धारयेथामसुर्यं१ प्र वामिष्टयोऽरमश्नुवन्तु।
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे।।१।।

– हे सोम और रुद्र! (असुर्यं धारयेथाम्) तुम दोनों [असीम] प्राणशक्ति से सम्पन्न हो। (इष्टयः वाम् अरम् प्र अश्नुवन्तु) [हमारे द्वारा अनुष्ठित] यज्ञ निःसन्देह आपके पास पहुँचे। घर-घर में तुम [दो आँखों, दो कानों, दो नासिका छिद्रों और एक मुख के रूप में] सात रत्न रखते हो। तुम हमारा [सदैव] कल्याण करते रहो। तुम हमारे प्रियजनों और पालतू पशुओं के लिए भी कल्याणकारी रहो।

सोमारुद्रा वि वृहतं विषूचीममीवा या नो गयमाविवेश।
आरे बाधेथां निर्ऋतिं पराचैरस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु।।२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

–हे सोम और रुद्र! (विषूचीं विवृहतम्) तुम विविध प्रकार के अनर्थों को दूर करो। (अमीवा या नः गयम् आ विवेश) जो रोग हमारे घर में घुस गया है [उसे दूर करो]। (निर्ऋतिं पराचैः आरे बाधेताम्) दुरवस्था को दूर भगा दो। (अस्मै भद्रा सौश्रवसानि सन्तु) हमारे मंगल-कल्याण होते रहें।

सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम्।
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बद्धं कृतमेनो अस्मत्।।३।।

–हे सोम और रुद्र! तुम दोनों (अस्मे तनूषु) हमारे शरीरों में [व्याप्त रोगों का निवारण करने के लिए] (एतानि विश्वा भेषजानि) चिकित्सा के समस्त साधनों अथवा औषधियों का प्रयोग करो। (यत् नः तनूषु बद्धम् अस्ति) हमारे शरीर के अंगों में जो भी [रोग, दोष, विकार] पैठ गये हैं और (एनः कृतम्) जो भी पाप हमने किया है, उन सबसे हमें मुक्त करा दो।

तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः।
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद् गोपायतं नः सुमनस्यमाना।।४।।

– हे (तिग्मायुधौ) तीक्ष्ण आयुधों (तिग्महेती) तथा तीक्ष्ण शस्त्रों वाले (सुशेवौ) सुसेव्य सोम रुद्र! (इह नः सुमृळतम्) यहाँ हमें भलीभाँति सुखी करो। (वरुणस्य पाशाद् नः प्रमुञ्चतम्) वरुण के पाश से हमें मुक्त कर दो। (सुमनस्यमाना) [अब तो हम दुष्टता को छोड़कर] भले मन वाले बनने में लगे हैं [इसलिए] तुम हमारी सुरक्षा करो।

(८)

७/४६/१-४ ऋ०

(८ - ऋ० सं० ७.४६)

[ऋषि-मैत्रावरुणि वसिष्ठ, देवता रुद्र, छन्द - १-३ जगती, ४ त्रिष्टुप्]

ॐ इमा रुद्राय स्थिरधन्वने गिरः क्षिप्रेषवे देवाय स्वधाव्ने।
अषाळहाय सहमानाय वेधसे तिग्मायुधाय भरता शृणोतु नः।।१।।

[इमा गिरः रुद्राय भरत] ये प्रार्थनाएँ [उन] रुद्र देव के लिए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

समर्पित कर दो, [जो] सुदृढ़ धनुषवाले (क्षिप्रेषवे) बाणों के आशु [प्रहार में कुशल], (स्वधाव्ने) पवित्र अन्नराशि से युक्त, (वेधसे) धारण-पोषण करने वाले (अषाळहाय) असह्य आक्रमण करने वाले, (सहमानाय) सहिष्णुतायुक्त तथा (तिग्मायुधाय) तीक्ष्ण शस्त्र धारण करने वाले हैं। (नः) श्रृणोतु [उन से अनुरोध है कि वे] हमारी प्रार्थना को सुनें।

स हि क्षयेण क्षम्यस्य जन्मनः साम्राज्येन दिव्यस्य चेतति।
अवन्नवन्तीरुप नो दुरश्चराऽनमीवो रुद्र जासु नो भव।।२।।

(सः हि क्षम्यस्य जन्मनः) वे रुद्रदेव पृथिवी पर जन्मे लोगों के (क्षयेण) निवास [–निर्माण कराने या उपलब्ध कराने] के कारण (चेतति) जाने जाते हैं। [उनकी पहचान] दिव्य जीवन जीने वालों के लिए साम्राज्य [–निर्माण] के कारण भी है। [रुद्र!] तुम (नः अवन्तीः अवन्] हमारी सुरक्षा में लगी [सिपाहियों की] टुकड़ियों की रक्षा करते हुए (नः दुरः उप चर) हमारे घर के आस-पास विचरण करो। (नः जासु अनमीवः भव] हमारे प्रजाजनों को नीरोग करो।

या ते दिद्युदवसृष्टा दिवस्परि क्ष्मया चरति परि सा वृणक्तु नः।
सहस्रं ते स्वपिवात भेषजा, मा नस्तोकेषु तनयेषु रीरिषः।।३।।

[ते या दिद्युत् दिवस्परि अवसृष्टा] तुम्हारी जो विद्युत् आकाश से गिरकर (क्ष्मया चरति) पृथ्वी पर अथवा उसके साथ घूमती रहती है, (सा नः परिवृणक्तु) वह हमारा परित्याग कर दे अर्थात् हम पर गिरकर हमें हानि न पहुँचाये। (स्वपिवात) वायु को भी नियन्त्रित कर लेने वाले हे रुद्र (ते सहस्रं भेषजा) तुम्हारे पास तो सैकड़ों औषधियाँ हैं, (नः तनयेषु तोकेषु मा रीरिषः) [उन औषधियों के प्रयोग से तुम ऐसी व्यवस्था कर दो कि] हमारे बाल-बच्चों को [रोग और व्याधियाँ] हानि न पहुँचा सकें।

मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ते भूम प्रसितौ हीळितस्य।
आ नो भज बर्हिषि जीवशंसे यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।४।।

(रुद्र! नः मा वधीः) हे रुद्रदेव! तुम हमें आघात न पहुँचाओ। (मा परा दाः) हमारा परित्याग भी न करो। (ते हीडितस्य प्रसितौ मा भूम)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(११)

१/९१ ऋ०

[ऋ०सं० १.९१; ऋषि-गोतम राहूगण, देवता-सोम, छन्द १-४ - त्रिष्टुप्, ५-१६ गायत्री, १७-उष्णिक्, १८-२३ त्रिष्टुप्]

ॐ त्वं सोम प्रचिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः।।१।।

– हे सोम! (त्वं मनीषा प्रचिकितः) तुम बुद्धिमान् और विशिष्ट ज्ञानी के रूप में जाने जाते हो। (त्वं रजिष्ठं पन्थाम अनु नेषि) तुम सबको [जीवन के] सरल मार्ग पर ले जाते हो। (इन्दो) हे सोम! (तव प्रणीती नः धीराः पितरः देवेषु रत्नम् अभजन्त) तुम्हारे द्वारा प्रदर्शित नीतियों पर चलकर हमारे बुद्धिमान् पितरों अथवा पूर्वजों ने देवों के मध्य रमणीय भोग प्राप्त किये।

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भूस्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः।
त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युम्न्यभवो नृचक्षाः।।२।।

– हे सोम! तुम अनेक [लोकहितकारी विशिष्ट] कार्यों को करने के कारण अति श्रेष्ठ कार्यकर्ता अथवा विचारक [माने जाते हो]। (त्वं विश्ववेदाः दक्षैः सुदक्षाः) [कुशलतापूर्वक कैसे कार्य किया जाये, इसकी] सम्पूर्ण प्रविधि के तुम ज्ञाता हो और निरन्तर अर्जित नैपुण्यों के कारण तुम अत्यन्त [कार्य-] कुशल [प्रबन्धक हो गये] हो। (त्वं वृषत्वेभिर्महित्वा वृषा) तुम अनेक शक्तियों से सम्पन्न होने के कारण अत्यन्त शक्तिशाली हो। (नृचक्षाः) मानवीय [कार्यकलाप का तुमने भलीभाँति] निरीक्षण किया है। (द्युम्नेभिर्द्युम्नी) दीप्तिमान् रत्नों [के स्वामी होने] के कारण तुम वैभव से सम्पन्न हो।

विशेष - यह मन्त्र प्रबन्ध विज्ञान की कुंजी है। एक कुशल प्रबन्धक में कैसे गुण होने चाहिए, उन सबका इसमें उल्लेख है।

राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम।।३।।

– हे सोम! (राज्ञः वरुणस्य ते नु व्रतानि) तुम्हारे [ये सब] नियम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

— हे सोम! तुम्हारे पास (दाशुषे मयोभुवः याः ऊतयः सन्ति) दानदाता के लिए जो सुखदायक संरक्षण के साधन हैं, (ताभिः नः अविता भव) उनसे हमारी सुरक्षा करो।

इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि। सोमत्वं नो वृधे भव।।१०।।

— हे सोम! तुम (इमं यज्ञम् इदं वचः जुजुषाणः) इस यज्ञ को और हमारी प्रार्थना के इन बोलों को स्वीकार करते हुए (उप आगहि) हमारे पास आओ और (नः वृध भव) हमारे संवर्धन में [सहायक] बनो।

सोम गीर्भिष्ट्वा वयं वर्धयामो वचोविदः। सुमृळीको न आविश।।११।।

— हे सोम! (वचोविदः वयम्) भाषाविज्ञान को जानने वाले हम (गीर्भिः त्वा वर्धयामः) अपनी स्तुतियों से तुम्हारा संवर्धन करते हैं। (नः सुमृळीकः आ विश) तुम हमारे मध्य सुखद रूप में प्रवेश करो।

गयस्फानो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः। सुमित्रः सोम नो भव।।१२।।

— हे सोम! तुम हमारे सुखदाता, (अमीवहा) रोगनिवारक, (वसुवित् धनदाता, (पुष्टिवर्धनः) पोषक और सुमित्र रहो।

सोम रारन्धि नो हृदि गावो न यवसेष्वा। मर्य इव स्व ओक्ये।।१३।।

— हे सोम! (गावः न यवसेषु आ) गायें जिस प्रकार जौ के खेत में, (मर्यः इव स्वे ओक्ये) और मनुष्य जैसे अपने घर में [सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं], (नः हृदि रारन्धि) तुम उसी प्रकार हमारे हृदय में तृप्ति और आनन्द उत्पन्न करो।

यः सोम सख्ये तव रारणद् देव मर्त्यः। तं दक्षः सचते कविः।।१४।।

— हे सोम! (तव सख्ये यः मर्त्यः रारणत्) तुम्हारी मित्रता में जो मनुष्य रम जाता है, (तं दक्षः कविः सचते) मेधावी और कुशल जनः उसकी कामना करते हैं।

उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाह्यंहसः।
सखा सुशेव एधि नः।।१५।।

— हे सोम! (नः अभिशस्तेः उरुष्यः) [दुष्ट व्यक्ति के] दुर्वचनों से तुम हमारा बचाव करो। (अंहसः नि पाहि) पाप से हमारी रक्षा करो। (नः सुशेवः सखा एधि) तुम हमारे सुसेव्य मित्र बने रहो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसे कर्मण्यम् (कर्मठ), विदथ्यम्) युद्ध में दक्ष, (सादन्यम्) गृहस्थ-जीवन की दक्षता, (सभेयम्) सभा में वाक्कुशलता, (पितृश्रवणम्) पिता के यश को बढ़ाने वाला (वीरम् ददाशत्) वीर पुत्र प्रदान करता है।

अषा॑ळ्हं यु॒त्सु पृत॑नासु॒ पप्रिं॑ स्व॒र्षाम॒प्सां वृ॒जन॑स्य गो॒पाम्।
भ॒रे॒षु॒जां सु॑क्षि॒तिं सु॒श्रव॑सं॒ जय॑न्तं॒ त्वामनु॑ मदेम सोम।।२१।।

हे सोम! (युत्सु असाळ्हम्) तुम युद्धों में अपराजित, (पृतनासु पप्रिम्) सेना की टुकड़ियों में उत्साह का संचार करने वाले, (अप्साम् स्वर्षाम्) जलराशि की वृष्टि करने वाले (वृजनस्य गोपाम्) संकट में पड़े हुए पथिक के संरक्षक, (भरेषुजाम्) ऐश्वर्यों में प्रकट होने वाले, (सुशिक्षितम्) उत्तम आवास में निवास करने वाले (सुश्रवसम्) अति कीर्तिशाली (जयन्तम्) तथा विजयशील हो। (त्वां मदेम) तुम्हें हम आनन्दित करते हैं।

त्वमि॒मा ओष॑धीः सोम॒ विश्वा॒स्त्वम॒पो अ॑जनय॒स्त्वं गाः।
त्वमा त॑तन्थो॒र्व१॑न्तरि॑क्षं॒ त्वं ज्योति॑षा॒ वि तमो॑ ववर्थ।।२२।।

– हे सोम! तुमने ये समस्त ओषधियाँ, सम्पूर्ण जलराशि और गायें उत्पन्न की हैं। तुम ने ही इस विशाल अन्तरिक्ष का विस्तार किया है। तुमने ही अपने प्रकाश से अन्धकार का पूरी तरह निवारण कर दिया है।

दे॒वेन॑ नो॒ मन॑सा देव सोम रा॒यो भा॒गं स॑हसावन्न॒भि यु॑ध्य।
मा त्वा त॑न॒दीशि॑षे वी॒र्य॑स्यो॒भये॑भ्य॒ः प्रचि॑कित्सा॒ गवि॑ष्टौ।।२३।।

– (देव सहसावन सोम) शत्रु का दमन करने वाले हे सोमदेव! (अभियुध्य देवेन मनसा नः रायः भागम्) युद्ध करने के बाद तुम अपने दिव्य मन से हमें धन का भाग प्रदान करो। (त्वा मा आ तनत्) तुम्हें आगे बढ़ने पर कोई नहीं रोक सकता है। (उभयेभ्यः वीर्यस्य ईशिष) दोनों प्रकार से शक्ति के स्वामी तुम्हीं हो। (गविष्टौ प्र चिकित्स) संगोष्ठियों में तुम अपने प्रभाव का प्रदर्शन करो।

(१२)

९/६७ ऋ०

[ऋ० सं० ९.६७; ऋषि – १-३ भरद्वाज बार्हस्पत्य, ४-६ कश्यप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मारीच, ७-९ गोतम राहूगण, १०-१२ अत्रि भौम, १३-१५ विश्वामित्र गाथिन, १६-१८ जमदग्नि भार्गव, १९-२१ वसिष्ठ मैत्रावरुणि, २२-३२ पवित्र आङ्गिरस या वसिष्ठ या दोनों। देवतापवमान सोम, १०-१२ पवमान पूषा या सोम, २३-२७ पवमान अग्नि, २५ पवमान सविता (विकल्प से), २६ पवमान अग्नि और सविता, २७ विश्वेदेव, ३१-३२ पावमान्यध्येता। छन्द-गायत्री, ३०-पुरउष्णिक्, २७, ३१ तथा ३२ अनुष्टुप्।]

ॐ त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे। पवस्व मंहयद्रयिः।।१।।

– हे सोम! तुम (मन्द्रः) आनन्द देनेवाले (ओजिष्ठः) बलदायक पदार्थों में सर्वाधिक बलप्रद और (अध्वरे धारयुः असि) अहिंसक यज्ञ में रस की धाराएँ प्रवाहित करने वाले हो। (मन्द्रयत् रयिः पवस्व) तुम हमें आनन्दित कर धन प्रदान करते हुए पवित्र [जीवन जीने की प्रेरणा प्रदान] करो।

त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान् मत्सरिन्तमः। इन्द्राय सूरिरन्धसा।।२।।

[पत्थरों से कुचलकर जब तुम्हारा] रस निकाल लिया जाता है, [तब तुम] (नृमादनः) मनुष्यों को आनन्दप्रदायक, (दधन्वान्) धनधारक और (मत्सरिन्तमः) सर्वधिक तृप्तिप्रद [हो जाते हो], (इन्द्राय अन्धसा सूरिः) इन्द्र के लिए भी तुम अन्न प्रदायक हो।

त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत्। द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्।।३।।

– हे सोम! (अद्रिभिः सुष्वाणः) पत्थरों से कूट-पीसकर निकाले गये रस के रूप में तुम (द्युमन्तम् उत्तमम् शुष्मम्) तेजोमय, श्रेष्ठ और बलदायक अन्न हमें (कनिक्रदत्) ध्वनि करते हुए प्रदान करो।

इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया। हरिर्वाजमचिक्रदत्।।४।।

– (हिन्वानः इन्दुः) ऊपर से गिराया गया सोमरस (अव्यया वाराणि तिरः) भेड़ के बालों की चालनी में से (अर्षति) नीचे उतर रहा है। (हरिः) हरे रंग का यह सोमरस (वाजम् अचिक्रदत्) [नीचे रखे पात्र में आता हुआ जोर से नाद कर रहा है।

इन्दो व्यव्यमर्षसि विश्रवांसि विसौभगा। वि वाजान्सोम गोमतः।।५।।

– हे सोम! (अव्यम् वि अर्षसि) तुम भेड़ के बालों से बनी चालनी से छाने जाते हो, (श्रवांसि वि) हविष्यान्नों को प्राप्त करते हो,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(सौभगा वि) सौभाग्य राशि प्राप्त करते हो, (गोमतः वाजान् वि अर्षसि) शक्तिशाली गोदुग्ध तुम प्राप्त करते हो।

आ नं इन्दो शतुग्विनं रयिं गोमन्तमुश्विनम्। भरा सोम सहुस्त्रिणम्।।६।।

– (इन्दो सोम) हे कान्तिमय सोम! सैकड़ों गायों और घोड़ों से युक्त, और हजारों प्रकार का धन तुम हमें पुष्कल परिमाण में दो।

पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः। इन्द्रं यामेभिराशत।।७।।

– (पवित्रम् तिरः) चालनी से छाना गया। (पवमानास आशवः) शुद्ध और शीघ्रगामी (इन्दवः) सोमरस (यामेभिः इन्द्रम् आशत) द्रुतगति से इन्द्र तक पहुँच जाता है।

कुकुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः। आयुः पवत आयवे।।८।।

– (ककुहः) सोमरस (सोम्यः रसः) सोम नामक वनस्पति से निकाला गया रस है। (आयुः) प्रवाहमय यह रस (आयवे पवते इन्द्राय) निरन्तर गतिशील और शुद्धाचरण युक्त इन्द्र के लिए (पूर्व्यः) सर्वप्रथम प्रस्तुत [पेय] है।

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम्। अभि गिरा समस्वरन्।।९।।

– (उस्रियः) उँगलियाँ (मधुश्चुतम्) सोम को दबाकर स्वादिष्ट रस निकालती हैं, (सूरम् पवमानम्) यह रस बलकारी और शुद्ध है। (गिरा सम् अभिस्वरन्) इस रस की प्रशंसा में ऋत्विज् समस्वर से मन्त्रपाठ करते हैं।

अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि। आ भक्षत् कन्यासु नः।।१०।।

– (अजाश्वः) अश्व के स्थान पर [अपने रथ में बकरों को जोतने वाला पूषा देव (यामनि यामनि), सभी गन्तव्य स्थानों पर (नः अविता) हमारी रक्षा करे। हमारी कन्याओं [के शिक्षण प्रशिक्षण और विवाह इत्यादि] के विषय में (आ भक्षत) वह हमारी सहायता करे।

अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु। आ भक्षत् कन्यासु नः।।११।।

यह सोम जटाजूटधारी महादेव अथवा मुकुटधारी पूषा देव को घृत के समान मधुर रस प्रस्तुत करता है। [इस रसास्वादन से प्रसन्न पूषा]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हमारी कन्याओं [के विवाहादि] के विषय में हमारी सहायता करता रहता है।

अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचि।
आ भक्षत् कन्यासु नः।।१२।।

– (आघृणे) हे सर्वथा दयालु देव! यह अभिषुत सोम तुम्हारे लिए शुद्ध घृत के समान स्वादिष्ट रस प्रस्तुत करता है। यह हमारी कन्याओं [के विवाहादि के सन्दर्भ] में भी [सदैव] सहायता करतां रहता है।

वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया। देवेषु रत्नधा असि।।१३।।

– हे सोम! (कवीनां वाचः जन्तुः) तुम कवियों (मेधावियों और ज्ञानियों) की वाणी के प्रेरक हो। (धारया पवस्व) अपनी रसधारा से हमें सक्रिय करो। देवों में तुम्हीं रमणीय वस्तुएँ [हमें] प्रदान करते हो।

आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते।
अभि द्रोणा कनिक्रदत्।।१४।।

–जैसे (श्येनः वर्म वि गाहते) बाज पक्षी [शीघ्रता से] अपने घर में पहुँच जाता है, उसी प्रकार यह सोमरस भी कलशों में दौड़ कर भर जाता है। निनाद करता हुआ यह द्रोणप्रभृति अन्य पात्रों में भी भर जाता है।

परि प्र सोम ते रसो ऽसर्जि कलशे सुतः। श्येनो न तक्तो अर्षति।।१५।।

– हे सोम! (श्येनः न तक्तः अर्षति) श्येन पक्षी जैसे अपने घोंसले में आकर रहता है, उसी प्रकार अभिषवन के अन्तर कलश में रखे तुम्हारे रस को भी (परि प्र असर्जि) [यज्ञानुष्ठान के समय] अलग-अलग पात्रों में ढाला जाता है।

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः।। ।।१६।।

– हे सोम! तुम इन्द्र को आनन्दित करने के लिए (मधुमत्तमः पवस्व) अत्यन्त मधुर रस के रूप में प्रवाहिंत हो।

असृग्रन् देववीतये वाजयन्तो रथा इव।। ।।१७।।

– (वाजयन्तः रथा इव) शक्तिशाली रथों के समान [नाद करते

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हुए सोमरस की यह राशि] (देववीतये) देवों को समर्पित करने के लिए तैयार की गई है।

ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत।। ।।१८।।

– (मदिन्तमाः शुक्राः) सर्वाधिक आनन्दित करने वाली यह चमकदार सोमरस की राशि वायु के समान ध्वनि कर रही है।

ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छति। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्।।१९।।

हे सोम! तुम पत्थर से कूटे जाकर चालनी में चाले जाकर - और इस प्रकार सम्पूर्ण अभिषवन प्रक्रिया से गुजरकर (पवित्रम् गच्छसि) पवित्र [देवता को] अर्पित किये जाते हो। स्तुतिकर्ता को तुम श्रेष्ठ शक्ति प्रदान करते हो।

एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते। रक्षो हा वारमव्ययम्।।२०।।

– (तुन्नः) कूटा-पीसा हुआ, (अभिष्टुतः) चतुर्दिक प्रशंसित, (अव्ययं वारं पवित्रम् अति गाहते) भेड़ के बालों की बनी चालनी से छना हुआ यह सोमरस (रक्षो हा) राक्षसों के शारीरिक रोगों का विनाशक है।

यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह। पवमान वितज्जहि।।२१।।

– हे सोम! मेरे निकट, दूर और आस-पास जो भी भय विद्यमान है, तुम उन्हें दूर करो।

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः।
यः पोता स पुनातु नः।।२२।।

(स विचर्षणिः पवमानः) सर्वद्रष्टा वह सोम, जो (पोता) पवित्र करने वाला है, (पवित्रेण) पवित्रं के द्वारा मुझे भी पवित्र करे।

यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्म तेन पुनीहि नः।।२३।।

– हे अग्निदेव! (यत् ते अन्तरा अर्चिषि पवित्रम्) तुम्हारे अन्दर, ज्वाला के भीतर जो पवित्र करने वाला तेज है, (तेन नः ब्रह्म पुनीहि) उसके द्वारा हमारे ज्ञान को पावन करो।

यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः। ब्रह्मसवैः पुनीहि नः।।२४।।

– लपटों से युक्त हे अग्निदेव! अपने पावन तेज से तुम हमें पवित्र

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करो। (ब्रह्मसवैः नः पुनीहि) मन्त्रों से युक्त यज्ञानुष्ठानों से तुम हमें पवित्र करो।

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः।।२५।।

– हे सविता देव! तुम पवित्र भाव और अपने प्रेरक-उत्पादक कृत्य-दोनों से मुझे पूरी तरह पवित्र कर दो।

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः। अग्ने दक्षैः पुनीहि नः।।२६।।

– हे सविता! सोम! तथा अग्नि! तुम्हारे तीन श्रेष्ठ स्थान हैं उनसे और (दक्षैः) अपने कौशल से हमें पवित्र करो।

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मां।।२७।।

– दैवीगुणों से सम्पन्न [महा] पुरुष मुझे पवित्र करें। [आठों] वसु अपनी बुद्धि से हमें पवित्र करें। विश्वेदेव मुझे पवित्र करें। उत्पन्न हुए सभी प्राणियों के ज्ञाता अग्निदेव मुझे पवित्र करें।

प्रप्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः। देवेभ्य उत्तमं हविः।।२८।।

– हे सोम! [वनस्पति के रूप में अपने] सभी भागों से तुम हमें आप्यायित करो। देवों के निमित्त हम उत्तम हवि [अर्पित कर सकें ऐसी] व्यवस्था कर दो।

उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम्। अगन्म बिभ्रतो नमः।।२९।।

– (पनिप्नतम्) ध्वनि करते हुए प्रिय और तारुण्ययुक्त पवमान अग्नि को हम नमन करते हैं। वह आहुतियों से बढ़ जाते हैं। (उप अगन्म) हम उनके निकट पहुँच गये हैं।

अलाय्यस्य परशुर्ननाश तमा पवस्व देव सोम।
आखुं चिदेव देव सोम।।३०।।

– (अल्लायस्य) आक्रमणकारी शत्रु का (परशु) शस्त्र (ननाश) नष्ट हो गया। हे सोम! (आपवस्व) तुम अपने रस से हमें तृप्त करो और (आखुं चित् एव) शत्रु का नाश करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यः पा॑वमा॒नीर॒ध्येत्यृषि॑भि॒ः संभृ॑तं॒ रस॑म्।
सर्वं॒ स पू॒तम॑श्नाति स्वदि॒तं मा॑त॒रिश्व॑ना। ।।३१।।

– जो [व्यक्ति] ऋषियों के द्वारा (सम्भृतं रसम्) संगृहीत सारभूत (पावमानी:) पावमानी मन्त्रों का (अध्येति) अध्ययन करता है, वह मातरिश्वा वायु के द्वारा आस्वादित सम्पूर्ण पवित्र भोजन का आस्वाद प्राप्त करता है।

पा॒व॒मा॒नीर्यो अ॒ध्येत्यृषि॑भि॒ः संभृ॑तं॒ रस॑म्।
तस्मै॒ सर॑स्वती दुहे क्षी॒रं स॒र्पिर्मधू॑द॒कम्।।३२।।

– ऋषियों के द्वारा साररूप में संगृहीत पावमानी मन्त्रों का जो व्यक्ति अध्ययन करता है, उसे विद्या की देवी सरस्वती दूध, घी, मधु और जल सब कुछ दोहनकर देती हैं।

(१३)

९/१११ ऋ०

[ऋ० सं० ९.१११; ऋषि-अनानत पारुच्छेपि; देवता पवमान सोम; छन्द-अत्यष्टि]

ॐ अ॒या रु॒चा हरि॑ण्या पुना॒नो विश्वा॒ द्वेषां॑सि तरति स्व॒युग्व॑भि॒ः सूरो॒ न स्व॒युग्व॑भिः।
धारा॑ सु॒तस्य॑ रोचते पुना॒नो अ॑रु॒षो हरि॑ः।
विश्वा॒ यद्रूपा प॑रि॒यात्यृक्व॑भिः स॒प्तास्ये॑भि॒र्ऋक्व॑भिः।।१।।

– (पुनान:) चालनी से छाना जाता हुआ सोम रस (हरिण्या अया रुचा) हरे रंग के अपने तेज से (विश्वा द्वेषांसि तरति) सभी शत्रुओं को दूर भगा देता है। (सूर: स्वयुग्वभि: न) सूर्य अपनी किरणों से जैसे अन्धकार को नष्ट करता है, उसी प्रकार (सुतस्य धारा रोचते) अभिषुत सोम की धार चमकती है। (पुनान: हरि: अरुष:) हरे रंग का यह छना हुआ सोमरस चमक रहा है। (सप्तास्येभि: ऋक्वभि:) तेजोमय सात मुखों तथा स्तोत्रों से और (ऋक्वभि:) अपनी दीप्तियों से (विश्वारूपाणि परियासि) यह अनेक रूप धारण करता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्वं त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दमं ऋतस्य धीतिभिर्दमे।
परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतयः।
त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे।।२।।

– हे सोम! तुमने (पणीनां त्यत् वसु विदः) पणियों के उस धन को प्राप्त किया। (ऋतस्य धीतिभिः मातृभिः) सत्य अथवा यज्ञ के आधारभूत जल से (स्वे दमे सं मर्जयसि) तुम अपने घर में परिष्कृत हो जाते हो। (यत्र धीतयः रणन्ति) जहाँ यज्ञ करने वाले यजमान आनन्दित होते हैं, (परावतः न साम तत्) वहाँ दूर से वह उल्लास सामगान के रूप में सुनाई देता है। (त्रिघातुभिः अरुषीभिः) तीन स्थानों पर प्रकाशित होने वाले तेजों से (रोचमानः) चमकता हुआ सोम (वयः दधे, वयः दधे) आयुष्य प्रदान करता है, आयुष्य प्रदान करता है [यह सत्य है।]

पूर्वामनु प्रदिशंयाति चेकितत् संरश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन्।
वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता।।३।।

– (चेकितत् पूर्वां प्रदिशम् अनुयाति) सर्वज्ञानी सोम पूर्व दिशा को जाता है। (दैव्यः दर्शतः रथः रश्मिभिः संयतते) दिव्य और दर्शनीय तुम्हारा रथ किरणों के कारण तेजोमय दिखायी देता है। (पौंस्या उक्थानि जैत्राय इन्द्रं हर्षयन् अग्मन्) पौरुष के प्रोत्साहक स्तोत्रों की ध्वनियाँ विजय-अभियान के लिए इन्द्र को उल्लसित करती हुई उन तक पहुँच गई हैं। वज्र भी इन्द्र के पास है। (यत् समत्सु अनपच्युता भवथः) हे सोम और इन्द्र! संग्रामों में तुम दोनों [कभी] पराजित नहीं होते।

(१४)

१०/९०/१-१६ ऋ०

(यह पुरुषसूक्त (ऋ० सं० १०.९०.१-१६) है। इसी रूप में यह शुक्लयजुर्वेदीय रुद्राध्याय में भी है। वहाँ इसकी व्याख्या विस्तार से की गई है। पुनरुक्ति-भय से यहाँ वह पुनः नहीं दी जा रही है। पाठकगण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कृपया उसे आगे देखने का कष्ट करें।)

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।१।।
पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।२।।
एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।३।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशनानशने अभि।।४।।
तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरुषः।
सजातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।५।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।६।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये।।७।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यं।
पशूंताँश्चक्रे वायव्यानारण्यान् ग्राम्याश्चये।।८।।
तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।९।।
तस्मादश्वा अजायन्तयेकेचोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः।।१०।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते।।११।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत।।१२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।।१३।।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोकाँ अकल्पयन्।।१४।।
सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्।।१५।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।१६।।

(१५)

१०/१२८/१-९ ऋ०

[ऋ०सं० १०.१२८.१-९; दशम मन्त्र किसी अन्य शाखा का है। यह मन्त्र कुछ परिवर्तित रूप में अथर्वसंहिता (५.३.११) में भी प्राप्य है।]

ऋषि - १-९ विहव्य आङ्गिरस, देवता-विश्वेदेव, छन्द - १-८ त्रिष्टुप्, नवमी ऋक् में जगती]

ममाग्ने वर्चो विहवेष्वस्तु वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम।
मह्यं नमन्तां प्रदिशश्चतस्रस्त्वयाध्यक्षेण पृतना जयेम।।१।।

– हे अग्निदेव! (विहवेषु) संग्रामों अथवा विद्वद्गोष्ठियों में मेरा वर्चस् हो। (त्वा इन्धानाः वयं तन्वं पुषेम) तुम्हें प्रज्वलित करते हुए हम अपने शरीर को ही वास्तव में पुष्ट करते हैं। चारों दिशाओं के लोगों का अभिवादन अर्थात् सम्मान मुझे प्राप्त हो। तुम्हारी अध्यक्षता में हम शत्रुओं की सेनाओं पर विजय प्राप्त करें।

मम देवा विहवे सन्तु सर्व इन्द्रवन्तो मरुतो विष्णुरग्निः।
ममान्तरिक्षमुरुलोकमस्तु मह्यं वातः पवतां कामे अस्मिन्।।२।।

– इन्द्र से सम्बद्ध मरुद्गण, विष्णु और अग्नि - ये सभी देवता युद्ध में मेरी ओर रहें। अन्तरिक्ष के समान विशाल स्थान पर मेरा निवास हो। मेरे इस अभीष्ट कार्य में वायुदेव सक्रिय सहायता करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मयि देवा द्रविणमा यजन्तां मय्याशीरस्तु मयि देवहूतिः।
दैव्या होतारो वनुषन्त पूर्वेऽरिष्टाः स्याम तन्वा सुवीराः।।३।।

– समस्त देवगण मुझे धन प्रदान करें। मुझे सबका आशीर्वाद मिले। देवों का मुझ पर अनुग्रह-आमन्त्रण हो। देवयज्ञों के प्राचीन होतृगण मुझ पर अनुकूल रहें। हमारा शरीर और वीर परिजन (पुत्र-पौत्र और भाई इत्यादि) नीरोग रहें।

मह्यं यजन्तु मम यानि हव्याऽऽकूतिः सत्या मनसो मे अस्तु।
एनो मा नि गां कतमच्चनाहं विश्वे देवासो अधि वोचता नः।।४।।

[ऋत्विग्गण] मेरे लिए उपलब्ध यज्ञ-सामग्री से यज्ञानुष्ठान करें। (मनसः आकूतिः) मेरे मन के संकल्प और विचार सत्य हों। मैं (कतमत् चन एनः मा निगाम) मैं किसी भी पाप में लिप्त न होऊँ। समस्त देवों! तुम हमें आशीर्वचन दो।

देवीः षळुर्वीरुरु नः कृणोत विश्वे देवास इह वीरयध्वम्।
मा हास्महि प्रजया मा तनूभिर्मा रधाम द्विषते सोम राजन्।।५।।

– [द्यु, पृथिवी, दिन, रात, जल और औषधि - इनकी अधिष्ठात्री] छह देवियाँ (नः उरु कृणोत) हम पर विपुल [अनुग्रह] करें। विश्वेदेवों (इह वीरयध्वम्) तुम यहाँ अर्थात् भारतभूमि पर [उसकी सुरक्षा के लिए] पराक्रम करो। हमें सन्तान-हानि न हो और ना ही हमारे शरीर को [चोट-चपेट] लगे। हे राजा सोम! हम कभी शत्रु के फन्दे में न पड़ें।

अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परि पाहि नस्त्वम्।
प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते३ मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत्।।६।।

– हे अग्नि! (परेषां मन्युं प्रतिनुदन् अदब्ध गोपाः) तुम दूसरे के क्रोध को विफल करते हुए, स्वयं हिंसा से बचते हुए रक्षा करते हो। तुम हमारी सब ओर से रक्षा करो। (ते निगुतः प्रत्यञ्चः पुनः यन्तु) निगूढ़ बातें करने वाले [शत्रु] लौट जायें। (एषां प्रबुधां चित्तं मा वि नेशत्) इन चालाक शत्रुओं का चित्त एक साथ नष्ट हो जाये।

धाता धातॄणां भुवनस्य यस्पतिर्देवं त्रातारमभिमातिषाहम्।
इमं यज्ञमश्विनोभा बृहस्पतिर्देवाः पान्तु यजमानं न्यर्थात्।।७।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

– (धातॄणां धाता) जो सृष्टिकर्ताओं का भी स्रष्टा है, (भुवनस्यपतिः) भुवनभर का पालक है, (देवम् त्रातारम् अभिमातिषाहम्) उस सर्वरक्षक और अभिमानियों को परास्त करने वाले देव की मैं [स्तुति करता हूँ।] दोनों अश्विनीकुमार और बृहस्पति प्रभृति देवगण इस यज्ञ और इसके यजमान दोनों की (न्यर्थात्) पापों से रक्षा करें।

उरुव्यचा नो महिषः शर्म यंसदस्मिन् हवे पुरुहूतः पुरुक्षुः।
स नः प्रजायै हर्यश्व मृळयेन्द्र मा नो रीरिषो मा परा दाः।।८।।

– सर्वव्यापक, (महिषः) पूजनीय, (पुरुहूतः) अनेक [यजमानों के द्वारा] बुलाये जाते, (पुरुक्षुः) अनेक स्थानों पर रहने वाले [इन्द्र देव] इस यज्ञ में हमारा कल्याण करें। (हर्यश्व) हे हरे-हरे अश्वों वाले इन्द्र! (नः प्रजायै मृळय) तुम हमारी सन्ततियों को सुखी करो। हम पर क्रोध मत करो। हमारा त्याग भी मत करो।

ये नः सपत्ना अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान्।
वसवो रुद्रा आदित्या उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन्।।९।।

– जो हमारे शत्रु हैं, वे दूर रहें। इन्द्र और अग्नि के सहयोग से हम उन्हें नष्ट कर रहे हैं। वसु, रुद्र और आदित्यगण मुझे सर्वश्रेष्ठ पद पर आरुढ़ करें और उग्र (चेत्तारम्) समझदार तथा (अधिराजम्) सब पर शासन करने वाला बनायें।

अर्वाञ्चमिन्द्रममुतो हवामहे यो गोजिद्धनजिदश्वजिद्यः।
इमं नो हव्यं विहवे जुषस्वाऽस्य कुल्मो हरिवो मेदिनं त्वा।।१०।।

– इस स्थान से हम उन इन्द्र को अपने सम्मुख आने के लिए आमन्त्रित कर रहे हैं, जो गायों, धन और अश्वों को अपने वश में रखते हैं। इस यज्ञानुष्ठान में हमारे हविष्य का वे सेवन करें। [ओ यजमान! यज्ञ में उनके अनुग्रह से] मैं तुम्हें हरे रंग वाले घोड़ों और पृथिवी का स्वामी बनाने [का प्रयत्न] कर रहा हूँ।

(१६) १०/१४१ ऋ०

[ऋ० सं०१०.१४१; ऋषि-अग्नि तापस; देवता-विश्वेदेव; छन्द-अनुष्टुप्।]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रत्यङ् नः सुमना भव।
प्र नो यच्छ विशस्पते धनदा असि नस्त्वम्।।१।।

– हे अग्निदेव! यहाँ [अर्थात् यज्ञ में] तुम अच्छे वचन बोलो। तुम यहाँ आकर हमारे प्रति सौमनस्य रखो। तुम प्रजापालक और धनदाता हो, इसलिए हमें धन प्रदान करो।

प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र भगः प्र बृहस्पतिः।
प्र देवाः प्रोत सूनृता रायो देवी ददातु नः।।२।।

– अर्यमा, भग और बृहस्पति हमें धन-ऐश्वर्य प्रदान करें। अन्य सभी देवगण और प्रिय तथा सत्य वाणी की अधीश्वरी देवी सरस्वती हमें धन प्रदान करें।

सोमं राजानमवसेऽग्निं गीर्भिर्हवामहे।
आदित्यान् विष्णुं सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।।३।।

– (अवसो) अपनी सुरक्षा के लिए हम राजा सोम और अग्नि को प्रार्थनाओं से बुला रहे हैं। आदित्य, विष्णु, सूर्य, प्रजापति और बृहस्पति से भी हम अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करते हैं।

इन्द्रवायू बृहस्पतिं सुहवेह हवामहे।
यथा नः सर्व इज्जनः संगत्यां सुमना असत्।।४।।

– (सुहवा) सम्यक् रीति से आमन्त्रणयोग्य, इन्द्र, वायु और बृहस्पति को हम यहाँ सादर आमन्त्रित करते हैं जिससे सभी लोगों का मन हमारे प्रति सौमनस्यपूर्ण रहे।

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय।
वातं विष्णुं सरस्वतीं सवितारं च वाजिनम्।।५।।

– हे स्तुत्यप्रभु! तुम अर्यमा, बृहस्पति, इन्द्र, वायु, विष्णु, सरस्वती और अन्न तथा बल के दाता सविता को हमें धन देने के लिए प्रेरित करो।

त्वं नो अग्ने अग्निभिर्ब्रह्म यज्ञं च वर्धय।
त्वं नो देवतातये रायो दानाय चोदय।।६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

– हे अग्निदेव! तुम अन्य अग्नियों के साथ हमारे ब्रह्मवर्चस् और यज्ञ का संवर्धन करो। देवों के निमित्त यज्ञानुष्ठान के लिए [आवश्यक] धन प्रदान करने के लिए [भी] तुम्हीं [दानदाताओं को] प्रेरित करो।

(१७) १/२७/१३ ऋ०

[ऋ०सं० १.२७.१३; शुनः शेप (वैश्वामित्र देवरात); देवगण; छन्द त्रिष्टुप्]

नमो महद्भ्यो नमो अर्भकेभ्यो नमो युवभ्यो नम आशिनेभ्यः।
यजाम देवान् यदि शक्नवाम मा ज्यायसः शंसमावृक्षि देवाः।।१।।

१. बड़ों को नमन। बालकों को नमन। तरुणों को नमन। (आशनिभ्यः) वृद्धों को वन्दन। जितनी सामर्थ्य होगी, उतने से हम देवों का यजन करेंगे। हे देवगण! उस एक श्रेष्ठ देव की स्तुति करने में हमसे त्रुटि न होने पाये, [तुम यह ध्यान रखना]।

।। अथोत्तराशान्तिः ।।

ॐ तच्छंयोरावृणीमहे गातुं यज्ञाय गातुं यज्ञपतये। दैवी स्वस्ति रस्तुनः स्वस्ति र्मानुषेभ्यः।। ऊर्ध्वंजिगातु भेषजं शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।। ॐ नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नयेनमः पृथिव्यै नम ओषधीभ्यः।। नमोवाचे नमोवाचस्पतये नमो विष्णवे महते करोमि।। ॐ भद्रन्नो अपिवातयमनः।। ॐ शान्तापृथिवी शिवमन्तरिक्षं द्यौर्नोदेव्यभयंनो अस्तु।। शिवादिशः प्रदिश उद्दिशोन आपो विद्युतः परिपान्तु सर्वतः।। शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।ॐ।।

।। इति ऋग्वेदीयोरुद्रः समाप्तः ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

अथ तैत्तिरीय पद्धत्यनुसारी कृष्ण यजुर्वेदीयो 'रुद्रः'

तत्र प्रथमं ऋषिच्छन्दो देवता विनियोगाः।

ॐ अस्य श्री सकलस्यरुद्राध्यायस्य॥ परमेष्ठीऋषिः॥ श्रीरुद्रोदेवता॥ एकागायत्रीछंदः॥ तिस्त्रोनुष्टुभस्तिस्त्रःपंक्तयः॥ सप्तानुष्टुभौद्वैजगत्यौ॥ अग्नाविष्णू सजोषसेत्येकादशानामनुवाकानां॥ अग्निः कांडऋषिः॥ आद्यागायत्री॥ आग्ना वैष्णवी॥ शिष्टंयजुः॥ वाजादयोन्नादिविशेषादेवताः॥ महाविराट्छंदः॥ नमः शंभवेतिबीजं॥ मयोभवेतिशक्तिः॥ नमःशंकरायेतिबीजं॥ मयस्करायेतिशक्तिः॥ नमः शिवायेतिबीजं॥ शिवतरायेतिशक्तिः॥ ॐ कारोबीजं॥ मायाशक्तिः॥ ब्रह्मा बीजं॥ सुषुम्नाशक्तिः॥ नमइषुकृद्भ्यो धन्वकृद्भ्य इतिकीलकं॥ श्री सद्गुरुस्वरूप॥

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थे जपे-पाठे-अभिषेके-हवने-तर्पणे-मार्जने-स्वाध्याये वा विनियोगः॥

॥ तत्रादौ शान्ति पाठः॥

ॐ सहनाववतु॥ सहनौ भुनक्तु॥ सहवीर्यं करवावहै॥ तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषावहै॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

हरिः ॐ॥ इडादेवहूर्मनुर्यज्ञनीर्बृहस्पतिरुक्थामदानिशंसिषद्विश्वेदेवाः सूक्तवाचः पृथिविमातर्मामाहिंसीर्मधुमनिष्येमधुजनिष्येमधुवक्ष्यामिमधुवदिष्यामिमधुमतींदेवे भ्योवाचमुद्यासंशुश्रूषेण्यांमनुष्येभ्यस्तंमादेवाअवंतुशोभायैपितरोनुमदंतु॥ ॐ शांतिः शांतिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शांतिः।। ॐ नमोभगवतेरुद्राय।।

ॐ नमस्तेरुद्रमन्यवंउतोतइषवेनमः। नमस्ते अस्तु-धन्वनेबाहुभ्यामुत तेनमः। या तइषुः शिवतमाशिवंबभूवतेधनुः। शिवाशरव्यायातवतयानोरुद्रमृडय। रुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी। तयानस्तनुवाशंतमयागिरिशंताभिचाकशीहि। यामिषुंगिरिशंतहस्ते-बिभर्ष्यस्तवे। शिवांगिरित्रतांकुरुमाहिंᳬसीः पुरुषंजगत्। शिवेन वचसात्वागिरिशाच्छावदामसि। यथानःसर्वमिज्जगदयक्ष्मᳬसुमनाअसत्। अध्यवोच दधिवक्ताप्रथमोदैव्योभिषक्। अहीᳬश्चसर्वान्जंभयन्त्सर्वाश्चया तुधान्यः। असौ यस्ताम्रोअरुणउतबभ्रुःसुमंगलः। येचेमाᳬरुद्रा-अभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशो वैषाᳬहेडईमहे। असौयोवसर्पतिनीलग्रीवो-विलोहितः। उतैनंगोपाअदृशन्नदृशन्नु दहार्यः। उतैनंविश्वा भूतानिसदृष्टोमृडयातिनः। नमोअस्तुनीलग्रीवायसहस्राक्षायमीढुषे। अथोयेअस्यसत्वा नोहतेभ्योकरंनमः। प्रमुंचधन्वनस्त्वमुभयोरार्त्नियोर्ज्याम्। याश्चते तेहस्तइषवः परातांभगवोवप। अवतत्यधनुस्त्वᳬसहस्राक्षशतेषु-धे।। निशीर्यशल्यानां मुखाशिवोनः सुमनाभव। विज्यंधनुः-कपर्दिनोविशल्योबाणवाᳬउत। अनेशन्नस्येषवआभुरस्यनिषंगथिः। यातेहेति मींढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मयापरिब्भुज। नमस्तेअस्त्वायुधा यानातताथधृष्णवे। उभाभ्यामुततेनमोबाहुभ्यांतवधन्वने। परितेधन्वनोहेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथोयइषुधिस्तवारेअस्मन्नि-धेहितम्।।१।। नमोहिरण्यबाहवेसेनान्येदिशांचपतये नमोनमोवृक्षेभ्यो-हरिकेशेभ्यः पशूनांपतयेनमोनमः सस्पिञ्जरायत्विषीमतेपथीनांपतयेन मोनमोबभ्लुशायविव्याधिनेऽन्नानांपतयेनमोनमो। हरिकेशायोपवीतिनेपुष्टा-नांपतयेनमो नमोभवस्यहेत्यैजगतांपतयेनमोनमोरुद्रायाततविनेक्षेत्राणां-पतयेनमोनमः सूतायाहंत्या यवनानांपतयेनमोनमोरोहितायस्थपतये-वृक्षाणांपतयेनमोनमोमंत्रिणेवाणिजायकक्षाणां पतयेनमोनमोभुवं तयेवारिवस्कृतायौषधीनांपतयेनमो नमउच्चैर्घोषायाक्रंदयतेपत्तीनांपतयेन-मोनमः कृत्स्नवीतायधावतेसत्वनांपतयेनमः ।।२।। नमः सहमानायनि-व्याधिनऽआव्याधिनीनांपतयेनमोनमः ककुभायनिषंगिणेस्तेनानां-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पतंयेनमोनमौनिषंगिणंऽइषुधिमते तस्कंराणांपतंयेनमोनमोवंचंते-परिवंचंतेस्तायूनांपतंयेनमोनमौनिचेरवैपरिचरायारंण्या नांपतंयेनमोनमंः सृकाविभ्योजिघांꣳसद्भ्योमुष्णतांपतंयेनमोनमौऽसि मद्भ्योनक्तंचरं द्भ्यःप्रकृंतानांपतंयेनमोनमंउष्णीषिणैगिरिचरायंकुलुंचानांपतंयेनमोनम-इषुंमद्भ्यो धन्वाविभ्यंश्चवोनमोनमंआतन्वानेभ्यंः प्रतिदधानेभ्यश्चवो-नमोनमंआयच्छंद्भ्योविसृज द्भ्येश्चवोनमोनमोऽस्यंद्भ्योविध्यंद्भ्य-श्चवोनमोनमआसीनेभ्यः शयानेभ्यश्चवोनमो नमंःस्वपद्भ्योजाग्रंद्भ्य-श्चवोनमोनमस्तिष्ठं द्भ्योधावंद्भ्यश्चवोनंमोनमंः सभाभ्यंः सभा पतिभ्यश्चवोनमोनमोअश्वेभ्योश्वंपतिभ्यश्चवोनमः।।३।। नमंआव्याधि-नीभ्योविविध्यंतीभ्य श्चवोनमोनम उगंणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यंश्च-वोनमोनमौगृत्सभ्यौगृत्सपंतिभ्यश्चवोनमोनमोव्रातेभ्योव्रातंपतिभ्यश्चवो-नमोनमौगणेभ्यौगणपंतिभ्यश्चवोनमोनमोविरूंपेभ्योविश्वरूंपेभ्यश्च वोनमो-नमौमहद्भ्ंःक्षुल्लकेभ्यंश्चवोनमोनमौरथिभ्यौरथेभ्यंश्चवोनमोनमोरथे-भ्योरथंपतिभ्य श्चवोनमोनमः सेनांभ्यः सेनानिभ्यंश्चवोनमोनमंः क्षत्तृभ्यंः संगृहीतृभ्यंश्चवोनमोनमस्तक्षंभ्योरथकारेभ्यंश्चवोनमोनमः कुलालेभ्यः कर्मारेभ्यश्चवोनमोनमंः पुंजिष्टैभ्योनिषादेभ्यंश्चवो नमोनमंइषुकृद्भ्यौ-धन्वकृद्भ्यंश्चवोनमोनमौमृगयुभ्यंः श्वनिभ्यंश्चवोनमोनमः श्वभ्यः श्वपं तिभ्यश्चवोनमंः।।४।। नमौभवायंचरुद्रायंचनमंः शर्वायंचपशुपतंये-चनमोनीलंग्रीवायचशितिकंठायचनमंः कपर्दिनैचव्युंप्तकेशायचनमंः सहस्राक्षायंचशतधंन्वनेचनमौगिरिशायंच शिपिविष्टायंचनमौमीढुष्टंमा-यचेषुंमतेचनमौह्रस्वायंचवामनायंचनमौबृहतेचवर्षीयसेचनमौवृद्धायं-चसंवृध्वंनेचनमोअग्रियायचप्रथमायंचनमंआशवेचाजिरायंचनमः शीघ्रियायच शीभ्यायचनमंऊर्म्यायचावस्वन्यायचनमंः स्रोतस्यायं-चद्वीप्यायच।।५।। नमौज्येष्ठायंच कनिष्ठायंचनमंः पूर्वजायंचापरजा-यंचनमौमध्यमायंचापगल्भायंचनमौजघन्यायचबुध्निं यायचनमंः सोभ्या-यचप्रतिसर्यायचनमोयाम्यायनमंउर्वर्यायचखल्यायचन मः श्लोक्यायचा-वसान्यायचनमोवन्यायचकक्ष्यायचनमंः श्रवायंचप्रतिश्रवायंचनमंआशु षेणायचाशुरंथायचनमः शूरायचावभिंदतेचनमौवर्मिणैचवरूथिनेचनमौ-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिल्मिनेच कवचिनेचनमः श्रुतायचश्रुतसेनायच ।।६।। नमोदुंदुभ्याय-
चाहनन्यायचनमोधृष्णवेच प्रमृशायचनमोदूतायचप्रहितायचनमोनि-
षंगिणेचेषुधिमतेचनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधायचसुधन्वने-
चनमः स्रुत्यायचपथ्यायचनमः काट्यायचनीप्यायचनमः सूद्यायच
सरस्यायचनमोनाद्यायचवैशंतायचनमः कूप्यायचावट्यायचनमो-
वर्ष्यायचावर्ष्यायचन मोमेघ्यायचविद्युत्यायचनमईध्रियायचातप्यायचन-
मोवात्योयचरेष्मियायचनमोवास्त व्यायचवास्तुपायच।।७।। नमः
सोमायचरुद्रायचनमस्ताम्रायचारुणायचनमः शंगायच पशुपतयेचनम-
उग्रायचभीमायचनमोअग्रेवधायचदूरेवधायचनमोहंत्रेचहनीयसेचनमोवृ
क्षेभ्योहरिकेशेभ्योनमस्तारायनमः शंभवेचमयोभवेचनमः शंकराय-
चमयस्करायचनमःशिवायचशिवतरायचनमस्तीर्थ्यायचकूल्यायचनमः
षार्यायचावार्यायचनमःप्रतरणायचोत्त रणायचनमआतार्यायचा-
लाद्यायचनमःशष्प्यायचफेन्यायचनमःसिकत्यायचप्रवाह्यायच।।८।।
नमइरिण्यायचप्रपथ्यायचनमःकिंशिलायचक्षयणायचनमःकपर्दिनेचपुल-
स्तयेचन मोगोष्ठ्यायचगृह्यायचनमस्तल्प्यायचगेह्यायचनमः-
काट्यायचगह्वरेष्ठायचनमोह्रदय्या यचनिवेष्प्यायचनमःपांसव्यायचर-
जस्यायचनमः शुष्क्यायचहरित्यायचनमोलोप्यायचोलप्यायचनमऊर्व्याय-
चसूम्यर्यायचनमः। पर्ण्यायचपर्णशद्यायचनमोपगुर्माणायचाभि घ्नतेचन-
मऽआखिखदतेचप्रखिखदतेचनमोवः किरिकेभ्योदेवानांहृदयेभ्यो-
नमोविक्षीणके भ्योनमोविचिन्वत्केभ्योनमआनिर्हतेभ्योनमआमी-
वत्केभ्यः।।९।। द्रापेअंधसस्पतेदरि द्रंनीललोहित।। एषांपुरुषाणामेषां-
पशूनांमाभेर्मारोमोएषांकिंचनाममत्।। यातेरुद्रशिवातनूःशिवाविश्वा-
हंभेषजी।। शिवारुद्रस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे।। इमांरुद्रायतवसे
कपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतिम्।। यथानःशमसदिद्विपदेचतुष्प-
देविश्वंपुष्टंग्रामेअस्मिन्न नातुरम्।। मृडानोरुद्रोतनोमयस्कृधि-
क्षयद्वीरायनमसाविधेमते।। यच्छंचयोश्चमनुराय जेपितातदश्यामत
वरुद्रप्रणीतौ।। मानोमहांतमुतमानोअर्भकंमानउक्षंतमुतमानउक्षितम्।।
मानोवधीः पितरं मोतमातरंप्रियामानस्तनुवोरुद्ररीरिषः।। मानस्तोकेतन-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

येमानआयुषि मानोगोषुमानोअश्वेषुरीरिषः।। वीरान्मानोरुद्रभामितोवधी-र्हविष्मंतोनमसाविधेमते।। आरात्तेगोघ्नउतपूरुषघ्नेक्षयद्वीराय-सुम्नमस्मेतेअस्तु।। रक्षाचनोअधिचदेवब्रूह्मधाचनःश र्मयच्छद्विबर्हाः।। स्तुहिश्रुतंगर्तसदंयुवानंमृगंनभीममुपहत्नुमुग्रम्।। मृडाजरित्रेरुद्रस्तवा नोअन्यंतेअस्मन्निवपंतुसेनाः।। परिणोरुद्रस्यहेतिर्वृणक्तुपरित्वेषस्य-दुर्मतिरघायोः।। अवस्थिरामघवद्भ्यस्तनुष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृडय।। मीढुष्टमशिवतमशिवोनः सुम नाभव।। परमेवृक्षआयुधंनिधायकृत्ति-वसानआचरपिनाकंबिभ्रदागहि।। विकिरिदवि लोहितनमस्तेअस्तुभगवः।। यास्तेसहस्रंहेतयोन्यमस्मन्निवपंतुताः।। सहस्राणिसह स्रधा-वाहुवोस्तवहेतयः।। तासामीशानोभगवः पराचीनामुखाकृधि।।१०।। सहस्राणि सहस्रशोयेरुद्राअधिभूम्याम्।। तेषांसहस्रयोजनेवधन्वानित-न्मसि।। अस्मिन्महत्यर्ण वेन्तरिक्षेभवाअधि।। नीलग्रीवाःशिति-कंठाःशर्वाअधःक्षमाचराः।। नीलग्रीवाःशितिकंठादिवंरुद्राउपश्रिताः।। येवृक्षेषुसस्पिञ्जरानीलग्रीवाविलोहिताः।। येभूतानामधिपतयो विशिखासःकपर्दिनः।। येअन्नेषुविविध्यंतिपात्रेषुपिबतोजनान्।। यपथा-पायर वृदायव्युधः।। येतीर्थानिप्रचरंतिसृकावंतोनिषंगिणः।। यएतावंतश्चभूयांसश्चदिशो रुद्रावितस्थिरे।। तेषांसहस्रयोजनेवध न्वानितन्मसि।। नमोरुद्रेभ्योयेपृथिव्यांयेन्तरि क्षेयेदिवियेषामन्नंवातोवर्ष-मिषवस्तेभ्यो दशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्र तीचीर्दशोदीचीर्दशो ध्वा स्तेभ्योनमस्तेनोमृडयन्तुतेयंद्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितंवोजंभेदधामि।।११।। ॐ अग्नावि ष्णूसजोषसेमावर्धन्तुवांगिरः।। द्युम्नैर्वाजेभिरागतम्।। वाजश्चमेप्रसवश्चमेप्रयतिश्चमेप्रसितिश्चमेधीतिश्चमेक्रतुश्चमेस्वर-श्चमेश्लोकश्चमेश्रावश्चमेश्रुतिश्चमेज्योतिश्चमेसुवश्चमेप्राणश्चमेपानश्चमेव्यान-श्चमेसुश्चमेचित्तंचमआधीतंचमेवाक्चमेमनश्चमेचक्षुश्चमेश्रोत्रंचमेदक्षश्च-मेबलंच मओजश्चमेसहश्चमआयुश्चमेजराचमआत्मा चमेतनूश्चमेशर्म-चमेवर्मचमेऽगानिचमेस्थानि चमेपरूंषिचमेशरीराणिचमे।।१।। ज्यैष्ठ्यंचमआधिपत्यंचमेमन्युश्चमेभामश्चमेम श्चमेम्भश्चमेजेमाचमेवरिमा-चमेप्रथिमाचमेवर्ष्माचमेद्राघुयाचमेवृद्धंचमेवृद्धि श्चमेसत्यंचमेश्रद्धा-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चमेजगच्चमेधनंचमेवशश्चमेत्विषिश्चमेक्रीडाचमेमोदश्चमेजातंचमेजनि
ष्यमाणंचमेसूक्तंचमेसुकृतंचमेवित्तंचमेवेद्यंचमेभूतंचमेभविष्यच्चमेसुगं-
चमेसुपथंचमऋद्धं चमऋद्धिश्चमेक्लृप्तंचमेक्लृप्तिश्चमेमतिश्चमे-
सुमतिश्चमे ।।२।। शंचमेमयश्चमेप्रियंचमेनु कामश्चमेकामश्चमेसौमन-
सश्चमेभद्रंचमेश्रेयश्चमेवस्यश्चमेयशश्चमेभगश्चमेद्रविणंचमेयंताच
मेधर्ताचमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमेविश्वंचमेमहश्चमेसंविच्चमेज्ञात्रंचमेसूश्चमेप्रसूश्च-
मेसीरंचमेलयश्च मऋतंचमेमृतं चमेयक्ष्मंचमेऽनामयच्चमेजीवा-
तुश्चमेदीर्घायुत्वंचमेऽनमित्रंचमेभयंचमेसुगं चमेशयनंचमेसूषाचमेसुदि-
नंचमे ।।३।। ऊर्क्चमेसूनृताचमेपयश्चमेरसश्चमेघृतंचमेमधुच मेसग्धिश्चमेसपी
तिश्चमेकृषिश्चमेवृष्टिश्चमेजैत्रंचमऔद्भिद्यंचमेरयिश्चमेरायश्चमेपुष्टंचमेपुष्टि
श्चमेविभुचमेप्रभुचमेबहुचमेभूयश्चमेपूर्णमेमेपूर्णतरंचमेक्षितिश्चमे-
कूयवाश्चमेन्नंचमेक्षुच्चमे व्रीहयश्चमेयवाश्चमेमाषाश्चमेतिलाश्चमेमुद्गा-
श्चमेखल्वाश्चमेगोधूमाश्चमेमसुराश्चमेप्रियंगवश्च मेऽणवश्चमेश्यामाका-
श्चमेनीवाराश्चमे ।।४।। अश्माचमेमृत्तिकाचमेगिरयश्चपर्वताश्चमेसिक-
ताश्चमेवनस्पतयश्चमेहिरण्यंचमेयश्चमेसीसंचमेत्रपुश्चमेश्यामंचमेलोहंच-
मेग्निश्चम आपश्चमेवीरुधश्चमओषधयश्चमेकृष्टपच्यंचमेकृष्टपचयंच-
मेग्राम्याश्चमेपशवआरण्याश्चयज्ञे नंकल्पंतांवित्तंचमेवित्तिश्चमेभूतंचमे-
भूतिश्चमेवसुचमेवसतिश्चमेकर्मचमेशक्तिश्चमेर्थश्चमएम श्चमइतिश्चमे-
गतिश्चमे ।।५।। अग्निश्चमइंद्रश्चमेसोमश्चमइंद्र- श्चमेसविताचमइंद्रश्चमेसर
स्वतीचमइंद्रश्चमेपूषाचमइंद्रश्चमेबृहस्पतिश्चमइंद्रश्चमेमित्रश्चमइंद्रश्चमे-
वरुणश्चमइंद्रश्चमेत्वष्टामइंद्रश्चमेधाताचमइंद्र श्चमेविष्णुश्चइंद्रश्चमेऽ-
श्विनौचमइंद्रमश्चमेमरुतश्चमइंद्रश्चमेविश्वेचमेदेषाइंद्रश्चमेपृथिवी-
चमइंद्रश्चमेंऽरिक्षंचमइंद्रश्चमेद्यौश्चमइंद्रश्चमेदिशश्चमइंद्रश्चमे मूर्धा चमइंद्रश्च-
मेप्रजापतिश्चमइंद्रश्चमे ।।६।। अꣳशुश्चमेरश्मिश्चमेदाभ्य श्चमेधिपति-
श्चमउपाꣳशुश्च मेंतर्यामश्चमऐंद्रवायवश्चमेमैत्रावरुणश्चमआश्विन-
श्चमेप्रतिप्रस्थानश्चमेशुक्रश्चमेमंथीचमआग्रयणश्चमेवैश्वदेंव-
श्चमेध्रुवश्चमेवैश्वानरश्चमऋतुग्रहाश्चमेतिग्राह्याश्चमऐंद्राग्नश्च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेवैश्वदेवश्चमेमरुत्वतीयाश्चमेमाहेंद्रश्चमआदित्यश्चमेसावित्र-
श्चमेसारस्वतश्चमेपौष्ण श्चमेपात्नीवतश्चमेहारियोजनश्चमे।।७।।
इध्मश्चमेबर्हिश्चमेवेदिश्चमेधिष्णियाश्चमेस्रुच श्चमेचमसाश्चमेग्रावाणश्चमे-
स्वरवश्चमउपरवाश्चमेधिषवणेचमेद्रोणकलशश्चमेवायव्यानिचमेपूत-
भृच्चमआधवनीयश्चमआग्नीध्रंचमेहविर्धानंचमेगृहादश्चमेसदश्चमे-
पुरोडाशाश्च मेपचताश्चमेऽवभृथश्चमेस्वगाकारश्चमे।।८।।
अग्निश्चमेघर्मश्चमेऽर्कश्चमेसूर्यश्चमेप्रा णश्चमेश्वमेधश्चमेपृथिवी-
चमेदितिश्चमेदितिश्चमेद्यौश्चमेशक्कीरंगुलयोदिशश्चमेयज्ञेन
कल्पंतामृक्चमेसामचमेस्तोमश्चमेयजुश्चमेदीक्षाचमेतपश्चम-
ऋतुश्चमेब्रतंचमेहोरात्रयो वृष्ट्याबृहद्रथं- तरेचमेयज्ञेनकल्पेतां।।९।।
गर्भाश्चमेवत्साश्चमेत्र्यविश्चमेत्र्यवीचमेदित्यवाट्चमेदित्यौहीं-
चमेपंचाविश्चमेपंचावीचमेत्रिवत्सश्चमेत्रिवत्साचमेतुर्य-
वाट्चमेतुर्यौहीचमेपष्ठवाच्चमेपषष्ठौहीचमऽउक्षचमेवशाचमऽऋषभश्च-
मेवेहच्चमेऽनड्वान्चमेधे नुश्चमआयुर्यज्ञेनकल्पतांप्राणोयज्ञेनकल्पतामं-
पानोयज्ञेनकल्पतांव्यानोयज्ञेनकल्पतांचक्षु र्यज्ञेनकल्पताꣳश्रोत्रंयज्ञेन-
कल्पतांमनोयज्ञेनकल्पतांवाग्यज्ञेनकल्पतामात्मायज्ञेनकल्पतां यज्ञोयज्ञेन-
कल्पताम्।।१०।। एकाचमेतिस्रश्चमेपंचचमेसप्तचमेनवचमएकादश-
चमेत्रयोदशचमेपंचदशचमेसप्तदशचमेनवदशचमएकविꣳशति-
श्चमेत्रयोविꣳशतिश्चमेपंचवि ꣳशतिश्चमेसप्तविꣳशतिश्चमेनव-
विꣳशतिश्चमएकत्रिꣳशच्चमेत्रयस्त्रिꣳशच्चमेचतस्रश्चमे ष्टौचमेद्वादश-
चमेषोडशचमेविꣳशतिश्चमेचतुर्विꣳशतिश्चमेष्टाविꣳशतिश्चमे-
द्वात्रिꣳशच्च मेषट्त्रिꣳशच्चमेचत्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्वारिꣳशच्चमेष्टा-
चत्वारिꣳशच्चमेवाजश्चप्रसवश्चापिजश्चक्रतुश्चसुवश्चमूर्धाचव्यश्नि-
यश्चांत्यायनश्चांत्यश्चभौवनश्चभुवनश्चाधिपतिश्च।।११।। ॐ इडा-
देवहूर्मनु०।। इति कृष्णयजुर्वेदीयो रुद्राध्यायः समाप्तः।।

यह मूलतः तैत्तिरीय संहिता से गृहीत है। अधिकाँश मन्त्रों का सादृश्य शुक्लयजुर्वेद के १६वें अध्याय में प्राप्य मन्त्रों से है। उनकी व्याख्या शुक्लयजुर्वेद के रुद्राध्याय में देखी जा सकती है। केवल चार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मन्त्र ऐसे हैं, जो शुक्ल यजुर्वेद में नहीं मिलते, अतएव उनकी व्याख्या यहाँ की जा रही है –

या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः।
शिवा शरव्या या तव तया नो रुद्र मृडय॥

– हे रुद्र! तुम्हारे जो बाण, धनुष तथा तरकस अत्यन्त शान्त और कल्याणकारी हो गये हैं, उन आयुधों से हमें सुखी करो।

मृळानो रुद्रोत नो मयस्कृधि क्षयद्वीराय नमसा विधेमते।
यच्छं च योश्च मनुरायजे पिता तदश्याम तव रुद्र प्रणीतौ॥

– हे सुखद रुद्र! हमें भी आप सुख तथा आराम प्रदान कीजिए। हे वीरों को आश्रय प्रदान करने वाले हम आपको नमन करते हैं। हे रुद्र! हम सबके पूर्वज महाराज मनु ने आपकी प्रीति की छत्रछाया में आपसे लौकिक भोग तथा पारमार्थिक मोक्ष दोनों ही प्राप्त किये थे। [उन्हीं का अनुसरण करते हुए हम भी आप की कृपा से] अभ्युदय और निःश्रेयस् दोनों ही प्राप्त करें।

आरात्ते गोघन उतपूरुषऽघ्ने क्षयद्वीराय सुम्नमस्मे ते अस्तु।
रक्षा च नो अधि च देव ब्रूह्यथा च नः शर्म यच्छ द्विबर्हाः॥

– वीरों को आश्रय प्रदान करने वाले हे रुद्रदेव! आपके अनुग्रह से न तो हमारे गाय आदि पालतू पशुओं का विनाश होने पाये और ना ही हमारे साथ सम्बद्ध जनधन की हानि हो। आपका वह रूप जो इन्द्रियों तथा अहंकार को वश में करने वाला है, वह हमारे समीप रहे [– यह अर्थ आध्यात्मिक दृष्टि से है।] हमें आपका सौमनस्य प्राप्त हो। आप हमें रक्षा का आश्वासन दें, हमारा कल्याण करें तथा 'द्विबर्हा' अर्थात् भोग और मोक्ष दोनों [यथावसर] हमें प्रदान करें।

स्तुहि श्रुतं गर्तसदं युवानं मृगन्न भीम सुपहत्नुमुग्रम्।
मृडा जरित्रे रुद्र! स्तवानो अन्यन्ते अस्मन्नि वपन्तु सेनाः॥

– (हे भक्तप्रवर!) शिव की स्तुति करो। वे सुप्रसिद्ध, हृदयरूपी गर्त (गुहा) में विराजमान, युवक [के समान उत्साही] सिंह के समान, [शत्रुओं के] संहारक तथा उग्र हैं। हे रुद्र! स्तुतिकर्ता को सुखी करो। आपकी सेना [हमारे] विरोधियों को नष्ट करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

अथ माध्यन्दिन शाखानुसारी शुक्ल यजुर्वेदीयो 'रुद्रः' तत्र प्रथमं ऋषिच्छन्दो देवता विनियोगाः।

गणानान्त्वेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः लिङ्गोक्ता देवता गायत्रीत्रिष्टुबितिद्वयोः प्रजापतिर्ऋषिः उष्णिगनुष्टुभौ छन्दसी अश्वो देवता सहस्तोमा इत्यस्य यज्ञः प्राजापत्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः ऋषयो देवताः॥ यज्जाग्रत इति षण्णांशिवसङ्कल्प ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः मनो देवता सहस्रशीर्षेति पुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानाम् अनुष्टुप्छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्यास्त्रिष्टुप्छन्दः पुरुषो देवता अद्भ्यः सम्भृत इति उत्तरनायणस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां तिसृणां त्रिष्टुप्छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप्छन्दः अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः आदित्यो देवता आशुः शिशान इति सप्तदशानाम् अप्रतिरथ ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता विभ्राडित्यस्य विभ्राट् सौर्यऋषिः जगतीछन्दः सूर्यो देवता उदुत्यमिति तिसृणां प्रस्कण्व ऋषिः गायत्री छन्दः सूर्यो देवता तम्प्रत्नथेत्यस्य ब्रह्मस्वयम्भूर्ऋषिः जगतीछन्दः विश्वेदेवा देवता अयं वेन इत्यस्य ब्रह्मस्वयंभूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता चित्रमित्यस्य ब्रह्मस्वयम्भूर्ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आन इत्यस्य अगस्त्य ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता यदद्येत्यस्य श्रुतकक्षसृतं कक्षावृषी गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता तरणिरित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिः गायत्रीछन्दः सूर्यो देवता तत्सूर्यस्येतिद्वयोः कुत्स ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता बण्महानितिद्वयोर्जमदग्निर्ऋषिः आद्यस्य बृहती छन्दः द्वितीयस्य सतो बृहतीछन्दः सूर्या देवता श्रायन्त इवेत्यस्य नृमेध ऋषिः बृहतीछन्दः सूर्यो देवता अद्या देवा इत्यस्य कुत्सऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता आकृष्णेनेत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता ॐकारस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्रीछन्दः अग्निः परमात्मा देवता महाव्याहृतीनां भृगुऋषिः प्रजापतिर्देवता बृहतीछन्दः अग्निर्गन्धर्वा वा ऋषयः दैवी गायत्री दैव्युष्णिक् दैवी गायत्री छन्दांसि अग्निवायुसूर्याः क्रमेण देवताः॥ नमस्ते रुद्रेति रौद्राध्यायस्य परमेष्ठी ऋषिः देवता वा ऋषयः प्रजापतिर्वा ऋषिः नमस्ते रुद्रेत्यस्य गायत्रीछन्दः याते रुद्रेत्यादीनां तिसृणाम् अनुष्टुप्छन्दः अद्ध्यवोचदधीत्यादि तिसृणां पंक्तिच्छन्दः नमोस्तुनीलग्रीवायेत्यादिसप्तानाम् अनुष्टुप्छन्दः मानोमहान्तमिति द्वयोः कुत्सोपि ऋषिः जगतीछन्दः सर्वासामेको रुद्रो देवता नमो हिरण्यबाहव इत्यादीनि द्रापेइत्यतः प्राक्तनानि सर्वाणि यजूंषि नमो हिरण्यबाहव इत्यादिनां श्वपतिभ्यश्चवो नम इत्यन्तानां यजुषां हिरण्यबाहुः सेनानीर्दिशांपतिरित्यादिमन्त्रवर्णावगतनामका उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमो भवाय च रुद्रायचेत्यादीनां प्रखिदतेचेत्यन्तानां यजुषां भवादयो मन्त्रलिङ्गावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमः इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्रश्चवो नम इत्यस्य यजुष उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नमो वः किरिकेभ्य इत्यादीनामग्निवायुसूर्यहृदयभूतव्याहृतीनाम् अन्यतरतो नमस्कारा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहवो रुद्रा देवताः द्रापे इत्यस्या उपरिष्टाद् बृहती छन्दः इमारुद्रायेत्यस्याः कुत्सोपि ऋषिःजगती छन्दः षात इत्यस्यानुष्टुप् छन्दः सप्तानामेको रुद्रो देवता असङ्ख्यातेत्यादीनां दशानामनुष्टुप्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः नमोस्तु रुद्रेभ्य इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां धृतिच्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः सकलाध्यायस्य शतशीर्षो रुद्रो वा देवता॥

वयः सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता एषत इत्यनयोः प्रजापतिर्ऋषिः सामपङ्क्तियजुर्जगतीछन्दसी रुद्रो देवता अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पङ्क्तिच्छन्दः रुद्रो देवता भेषजमसीत्यस्य प्रजापतिऋषिः ककुप् छन्दः रुद्रो देवता त्र्यम्बकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठप्रजापती ऋषी अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता एतत्त इत्यंस्य प्रजापतिर्ऋषिः आस्तारपङ्क्तिच्छन्दः रुद्रो देवता त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता शिवो नामेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्यबृहती छन्दः क्षुरोदेवता निवर्तयाम्येत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्यत्रिष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्ता देवता नतं विदाथ विश्वकर्मेत्यनयोर्विश्वकर्मा भौवनऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः विश्वकर्मा देवता॥

उग्रश्चेत्यस्य प्रजापतिः परमेष्ठी प्राजापत्यो वा ऋषिः गायत्री छन्दः मरुतो देवता अग्निꣳहृदयेनेत्यादीनां यजुषां प्रजापतिर्ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता आयासायस्वाहेत्यादीनां प्रजापतिर्ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता॥

वाजश्च मे प्रसवश्चम इत्यादीनां चमकमन्त्राणाम् अनड्वाँश्चमे धेनुश्चमे यज्ञेन कल्पन्तामित्यन्तानां वाजाय स्वाहेत्यादीनां वेट्स्वाहेत्यन्तानां देवा ऋषयः वाजश्चम इत्यादीनां चतुरक्षराणां दैवी वृहतीछन्दः ऊर्क्चम इत्यादीनां त्र्यक्षराणां दैव्यनुष्टुप् प्रयतिश्चम इत्येवं पञ्चाक्षराणां दैवी पङ्क्तिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आधिपत्यञ्चम इत्यादीनां षडक्षराणां दैवी त्रिष्टुप् यजुर्गायत्री वा हारियोजनश्चम इत्यादीनां सप्ताक्षराणां दैवी जगती यजुरुष्णिग्वा आयुर्यज्ञेन कल्पतामित्यादीनाम् अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् प्राजापत्या गायत्री वा भुवनस्य पतये स्वाहेत्यादीनां नवाक्षराणां यजुर्बृहती आसुरी जगती वा मुग्धायवैनꣳशिनायेत्यादीनां दशाक्षराणां यजुः पङ्क्तिः आसुरी त्रिष्टुप् वा विनꣳशिन आन्त्यायनायेत्यादीनाम् एकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् आसुरी पङ्क्तिर्वा अङ्गुलयः शक्वरयोदिशश्च इत्यस्य द्वादशाक्षरस्य यजुर्जगती सामगायत्री वा प्राजापत्योष्णिग्वा आसुरी बृहती वा सर्वेषामग्निर्देवता॥

श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थे जपे-पाठे-अभिषेके-हवने-तर्पणे-मार्जने-स्वाध्याये वा विनियोगः॥

हरिः ॐ॥ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥ यजु० २३/१९॥

– हे गणपति गणेश! हम आपका आह्वान करते हैं। आप हमारे प्रियजनों के पालक हैं, हम आपको बुलाते हैं। समस्त ऐश्वर्य एवं निधियों के स्वामी के रूप में भी हम आपका आह्वान करते हैं। आप सबको शरण देने वाले हैं। आप ही बीजरूप में अपने गर्भ में समस्त संसार को धारण करते हैं, और सबके उत्पादक हैं, [अतएव] हम आपके स्वरूप को जानने के लिए इच्छुक हैं ॥१॥

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह॥१॥ बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा॥२॥

द्विपदायाश्चतुष्पदास्त्रिपदायाश्च षट्पदाः॥ विच्छन्दा या सच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्वा॥२३/३३॥

– [गायक की रक्षा करने वाली] गायत्री, [तीनों तापों को रोकने वाला] त्रिष्टुप्, [जगत् भर में विस्तीर्ण] जगती, अनुष्टुप्, पंक्ति और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उष्णिक् छन्द अपने ककुभादि भेद-प्रभेदों के साथ आपकी स्तुति करते हुए आपको शान्त रखें।

दो पदों वाले, चार पदों वाले, तीन पदों वाले, छह पदों वाले छन्दों से युक्त तथा छन्दो लक्षणों से रहित-सभी प्रकार की स्तुतियाँ आपको शान्त करें ।।२-३।।

सहस्तोमाः सहछन्दसऽआवृतः सहप्रमा ऋषयः सप्त दैव्याः।। पूर्वेषाम्पन्थामनुदृश्य धीराऽ अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन्।।

– स्तोमों और छन्दों से युक्त, (आवृतः) कर्मों के अनुष्ठाता, प्रमाणों से परीक्षा करने में कुशल सात दिव्यगुणों से युक्त ऋषियों (–भरद्वाज, कश्यप, गौतम, अत्रि, विश्वामित्र, जमदग्नि और वसिष्ठ) ने उसी प्रकार इस सृष्टि-यज्ञ की रचना की है, जैसे रथ का स्वामी अभीष्ट स्थान पर पहुँचने के लिए पूर्वजों के मार्ग के अनुसरणपूर्वक अश्वों के नियन्त्रण हेतु लगाम का प्रयोग करता हुआ अपनी लक्ष्यप्राप्ति कर लेता है [- इस परम्परा का अनुवर्तन करते हुए हम भी अपनी लक्ष्य-प्राप्ति करें।] ।।४।।

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति।। दूरङ्गमज्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।१।।

येन कर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।। यदपूर्व्वं यक्ष्ममन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।२।।

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु।। यस्मान्नऽ ऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।३।।

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम्।। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।४।।

यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः।। यस्मिँश्चित्तꣳ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते भीशुभिर्वाजिनऽ इव।। हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु।।६।। यजु० ३४/१-६

– मेरा वह मन शुभ सङ्कल्पों से ओतप्रोत हो जाये, जो जाग्रत और सुप्त दोनों ही अवस्थाओं में दूर चला जाता है तथा तेजोमयी इन्द्रियों के मध्य जो सर्वाधिक दूर तक पहुँचने वाली एकमात्र ज्योति है।

मेरा वह मन शुभसङ्कल्प से युक्त हो जाये, जिसकी सहायता से मेधावी और बुद्धिमान् व्यक्ति यज्ञ में श्रेष्ठ कृत्यों का संपादन करते हैं, जो मन सबके हृदय में रहता है तथा यज्ञानुष्ठानों में जिसे सर्वाधिक अद्भुत और पूज्य माना जाता है।

मेरा वह मन अच्छे सङ्कल्प वाला हो जाये, जो विशेष ज्ञान से युक्त, चिन्तनशील, धैर्यरूप तथा प्राणियों में अमर प्रकाश के रूप में मान्य है और जिसकी सहायता के बिना कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता है।

जो अविनाशी मन भूत, भविष्य और वर्तमान काल के समस्त पदार्थों को ग्रहण करने वाला है, जिस मन की सहायता से सात-सात होताओं वाले विराट् यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है, वह मेरा मन अच्छे संकल्पवाला हो जाये।

विशेष – इस मन्त्र में जीवन की अवधारणा एक यज्ञ के रूप में की गई है, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि ये सात होता कार्यनिरत रहते हैं। यदि इस यज्ञ को विश्व यज्ञ के रूप में स्वीकार किया जाये, तो शरीर, दो कर्मेन्द्रियों (हाथ और पैर), तीन ज्ञानेन्द्रियों (आँख, कान, नासिका) मन, बुद्धि, आत्मा और परमात्मा की स्थिति सात होताओं के रूप में है।

जिस मन में, रथ-चक्र की नाभि में अवस्थित अरों (तीलियों अथवा डंडों) के समान ऋचाओं, यजुषों और सामों के रूप में समस्त वेदों की मन्त्रराशि सन्निहित रहती है, जिसमें समस्त प्रजाजनों का चित्त ओतप्रोत रहता है, वह मेरा मन शिवसङ्कल्प से युक्त रहे।

जैसे अच्छा सारथी लगाम लगाकर शीघ्रगामी और वेगवान् अश्वों को [सही रास्ते पर] ले जाता है, ठीक उसी प्रकार हमारा यह मन भी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो हृदय में भलीभाँति स्थित है, वृद्धावस्था से रहित अर्थात् चिरतरुण है तथा सर्वाधिक वेगवान् है, मनुष्यों को बार-बार इधर-उधर ले जाता है। ऐसा मेरा यह मन शिवसङ्कल्प से भर जाये।

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।। स भूमिꣳसर्व्वतस्स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।१।।

हजारों शिरों, हजारों आँखों और हजारों पैरों वाला [नारायणाख्य] पुरुष सब ओर से भूमि को घेरकर अवस्थित है। [साथ ही] वह दस अङ्गुल परिमाण वाले स्थान पर भी समा जाता है।

विशेष – पुरुषमेध अथवा पुरुषसूक्त के रूप में बहुचर्चित इस सूक्त में व्यक्ति और समाज अथवा आत्मा और परमात्मा की आन्तरिक एकता और बाह्य व्यवहारों का विशद निरूपण है। समष्टि रूप में जो (विराट्) पुरुष, सबके शिरों, आँखों और पैरों से युक्त होने के कारण समस्त ब्रह्माण्ड भर में परिव्याप्त है, वही व्यक्ति के रूप में केवल दस अंगुल भूमि पर ही स्थित हो जाता है। आध्यात्मिक दृष्टि से, जो परमात्मा सम्पूर्ण त्रिलोकी के कण-कण में विद्यमान है, वही हमारे शरीर में नाभि से दस अंगुल ऊपर जाकर जीवों के हृदय में भी विरजमान है। कुछ व्याख्याकारों ने नासिकाग्रगत दस अंगुल को माना है। अभिप्राय यह कि परमात्मा ब्रह्माण्ड के अन्दर भी है और उसके बाहर भी है। सामाजिक दृष्टि से व्यक्ति और समाज मूलतः एक हैं।

पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वँ यद्भूतँयच्च भाव्यम्।। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।२।।

२. [इस जगत् में] जो कुछ भी वर्तमान काल में है, भूतकाल में था और भविष्य में होने वाला है, वह सब विराट् पुरुष का ही अवयव है। वह अमरता अर्थात् मोक्ष का भी स्वामी है, वह [प्राणियों के द्वारा भोग्य] अन्न से संवर्धित होता है अर्थात् कारणावस्था का अतिक्रमण कर परिदृश्यमान जगत् की अवस्था को प्राप्त करता है।

एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः।। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।।

३. इस पुरुष की इतनी अधिक महिमा है – वह इससे भी अधिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशाल है [–वास्तव में यह सम्पूर्ण संसार उसका स्वरूप नहीं, मात्र उसकी महिमा अर्थात् विभूति भर है।] यह दिखाई देनेवाला सम्पूर्ण स्थावर-जंगम जगत् तो केवल उसका चतुर्थ भाग मात्र है। इसके तीन भाग तो दिव्य लोक में अमृत रूप में हैं।

विशेष - विराट् पुरुष के इन तीन भागों की व्याख्या ऋग्, यजुष् और साम अथवा आदित्य के रूप में उव्वट ने की है। अभिप्राय यह कि परब्रह्म की कोई इयत्ता नहीं है – न ही उसकी कोई माप ही है।

त्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽ अभि।।४।।

४. यह तीन पादों वाला पुरुष [संसार से परे] ऊपर दिव्य लोक में अवस्थित है, अर्थात् वह सांसारिक विकारों से पूर्णतया रहित है। उस ब्रह्म के केवल एक अंश से यह संसार पुनः पुनः प्रकट होता रहता है। वह परमात्मा सांसारिक पदार्थों का उपभोग करने वालों और न करने वालों - दोनों को ही चारों ओर से परिव्याप्त किये हुए है।

ततो विराडजायत विराजोऽ अधि पूरुषः।। स जातोऽ अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।५।।

५. उस [आदि पुरुष अथवा परमात्मा] से [ब्रह्माण्ड शरीर वाला] विराट् पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसके आधार में जीवस्वरूप में वही प्रतिष्ठित हो गया, वही देवों, पशु-पक्षियों और मनुष्यों के रूप में [सृष्टिक्रम में] अभिव्यक्त हुआ, [जीव-सृष्टि के] अनन्तर [उसने सबके निवास के लिए] पृथिवी, नगर [और ग्रामादि] की सृष्टि की।

विशेष – सात धातुओं से पुष्ट होने के कारण 'पुर' शब्द से शरीर का ग्रहण भी किया जा सकता है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्।। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।६।।

६. [तदनन्तर विराट् पुरुष अथवा परमात्मा ने अपने द्वारा अनुष्ठित] सर्वहुत (– ऐसा यज्ञ, जिसमें सर्वस्व को समर्पित कर दिया जाता है) नामक यज्ञ से दधिमिश्रित घृत को उत्पन्न किया) [तत्पश्चात्] वायुलोक अर्थात् अन्तरिक्ष गत पक्षियों, जंगल और ग्रामीण पालतू पशुओं की सृष्टि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

की। **विशेष** – यह सर्वहुत यज्ञ वास्तव में आत्म यज्ञ है। 'वायव्य' से सभी पशु-पक्षियों का ग्रहण किया जाता है, क्योंकि वायुदेवता से उनका विशेष सम्बन्ध माना जाता है, जैसाकि कहा गया है – 'अन्तरिक्षदेवत्याः खलु वै पशवः।'

तस्मा॑द्यज्ञात्स॑र्व्वहुतऽ ऋचः सामा॑नि जज्ञिरे।। छन्दा॑थंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा॑दजायत।।७।।

७. उसी सर्वहुत यज्ञ से ऋग्वेद के मन्त्र आविर्भूत हुए, सामगान प्रकट हुए, उसी से अथर्ववेदीय और यजुर्वेद के मन्त्र भी उत्पन्न हुए।

तस्मादश्वा॑ऽ अजायन्त ये के चो॑भयाद॑तः।। गावो॑ ह जज्ञिरे तस्मात्तस्मा॑ज्जाताऽ अ॑जावय॑ः ।।८।।

८. उसी यज्ञ से अश्व उत्पन्न हुए, दोनों ओर दाँत वाले [गर्दभ और खच्चर इत्यादि] उत्पन्न हुए। उसी से क्रमशः गायें और भेड़-बकरियाँ बनीं।

तँय्यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरु॑षञ्जातम॑ग्ग्रतः।। तेन॑ देवाऽ अ॑यजन्त साद्ध्याऽ ऋष॑यश्च ये।।९।।

९. देवों, साध्यगणों और ऋषियों ने उस सर्वप्रथम उत्पन्न विराट् पुरुष का यज्ञ में प्रोक्षण किया और उसी से आगे यज्ञानुष्ठान किया।

विशेष – उव्वट के अनुसार यह उपात्मयज्ञ है, जिससे सर्वप्रथम प्राणायाम से दिव्य-ज्ञान समुत्पन्न हुआ। इसी ज्ञान से सृष्टि के अन्य व्यापार आगे बढ़े।

यत्पुरु॑षं व्यद॑धुः कतिधा व्य॑कल्प्पयन्।। मुखङ्कि॑म॑स्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा॑ऽ उच्येते।।१०।।

१०. [प्रश्न उठता है कि] जिस पुरुष का यहाँ निरूपण किया गया है, उससे कितने प्रकार की सृष्टि प्रवर्तित हुई? इसका मुख कौन बना? भुजाएँ क्या बनीं? जंघाएँ कौन-से रूप में परिणत हुईं? और उसके पैर कौन-से कहे जाते हैं?

ब्राह्मणोस्य मुख॑मासीद्बाहू रा॑जन्यः कृतः ।। ऊरू तद॑स्य यद्वैश्य॑ः पद्भ्याथं शूद्रोऽ अ॑जायत।।११।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

११. इस [समाजस्वरूप विराट् पुरुष] का मुख ब्राह्मण है, इसकी भुजाएँ क्षत्रिय अथवा राजन्यवर्ग के रूप में [समाज की रक्षा के कार्य में संलग्न] हैं, इसकी जंघाएँ वैश्य के रूप में [सम्पूर्ण समाज के योगक्षेम का दायित्वनिर्वाह कर रही] हैं और पैरों से जैसे शरीर चलताफिरता रहता है, उसी प्रकार शूद्र [नामक चतुर्थ वर्ण इस समाज को निरन्तर आगे बढ़ाने का महान् कार्य कर रहा] है। [अभिप्राय यह कि सम्पूर्ण समाज ही विभिन्न अवयवों के रूप में विराट् पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित है।]

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत।। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।।

१२. उस विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा, आँखों से सूर्य, कानों से वायु (प्राण) और मुख से अग्निदेव प्रकट हुए।

नाभ्याऽ आसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।। पद्भ्याम्भूमिर्दिशः श्रोत्रा त्तथा लोकाँ२ऽ अकल्पयन्।।१३।।

१३. विराट् पुरुष स्वरूप परमात्मा की नाभि से आकाश, सिर से द्युलोक (स्वर्ग), पाँवों से भूमि, कानों से दिशाएँ आविर्भूत हुईं। इसी प्रकार अन्य लोकों की रचना सम्पन्न हुई।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।। वसन्तोस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।।१४।।

१४. [सृष्टि-प्रक्रिया के उस प्रारम्भिक काल में] देवों ने [आगे की सृष्टि के विकास के लिए] जिस यज्ञ का अनुष्ठान किया उसमें [अन्य बाह्य द्रव्यों के अभाव में] विराट् पुरुष की ही परिकल्पना हवि के रूप में की। जिसमें वसन्त ऋतु ने घृत का ग्रीष्म ऋतु ने ईंधन का तथा शरद् ऋतु ने हवि का कार्य किया।

विशेष – यह वास्तव में द्रव्ययज्ञ न होकर प्रतीकात्मक मानस अथवा आत्मयज्ञ है, जिसमें विभिन्न ऋतुओं ने विविधयागीय पदार्थों का कार्य किया तथा स्वयं यजमान की श्रद्धा और आत्मसर्पण की भावना ने हविष् की भूमिका निभाई।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सप्तास्यांसन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।। देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अबध्नन्पुरुषम्पशुम्।।१५।।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।। ते ह नाकंमहिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः ।।१६।।

३१/१-१६ यजु०

१५. इस [आत्म-] यज्ञ में [स्थूल शरीर, वासना शरीर, बहिर्मानस शरीर, अन्तर्मानस शरीर, बुद्धि, पराबुद्धि और जीव - ये] सात परिधियाँ अर्थात् मर्यादाएँ थीं; [- उव्वट के अनुसार सात समुद्र परिधियाँ थीं क्योंकि यह यज्ञ भारतवर्ष में सम्पन्न हुआ। यदि इसे आत्मयाग माना जाये तो पृथिवी, जल; तेज, वायु, आकाश, मन और बुद्धि - ये सात परिधियाँ मानी जा सकती हैं।] इस यज्ञ में २१ समिधाएँ [पञ्चमहाभूत, पाँच तन्मात्राएँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और मन] रखी गईं। देवगण जिस [आत्म] यज्ञ का विस्तार कर रहे थे, उसमें उन्होंने परमात्मा को [ध्यान योग से] यागीय पशु के रूप में बाँधा। ['पश्यति इति पशुः' इस व्युत्पत्ति से सर्वद्रष्टा परमात्मा ही वास्तविक पशु है।]

देवों ने इस प्रकार यज्ञानुष्ठान की पवित्र भावना से ही आत्मयज्ञ का अनुष्ठान किया। वे ही प्रथम धर्म बने। इसके फलस्वरूप उन्होंने महिमान्वि होकर उन्हीं सुखमय लोकों को प्राप्त किया, जहाँ पूर्वकल्पों के तपस्वीगण निवास करते हैं।

ॐअद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्रे।। तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।१।।

१. प्रारम्भ में विश्वकर्मा परमात्मा के प्रयत्न से पृथिवी के ऊपर जलरूप रस से [कृषि आदि से उत्पन्न पदार्थ] परिपुष्ट हुए। विश्व का निर्माता वह महाशिल्पी (त्वष्टा) उस विश्व का रूप बनाता हुआ आगे बढ़ता है। उसी परमात्मा ने पहले मानव को देवत्व प्रदान किया - ऐसा मैं जानता हूँ।

विशेष - उव्वट ने 'त्वष्टा' का अर्थ प्रजापति अथवा ब्रह्मा किया है। महीधर का कथन है कि त्वष्टा प्रतिदिन आदित्य के रूप में उसी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जलमय रस का रूप धारण करते हुए उदित होता है। 'आजान' शब्द का अर्थ महीधर के अनुसार वे देव हैं जो सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न हुए

वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्णन्तमसः परस्तात्।। तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।।२।।

२. मैं उस महान् पुरुष को जानता हूँ, जो अन्धकार से परे और आदित्य के समान प्रकाशमय है। इस पुरुष को जानकर ही [उपासक] मृत्यु [की विभीषिका] को पार करता है। मृत्यु से परे जाने के लिए दूसरा कोई मार्ग नहीं है।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽ अन्तरजायमानो बहुधा विजायते।। तस्य योनिम्परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।।३।।

३. प्रजापालक परमात्मा सब पदार्थों के अन्दर विद्यमान है। सबके भीतर वही क्रियाशील है। यद्यपि वह अजन्मा है, तथापि अनेक प्रकार से प्रकट होता है। ज्ञानी जन ही उसके मूलस्वरूप का साक्षात्कार कर पाते हैं। उसी में समस्त भुवन स्थित हैं।

यो देवेभ्यऽ आतपति यो देवानाम्पुरोहितः।। पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये।।४।।

४. जो देवों को प्रकाशित करता है, जो देवों का पुरोहित है अर्थात् उन्हें आगे ले जाता है तथा जो देवों से पूर्व प्रकाशित हो रहा है, उस तेजस्वी ब्रह्म को मेरा नमस्कार है।

विशेष – अभिप्राय यह कि सूर्य, चन्द्र और अग्नि इत्यादि सभी तेजोविधायक देव परमात्मा के ही प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं।

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽ अग्रे तदब्रुवन्।। यस्त्वैवम्ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽ असन्वशे।।५।।

५. ब्रह्मज्ञान प्रकट करने वाले देवों ने प्रारम्भ में ही यह कहा था कि जो ज्ञानी पुरुष इस प्रकार से परमात्मतत्त्व को जानता है, उसके वश में सभी देवगण हो जाते हैं।

विशेष – सातवलेकर जी ने 'तस्य देवा असन्वशे' का अर्थ किया है कि उसके वश में उसकी इन्द्रियाँ रहती हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीश्चर्च ते लक्ष्मीश्चच पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।। इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाणा सर्वलोकम्मऽ इषाण।।६।।

६. [हे परमात्मदेव!] सुख, समृद्धि और सौन्दर्य की अधिष्ठात्री श्री एवं लक्ष्मी संज्ञक देवियाँ तुम्हारी पत्नी हैं। दिन और रात्रि तुम्हारी दोनों भुजाएँ हैं। नक्षत्र तुम्हारा रूप है। द्यु और पृथिवी लोक तुम्हारा खुला हुआ मुख है। सोचता हूँ कि मैं किसकी इच्छा करुँ? मैं इच्छा करता हूँ कि सभी लोकों [के भोग और मोक्ष] की मुझे प्राप्ति हो।

तृतीय अध्याय

[यजुर्वेद के १७वें अध्याय के इस अनुवाक के ऋषि अप्रतिरथ हैं। इनमें से प्रथम १२ मन्त्रों के देवता इन्द्र हैं। त्रिष्टुप् छन्द में निबद्ध ये सभी मन्त्र-अत्यन्त ओजस्वी हैं।]

१. ।। यजु० १७.३३ ।।

ॐआशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।। सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतं सेनाऽ अजयत्साकमिन्द्रः ।।

अद्वितीय महावीर इंन्द्र बड़े वेग से शत्रुओं पर आक्रमण करनेवाला, अपने शस्त्रास्त्रों को अत्यन्त तीक्ष्ण बनाये रखने वाला, वृषभ के समान भयङ्कर, शत्रुओं का निरन्तर संहार करने वाला, समस्त शत्रु-सेना को त्रस्त तथा पस्त कर देनेवाला, बार-बार शत्रु-सेना को ललकारने वाला तथा बिना पलक झपकाये सावधान रहने वाला है। उसने सैकड़ों शत्रुओं की सेनाओं को पराजित किया है।

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना।। तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वंय्युधो नरऽ इषुहस्तेन वृष्णा।।२।।

२. ।। यजु० १७.३४ ।।

'ओ वीर योद्धाओं' तुम भयरहित, गर्जन करनेवाले, व्यूह-रचना में दक्ष, निरन्तर सजग, हाथों में [धनुष-] बाण लिये, जयशील, [अपने सहयोगियों पर सुख-सुविधाओं की] वर्षा करने वाले इन्द्र के प्रभाव से शत्रु-सेना को पराजित कर अपने वश में करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सऽ इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी सᳬस्रष्टा स युधऽ इन्द्रो गणेन।। सं सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता।।३।।

३. ।। १७.३५ ।।

– [शत्रुओं को] वश में करने वाला, हाथों में बाण लिये तथा खड्गधारी योद्धाओं को अपने साथ रखनेवाला इन्द्र अपने बाण के साथ संग्राम करता है। वह इन्द्र हमारी रक्षा करे, जो समवेत शत्रुओं को जीतनेवाला, सोमपायी, बाहुबली, उग्रधनुर्धर और अपने चलाये हुए बाणों से शत्रुओं को अस्त कर देने वाला है।

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँ२ऽ अपबाधमानः ।। प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्।।४।।

४. ।। १७.३६ ।।

– हे बृहस्पति देव! तुम रथ से चारों ओर आते-जाते हुए राक्षसों का संहार करते हो। शत्रुओं को पीड़ित करते हुए, [उनकी] सेनाओं को छिन्न-भिन्न करते हुए तथा युद्ध में लड़कर हिंसकों को जीतते हुए तुम हमारे रथों के संरक्षक के रूप में आगे बढ़ो।

बलविज्ञायस्थविरः प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽ उग्रः ।। अभिवीरोऽ अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित्।।५।।

५. ।। १७.३७ ।।

– हे इन्द्र! तुम सैन्य-संचालन में कुशल, अनुभवी योद्धा, सबको अनुशासन में रखने वाले, अत्यन्त शूरवीर, शत्रुजयी, बलवान्, वेगवान्, उग्र, वीरों से परिवेष्टित तथा ओजस्वी हो। तुम अपने विजयप्रद रथ पर आरोहण करो।

गोत्रभिदङ्गोविदं वज्रबाहुञ्जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा।। इमं सजाताऽअनुवीरयध्वमिन्द्रᳬ सखायोऽअनुसᳬ रभध्वम्।।६।।

६. ।। १७.३८ ।।

– हे सजातीय मित्रों! तुम इस [असुर] कुलों के विनाशक वाग्व्यवहार में कुशल, हाथ में वज्र धारण किये, [संग्राम-] विजेता तथा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपनी शक्ति से शत्रुओं को कुचल देने वाले इन्द्र को वीरोचित कर्म करने के लिए उत्साहित करो।

अभिगोत्राणिसहसागाहमानोऽदयोव्वीर शतमन्युरिन्द्रः ॥
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योस्म्माकꣳ सेनाऽ अवतु प्रयुत्सु॥७॥

७. ॥ १७.३३ ॥

– अपनी शक्ति से [असुर–] कुलों को पूरी तरह पराजित कर देने वाला, [वैरियों पर] दया का प्रदर्शन न करने वाला, शूरवीर, सैकड़ों बार क्रोध करने वाला, अजेय [शत्रु –] सेना को कुचल देने वाला, युद्ध में जिसका मुकाबला कोई न कर सके – ऐसा इन्द्र युद्धों के समय अपनी सेना की सुरक्षा करे।

इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्प्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽ एतु सोमः ॥
देवसेनानामभिभञ्जन्तीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम्॥८॥

८. ॥ १७.४० ॥

– बृहस्पति और इन्द्र शत्रुओं का मर्दन करनेवाली इन विजयिष्णु देवसेनाओं के नाकय और संचालक हैं। यज्ञ पुरुष विष्णु और सोम [हमारी] दाहिनी ओर रहें अर्थात् अनुकूल रहें। [विजय के इस अभियान में] मरुद्‌गण, [हमारी] सेना के आगे-आगे चलें।

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञऽ आदित्यानाम्मरुताꣳ शर्द्धऽ
उग्रम्॥ महामनसाम्भुवनच्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात्॥९॥

९. ॥ १७.४७ ॥

बहुत समझदार, भुवनमण्डल को प्रकम्पित कर देनेवाले, और विजयशील देवों, आदित्यों, मरुतों, वर्षाकारक इन्द्र और राजा वरुण के उत्कृष्ट बल के कारण [हमारी सेना का] जयघोष आकाश तक गूँज उठा।

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाꣳसि॥
उद्वृत्रहनवाजिनां वाजिनान्न्युद्रथानाञ्जयतांयन्तु घोषाः॥१०॥

१०. ॥ १७.४२ ॥

– हे इन्द्र! [तुम अपने] शस्त्रास्त्रों को तेज करो, हमारे पक्ष के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वीरों के मनों को उत्तेजित और उत्साहित करो। हे वृत्रहन्ता इन्द्र! घोड़ों को तेज दौड़ाने की [व्यवस्था] करो। [हमारे] विजयी रथों के जयघोष ऊपर [आकाश तक] गूंज उठें।

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्ष्वस्म्माकं याऽ इषवस्ता जयन्तु।। अस्म्माकं वीराऽ उत्तरे भवन्त्वस्म्माँ २ऽ उं देवाऽ अवताहवेषु ।।११।।

११. ।। १७.४३ ।।

– जब हमारे [रथों पर लगे] ध्वज [शत्रु के ध्वजों से] टकराने लगें, उस समय इन्द्रदेव हमारी रक्षा करें। हमारे बाण विजय प्राप्त करें। हमारी [सेना के] शूरवीर [शत्रु सेना को] दबोच लें। हमारी पुकार पर देवगण [युद्ध में आकर] हमारी रक्षा करें।

अमीषांञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्न्यप्वे परेहि।। अभि प्रेहि निर्द्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।।१२।।

१२. ।। १७.४४ ।।

– (अप्वे) समुद्र की तरह दूर-दूर तक लहराती हुई ओ हमारी सेना! तू इन [शत्रुओं] के चित्त को लोभ-मोह में डालकर फँसाती हुई इनके अङ्गों को जकड़ ले, [इनके बीच में] दूर-दूर तक घँस जा, चारों ओर से आगे बढ़ती हुई [अपनी ज्वाला से शत्रुओं के हृदयों को जलाकर खाक कर दे, जिससे हमारे दुश्मनों के दिलों में [पराजय और निराशा का] अँधेरा छा जाये।

अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मसं शिते।। गच्छामित्राप्रन्पद्यस्व मामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः ।।१३।।

१३. ।। १७.४५ ।।

– ओ मन्त्रकीलित तथा समझदारी से तेज किये गये बाणादि अस्त्रों! [जब] हम तुम्हें छोड़ें [उस समय तुम हमारे] दुश्मनों पर टूट पड़ो; उनको इसप्रकार अभिभूत कर लो कि उनमें से कोई भी [जीवित] न बच सके।

प्रेता जयता नरऽ इन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु।। उग्रा वः सन्तु बाहवोनाधृष्या यथासथ।।१४।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१४. ॥ १७.४६ ॥

– हे [वीर सेना] नायक! [शत्रु-सेना पर आगे बढ़कर] टूट पड़ो, उसे जीत लो। [महानायक] इन्द्र तुम्हारा कल्याण करें। तुम्हारी भुजाएँ प्रचण्ड बल से युक्त हो जाएँ, जिससे शत्रु तुम्हें अभिभूत न कर सके।

असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति न ऽ ओजसा स्पर्द्धमाना।। तां गूहत तमसापव्व्रतेन यथामीअन्योऽअन्यन्नजानन्।।१५।।

१५. ॥ १७.४७ ॥

– हे मरुतों! शत्रुओं की यह जो बल से इठलाती हुई सेना हमारी ओर बढ़ती चली आ रही है, उसे तुम [आँधी में उठी धूल और धुएें से इतना आच्छादित कर दो कि] उसके सामने अँधेरा छा जाये और वे लोग एक-दूसरे को भी न जान-पहचान सकें।

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखाऽ इव।। तन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म्म यच्छतु व्विश्श्वाहा शर्म्म यच्छतु।।१६।।

१६. ॥ १७.४८ ॥

– उस रणक्षेत्र में, जिसमें [धनुष से छोड़े गये] बाण [इतने बड़े परिमाण में और] इस प्रकार [इधर-उधर] गिरते हैं, जिसप्रकार शिखा-सूत्रहीन छोटे बच्चों के झुण्ड घूमते रहते हैं, बृहस्पति, देवमाता अदिति और इन्द्र हमारा सदा-सर्वदा बार-बार कल्याण करें।

मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्।। उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तत्वानु देवा मदन्तु।।१७।।

१७. ॥ १७.४९ ॥

– [युद्ध भूमि में हे हमारे सहायक शूरवीरों!] मैं तुम्हारे मर्मस्थानों को कवच से आच्छादित करता हूँ। राजा सोम तुम्हें अमृत से आच्छादित करें। वरुण देव तुम्हारे हृदय के कवच को सुदृढ़ बनाये रखें तथा देवगण तुम्हारे अन्दर उस समय उत्साहभाव का संचार करें, जिस समय तुम [युद्धभूमि में] विजय-प्राप्ति की ओर अग्रसर हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थ अध्याय

ॐव्विब्भ्राड् बृहत्पिबतु सोम्म्यमध्वायुर्द्दधंद्यज्ञपंतावविंहुतम्।। व्वातंजूतोयोऽअंभिरक्षंतित्मनांप्प्रजाः 'पुंपोषपुरुधाव्विरांजति।।१।।

१. ।। यजु० ३३.३० ।।

(जगती छन्द, सूर्यस्तुति)

विविध प्रकार से चमकने वाला और वायु से प्रेरित सूर्य यजमान को आयुष्य प्रदान करता हुआ तथा प्रजाओं का संरक्षण करता हुआ अत्यन्त मधुर सोमरस का पान करे। यह सूर्य [इस समय] विभिन्न दृष्टियों से अत्यन्त भास्वर लग रहा है।

उदुत्यञ्जातवेंदसन्देवंव्वंहन्ति केतवंः ।। दृशेव्विश्श्वांय-सूर्य्यंम्।।२।। ७/४१ यजु०

२. ।। यजु० ३३.३१ ।।

निश्चय ही, संसार भर को दिखाने के लिए सर्वज्ञ और सबके प्रकाशक सूर्यदेव को उसकी किरणें भलीभाँति ऊपर उठाती रहती हैं।

येनांपावकचक्षंसाभुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२ऽ अनुं।। त्वंव्वंरुण-पश्यंसि।।३।।

३. ।। ३३.३२ ।।

– हे पावनता के अधिष्ठाता वरुण! तुम जिस दृष्टि से भुरण्यु पक्षी के सदृश तेजी से गमन करते हुए [यज्ञानुष्ठाता] जनों को देखते हो, उसी अनुग्रहदृष्टि से हमें भी देखो न!

दैव्यांवद्धर्य्यूऽआगंत रथैंनसूर्यंत्वचा।। मध्वां यज्ञं स मंञ्जाथे।। तम्प्रत्नथायं व्वेनश्चित्रन्देवानांम्।।४।। ३३/३२-३३ यजु०

४. ।। यजु० ३३.३३ ।।

– देवताओं के यज्ञ में अध्वर्यु की भूमिका का निर्वाह करने वाले [हे अश्विनी कुमारों!] तुम सूर्य की कान्ति के सदृश चमचमाते [अपने] रथ से यहाँ आओ और मधुर हवियों के समर्पणपूर्वक इस यज्ञ को पूर्णता प्रदान करो। प्राचीन यज्ञों के समान इसे भी तुम देवों के आश्चर्यजनक तेज से सम्पन्न करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदंᳫं स्वर्व्विदम्।। प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे।।५।।

५. ।। ७.१२ ।।

– हे इन्द्र! तुम [जिन यज्ञक्रियाओं] में [सोमपान करके बार-बार] प्रोत्साहन पाते हो, उनमें [यजमान को] वह सबल फल प्रदान करते हो, जो फल प्राचीनकाल के [भृग्वादि ऋषियों], पूर्ववर्ती साध्यगणों, समस्त ऋषि पुत्रों और इस समय के [यजमानों से सम्बद्ध है तथा जो फल निरन्तर बढ़ने वाला है, वयोवृद्धों के मध्य सम्मान्य है, यज्ञों में सुशोभित होता है, शत्रुओं को प्रकम्पित करने वाला और शीघ्र विजय प्रदान कराने वाला है।]

अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भाज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने।। इममपाᳫं सङ्गमे सूर्यस्य शिशुन्नव्विप्रामतिभी रिहन्ति।।६।। ७/१६ यजु०

६. ।। ७.१६ ।।

यह (वेन) कान्तिमान, ज्योति का पुत्र सूर्य या चन्द्रमा, ग्रीष्म ऋतु के पश्चात् अर्थात् वर्षाकाल के आरम्भ हो जाने पर द्युलोक में संचित जलराशि को [भूमि पर] बरसने के लिए प्रेरित करता है। [भूतल पर जब विपुल] जलराशि एकत्र हो जाती है, उस समय मेधावी कविगण सूर्य की स्तुति एक शिशु के समान कमनीय रूप में करते हैं।

चित्रन्देवानामुदगादनीकंचक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्ग्नेः ।। आऽप्रा द्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्षं सूर्य्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।।७।। ७/४२ यजु०

७. ।। यजु० सं० ७.४२ ।।

किरणों या देवताओं का सामूहिक स्वरूप, आश्चर्यजनक, मित्र-वरुण एवं अग्नि के रूप में सम्पूर्ण संसार का नेत्रवत् प्रकाशक यह सूर्य उदित हो गया है। उसने द्युलोक, पृथिवी और अन्तरिक्ष को चतुर्दिक प्रकाश से भर दिया है। यह सूर्य गतिशील और स्थावर दोनों प्रकार के संसार की

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आत्मा है अर्थात् आत्मा की तरह यह सब को क्रियाशील बनाये रखता है।

आ न इडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्श्वानरः सविता देवऽ एतु।। अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्श्वञ्जगदभिपित्वे मनीषा।।८।।

८. ।। यजु० ३३.३४ ।।

– समस्त प्राणियों का हितकारी एवं सबका प्रेरक यह सविता देवता हमारी उस यज्ञशाला में पदार्पण करे, जो अपनी विपुल खाद्य सामग्री के कारण सुप्रशंसित है। सदैव तरुण रहनेवाले हे देवों! तुम भी यहाँ आकर तृप्ति और आनन्द प्राप्त करो तथा सद्बुद्धि देकर सम्पूर्ण जगत् को तृप्ति और आनन्द प्रदान करो।

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य।। सर्व्वन्तदिन्द्र ते व्वशे।।९।।

९. ।। ३३.३५ ।।

– हे वृत्रहन्ता इन्द्र! तथा अन्धकार के विनाशक सूर्य देव! तुम आज उन्नति के जिस [शिखरस्थ] स्थान पर उदित हो रहे हो – वह तुम्हारे वश में है अर्थात् उसे तुमने अपने ही प्रयत्न से प्राप्त किया है।

तरणिर्व्विश्श्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य।। व्विश्श्वमाभासि रोचनम्।।१०।।

१०. ।। ३३.३६ ।।

– सम्पूर्ण आकाश मार्ग का अतिक्रमण करने वाले हे सूर्य देव! [तुम सम्प्रति] सभी को दिखाई पड़ रहे हो, तुमने [सम्पूर्ण जगत् को] आलोकित कर दिया है, तुम्हीं सबको प्रकाशित कर रहे हो।

तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततं सञ्जभार।। यदेदयुक्त हरितः सधस्त्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै।।११।।

११. ।। ३३.३७ ।।

– सबको प्रेरणा देने वाले सूर्य देव का यही देवत्व है और यही उनका महत्त्व है, जो वे कार्यों के मध्य में ही अपने किरण जाल को समेट लेते हैं। जिस समय अपने हरे रंग के घोड़ों [से युक्त रथ] को

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

संसार से हटाते हैं, उसके बाद में ही रात्रि सम्पूर्ण विश्व को ढकने के लिए अन्धकार की चादर को फैला देती है।

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपङ्कृणुते द्योरुपस्थे।। अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति।।१२।।

१२. ।। ३३.३८ ।।

उदयकाल में सूर्य आकाश के शिखर पर मित्र और वरुण से उपलक्षित समग्र जगत् को प्रकाशित करने के लिए अपने तेजोमय रूप को प्रकट करता है। इस सूर्य के हरे रंग के घोड़े या किरणें कभी तो विलक्षण, व्यापक और अपार चमक से युक्त बल अर्थात् तेज का प्रसार करती हैं और कभी इससे भिन्न काले अन्धकार को फैला देती हैं। तात्पर्य यह कि दिन में प्रकाश और रात में अन्धकार दोनों का ही कारक सूर्य है।

बण्महाँ२ऽ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ२ऽ असि।। महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महाँ२ऽ असि।।१३।।

१३. ।। ३३.३९ ।।

– हे सूर्यदेव! (वट्) सत्य ही, (महाँ असि) तुम महान् हो। हे आदित्यदेव! वास्तव में तुम महान् हो। महान् होने के कारण ही तुम्हारी महिमा की स्तुति की जाती है। हे देव! सत्य ही तुम सर्वाधिक श्रेष्ठ हो।

बट् सूर्य्य श्श्रवसा महाँ२ऽ असि सत्रा देव महाँ२ऽ असि।। मन्हा देवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिरदाब्भ्यम्।।१४।।

१४. ।। ३३.४० ।।

– हे सूर्यदेव! तुम सच ही यश अथवा वैभव के कारण महान् हो। तुम प्राणप्रद होने के कारण [समस्त प्राणियों और] देवों के मध्य में सर्वोपरि हो। तुम सर्वव्यापक ऐसी ज्योति हो, जिसे कोई क्षीण नहीं कर सकता है।

श्रायन्तऽ इव सूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत।। व्वसूनि जाते जनमानऽ ओजसा प्रति भागन्न दीधिम।।१५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१५. ।। यजु० ३३.४१ ।।

[हे मनुष्यों!] तुम सबके प्रेरक सूर्य देव के प्रकाश के आश्रय में ही समस्त धन-धान्य का उपभोग करो। जिस प्रकार हम सभी उत्पन्न हुए [और आगे भविष्य में] उत्पन्न होने वाले संसार में स्वार्जित धन का उपभोग करते हैं, वैसे ही [तुम लोग भी] अपने बल-पराक्रम से धन-दौलत का उत्पादन और उपभोग करो।

अद्या देवाऽ उदिता सूर्य्यस्य निरꣳ हंसः पिपृता निरवद्यात्।। तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽ उतद्यौः।।१६।।

१६. ।। ३३.४२ ।।

– प्रदीप्त होती हुई हे सूर्य की रश्मियों! तुम आज सूर्य देव के उदित हो जाने पर हमें पाप से छुड़ाओं और निन्दनीय कर्मों से बचाओ। हमारी इस प्रार्थना का अनुमोदन मित्र, वरुण, अदिति, सिन्धु, पृथिवी और द्युलोक करें।

विशेष – मित्र सूर्य का वह स्वरूप है, जो हिंसा से बचाता है। वरुण लोक का आवरण करने वाली शक्ति है। अदिति अखण्डनीय शक्तिशाली देवमाता है। सिन्धु स्यन्दनशील जलाधिष्ठित देवशक्ति है।

आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।१७।।

१७. ।। ३३.४३ ।।

– सबका प्रेरक सविता देवता अपने सुवर्णमय रथ से रात्रि के कृष्णवर्णीय अन्तरिक्ष पथ में भ्रमण करते हुए, देवों और मनुष्यों को अपने-अपने कार्यों में लगाते हुए तथा सम्पूर्ण भुवनों का निरीक्षण करते हुए पदार्पण कर रहा है।

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐनमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतोत इषवे नमः।। बाहुभ्यामुत ते नमः ।।

१. ।। शु० यजु० १६.१ ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

– हे रुद्रदेव! तुम्हारे क्रोध रूप को नमस्कार! तुम्हारी दोनों भुजाओं तथा [धनुष –] बाण को भी नमस्कार है।

विशेष – शिव की त्रिपुरान्तक मूर्ति में धनुष-बाण का समावेश है। कृष्णयजुर्वेदं (तैत्तिरीय शाखा) में इस मन्त्र के बाद 'या त इषुः शिवतमा शिवं बभूव ते धनुः। शिवा शरव्याया तव तया नो रुद्र मृडय' मन्त्र है। इसमें निवेदन किया गया है कि रुद्र के वे धनुष-बाण और तरकस, जो शान्त हो गये हैं, हमें वे कल्याणकारी बनकर सुखोपलब्धि करायें। अभिप्राय यह कि रुद्र का क्रोधयुक्त स्वरूप उनसे विमुख व्यक्ति के लिए है, जबकि यह शान्त और कल्याणकारी रूप भक्तों के लिए है।

या ते॑ रुद्र शि॒वा त॒नूरघो॒राऽपा॑पकाशिनी।। तया॑ नस्त॒न्वा॒ शन्त॑मया॒ गिरि॑शन्ता॒भिचा॑कशीहि।।

– हे गिरिशन्त रुद्र! हमारे सामने आपका वह रूप प्रकट हो, जो अघोर, पापनाशक, कल्याणकारी और परम शान्त है।

विशेष – शिव की वामदेव या दक्षिणामूर्ति अघोर है तथा भैरवमूर्ति घोर है। महाभारत में शिव के ये दोनों ही रूप-घोर तथा सौम्य इस प्रकार निरूपित हैं –

द्वे तनू तस्य देवस्य देवज्ञा ब्राह्मणा विदुः।
घोरा चान्या शिवा चान्या ते चैव शतधा पुनः।।

'गिरिशन्त' शब्द में तीन अवयव हैं – गिरि, शम् तथा त (तनोति) –'गिरि' शब्द उभयार्थक है – [कैलासाख्य] पर्वत तथा वाणी में। अभिप्राय यह कि जो कैलासपर्वत पर निवास करते हुए अथवा वेदों की वाणी में सन्निविष्ट होकर उपासकों के कल्याण का विस्तृत विधान करते हैं। 'शिवमहिम्न स्तोत्र' में इसीलिए कहा गया है कि हे शिव! अमंगलों से भरे इस जगत् में केवल तुम्हारा नाम ही मंगलकारक है – 'अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमाखिलम्'।

यामिषुं॑ङ्गिरिशन्त॒ हस्ते॒ बि॒भ॒र्ष्यस्त॑वे।। शि॒वाङ्गि॑रित्र॒ ताङ्कु॑रु॒ मा हिं॑ सीः पुरु॑ष॒ञ्जग॑त्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३. ॥ १६.३ ॥

– हे कैलासाधिष्ठित प्रभो! वेदों की वाणी में भी तो तुम्हीं सन्निहित हो, तुम्हीं तो उसके संरक्षक हो! तुमने अपने हाथ में जिस बाण को लिया है, उसे कल्याणकारी करो, जिससे जगत् और उसके निवासियों को वह आघात न पहुँचाये।

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमनाऽ असत्।।

४. ॥ १६.४ ॥

– हे हिमालय पर अधिष्ठित रुद्रदेव! तुम्हारे ही कल्याणकारी वचनों के प्रभाव से हम तुम्हारा विमल कीर्तन करते हैं, स्वच्छ हृदय से तुम्हारी चर्चा करते हैं, जिससे हमारा यह समस्त जड़ तथा चेतन जगत् सर्वथा दु:खरहित रहे और सबमें पारस्परिक सौमनस्य का संचार हो।

अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।। अहींश्च्च सर्व्वाञ्जम्भ्यन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्यो धराचीः परासुव।।

५. ॥ १६.५ ॥

– शिव स्वरूप रुद्र देवों के मध्य प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ हैं, वे ऐसे दैवी वैद्य हैं, जो सारी पीड़ाओं का निराकरण कर देते हैं, उन्होंने उस ज्ञान का उपदेश किया है, [जो प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणों से ज्ञेय नहीं है], आप हमारे सम्मुख विद्यमान समस्त बाधाओं, प्रलोभनों तथा निम्नगामिनी विषयवृत्तियों को दूर करें।

असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुणऽ उतबभ्रुः सुमङ्गलः ।। ये चैनं रुद्राऽअभितो दिक्षु श्श्रिताः सहस्रशोवैषाꣳहेडऽ ईमहे।।

६. ॥ १६.६ ॥

– रुद्रदेव का जो स्वरूप [कभी] ताम्र (ताँबे के रंग का), [कभी] अरुण [और कभी] भूरे रंग का दिखलाई देता है, विभिन्न रंगों में दृश्यमान् वे सभी रूप-स्वरूप अत्यन्त सुमङ्गल कारक हैं। इस ब्रह्माण्ड को चारों ओर से समस्त दिशाओं में जिन हजारों अर्थात् असंख्य रुद्रों ने परिव्याप्त कर रखा है, उनके क्रोध का निवारण करने के लिए हम उन सभी की स्तुति करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशेष – पारम्परिक मान्यता है कि इस मन्त्र में रुद्र अथवा शिव की आदित्यमूर्ति का निरूपण है। शिव के ताम्र और अरुण वर्ण के स्वरूप उन साधकों को दिखाई देते हैं जो उदयकाल में अत्यन्त लाल या ताँबे के रंग के सूर्य के दर्शन तारकोपेता सन्ध्या करते समय करते हैं। उसके बाद क्रमशः सूर्य अरुण और भूरे वर्ण का हो जाता है। उसकी असंख्य किरणें ही, जो समस्त भुवन-मण्डल को आच्छादित कर लेती हैं, सहस्रों रुद्रों के रूप में यहाँ वर्णित हैं।

असौयोवसर्प्पति नीलंग्ग्रीवो व्विलोहितः।। उतैनंङ्गोपाऽ-अंदृश्श्रन्नदृंश्श्रन्नुदहार्य्युः सः दृष्टो मृडयाति नः ।।

७. ।। १६.७ ।।

– [धीरे-धीरे अपने] लाल रंग को छोड़कर [सूर्य जब] आगे बढ़ता है, तो वह भी नीलकण्ठ भगवान् शिव का स्वरूप है। उस समय के [आदित्य स्वरूप] रुद्र का [गायें चराने के लिए निकली] गोपाङ्गनाएँ और [पानी भरती हुई] पनिहारिनें भी साक्षात्कार कर लेती हैं। [उस समय] देखा गया वह आदित्यस्वरूप रुद्र हमें अत्यन्त सुखद प्रतीत होता है।

नमोऽस्तु नीलंग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।। अथो येऽअस्यसत्त्वानो हन्तेब्भ्यो करन्नमः।।

८. ।। १६.८ ।।

असंख्य नेत्रों अथवा अपरिच्छिन्न दृष्टिवाले भगवान् शिव को नमस्कार! वे आनन्द की वर्षा करने वाले हैं। उनके जो [बहुसंख्यक] सात्त्विक स्वरूप अथवा प्रमथगण हैं, उन्हें भी मैं नमन करता हूँ।

विशेष - 'सत्वानः' पद से रुद्र के सात्विक अर्थात् बल सम्पन्न स्वरूपों तथा शिव के गण-दोनों का ही ग्रहण करना उचित है इन गणों ने अपने ज्ञान, तपस्, संयम और ब्रह्मचर्य के बल पर शिवलोक में पहुँचकर भगवान् के सायुज्य को प्राप्त कर लिया है।

प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयोरात्न्योंज्ज्याम्।। याश्च्चते हस्तऽइषवः परा ता भगवो व्वप।।

९. ।। १६.९ ।।

– भगवन्! आप [अपने] धनुष की प्रत्यञ्चा को दोनों ओर से उतार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

दें, और जिन बाणों को आपने हाथ में ले रखा है, उन्हें भी [नीचे] रख दें।

विज्ज्यन्धनुः कपर्दिनो विशल्ल्यो बाणवाँ २ उत।। अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः।।

१०. ।। १६.१० ।।

– जटाजूटधारी भगवान् शिव अपने धनुष से प्रत्यञ्चा उतार दें और बाणों से भी शल्यभाग को पृथक् कर दें। जिससे वे वेधन न कर सकें, इस प्रकार तरकस बाणरहित हो जायें तथा खड्ग म्यान में ही रहे – उसे भी बाहर न निकालें, वह केवल लटकी रहे।

विशेष – वेदान्त के विद्वानों के अनुसार 'कपर्द' पद वास्तव में वृत्ति-चतुष्टय के आश्रय अन्तःकरण का द्योतक है। जिन बाणों को विशल्य करने के लिए कहा गया है, वे काम, क्रोध, लोभ और मोहमय हैं। शिव की कृपा से ही ये निष्क्रिय हो सकते हैं।

या ते हेतिर्म्मीढुष्ट्टम हस्ते बभूव ते धनुः।। तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज।।

११. ।। १६.११ ।।

– (मीढिष्टुम) हे परम दयालु शिव! सर्वविध अभीष्ट कामना को पूर्ण करने वाले प्रभो! आपके हाथ में जो धनुष एवं अन्य शस्त्र हैं, उनके द्वारा आप हमारे सभी प्रकार के कष्टों का निराकरण करके हमारा परिपालन करें।

विशेष – 'अयक्ष्मया' पद का अभिप्राय है उपद्रवों से रहित। 'हेति' शब्द शस्त्रवाचक है।

परि ते धन्वनो हेतिरस्म्मान्वृणक्तु विश्श्वतः।। अथो यऽ इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम्।।

१२. ।। १६.१२ ।।

– [रुद्रदेव!] आपके धनुष से छोड़े गये [बाणादि] अस्त्र हमारी ओर किसी भी तरफ से न आयें। अपने तरकस [के तीरों] को हमसे बहुत दूर रखें। आपके धनुष पर आरोपित अस्त्र हमारी सर्वविध उपद्रवों से रक्षा करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे।। निशीर्य्य शल्यानांमुखा शिवो नः सुमना भव।।

१३. ।। १६.१३ ।।

– हे सहस्राक्ष! हे अनन्त तरकस युक्त [महादेव!] आप अपने धनुष [की प्रत्यञ्चा] को उतारकर, बाणों में लगे शल्यों को निकालकर, हमारे लिए कल्याणकारी तथा सौमनस्यप्रद हों।

नमस्तऽ आयुधायानाततायं धृष्णवे।। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।।

१४. ।। १६.१४ ।।

– आपके उस धनुष को नमस्कार जो उतरी हुई प्रत्यञ्चावाला होने पर भी अत्यन्त प्रभावशाली है। हे धनुर्धर [पिनाकपाणे]! आपकी दोनों भुजाओं को भी हमारा नमन।

मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मा नाऽउक्षन्तमुत मा नोऽ उक्षितमा। मा नो व्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वो-रुद्ररीरिषः।।

१५. ।। १६.१५ ।।

– हे रुद्रदेव! आप हमारे [समाज एवं परिवार के] वयोवृद्ध जनों की [किसी भी प्रकार के रोग-शोकादि से] हिंसा मत करें [साथ ही] न तो हमारे बच्चों की, न जवानों की, न गर्भगत शिशुओं, न माता-पिता की और न हमारे प्रियजनों अथवा प्रियशरीरों को ही किसी प्रकार से क्षति पहुँचाये।

मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्श्वेषु रीरिपः ।। मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।

१६. ।। १६.१६ ।।

– हे रुद्रदेव! आप क्रोधपूर्वक हमारे बाल-बच्चों को, गायों को, घोड़ों को वीरों (-भाइयों एवं अन्य पारिवारिक लोगों) तथा महिलाओं को क्षति न पहुँचाइए। आप हमारी अपनी आयु में भी कमी न कीजिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हवि-समर्पणपूर्वक हम आपका अपने अनुष्ठानों में [निरन्तर] आह्वान कर रहे हैं।

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्चपतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमोनमः शष्पिञ्जरायत्विषीमतेपथी-नाम्पतये नमोनमोहरिकेशायोपवीतिनेपुष्टानाम्पतये नमः

१७. ॥ १६.१७ ॥

[इस मन्त्र से प्रारम्भ करके १६.४६ तक के मन्त्र 'नमः' पद से युक्त हैं। इन सभी में रुद्र की सर्वेश्वरता अथवा विश्वरूपता का निरूपण है। रुद्र का सम्बन्ध प्रपञ्चगत सभी तत्त्वों से इन मन्त्रों में स्थापित किया गया है। मूर्त, अमूर्त और मूर्तामूर्त सभी विभूतियों में रुद्र की परिव्याप्ति इनमें प्रदर्शित है।] – भुजाओं में स्वर्णालङ्कार धारण करने वाले महाबाहु सेनापति रुद्र के लिए नमस्कार! दिशाओं के अधिपति अर्थात् समस्त जगत् के रक्षक को नमस्कार! पर्णरूप हरे-हरे केशों वाले वृक्ष रूप रुद्रों को भी नमस्कार! पशुओं का पालन करने वाले रुद्रों को नमस्कार। कान्तिमान् हरी घास के रंगवाले रुद्रों को नमस्कार! मार्गों के स्वामी रुद्र को नमस्कार। यज्ञोपवीत धारण करने वाले नीले-नीले केशवाले (वृद्धावस्थारहित) रुद्र को नमस्कार। पुष्ट मनुष्यों के स्वामी रुद्र को नमस्कार।

नमो बभ्लुशायव्याधिनेन्नानाम्पतये नमो नमो भवस्यहे-त्यैजगताम्पतयेनमोनमोरुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमोनमःसूताया हन्त्यै व्वनानाम्पतयेनमः

१८. ॥ १६.१८ ॥

– कपिलवर्ण [और शत्रुओं को] वेधने वाले व्याधि रूप रुद्र को नमस्कार! ['बिभर्ति परमेश्वरम् इति बभ्लुः' – अर्थात् बभ्लु वह है, जो परमेश्वर को धारण करता है, इस व्युत्पत्ति के अनुसार 'बभ्लु' नन्दी वृषभ का वाचक है – तदनुसार 'बभ्लुशाय' का अर्थ है नन्दी पर सवार महादेव को नमस्कार।] अन्नराशि अर्थात् समस्त खाद्य पदार्थों अथवा भौतिक भोगों के स्वामी रुद्र को नमस्कार! संसार की आयुध की भाँति रक्षा करने वाले रुद्र को नमस्कार! जगत् के स्वामी रुद्र को नमस्कार!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उद्यत आयुध वाले रुद्र को नमंस्कार! क्षेत्रों अर्थात् समस्त प्राणिशरीरों के स्वामी रुद्र को नमस्कार! बिना आघात पहुँचाये रथ-सञ्चालन करने वाले [कुशल] सारथि रुद्र को नमस्कार! वनों के पालक रुद्र को नमस्कार!

विशेष - 'इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते' इस गीता के वचनानुसार 'क्षेत्र' शब्द से 'प्राणिशरीर' यह अर्थ लेना ही उचित प्रतीत होता है, लेकिन लौकिक सन्दर्भ में, आगे आये 'वनानां' के साथ संगति बिठाने के लिए 'कृषि क्षेत्रों के स्वामी' का अर्थ भी लिया जा सकता है। वनों में रहने वाले संन्यासियों, योगियों तथा वन्य समुदायों का ग्रहण भी इस पद से हो जाता है।

नमो॒रोहि॑ताय स्थ॒पत॑ये वृक्षाणा॒म्पत॑ये नमो॒नमो॑ भुव॒न्तयै॑वारिवस्कृ॒तायौष॑धीना॒म्पत॑ये नमो॒नमो॑ म॒न्त्रिणे॑वाणि॒जाय॒ कक्षा॑णा॒म्पत॑ये॒नमो॒नम॑ऽउ॒च्चैर्घो॑षायाक्र॒न्दय॑ते पत्ती॒नाम्पत॑ये॒नमो॒नमः॑

१९. लाल रंग वाले [तथा गृह, मन्दिर इत्यादि के रूप में] वास्तु-निर्माता रुद्र को नमस्कार। वृक्षों के पालक रुद्र को नमस्कार। भूमण्डल का विस्तार करने वाले तथा धन सम्पत्ति प्रदान करने वाले रुद्र को नमन। ओषधियों अर्थात् वनस्पतियों के पालक रुद्र को नमस्कार। उचित परामर्शदाता और [कुशल] व्यापारी रुद्र को नमस्कार। वनों के लता-पादपों के पालक रुद्र को नमस्कार। शत्रुओं को रुलाने वाले तथा [युद्ध के अवसर पर] उच्च स्वर से गर्जना करने वाले रुद्र को नमस्कार। पदाति सेना के महानायक रुद्र को नमस्कार।

विशेष - 'वारिवस्कृताय' का ऊपर 'धनसम्पत्ति के उत्पादक अथवा प्रदाता' अर्थ लिया गया है। 'वरिवस्' शब्द पूजा तथा सेवा अर्थ का भी वाचक है - 'वरिवस्या तु शुश्रूषा' (अमरकोश)। इस दृष्टि से 'उपासकों में उपासना अथवा आराधना की भवना उत्पन्न करने वाले' - यह अर्थ भी ग्रहण किया जा सकता है।

कृत्स्नाय॒तया॒धाव॑ते॒सत्त्व॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नम॒ः सह॑मानायनिव्या॒धिन॑ऽआव्या॒धिनी॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑निष॒ङ्गिणे॑ककु॒भाय॑स्ते॒नाना॒म्पत॑ये॒ नमो॒नमो॑निचे॒रवे॑परिच॒रायार॑ण्याना॒म्पत॑ये॒ नमः

२०. [हमारी रक्षा के लिए] धनुष पर पूरी प्रत्यञ्चा चढ़ाकर

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[शत्रुओं पर तत्काल] दौड़कर टूट पड़ने वाले रुद्र को नमस्कार! सात्विक शरणागतों के पालक रुद्र को नमस्कार। शत्रुओं के संहारक और व्याधियों का पूर्णतया निवारण करने वाले रुद्र को नमस्कार। [शत्रुओं को] चारो ओर से घेरने वाली शूरवीर सेनाओं के महानायक रुद्र को नमस्कार। उपद्रवकारियों का खड्ग से दमन करने वाले महान् रुद्र को नमस्कार। 'स्तेन' अर्थात् गुप्तचरों के पालक रुद्र को नमस्कार। अपहरण करने के लिए चारो ओर घूमने वाले रुद्र को नमस्कार। वनों का पालन करने वाले रुद्र को नमस्कार।

विशेष - आध्यात्मिक दृष्टि से 'स्तेन' का अर्थ सामान्य चोर न होकर साधक की अविद्या तथा अहंकार को, बिना उसकी जानकारी के ही, ले लेने वाले परमात्मा से है। 'परिचर' शब्द भी एक प्रकार से, यहाँ पाकेटमार के ही अर्थ में है। 'निचेरु' वह चोर है, जो चोरी करते समय बहुत सावधानी से इधर-उधर आता-जाता रहता है।

नमोवञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतयेनमोन-
मोनिषङ्गिणऽइषुधिमतेतस्कराणाम्पतयेनमोनमः सृकायिभ्योजिघांꣳस
द्भ्योमुष्णताम्पतये नमोनमोसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्योवि-
कृन्तानाम्पतयेनमः ॥

२१. ॥ १६.२१ ॥

ठगी और धोखाधड़ी करने वालों तथा अन्य प्रकारों से चोरी करने वालों के मालिक रुद्र को नमस्कार। [उपद्रवियों को शान्त करने के लिए] खड्गधारी और बाणों के तरकसधारी रुद्र को नमस्कार। तस्करों के सरगना रुद्र को नमस्कार। वज्र लेकर [शत्रुओं का] संहार करने वाले रुद्र को नमन। तलवार लेकर रात में घूमने-फिरने वाले रुद्रों को नमन। मार-काट करने वालों के सरगना रुद्र को नमस्कार।

विशेष - उपर्युक्त दो मन्त्रों से तत्कालीन समाज में बहुविध अपराध करने वालों के विषय में अच्छी जानकारी मिलती है। इनमें से बहुत-से शब्द चोरों, ठगों और तस्करों के सामान्य वाचक प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तव में वे इस प्रकार के अपराधों की लघुता और गुरुता के आधार पर दण्डविधि में निर्धारित अपकृत्यकारकों के विभिन्न स्तरों के सूचक हैं। 'वञ्चक', 'परिवञ्चक', 'स्तायु' 'तस्कर' इत्यादि इसी प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

के शब्द हैं। कुछ टीकाकारों ने इन शब्दों के आध्यात्मिक अर्थ करने का भी प्रयत्न किया है, लेकिन उसमें खींच-तान अधिक लगती है।

नमः उष्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चानाम्पतयेनमोनमः इषुमद्भ्योधन्वायिभ्यश्चवोनमोनमः आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्चवो नमोनमः आयच्छद्भ्योस्यद्भ्यश्चवो नमः

२२. ॥ १६.३२ ॥

पगड़ी धारण करने वाले और पर्वतों पर विचरण करने वाले रुद्र को नमन। [खेत-खलिहानों और घरों में] लूट-खसोट करने वालों के सरगना रुद्र को नमन। धनुष-बाण धारण करने वाले रुद्रों को नम्स्कार। [दुष्टों के दमनार्थ] धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर फिर उसपर शर-सन्धान करने वाले रुद्रो को नमस्कार। [पूर्वोक्त प्रयोजन के ही लिए] धनुष को खींचने वाले रुद्रों को नमस्कार। हे रुद्रदेवों! तुम्हें नमस्कार - तुम तो बाण-प्रक्षेपकर्ता हो।

विशेष - 'उष्णीषी' शब्द भी कुछ टीकाकारों के अनुसार, अच्छे अर्थ में नहीं है। तदनुसार यह उन सफेदपोश अपराधियों का द्योतक है, जो ऊपर से तो साफा-पगड़ी या टोपी धारण कर भले आदमी के रूप में दिखने का प्रयत्न करते हैं, लेकिन गुप्तरूप से अपराधसंचालन में संलग्न रहते हैं। 'कुलुञ्च' शब्द जमीनजायदाद के कागजों में हेराफेरी करने वाले पटवारियों या राजस्व विभाग के अन्य कर्मचारियों के लिए व्यवहृत हुआ है, जो खाता-खतौनी में बेइमानी करते रहते हैं झूठे दस्तावेज तैयार करते रहते हैं। 'कु' शब्द, टीकाकारों के अनुसार भूमि का वाचक है।

नमोविसृजद्भ्योविध्यद्भ्यश्चवो नमोनमः स्वपद्भ्योजाग्रद्भ्यश्चवो नमोनमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्चवो नमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्चवोनमः

२३. ॥ १६.२३ ॥

[शत्रुओं पर] बाण छोड़ने वालों के लिए नमन। [शत्रुओं को] वेधनेवाले रुद्रों को नमन। सोने वाले रुद्रों को नमन। जागनेवाले रुद्रों को नमन। आसन पर आसीन रुद्रों को नमन। [काम छोड़कर घर पर] बैठे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्रों को नमन। [काम करने के लिए तुरन्त] दौड़ पड़ने वाले रुद्रों को नमन।

विशेष - शिव की बहुत-सी मूर्तियाँ उपर्युक्त मुद्राओं में अंकित दिखलाई देती हैं।

नमः सुभाभ्यः सुभापतिभ्यश्चवो नमोमोश्श्वेभ्योश्श्वपतिभ्यश्चवो नमोनमऽ आव्याधिनीभ्योवि- विद्ध्यन्तीभ्यश्चवो नमोनमऽ उगणाभ्यस्तृꣳहतीभ्यश्चवो नमः

२४. ॥ १६.२४ ॥

सभाओं [में सभ्य जनों के रूप में विराजमान रुद्रों] को नमस्कार। सभापति रूप में समासीन रुद्रों को भी नमस्कार। अश्वों के रूप में [कार्यरत तथा] अश्वों के स्वामी रुद्रों को नमस्कार। सेनाओं में अधिष्ठित रुद्र-मूर्तियों को नमस्कार। शत्रु-संहार में निपुण सेनाओं के रूप में विद्यमान रुद्र मूर्तियों को नमस्कार। उत्कृष्ट भृत्यसमूहवाली [ब्राह्मी प्रभृति] रुद्र मूर्तियों को नमन। संहार में समर्थ [दुर्गा प्रभृति] रुद्रमूर्त्तियों को नमन।

विशेष - कुछ टीकाकारों के अनुसार 'आव्याधिनी' तथा 'विविध्यन्ती' पद सेनाओं के नहीं, अपितु उन स्त्रियों के वाचक हैं जो देखते ही पुरुष-हृदयों को वेध देती हैं, इन्द्रियों को स्तब्ध तथा प्रलुब्ध कर देती हैं। कुछ अन्य व्याख्याकारों ने इन शब्दों से योगिनी, भ्रामरी, डाकिनी, पिशाचिनी तथा घृणा, लज्जा इत्यादि पाशविक वृत्तियों को ग्रहण किया है। उत्कृष्ट श्रव्य समूह (उगणा) में इन्हीं टीकाकारों ने शान्ति, दान्ति, उपरति, तितिक्षा, समाधि तथा श्रद्धा को ग्रहण किया है।

नमो गुणेभ्यो गुणपतिभ्यश्चवो नमोनमोव्व्रातेभ्योव्व्रात- पतिभ्यश्चवोनमोनमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमो व्विरूपेभ्यो व्विश्श्वरूपेभ्यश्चवो नमः

२५. ॥ १६.२५ ॥

[देवों के अनुचररूप भूत] गणों को नमन। गणों के अधिपतियों को भी नमन। विशेष गणों तथा जनसमुदायों के नेताओं रूप में विद्यमान रुद्रों को नमन। बुद्धिमान् व्यक्तियों तथा उनके प्रतिनिधियों के रूप में विद्यमान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रुद्रों को नमन। विविध स्वरूपों वाले तथा बहुविध आकार-प्रकारवाले रुद्रों को नमन।

विशेष – 'गण' और 'व्रात' शब्द तत्कालीन समाज में प्रचलित अनेक प्रकार के संघों, संगठनों इत्यादि के वाचक हैं। प्राचीनकाल में प्रचलित गणराज्यपद्धति का भी इसमें संकेत है। कुछ टीकाकारों ने 'गृत्स' शब्द का अर्थ विषय लम्पट लिया है।

नमः भ्यः सेनाभ्य : सेनानिभ्यश्चवोनमोनमोरथिभ्योऽअरथेभ्यश्चवो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्चवो नमोनमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्चवो नमः

२६. ॥ १६.२६ ॥

सेनाओं और सेनापतियों के रूप में स्थित रुद्रों को नमस्कार। रथवानों और रथहीनों के रूप में विद्यमान रुद्रों को नमस्कार। रथस्वामियों और सारथियों के रूप में स्थित रुद्रों को नमस्कार। बड़ों अर्थात् सम्मानित जनों तथा शैशवावस्था में स्थित जनों के रूप में भी विद्यमान रुद्रों को नमस्कार।

नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्चवो नमोनमः कुलालेभ्यः कुर्म्मारेभ्यश्चवो नमो नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्चवो नमो नमः श्ववनिभ्योमृगयुभ्यश्चवोनमः

२७. ॥ १६.२७ ॥

बढ़ई तथा रथनिर्माता रूप रुद्रों को नमन। कुम्हार तथा लुहार रूप में विद्यमान रुद्रों को नमन। निषादों (मल्लाहों) तथा मछुओं के रूप में कर्मरत रुद्रों को नमन। कुत्तों के माध्यम से शिकार करने वाले रुद्रों को नमन।

विशेष – तक्षा, रथकार, कुलाल, कर्मार, निषाद इत्यादि तत्कालीन समाज में प्रचलित विभिन्न व्यवसायों के सूचक हैं। इन सभी में विद्यमान शिवत्व अथवा रुद्रत्व का साक्षात्कार इस मन्त्र में किया गया है।

नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्चश्वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नमः शर्वायचपशुपतये च नमो नीलग्रीवायच शितिकण्ठायच नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२८. ॥ १६.२८ ॥

– कुत्तों तथा उनके स्वामियों-किरात तथा चाण्डालादि रूपों में विद्यमान रुद्र को नमन। शिव के भव (सृष्टि को उत्पन्न करने वाले), रुद्र (दुःख को दूर करने वाले), शर्व (पाप को नष्ट करने वाले) तथा पशुपति (अज्ञजनों को संरक्षण प्रदान करने वाले) (नीलग्रीव) नीलकण्ठ तथा श्वेतकण्ठ (शितिकण्ठ) वाले रूपों को नमन प्रमुख।

विशेष – इस मन्त्र में उल्लिखित शिव अथवा रुद्र के प्रमुख नामों की व्युत्पत्तियाँ इस प्रकार हैं – **भव** – भवन्ति प्राणिनः अस्माद् इति भवः (जिससे प्राणी उत्पन्न होते हैं)।

रुद्र – रुत् दुःखं द्रावयति नाशयति रुद्रः। **शर्व** – शृणाति हिनस्ति पापम् इति शर्वः। **पशुपति** – पशून् अज्ञान् पाति रक्षति इति पशुपतिः। **शितिकण्ठः** – शितिः श्वेतः कण्ठः नीलातिरिक्तभागः यस्य स।

नमः कपर्द्दिनेचव्युप्तकेशायचनमः सहस्राक्षायच-शतधन्वनेच नमोगिरिशयायचशिपिविष्टायचनमो मीढुष्टमायचेषुमतेच

२९. ॥ १६.२९ ॥

जटाजूटधारी शिव को नमन। मुण्डित शिरवाले शिव को नमन। हजारों नेत्र और सैकड़ों धनुषों से युक्त रुद्र को नमन। [कैलासादि] पर्वतों पर निवास करने वाले तथा। [सभी प्राणियों में] विष्णु रूप से व्यापक, मेघरूप से अत्यन्त वर्षा करने वाले तथा बाणों से युक्त रुद्र को नम।

विशेष – 'शिपिविष्ट' शब्द विष्णु के पर्याय के रूप में कुछ स्थानों पर उल्लिखित है – 'विष्णुः शिपिविष्टः।' इसकी दूसरी व्युत्पत्तियाँ महीधर ने इस प्रकार दी हैं – (१) शिपिषु पशुसु विष्टः प्रविष्टः 'पशवो वै शिपिः' इति श्रुतेः अर्थात् सभी प्राणियों में अन्तर्यामीरूप में विद्यमान। (२) 'यज्ञो वै शिपिः' – यज्ञे अधिदेवतात्वेन प्रविष्टः शिपिरादित्यो वा मण्डलाधिष्ठाता। यास्क ने 'शिपि' शब्द से रश्मियों का अर्थ ग्रहण किया है।

नमोह्रस्वाय चव्वामनायचनमोवृहतेचव्वर्षीयसेचनमो व्वृद्धायचसवृधेच नमोग्र्यायच प्रथमाय च

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३०. ॥ १६.३० ॥

शिव के ह्रस्व (सूक्ष्म) तथा वामन रूपों को नमन। अनेक प्रौढ़, अतिप्रौढ़ तथा वृद्ध रूपों को नमन। शिव के बड़े होने के कारण पूज्य रूप को नमन। युवारूप को नमन। शिव के मुखिया और सर्वप्रथम रहनेवाले रूपों को नमन।

नमऽ आशवेचाजिरायचनमः शीघ्र्यायचशीभ्यायचनमऽ ऊर्म्यायचावस्वन्यायचनमोनादेयायचद्वीप्यायच॥

३१. ॥ १६.३१ ॥

व्यापक तथा शीघ्रगमन करने वाले रुद्र को नमन। वेगवान् तथा प्रवाहशाली रुद्र को नमन। लहरों में रहनेवाले तथा स्थिर जल में विद्यमान रुद्र को नमन। नदियों और द्वीपों पर रहनेवाले रुद्र को नमन।

विशेष - शीभ्याय - महीधर के अनुसार यह शब्द 'शीभृ' (कत्थने) धातु से निष्पन्न है, जिसका अर्थ है आत्मश्लाघी। सातवलेकर ने इसका अर्थ 'प्रवाहवान्' किया है। महीधर ने भी इस प्रकार के अर्थ का संकेत किया है।

नमोज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमः पूर्वजायचापरजायचनमो-मध्यमायचापगल्भायचनमोजघन्यायचबुध्न्यायच

३२. ॥ १६.३२ ॥

– बड़े तथा छोटे सर्वविध रूपवाले रुद्र को नमन। पहले उत्पन्न होने वाले (पूर्वज) तथा बाद में उत्पन्न होने वाले (अपरज), मध्यम रूपवाले तथा अविकसित रूपवाले, जघनों के मध्य उत्पन्न होनेवाले पशुओं के रूप में विद्यमान तथा वृक्षादि के मूल में होने वाले रुद्र को नमस्कार।

नमः सोभ्यायचप्रतिसर्य्यायच नमो याम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः श्लोक्क्यायचावसान्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्याय

३३. ॥ १६.३३ ॥

– सोभ्य अर्थात् पुण्य-पाप दोनों से युक्त मनुष्यलोक के रूप में विद्यमान रुद्र को नमन। शत्रु का पीछा करने वाले अथवा विवाहसूत्र को धारण करने वाले रुद्र को नमन। यमलोकस्थ पितरों तथा क्षेमलोक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ब्रह्मलोक) में विद्यमान अथवा पापियों को दण्ड देने वाले तथा कुशल-क्षेम करनेवाले रुद्र को नमन। वेदों के मन्त्र भाग तथा उपनिषद्भाग में अधिष्ठित रुद्र को नमन। उर्वर तथा धान्यसम्पन्न भूभाग में विद्यमान रुद्र को नमन।

विशेष - सोभ्य - महीधर ने इसे गन्धर्वनगरस्थ कहा है। साथ ही 'पुण्येन पापं लोकं नयति पापेन पापमुभाभ्यां मनुष्यलोकम्' - इस वचन के आधार पर 'उभाभ्यां सहितः सोभः' व्युत्पत्ति करते हुए मनुष्यलोक अर्थ भी किया है। 'प्रतिसर्याय-' पद की व्याख्या प्रतिसर के आधार पर की है, जो विवाह के अवसर पर हाथ में पहना जाने वाला सूत्र है। **श्लोक** - वैदिक मन्त्र भाग, **अवसान्य** - यह पद 'अवसानं समाप्तिः' इस व्युत्पत्ति के आधार पर उपनिषद् भाग का वाचक है।

नमो॒ वन्या॑य च॒ कक्ष्या॑य च॒ नमः॑ श्र॒वाय॑ च प्रतिश्र॒वाय॑ च॒ नम॑ऽ आ॒शुषे॑णाय चाशुर॑थाय च॒ नम॒ः शूरा॑य चावभे॒दिने॑ च॒

३४. ॥ १६.३४ ॥

वन तथा तदन्तर्गत लतादि गुल्मों में व्यापक रुद्र को नमस्कार। श्रव तथा प्रतिश्रव अर्थात् परा, पश्यन्ती, मध्यमा एवं वैखरी-वाणी के इन विविधरूपों में विद्यमान रुद्र को नमन। शीघ्रगामिनी सेना तथा शीघ्रगामी रथ में विद्यमान रुद्र को नमस्कार। शूरवीरों तथा शत्रु-विदारण में कुशल सैनिकों के रूप में विद्यमान रुद्र को नमस्कार।

विशेष - श्रव - तथा प्रतिश्रव - श्रूयते इति। परा, पश्यन्ती एवं मध्यमा वाणी केवल शास्त्रों में सुनी जाती है, अतएव 'श्रव' है। 'वैखरी' वाणी सामने भी सुनी-समझी जाती है, अतः प्रतिश्रव है।

नमो॑ बि॒ल्मिने॑ च कव॒चिने॑ च॒ नमो॑ व॒र्मिणे॑ च वरू॒थिने॑ च॒ नमः॑ श्रु॒ताय॑ च श्रुतसे॒नाय॑ च॒ नमो॑ दुन्दु॒भ्या॒य चाहन॒न्या॒य च॒

३५. ॥ १६.३५ ॥

– शिरस्त्राण तथा कवच धारण करने वाले रुद्र को नमन। लौहमय जिरहबख्तर धारण करने वाले तथा रथ के अग्रभाग में विराजमान रुद्र को नमस्कार। ज्ञानस्वरूप तथा विख्यात सेनावाले रुद्र को नमस्कार। ढोल, नगाड़े, परह, इत्यादि रणभेरियों के नाद में विद्यमान रुद्र को नमस्कार।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमो धृष्णवेच प्रमृशायच नमो निषङ्गिणेचेषुधिमते चनमस्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनमः स्वायुधायचसुधन्वनेच।।

३६. ॥ १६.३६ ॥

– रुद्र के प्रगल्भ (शत्रु–घर्षण में समर्थ) तथा पण्डित स्वरूप को नमस्कार। खड्गधारी तथा बाणों से भरे तरकस से युक्त रुद्र को नमस्कार। असह्य बाणों तथा अन्य शस्त्रास्त्रयुक्त रुद्र को नमस्कार। अच्छे आयुधों और श्रेष्ठ धनुषधारी रुद्र को नमस्कार।

नमः स्रुत्यायचपथ्यायचनमः काट्याय च नीप्याय चनमः कुल्यायचसरस्यायचनमोनादेयायचव्वैशन्तायच

३७. ॥ १६.३७ ॥

– [इस मन्त्र में रुद्र की बहुविध जलमूर्तियों का वर्णन है।] बहते हुए (स्रुत्य), रास्ते में विद्यमान (पथ्य) कूपजल (काट्य), कदम्ब वृक्ष के मूल में प्रवाहित (नीप्य), नाली के (कुल्य), सरोवर के (सदस्य) नदियों के और स्वल्प परिमाण ले सरोवर की वारिराशि में स्थित रुद्र को नमस्कार।

विशेष – उव्वट 'काट्य' से 'कूपजल' का अर्थ ग्रहण करते हैं और महीधर के अनुसार वह टेढ़े–मेढ़े ढंग से बहने वाला जल है। 'नीप्य' का अर्थ इन दोनों भाष्यकारों के अनुसार निम्नाभिमुखी जलराशि है।

नमः कूप्यायचावट्याय च नमो व्वीध्र्यायचातप्यायचनमो मेघ्याय च व्विद्युत्याय च नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्यायच

३८. ॥ १६.३८ ॥

– कूप में रहने वाले, अवट अर्थात् गर्त में रहने वाले, निर्मल प्रकाश में रहने वाले (वीध्र्य), [सूर्य के] आतप में रहने वाले, मेघ में विद्यमान, विद्युत् में विराजमान और वृष्टि तथा अवृष्टि दोनों में अस्तित्ववान् रुद्र को नमस्कार।

विशेष – आध्यात्मिक व्याख्या के पक्षधर विद्वज्जन 'कूप' तथा 'अवट' से मूलाधारचक्र को ग्रहण करते हैं, जिसमें कुण्डलिनी की सत्ता मानी गई है। 'मेघ्य' शब्द सहस्रार का द्योतक है, जो कुण्डलिनी के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ऊर्ध्वारोहण का लक्ष्य है।

नमो व्वात्यायचरेष्म्म्यायच नमोन्वास्तव्याय चवास्तुपायच नमः सोमायचरुद्राय चनमस्ताम्म्राय चारुणायच

३९. ॥ १६.३९ ॥

– वायु में विद्यमान, प्रलयकाल में स्थित (रेष्म्याय), गृह्य द्रव्यों में स्थित, वास्तु अर्थात् गृहादि के परिपालक के रूप में संस्थित, उमा के साथ स्थित (सोमाय), दुःखनाशक, उदयकाल में ताम्र अर्थात् रक्तवर्ण, [कुछ काल के पश्चात्] अरुणवर्ण [के सूर्यरूप में विद्यमान] रुद्र को नमस्कार।

विशेष – 'वास्तव्याय' तथा 'वास्तुपाय' से कुछ विद्वानों ने यह अर्थ लिया है कि रुद्र इस ब्रह्माण्ड रूप गृह के निवासी तो हैं ही, उसके अधिष्ठाता अथवा संरक्षक भी हैं

नमः शङ्गवेचपशुपतये च नमऽउग्राय चभीमायचनमोग्ग्रेवधायचदूरे वधायचनमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वक्षेब्भ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय॥

४०. ॥ १६.४० ॥

– कल्याणकारिणी वाणी बोलने वाले, प्राणियों के पालक, [शत्रुओं के सन्दर्भ में] उग्र तथा भयोत्पादक, शत्रुओं का आमने-सामने तथा दूर से ही वध करने वाले, शत्रु-संहारक और उनके प्रबल विनाशक, हरित पर्णों से युक्त वृक्षस्वरूपवाले तथा संसार से पार उतारने वाले रुद्र को नमस्कार।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च नमः क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तयेचनमऽइरिण्यायचप्रपत्थायच॥

४१. ॥ १६.४१ ॥

– सांसारिक सुख और [मृत्यु के बाद] मोक्ष के प्रदाता, कल्याणकारी तथा सुखकारक, मंगलमूर्ति और अत्यन्त शान्त तथा अपने उपासकों को निष्पाप करने वाले शिव को नमस्कार।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विशेष - मन्त्र में आये पदों में से कुछ की व्युत्पत्तियाँ इस प्रकार हैं -

शम्भवाय - 'शम्' (उपशमे) धातु से निष्पन्न हुआ शम् जो सुख का वाचक है - शम् भावयति इति शम्भवः तस्मै।

शङ्करः - शं लौकिकसुखं करोति इति शङ्करः।

मयोभवाय - मयः सुखं भवत्यस्मात्मयोभवः तस्मै।

नमः पार्य्याय चावार्य्यायचनमः प्रतरणायचोत्तरणायच नमस्तीर्थ्यायचकूल्ल्यायचनमः शष्प्यायचफेन्न्यायच।।

४२. ।। १६.४२ ।।

- [संसार-समुद्र के उस] पार विद्यमान तथा [संसार के] अवार अर्थात् इस पार या मध्य में विद्यमान शिव को नमन। [मन्त्र-जपादि के द्वारा पाप से] पार उतारने वाले, तीर्थ में निवास करनेवाले तथा [गङ्गादि पवित्र नदियों और मान सरोवर इत्यादि पवित्र सरोवरों के] किनारे रहने वाले, कुशों के अङ्कुरों में बसने वाले तथा [समुद्रादि के] फेन में रहने वाले शिव को नमस्कार!

विशेष - दूर्वा में शिव का निवास होने से ही उसे देवों पर चढ़ाया जाता है।

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः किं शिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तयेचनमऽइरिण्यायचप्रपथ्यायच।।

४३. ।। १६.४३ ।।

- [पवित्र गंगा, नर्मदा इत्यादि नदियों की] रेती तथा जलप्रवाह में विद्यमान रुद्र को नमन। साधारण पत्थरों या पत्थर के चूरे अथवा जमीं हुई बर्फ (किंशिल) तथा सुघड़ पत्थरों (क्षयण) में [समान रूप से] विद्यमान शिव को नमन। कौड़ी, सीप, शंख आदि में विद्यमान अथवा जटाजूटधारी (कपर्दी), सर्वान्तर्यामी (पुलस्ति) शिव को नमन। तृणरहित अनुर्वर भूमि और विशिष्ट मार्गों में विद्यमान शिव को नमन।

विशेष - उव्वट के अनुसार 'किंशिल' शब्द का प्रयोग वहाँ होता है, जहाँ यह सन्देह हो कि वह हिमीभूत जल है अथवा शिला है। महीधर इसे छोटे-छोटे अनगढ़ पत्थर अथवा उसके अर्थ में लेते हैं। 'पुलस्ति' शब्द की रचना वैदिकी प्रक्रिया के अनुसार महीधर 'थ' के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्थान पर 'त' तथा 'र' के स्थान पर 'ल' हुआ मानकर 'पुरस्थ' रूप में लेते हैं - पुरः अग्रे तिष्ठति पुलस्तिः। अभिप्राय स्वरूप सामने आया शिव का अन्तर्यामी स्वरूप)

नमो॒व्रज्ज्या॑यच॒गोष्ठ्या॑य च॒नम॒स्तल्प्या॑यच॒गेह्या॑-यच॒नमो॑हृद॒य्या॒य- चनिवे॒ष्प्या॒यच॒नम॒ः काट्या॑यचगह्व॒रेष्ठाय॑च॒।।

४४. ।। १६.४४ ।।

– गायों के चरने के स्थान पर और गोशाला में विद्यमान रुद्र को नमन। शय्या पर और घर में विद्यमान शिव को नमन। हृदय में जीव रूप में तथा नीहार जल में स्थित शिव को नमन। दुर्गम अरण्य प्रदेश अथवा कूपादि में स्थित तथा गहरी [पहाड़ी] गुफाओं अथवा गहरे पानी में विद्यमान शिव को नमन।

विशेष - आध्यात्मिक अर्थ के आग्रही विद्वानों ने 'व्रज्या' शब्द से परिव्रज्या के रूप में परिव्राजक (यति) अर्थ को लिया है। तदनुसार 'शय्या' से शेष शय्याशायी विष्णु की ओर संकेत है।

नम॒ः शुष्क्या॑यच हरि॒त्त्या॒यच॒नम॑ः पांꣳसव्या॒य-चरज॒स्या॒यच॒नमो॒ लोप्प्या॑यचोल॒प्प्या॒यच॒नम॒ऽऊर्ध्व्या॑यच॒ सूर्व्या॑यच॒।।

४५. ।। १६.४५ ।।

– सूखे काष्ठ और हरित [पर्णों] में [समान रूप से] विद्यमान शिव को नमन। धूलि और [पुष्प-] पराग में [समान रूप से] स्थित शिव को नमन। अगम्य स्थानों तथा लतादि में विद्यमान शिव को नमन। उर्वर भूमि अथवा बड़वानल तथा प्रलयकालिक अग्नि में [समानरूप से] विद्यमान शिव को नमन।

नम॑ः प॒र्ण्या॑यचपर्णश॒दाय॑ च॒नम॑ऽ उद्गु॒रमा॑णायचाभिघ्न॒तेच॒नम॑ऽ आखिद॒तेच॑प्रखिद॒तेच॒नम॑ऽ इषुकृद्भ्यो॑ धनु॒ष्कृद्भ्य॑श्चवो॒ नमो॒ नमो॑वः किरि॒केभ्यो॑ दे॒वाना॒ꣳ हृद॑येभ्यो॒नमो॑विचिन्व॒त्केभ्यो॒नमो॑ विक्षिण॒त्केभ्यो॒ नम॑ऽ आनिर्ह॒तेभ्यः ।।

४६. ।। १६.४६ ।।

[वृक्ष के हरे] तथा गिरे हुए पत्तों में [समानरूप से] स्थित, उद्यमी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्यक्तियों में स्थित शत्रुसंहारक शिव को नमन। [दुष्टों को] कष्ट देने वाले, [पापियों को] पीड़ित करनेवाले, बाणों और धनुषों को तैयार करने वाले रुद्रों को नमन। हे रुद्रों! (किरिकेभ्यः) तुम वृष्ट्यादि के द्वारा जगत् को बनाये रखते हो तथा दैवी प्रवृत्ति के सज्जन व्यक्तियों के हृदय स्वरूप हो, तुम्हें नमस्कार। तुम धर्मात्माओं और पापियों को अलग-अलग कर देते हो (विचिन्वत्केभ्यः) विविध उपायों से शत्रुओं का नाश कर देते हो (विक्षिणत्केभ्यः) तथा सब ओर परिव्याप्त रहते हो - तुम्हें नमस्कार।

द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित।। आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चनाममत्।।

४७. ।। १६.४७ ।।

– (द्रापे) हे शत्रुओं को दुर्दशा में डाल देने वाले! (अन्धसस्पते) सोम अथवा अन्न के पालक! (दरिद्र) परिग्रहरहित! (नीललोहित) नीलकण्ठ और रक्तवर्णीय शेष शरीरवाले रुद्रदेव! हमारे इन बाल बच्चों तथा गाय इत्यादि पशुओं को मत भयभीत करो, (मा रोक्) इन्हें किसी प्रकार से पीड़ित मत करो। (च किञ्चन मा आममत्) और [हमें तथा हमसे सम्बद्ध व्यक्तियों को] किसी भी प्रकार से रोगग्रस्त मत करो।

विशेष - 'द्राप' से कीचड़ अर्थ लेकर कुछ टीकाकारों ने 'द्रापि' का अर्थ 'माया में सने शिव' किया है।

इमारुद्रायतवसेकपर्दिनेक्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः ।। यथा शमसद्द्विपदे चतुष्पदेव्विश्श्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम्।।

४८. ।। १६.४८ ।।

– हम अपनी मानसिक भावनाओं को महाबली, जटाजूटधारी तथा वीरों के संरक्षक रुद्रदेव की सेवा में समर्पित करते हैं, अर्थात् उन्हें श्रद्धा से स्मरण करते हैं, जिससे [हम से जुड़े] द्विपदवर्ग (मनुष्यादि) तथा चौपाये पशुओं में सुख-शान्ति बनी रहे। [हमारे] इस गाँव [अथवा नगर] में सभी समृद्ध नीरोग तथा शन्ति सम्पन्न रहें।

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा व्विश्श्वाहा भेषजी।। शिवा रुद्रस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४९. ॥ १६.४९ ॥

– हे रुद्रदेव! तुम्हारा यह जो कल्याणकारी, सदा-सर्वदा शान्त तथा [रोग-दोष के निवारणार्थ] औषध या वैद्य स्वरूप व्यक्तित्व है, उससे तुम हमारे जीवन-हेतु सुख-शान्ति प्रदान करो। शारीरिक व्याधियों के निवारण के लिए तो तुम सर्वथा उपयुक्त वैद्य और औषध हो ही! [अपनी उस सामर्थ्य का हमारे जीवन में प्रयोग करो न!]।

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि- त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ॥ अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड॥

५०. ॥ १६.५० ॥

– (रुद्रस्य हेतिः नः परिवृणक्तु) रुद्रदेव के अस्त्रशस्त्र हमें छोड़ दें अर्थात् वे कभी भी हमें अपने प्रहार का लक्ष्य न बनायें। अघायु अर्थात् पाप करते हुए जीवन जीने की दुर्बुद्धि भी हमसे दूर रहे। (मीढ्वः) हे अभीष्ट फलदाता रुद्रदेव! धनी यजमान का भय दूर करने के लिए अपने मजबूत धनुष की प्रत्यञ्चा ढीली कर दो तथा हमारे बाल-बच्चों को [सदैव] सुखी रखो।

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव॥ परमे वृक्षऽ आयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि॥

५१. ॥ १६.५१ ॥

(मीढुष्टम) अत्यन्त अभीष्ट फलों के प्रदाता! (शिवतम) हे परमकल्याणकारी रुद्रदेव! तुम्हारा मन हमारे लिए सदैव शान्ति और सौमनस्य से परिपूर्ण रहे। ऊँचे वृक्ष पर अपने शस्त्रास्त्रों को रखकर चर्म को धारण किये तथा [मात्र] धनुष को लिये हुए तुम हमारे पास चले आओ।

व्विकिरिद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः॥ यास्ते सहस्रं हेतयोन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥

५२. ॥ १६.५२ ॥

(विकिरिद्) विविध प्रकार के उपद्रवों के विनाशक! (विलोहित) हे निष्कल्मष रुद्र! हे ऐश्वर्य शालिन्! आपको नमस्कार। आपके पास जो हजारों [प्रकार के] शस्त्रास्त्र हैं, वे हमें छोड़कर अन्य [अराजक, अपराधी और असामाजिक तत्त्वों] का संहार करें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ।। तासा मीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि।।

५३. ।। १६.५३ ।।

– हे ऐश्वर्य सम्पन्न रुद्रदेव! तुम्हारे हाथों में बहुत प्रकार के सहस्रों आयुध हैं। तुम उन सबके स्वामी हो। उन संहारक आयुधों के मुख हमारी ओर से हटा दीजिए।

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधिभूम्म्याम्। तेषांꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।

५४. ।। १६.५४ ।।

– धरती पर जो हजारों-हजार अर्थात् असंख्य रुद्र हैं, जो लोगों को रुला रहे हैं, उनके धनुषों को हम हजारों योजन दूर हटा रहे हैं।

अस्मिमन्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षे भवाऽ अधि।। तेषांꣳसहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।

५५. ।। १६.५५ ।।

इस अन्तरक्षि में और महासागरों में जो [असंख्य] रुद्र अवस्थित हैं, उनके धनुषों को हम हजारों योजन दूर हटा रहे हैं।

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवं रुद्राऽ उपश्श्रिताः ।। तेषांꣳ सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

५६. ।। १६.५६ ।।

– द्युलोक में जो [असंख्य] नीलकण्ठ और श्वेतकण्ठों वाले रुद्र अवस्थित हैं, उनके धनुषों की प्रत्यञ्चा को शिथिल कर हम हजारों योजन दूर फेंक रहे हैं।

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽ अधः क्षमाचराः ।। तेषांꣳ सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

५७. ।। १६.५७ ।।

– नीली गर्दनवाले और श्वेतकण्ठयुक्त जो 'शर्व' संज्ञक रुद्र नीचे पृथ्वी पर विचरण करते रहते हैं, उनके धनुषों को हम सहस्रों योजन दूर कर रहे हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये व्वृक्षेषु शष्प्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ।। तेषाᳬसहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्नमसि।।

५८. ।। १६.५८ ।।

– वृक्षों में जो पत्तों–जैसे हरे रंग के, नीली ग्रीवा वाले तेजोमय शरीर युक्त रुद्र विद्यमान हैं, उनके धनुषों को हम सहस्त्रों योजन दूर करने में लगे हैं।

ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।। तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

५८. ।। १६.५९ ।।

– जो भूतों के अधिपति हैं, अर्थात् प्राणियों को कष्ट देनेवालों के पालक हैं, उनमें से कुछ ने शिर मुँड़ा रखे हैं, और कुछ जटाजूटधारी हैं – उन सभी के धनुषों को हम हजारों योजन दूर करने में लगे हैं।

ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदाऽ आयुर्ष्युधः।। तेषाᳬ सहस्त्रयोजेनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

६०. ।। १६.६० ।।

– जो रुद्र मार्गों के अधिष्ठाता हैं, मार्गों के रक्षक हैं, अन्न से प्राणियों का पोषण करने वाले हैं, जिन्दगी को दाँव पर लगाकर युद्ध करने वाले (आयुर्युधः) हैं, उनके धनुषों को हम दूर हटाने में संलग्न हैं।

ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्त्ता निषङ्गिणः।। तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

६१. ।। १६.६१ ।।

– हाथों में भाले लिए हुए और [कमर में] तलवार बाँधे जो रुद्रगण तीर्थस्थानों में घूमते–फिरते हैं, उनके शस्त्रों को हम [सज्जनों से] दूर हटाने में लगे हैं।

येन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्।। तेषाᳬ सहस्त्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि।।

६२. ।। १६.६२ ।।

[जीवाणुओं के रूप में जो रुद्रगण] खाद्य सामग्री और पेय पात्रों में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बने रहते हैं तथा उन पात्रों से खाने-पीने वालों को विविध रोगों से ग्रस्त कर देते हैं, हम उनकी मारक शक्ति को दूर हटा रहे हैं।

यऽ एतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे।। तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि।।

६३. ।। १६.६३ ।।

इतने और इनसे भी अधिक जो रुद्रगण विभिन्न दिशाओं में फैलकर रह रहे हैं, हम उन सबके मारक प्रभावों को दूर करने में लगे हैं।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषव: ।। तेभ्यो दश प्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्द्धा: ।।

६४. ।। १६.६४ ।।

उन रुद्रों को नमन स्वीकार हो, जो द्युलोक में विद्यमान हैं तथा वृष्टि के माध्यम से बाण-वर्षा करते हैं अर्थात् कभी अतिवृष्टि तथा कभी अनावृष्टि से लोगों को पीड़ित करते रहते हैं, साथ ही प्रसन्न होने पर सुवृष्टि भी कर देते हैं। उन्हें नमस्कार करने के लिए हम अपनी दसों उँगलियों को क्रम से पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर तथा ऊपर की ओर करते हैं। तात्पर्य यह कि हम दोनों हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम करते हैं। वे रुद्रगण हमारी रक्षा करें। वे हमें सुखी करें। जिससे हम द्वेष करते हैं और जो हमसे द्वेष करता है, उसे हम इन रुद्रों की दाढ़ में रखते हैं।

तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्म: ।।

६५. ।। १६.६५ ।।

– वे रुद्र हमारा प्रणाम स्वीकार करें, जो अन्तरिक्ष में विद्यमान हैं और पवन जिनके बाण का काम करता है। उन्हें भी हम दोनों हाथ जोड़कर सभी दिशाओं में प्रणाम करते हैं। (शेषांश पूर्ववत्)।

नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्याँययेषामन्नमिषव: ।। तेभ्यो दश प्प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्दशोदीचीर्द शोर्द्धा: ।। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्म: ।। ॐ भू: ॐ भुव: ॐ स्व:।। 16/1-66

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

– वे रुद्रगण हमारा प्रणाम स्वीकार करें, जो धरती पर विराजमान् हैं। अन्न ही जिनका बाण है। अर्थात् अभक्षण, अपथ्यभक्षण और अतिभक्षण से लोगों में, नाराज होकर रोगोत्पन्न कर देते हैं, और प्रसन्न होने पर सुभिक्षसेवन से आरोग्य प्रदान करते हैं। उन्हें भी हम दसों उँगलियों को जोड़कर पाँचों दिशाओं में नमस्कार करते हैं। उनसे प्रार्थना हैं कि वे हमारी रक्षा करें, हमारे जीवन को सुखमय बनायें तथा हमसे द्वेष करने वाले शत्रुओं को अपनी दाढ़ों में दबाकर पीस डालें।

षष्ठ अध्याय

ॐ वयं॑ सोम व्रते तव मन॑स्तनूषु बिभ्र॑तः ।। प्रजाव॑न्तः सचेमहि ।।१ ।।

१. ।। यजु० सं० ३.५६ ।।

– हे सोम! हम तुम्हारे [द्वारा विहित] नियमों के पालनपूर्वक, शरीर की विभिन्न [अनुकूल तथा प्रतिकूल] स्थितियों में [भी] मानसिक [स्वास्थ्य बनायें रख कर] तथा पुत्र-पौत्रादि सन्तानों से युक्त रहकर [समाज की] सेवा करते रहेंगे।

एष तें रुद्र भागः सह स्वस्राम्बि॑कया तञ्जु॑षस्व स्वाहैष तें रुद्र भागऽ आखुस्तें पशुः ।।२ ।।

२. ।। ३.५७ ।।

– हे रुद्रदेव! [पुरोडाशादि के रूप में] तुम्हारा जो भाग हम निकाल रहे हैं, उसका सेवन तुम अपनी बह न अम्बिका के साथ करो। रुद्रदेव! तुम्हारा [कुछ अतिरिक्त] भाग भी हम समर्पित कर रहे हैं। यह मूषक तुम्हारा पशु है।

अव॑ रुद्रम॑दीमह्यव॑ देवन्त्र्य॑म्बकम् ।। यथा॑ नो व्वस्य॑सस्क्करद्यथा॑ नः श्श्रेय॑सस्क्करद्यथा॑नोव्व्यवसायतात् ।।।३ ।।

३. ।। ३.५८ ।।

– शत्रुओं को रूलानेवाले रुद्रदेव को, जिनके तीन नेत्र हैं, [खाद्यसामग्री] समर्पित करने के पश्चात् ही [हम स्वयं] अन्नग्रहण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

करते हैं, ताकि उनकी कृपा से] हमें उत्तम आवास उपलब्ध हो, हमारा कल्याण हो, और हमारी जीविका-व्यवसाय चलता रहे।

भेषजमसि भेषजङ्गवेश्श्वाय पुरुषाय भेषजम्।। सुखम्मेषाय मेष्ष्यै।।४।।

४. ।। ३.५९ ।।

– [रुद्रदेव!] तुम तो स्वयं सबके लिए औषध स्वरूप हो, इसलिए हमारी गायों, अश्वों और [हम से जुड़े] मनुष्यों को आरोग्य प्रदान करो। [आपकी कृपा से] हमारे मेष और मेषी [भी] सुख से रहें।

त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीय मामृतात्।। त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः।।५।।

५. ।। ३.६० ।।

– सुगन्धसम्पन्न, पुष्टिवर्धक और तीन नेत्रों से युक्त [भगवान् शिव का हम] यजन-पूजन करते हैं। वे हमें बन्धन और मृत्यु से उसी प्रकार पृथक् रखें, जिस प्रकार खरबूजा अथवा फूट ककड़ी का फल [पक जाने पर] अपने डंठल से स्वतः अलग हो जाता है। परन्तु अमरता से हम कभी अलग न हों!

[हम उन भगवान् शंकर का] यजन-पूजन कर रहे हैं, जो सुरभिसम्पन्न हैं, तीन नेत्रों से युक्त हैं और [कुमारी कन्याओं को सुन्दर, स्वस्थ, सुशील और समृद्ध] पति प्राप्त करा देते हैं। जैसे पक जाने पर फूट ककड़ी अथवा खरबूजे का फल स्वतः डण्ठल से पृथक् हो जाता है, उसी प्रकार यहाँ [कुमारी कन्याएँ अपने मातृ कुल] से भले ही पृथक् हो जायें, लेकिन वहाँ [अर्थात् पतिकुल] से कभी पृथक् न हों।

विशेष - यह प्रख्यात मृत्युञ्जय मन्त्र है, जिसका पूर्वार्ध ही प्रायः जपादि में व्यवहृत होता है।

एतत्ते रुद्रावसन्तेन परो मूजवतोतीहि।। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहिꣳसन्नः शिवोऽ तीहि।।६।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

६. ॥ ३.६१ ॥

– हे रुद्रदेव! यह आपके लिए समर्पित हवि है, इसे आप अपने साथ [पाथेय के रूप] में लेकर मूजवान् पर्वत के उस पार चले जाइए। [लेकिन उससे पहले] अपने धनुष की प्रत्यञ्चा को उतार लीजिए, उसे वस्त्र से ढक लीजिए, [गज] चर्म का परिधान धारण कर लीजिए, हमारी हिंसा से विरत रहकर हमारा कल्याण करते हुए उतनी दूर चले जाए, [जहाँ आपके रहने से हमें भयानुभूति न हो।]

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तु त्र्यायुषम्।।७।।

७. ॥ ३.६२ ॥

[बाल्य, यौवन और वार्धक्य –] ये जो तीन-तीन अवस्थाएँ जमदग्नि मुनि, महर्षि कश्यप और देवों की हैं, उन सब को मिलाकर हमारी तीनों अवस्थाओं से युक्त आयु हो जाये।

शिवो नामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मा मा हिंसी:।। निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्प्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय।।८।।

८. ॥ ३.६३ ॥

– [हे शिव!] शिव अर्थात् कल्याण तुम्हारा नाम है। शस्त्र तुम्हारा पालक अथवा संरक्षक है। तुम्हें मेरा नमन। तुम मेरी हिंसा [कदापि] मत करना। मैं दीर्घायु, अन्नादि की प्राप्ति, श्रेष्ठ सन्तानों की उपलब्धि, धनलाभ, एक अच्छे व्यक्ति के रूप में अपने को प्रस्तुत करने और [सही दिशा में पुरुषार्थ-पराक्रम करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।]

ॐ न तं व्विदाथ यऽइमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरम्बभूव।। नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृपऽ उक्थशासश्चरन्ति।।९।।

९. ॥ १७.३१ ॥

[हे मनुष्यों!] जो इन [समस्त लोकों] को उत्पन्न करता है, उसे तुम लोग नहीं जानते। वह [तो कोई] अन्य ही तत्त्व है, जो तुम्हारे मध्य में रहते हुए भी तुमसे भिन्न है। [उसके विषय में] कोहरे से आच्छन्न लोगों के समान अविद्या से ग्रस्त जन, जो [दिन-रात बस] प्राणों के

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पोषण अर्थात् उदरपूर्ति मात्र में लगे रहते हैं, केवल बकवास ही किया करते हैं, जो [यज्ञों में] मन्त्रपाठ करने वाले हैं, वे भी [परमतत्त्व के सन्दर्भ में बस व्यर्थ में] भटकते ही रहते हैं - [परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का साक्षात्कार करने में प्रायः विफल ही रहते हैं।]

विशेष - उपर्युक्त मन्त्र में परमतत्त्व की यथार्थ जिज्ञासा से भटके लोगों का विवरण है।

विश्श्वकर्म्मा ह्यजनिष्ट्टदेवः आदिद्गन्धर्व्वोऽअभवद्विद्वतीयः ।। तृतीयः पिता जनितौषधीनामपाङ्गर्भंव्व्यदधात्पुरुत्रा ।।१०।।

१०. ।। १७.३२ ।।

- [सर्वप्रथम] विश्व का स्रष्टा परमात्मा प्रकट हुआ। उसके पश्चात् [गाय, पृथिवी आदि का] धारण कर्ता सूर्य आविर्भूत हुआ। ओषधियों अर्थात् वनस्पतियों का पालक मेघ इस क्रम में तीसरा है। वह अपने गर्भ में जलराशि को बहुत प्रकारं से धारण करता है।

सप्तम अध्याय

ॐ उग्रश्श्च भीमश्श्चद्ध्वान्तश्श्च धुनिश्श्च।। सासह्वाँश्श्चाभियुग्ग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा ।।११।।

१. ।। यजु० सं० ३९.७ ।।

- उन सात मरुतों के लिए 'स्वाहा' के उच्चारणपूर्वक समर्पित हवि उन्हें [अग्नि के माध्यम से] स्वीकार हो, जो उग्र (उत्कृष्ट), भीम (भयदायी) ध्वान्त (शब्द अर्थात् करने वाले), धुनि (शत्रुओं को प्रकम्पित करने वाले), सासह्व अर्थात् शत्रुओं को अभिभूत करने वाले, योगाभ्यास में कुशल (अभियुग्) और विक्षिप (शत्रुओं को विभिन्न प्रकार से उठा-उठाकर फेंकने वाले) हैं।

अग्निᳬ हृदयेनाशनिᳬ हृदयाग्ग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवँय्यक्ना।। शर्व्वमतस्न्नाब्भ्यामीशानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवं व्वनिष्ठुना व्वसिष्ठ हनुः शिङ्गीनि कोश्याब्भ्याम्।।१२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२. ॥ ३९.८ ॥

– मैं अग्निदेव को हृदय-समर्पण से प्रसन्न करता हूँ। अशनिदेव को हृदय के अग्रभाग से प्रसन्न करता हूँ। पशुपति को सम्पूर्ण हृदय से प्रसन्न करता हूँ। यकृत से भव को प्रसन्न करता हूँ। हृदय की विशेष अस्थियों से शर्व देव को प्रसन्न करता हूँ। ईशान को मन्यु अर्थात् अपने क्रोध को समर्पित कर प्रसन्न करता हूँ। महादेव को पार्श्वास्थि से प्रसन्न करता हूँ। उग्रदेव को बड़ी आँतों से प्रसन्न करता हूँ। कपोल के नीचे जो वसिष्ठ हनु है, उससे और हृदयकोश से शिङ्गिसंज्ञक देवों को प्रसन्न करता हूँ।

विशेष – उपर्युक्त मन्त्र में उपासक के सर्वस्वसमर्पण की भावना मुखरित है। इसमें उल्लिखित पश्वङ्गों के काटने या उनसे होम करने का कोई संकेत प्राप्त नहीं होता।

उग्रँल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा॥ भवस्य कण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतात्॥१३॥

३. ॥ ३९.९ ॥

[हे मानव!] तू प्रतप्त लोहे के समान अपने तेज से अत्यन्त उग्र पुरुष को [अपने वश में कर]। उत्तम नियमों अथवा व्रतों के पालन से मित्र को [अनुकूल रख]। कष्टप्रद कार्यों से रुलाने वाले व्यक्ति को [वश में कर]। क्रीड़ा और मनोरंजन से इन्द्र सदृश ऐश्वर्यवान् व्यक्तियों को [वश में कर]। बल से मरुतों जैसे वीरों को [वश में कर]। सुखप्रद उपायों से वश में करने योग्य लोगों को उनसे [वश में कर]। कण्ठ में विद्यमान स्वर सामर्थ्ययुक्त प्राण का कार्य है। [शत्रुओं को] रुलाने वाले प्राण का स्थान पसलियों के भीतर है। महादेव का स्थान यकृत है – अर्थात् महादेव की कृपा से यकृत स्वस्थ रहता है। शर्व का स्थान जठराग्नि है, जो खाये गये अन्न का भलीभाँति परिपाक करके सूक्ष्म रूप में उसे शरीर भर में पहुँचा देती है। पशुओं के स्वामी जीवात्मा का स्थान हृदयान्तर्गत 'पुरीतत्' नाम की नाड़ी है [– योगाभ्यासी उपासक अथवा साधक को इन सबकी जानकारी भलीभाँति होनी चाहिए।]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा।। माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्त्थभ्यः स्वाहा स्त्थभ्यः स्वाहा मज्ञभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा।। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।।१४।।

४. ।। ३९.१० ।।

– [प्रदीयमान] यह आहुति लोमों के निमित्त है। यह [दूसरी] आहुति त्वचा [के स्वास्थ्य] के लिए है। यह [अगली] आहुति [स्वस्थ] रक्त के लिए है। इसके बाद की अन्य आहुतियाँ मेदा, माँस, स्नायु, अस्थियों, मज्जा, वीर्य और अपानभाग के [स्वास्थ्य के] निमित्त हैं।

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा सँय्यासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा।। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।।१५।।

५. ।। ३९.११ ।।

– इस मन्त्र में आयास, प्रायास, संयास, वियास, उद्यास, शुच्, शोचयुक्त, शोचमान और शोक – इन विशिष्ट देवों के लिए एक-एक आहुति 'स्वाहा' कारपूर्वक दी गई है। आयासादि मानव-मन की विभिन्न अवस्थाएँ हैं, जिनमें से कोई अवस्था उसके सामान्य श्रम, कोई विशेष श्रम, कोई सम्यक् श्रम, कोई उन्नत श्रेणी के श्रम की द्योतक है। कुछ अवस्थाएँ साधक के मानसिक अवसाद और शोक की सूचक हैं। आध्यात्मिक उत्थान के लिए यज्ञ-भावना से इनका समर्पण ही उचित है।

तपसे स्वाहा तप्प्यते स्वाहा तप्प्यमानाय स्वाहा तप्तायस्वाहा धर्म्माय स्वाहा।। निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा।।१६।।

६. ।। ३९.१२ ।।

इस मन्त्र में तपस्या, सन्तापग्रस्त (तप्यते, तप्यमान और तप्यताय), धर्म (दिन के होम), निष्कृति (छुटकारे की भावना), प्रायश्चित्ति और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भेषज के लिए एक-एक आहुति 'स्वाहा' कारपूर्वक विहित है। इसमें भी आध्यात्मिक दृष्टि पूर्वोक्त मन्त्रवत् ही है।

यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहामृत्यवे स्वाहा।। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्श्वेब्भ्योदेवेब्भ्यः स्वाहा द्यावापृथिवी-भ्याथ्ठंस्वाहा।।१७।।

७. ।। ३९.१३ ।।

– इस मन्त्र में यम, अन्तक, मृत्यु, ब्रह्मा, ब्रह्महत्या, विश्वेदेव और द्यावापृथिवी के लिए एक-एक आहुति 'स्वाहा'कार के साथ विहित है।

इतिषष्ठोऽध्यायः।। (न०)

अष्टम अध्याय

इस अध्याय में कुल २९ मन्त्र हैं जो शुक्ल यजुर्वेद संहिता के १८वें अध्याय से लिये गये हैं (१८:१-२९)। इन मन्त्रों में कामना व्यक्त की गई है कि अनुष्ठीयमान यज्ञ से मुझे अमुक-अमुक वस्तु या गुण की प्राप्ति हो। उदाहरण के लिए इस अध्याय का प्रथम मन्त्र इस प्रकार है –

ॐ व्वाजश्च मे प्प्रसवश्च मे प्प्रयतिश्च मे प्प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्श्लोकश्च मे श्श्रावश्च मे श्श्रुतिश्च मे ज्ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

१. वाजश्च में प्रसवश्च में प्रयतिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च में श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च में स्वश्च में यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

इसके बाद आये मन्त्रों के भी अन्त में 'यज्ञेनकल्पन्ताम्' की आवृत्ति की गई है। इन मन्त्रों में ऋषि के द्वारा आकांक्षित वस्तुओं, प्रवृत्तियों या गुणों का विवरण इस प्रकार है –

वाज (अन्न), प्रसव. (उत्पादन या ऐश्वर्य), प्रयतिः (उत्कृष्ट प्रयत्न करने की सामर्थ्य या शक्ति), धीति (बुद्धि और विचारशक्ति), क्रतु (कर्मशक्ति), स्वर, श्लोक (प्रसिद्धि) श्रवः (यश अथवा श्रवणशक्ति), श्रुतिः (कानों की शक्ति), ज्योति (तेजस्विता), स्वः (आत्मबल) इन सबकी यज्ञ से प्राप्ति हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्राणश्च मे पानश्च मे व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तञ्च मऽ आधीतञ्च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रञ्च मे दक्षश्च मे बलञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

२. प्राण (ऊर्ध्व) वायु, अपान अर्थात् अधोवायु, व्यान (सम्पूर्णशरीर में संचरण करने वाली, वायु, असु (प्राणशक्ति), चित्त (विचारशक्ति), आधीत (अध्ययन से प्राप्त ज्ञान), वाक् (वाणी), मन, चक्षु, श्रोत्रेन्द्रिय, दक्षता और बल - इन सबकी मुझे यज्ञानुष्ठान से उपलब्धि हो।

ओजश्च मे सहश्च मऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेङ्गानि च मे स्थीनि च मे परूꣳषि च मे शरीराणि च मऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

३. ओज, सह (सहनशक्ति), आत्मा (आत्मबल), तनूः (शरीर) शर्म (सुख), वर्म (सुरक्षा, कवच), अङ्गानि (अंगों की दृढ़ता), अस्थीनि (अस्थियों), परूँषि (उँगली के पर्वों की दृढ़ता), शरीर [के अन्य भागों का आरोग्य], [पूर्ण] आयु और वृद्धावस्था [तक का जीवन] - ये सभी मुझे यज्ञ से प्राप्त हों।

ज्यैष्ठ्यञ्च मऽ आधिपत्त्यञ्च मे मन्न्युश्च मे भामश्च मे मश्चमेम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्प्रथिमा च मे व्वर्षिमा चमे द्राघिमा च मे व्वृद्धञ्च मे व्वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। (न०)।।१८।।

४. ज्येष्ठता, आधिपत्य (स्वामित्व), मन्यु (मानसिक रोष), भाम (बाह्य दृष्टि कोण), अम (अपरिमेयता), अम्भ (जल-सी जीवनी शक्ति), जेमा (विजयशीलता), महिमा, वरिमा (वरिष्ठता), प्रथिमा (विस्तार), वर्षिमा (दीर्घ जीवन), द्राघिमा (बड़प्पन) वृद्ध (वृद्धावस्था), वृद्धि (उत्कर्ष) - ये सब यज्ञ से मुझे [सदैव] प्राप्त होती रहें।

सत्त्यञ्च मे श्श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे व्विश्श्वञ्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्चमे जातञ्च मे जनिष्ष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

५. सत्य, श्रद्धा, जगत् (लौकिक अभ्युदय), धन, विश्व, मह

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(महत्त्व), क्रीड़ा (खेल-कूद की सामर्थ्य), मोद (हर्ष), जात (पुत्रादि), जनिष्यमाण (आगे उत्पन्न होने वाले पौत्रादि), सूक्त (सुभाषित), सुकृत (पुण्याचरण) मेरे - ये सभी सद्गुण यज्ञानुष्ठान से बढ़ते रहें।

ऋतञ्च मे ऽमृतञ्च मे यक्ष्मञ्च मे नामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वञ्च मे नमित्रञ्च मे भयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

६. ऋत (यज्ञादि कर्म), अमृत, अयक्ष्म (क्षयादि रोगों का न होना), अनामय (आरोग्य), जीवातु (जीवनी शक्ति अथवा व्याधिनाशक औषध), दीर्घायु, अनमित्र (शत्रुओं का अभाव), अभय, सुख, शयन, सूषा (सु+उषस् = सुप्रभात), सुदिन - ये सभी मुझे यज्ञ से प्राप्त हों।

यन्ता च मे धर्त्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वञ्च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रञ्च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरञ्च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

७. यन्ता (नियन्त्रण शक्ति), धर्ता (धारण-पोषण की क्षमता) क्षेम (सम्पत्ति का संरक्षण), धृति (धैर्य), विश्व (सर्वानुकूलता), महः (पूजा), संवित् (ज्ञान), ज्ञात्र (ज्ञानविज्ञान), सूः (पुत्रादि को प्रेरित करने की सामर्थ्य), प्रसूः (उत्पादन शीलता), सीर (कृषिजन्य उपज) लयः (विरोध का अभाव), - ये सभी मुझे यज्ञानुष्ठान से प्राप्त होते रहें।

शञ्च मे मयश्च मे प्प्रियञ्च मे ऽनुकामश्च मे कामश्च्च मे सौमनसश्च्च मे भगश्च्च मे द्रविणञ्च मे भद्रञ्च मे श्श्रेयश्च्च मे व्वसीयश्च्च मे यशश्च्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।। (न०)

८. शम् (सुख), मय (आनन्द), प्रिय (प्रियजन), अनुकामः (इच्छापूर्ति), कामः (विषयजन्य आनन्द), सौमनस्य, भग (ऐश्वर्य), द्रविण (धन), भद्र (कल्याण), श्रेय, वसीयः (निवास) और यश - ये सभी यज्ञ-सम्पादन से मुझे मिलते रहें।

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च्च मे रसश्च्च मे घृतञ्च मे मधुच मे सग्धिश्च्च मे सपीतिश्च्च मे कृषिश्च्च मे व्वृष्टिश्च्च मे जैत्रञ्च मऽ औद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

९. ऊर्क (अन्न), सूनृता (प्रिय और सत्यवाणी), पयस्, रस, घृत, मधु, सग्धि (सहभोजन), सपीति (स्वजनों के साथ या बिरादरी के साथ मिलकर खाना-पीना हुक्का-पानी), कृषि, वृष्टि, जैत्र (विजय-सामर्थ्य), औद्भिद्य (वृक्षों का लगाना) - ये सभी यज्ञानुष्ठान से सम्पन्न होते रहें।

रयिश्च्च मे रायश्च्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च्च मे व्विभु च मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मेन्नञ्च मे क्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

१०. रयि (सम्पत्ति), राय (ऐश्वर्य), पुष्ट (हृष्ट पुष्ट होना), पुष्टि (सर्वविध पोषण), विभु (व्यापकता), प्रभु (प्रभुता), पूर्णता, पूर्णतरता, कुयद (साधारण अनाज), अक्षित (क्षयरहित खाद्यसामग्री), अन्न, अक्षुध (भूख का अभाव अर्थात् तृप्ति) - ये सभी यज्ञानुष्ठान से बढ़ते रहें।

व्वित्तञ्च मे व्वेद्यञ्च मे भूतञ्च मे भविष्यञ्च मे सुगञ्च मे सुपत्थ्यञ्च म ऋद्धञ्च म ऋद्धिश्च्च मेक्कृप्तञ्च मे क्लृप्तिश्च्च मे मतिश्च्च मे सुमतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

११. वित्त, वे द्य (प्राप्य धन या ज्ञेय), भूत, भविष्य, सुग (हर क्षेत्र में सुगम सुपथ्य, ऋद्ध) (समृद्धि लाने वाला कर्म), ऋद्धि (समृद्धि), क्लृप्त (कार्य क्षेत्र-द्रव्यादि), क्लृप्ति (अपना काम बना लेने की क्षमता), मति, सुमति - ये यज्ञानुष्ठान से बढ़ते रहें।

व्व्रीहयश्च्च मे यवाश्च्च मे माषाश्च्च मे तिलाश्च्च मे मुद्गाश्च्च मे खल्वाश्च्च मे प्रियङ्गवश्च्च मेऽणवश्च्च मे श्यामाकाश्च्च मे नीवाराश्च्च मे गोधूमाश्च्च मे मसूराश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।। (न०)

१२. व्रीहि (चावल), जौ, उड़द, तिल, मूँग, खल्व (चने), प्रियङ्गु, अणु (छोटे आकार के अनाज), श्यामाक (साँवा), नीवार, गोधूम (गेहूँ), मसूर - ये सभी यज्ञानुष्ठान से मुझे मिलते रहे।

अश्म्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च्च मे पर्व्वताश्च्च मे सिकताश्च्च मे व्वनस्प्पतयश्ञ्च मे हिरण्ण्यञ्च मेयश्च्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१३. अश्मा (पाषाण), मृत्तिका (मिट्टी), गिरि, पर्वत, सिकता (बालू, रेत) वनस्पति, हिरण्य (स्वर्ण), अयस् (लोहा), श्याम (काला लोहा), सीसा, त्रपु (टीन) - य हमें यज्ञ से प्राप्त होते रहें।

अग्निश्च्च मऽ आपश्ञ्च मे व्वीरुधश्च्च मऽ ओषधयश्च्च मे कृष्टपच्च्याश्च्च मे ग्ग्राम्म्याश्च्च मे पशवऽ आरण्ण्याश्च्च मे व्वित्तञ्च मे व्वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

१४. अग्नि, आपः (जलराशि), वीरुध (पेड़-पौधे), ओषधियाँ (वनस्पतियाँ), कृष्टपच्या (खेती से प्राप्त उपज), अकृष्टपच्या (अपने आप उगी हुई उपज), ग्राम्य अर्थात् पालतू पशु, आरण्य (जंगली जानवर), वित्त (पूर्वसंचित धन), वित्ति (आगे प्राप्त होनेवाली धनराशि), भूत (उपलब्ध सहयोगी) भूति (वैभव) - इन्हें [देवगण] यज्ञानुष्ठान से प्राप्त करायें।

व्वसु च मे व्वसतिश्च्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च्च मेर्थश्च्च मऽ एमश्च्च मऽ इत्या चमे गतिश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

१५. वसु (रहने लायक धन), वसति (निवास स्थान, गृह), कर्म, शक्ति, अर्थ, एम (प्राप्तव्य अर्थ), इत्या (इष्टप्राप्ति का उपाय), और गतिशीलता - ये सभी मुझे यज्ञानुष्ठान से प्राप्त हों।

(न०) अग्निश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे सोमश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे सविता च मऽ इन्द्रश्च्च मे सरस्वती च मऽ इन्द्रश्च्च मे पूषा च मऽ इन्द्रश्च्च मे वृहस्प्पतिश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

१६. अग्नि-इन्द्र, सोम-इन्द्र, सविता और इन्द्र, सरस्वती और इन्द्र, पूषा और इन्द्र, बृहस्पति तथा इन्द्र - ये देवता यज्ञानुष्ठान के माध्यम से मुझ पर अनुग्रह करें।

विशेष - इस मन्त्र में ध्यान देने की बात यह है कि इन्द्र को सभी अन्य देव-देवियों के साथ जोड़कर एक-एक युग्म का रूप दिया गया है।

मित्रश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे वरुणश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे धाता च मऽ इन्द्रश्च्च मे त्त्वष्टा च मऽ इन्द्रश्च्च मे मरुतश्च्च मऽ इन्द्रश्च्च मे व्विश्श्वे च मे देवाऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१७. मित्र और इन्द्र, वरुण और इन्द्र, धाता अैज् इन्द्र, त्वष्टा और इन्द्र, मरुद्गण और इन्द्र, विश्वेदेव और इन्द्र - इन सबका अनुग्रह मुझे यज्ञ करके प्राप्त हो।

पृथिवी चं मऽ इन्द्रंश्च्च मेन्तरिक्षञ्च मऽ इन्द्रंश्च्च मे द्यौश्च्च मऽ इन्द्रंश्च्च मे समांश्च्च मऽ इन्द्रंश्च्च मे नक्षत्राणि च मऽ इन्द्रंश्च्च मे दिशंश्च्च मऽ इन्द्रंश्च्च मे युज्ञेनं कल्प्पन्ताम्।। (न०)

१८. भूमि और इन्द्र, अन्तरिक्ष और इन्द्र, द्युलोक और इन्द्र सभा (वर्षा की अधिष्ठात्री देवता) और इन्द्र, नक्षत्रगण और इन्द्र, दिशाएँ और इन्द्र-इन सभी की अनुकूलता मुझे यज्ञानुष्ठान से प्राप्त हो।

अꣳशुश्च्चं मे रश्मिमश्च्च मेदांब्भ्यश्च्च मेधिंपतिश्च्च मऽ उपाꣳशुश्च्चं मेन्तर्यामश्च्चं मऽ ऐन्द्रवायवश्च्चं मे मैत्रावरुणश्च्चं मऽ आश्श्विनश्च्चं मे प्प्रतिप्प्रस्थानंश्च्च मे शुक्क्रश्च्चं मे मन्थी चं मे युज्ञेनं कल्प्पन्ताम्।।

१९. [इस मन्त्र में विभिन्न सोमग्रहों - उन पात्रों का उल्लेख है, जिनमें सोमयज्ञ में सोमरस विभिन्न देवों के निमित्त प्रस्तुत किया जाता है।]

– अंशुग्रह, रश्मि, अदाभ्य, अधिपति, उपांशुग्रह, अन्तर्वायव ग्रह, मैत्रावरुण ग्रह, आश्विनग्रह, प्रतिस्थान, शुक्रग्रह, मन्थग्रह - ये सभी सोमग्रह यज्ञानुष्ठान की पूर्ति में मेरे सहायक सिद्ध हों।

'आग्ग्रयणश्च्चं मे व्वैश्श्वदेवश्च्चं मेऽद्ध्रुवश्च्चं मे व्वैश्श्वानरश्च्चं मऽ ऐन्द्राग्न्यश्च्चं मे महाव्वैश्श्वदेवश्च्चं मे मरुत्त्वतीयांश्च्च मे निष्क्कैवल्ल्यश्च्च मे सावित्रश्च्चं मे सारस्वतश्च्चं मे पात्नी वतश्च्चं मे हारियोजनश्च्चं मे युज्ञेनं कल्प्पन्ताम्।।

२०. [इस मन्त्र में भी विभिन्न ग्रहों-सोमपात्रों - का विवरण है -] आग्रयण, वैश्वदेव ग्रह, ध्रुवग्रह, वैश्वानरग्रह, ऐन्द्राग्न ग्रह, महावैश्वदेव, मरुत्वतीय, [महा मरुत्वतीय और कुण्ठमरुत्वतीय - ये तीनों ग्रह], निष्केवल्य, सारस्वती जल [अभिषेचनार्थ], सावित्र, पात्नीव्रत और हारियोजन - ये सभी यज्ञानुष्ठान को सुसम्पन्न करने में सहायक सिद्ध हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्रुचश्च्च मे चमसाश्च्च मे व्वायव्व्यानि च मे द्रोणकलशश्च्च मे ग्ग्रावाणश्च्च मेधिषवणे च मे पूतभृच्च मऽ आधवनीयश्च्च मे व्वेदिश्च्च मे बर्हिश्च्च मेवभृथश्च्च मे स्वगाकारश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।। (न०)

२१. [विभिन्न यज्ञपात्रों का विवरण इस मन्त्र में दिया गया है -] स्रुच्, चमस, वायव्य-पात्र, द्रोणकलश, [सोमरस पीसने-हेतु] पाषाण, 'अधिषवण' संज्ञक काष्ठफलक, पूतभूत, आधवनीय, वेदि, कुशा, अवभृथ संज्ञक स्नान, स्वर्गाकार (शम्युवाक), यज्ञ में देवों तक हविष् को पहुँचाने में ये सभी यज्ञाङ्ग मेरे लिए सहायक सिद्ध हों।

अग्गिनश्च्च मे घर्म्मश्च्च मेर्क्कश्च्च मे सूर्यश्च्च मे प्प्राणश्च्च मे श्श्वमेधश्च्च मे पृथिवी च मेदितिश्च्च मे द्यौश्च्च मेङ्गुलय : शक्क्वरयो दिशश्च्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

२२. अग्नि, धर्म (प्रवर्ग्य इष्टि - जिसमें महावीर नामक पात्र में गर्म घी में दूध मिलाकर प्रस्तुत किया जाता है), अर्क (इस नाम का याग, जिसमें अर्कवान् इन्द्र को पुरोडाश समर्पित किया जाता है', सूर्य (जिसमें सौर्य चरु का विधान है), प्राण, अश्वमेध यज्ञ, पृथिवी, अदिति, दिति, द्युलोक, [विराट् पुरुष की अंग भूत] उँगलियाँ (जिनका 'दशाङ्गुलम्' रूप में उल्लेख है), शक्वरी संज्ञक मन्त्र और दिशाएँ - ये सभी यज्ञानुष्ठान में सहायक सिद्ध हों।

व्व्रतञ्च मऽ ऋतवश्च्च मे तपश्च मे संव्वत्सरश्च्च मेहोरात्रेऽ ऊर्व्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।। (न०)

२३. [यज्ञ की दीक्षा में लिए गये नियम रूप] व्रत, ऋतुएँ, तप, संवत्सर, अहोरात्र, ऊरु और जानुनी नामक अंगविशेष, बृहद् और रथन्तर संज्ञक साम - ये भी यज्ञानुष्ठान में मेरे सहायक सिद्ध हों।

एका च मे तिस्रश्च्च मे तिस्रश्च्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽ एकादश च मऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकविंशतिश्च मऽ एकविंशतिश्च्च मे त्रयोविंशतिश्च्च मे त्रयोविंशतिश्च्च मे पञ्चविंशतिश्च्च मे पञ्चविंशतिश्च्च मे सप्तविंशतिश्च्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविᳬंशतिश्च मे नवविᳬंशतिश्च मे नवविᳬंशतिश्च म एकत्रिᳬंशच्च म एकत्रिᳬंशच्च मे त्रयस्त्रिᳬंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्'।।२४।।

२४. [विषम संख्याओं वाले स्तोमों से क्रियमाण होम-मन्त्र -] एक और तीन, तीन और पाँच, पाँच और सात, सात और नौ, नौ और एकादश, एकादश और त्रयोदश, त्रयोदश और पञ्चदश, पञ्चदश और सप्तदश, सत्रह और उन्नीस, उन्नीस और इक्कीस, इक्कीस और तेईस, तेईस और पच्चीस, पच्चीस और सत्ताईस, सत्ताईस और उन्तीस, उन्तीस और इकतीस, इकतीस और तैंतीस - ये स्तोम यज्ञानुष्ठान में सहायक सिद्ध हों।

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विᳬंशतिश्च मे विᳬंशतिश्च मे चतुर्विᳬंशतिश्च मे चतुर्विᳬंशतिश्च मेऽष्टाविᳬंशतिश्च मेऽष्टाविᳬंशतिश्च मे द्वात्रिᳬंशच्च मे द्वात्रिᳬंशच्च मे षट्त्रिᳬंशच्च मे षट्त्रिᳬंशच्च मे चत्वारिᳬंशच्च मे चत्वारिᳬंशच्च मे चतुश्चत्वारिᳬंशच्च मे चतुश्चत्वारिᳬंशच्च मेऽष्टाचत्वारिᳬंशच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२५।।

२५. [सम संख्यक स्तोमों से क्रियमाण होम-मन्त्र]

- चार और आठ, आठ और बारह, बारह और सोलह, सोलह और बीस, बीस और चौबीस, चौबीस और अट्ठाईस, अट्ठाईस और बत्तीस, बत्तीस और छत्तीस, छत्तीस और चालीस, चालीस और चवालिस, चवालिस और अड़तालिस - ये स्तोम यज्ञानुष्ठान में सहायक सिद्ध हो!

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२६।।

२६. डेढ़ वर्ष का बछड़ा और डेढ़ वर्ष की [ही बछिया], दो वर्ष

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

का बैल और दो वर्ष की गाय, ढाई वर्ष का वृष और ढाई वर्ष की गाय, तीन वर्ष का बैल और तीन वर्ष की गाय, साढ़े तीन वर्ष का वृष और साढ़े तीन वर्ष की गाय - ये मुझे यज्ञानुष्ठान से प्राप्त हों।

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋषभश्च मे वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।२७।।

२७. पष्ठ्वाद् (चार वर्ष का बैल), षष्ठौही (चार वर्ष की गाय) उक्षा (गर्भाधान में समर्थ वृष), वशा (वन्ध्या गाय), ऋषभ (अतियुवा वृष), बेहत् (गर्भधातिनी गाय), अनड्वान् (शकर वहन करने में समर्थ बैल), धेनु (नव प्रसूता गाय) - ये पशु मुझे यज्ञानुष्ठान से प्राप्त हों।

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाऽहर्पतये स्वाहाऽह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैनथंशिनाय स्वाहा विनथंशिन आन्त्यायनाय स्वाहाऽऽन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयं ते राण्मित्राय यन्ताऽसि यमन ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाऽऽधिपत्यायै।।२८।।

२८. वाज, (अन्न, अर्थात् चैत्रमास के लिए आहुति दी जाती है। प्रसव अर्थात् वैशाख मास के लिए आहुति दी जाती है। इसी प्रकार अपिज (ज्येष्ठ मास), क्रतु (आषाढ़ मास), वसु (श्रावण मास), अहर्षति (भाद्रपद मास), मुग्ध (आश्विन मास), मुग्ध वैनंशिन (कार्तिक मास) अविनंशी आन्त्यायन (मार्ग शीर्ष मास), आन्त्य भौवन (पौष मास) भुवनपति (माघमास), अधिपति (अधिकफाल्गुनमास), प्रजापति (बारह महीनों के अधिष्ठाता) - इन सभी के निमित्त [एक-एक] आहुति दी जाती है। हे प्रजापति देव! यह तुम्हारा राज्य है, यजमान तुम्हारा मित्र है - तुम उसके नियामक हो, तुम्हीं 'यमने' अर्थात् यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान में सबके नियामक हो, अन्नादि से प्राप्त पोषक रसों क़ी रक्षा के लिए, वृष्टि के लिए, प्रजाओं' पर तुम्हारे आधिपत्य के लिए [मैं तुम्हारे निमित्त यह यज्ञानुष्ठान करता हूँ।]

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पताथं श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पताᳬं स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।

स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च।

स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेः प्रजा अभूम वेट् स्वाहा'।।२९।।

२९. यज्ञ के प्रसाद से आयु [की वृद्धि हो], प्राण [नीरोग] रहें, नेत्रेन्द्रिय [ठीक रहे], श्रोत्रेन्द्रिय [सही] रहे, वाणी [प्रभावपूर्ण] रहे, मन [स्वस्थ] रहे, आत्मा आनन्दयुक्त रहे, ब्रह्मा [अनुकूल] रहे, ज्योतिः [स्वरूप परमात्मा के दर्शन] हों, यज्ञ से सुख की प्राप्ति हो, पृष्ठस्तोत्र या स्वर्ग की प्राप्ति हो, यज्ञानुष्ठान से आगे के यज्ञानुष्ठानों का उत्कर्ष हो – यज्ञ करने की प्रेरणा प्राप्त हो, परोपकार करने की भावना पैदा हो।]

स्तोम अर्थात् स्तुति-मन्त्र, यजुर्वेद, ऋग्वेद, सामवेद और अथर्ववेद तथा बृहत् और रथन्तर सामों [की उपलब्धि हमें यज्ञानुष्ठान से हो]। देवों ने स्वर्ग को [यज्ञ से] प्राप्त किया, उन्होंने अमरता को प्राप्त किया – हम भी प्रजापति अर्थात् परमेश्वर की प्रजा के रूप में उनका अनुग्रह प्राप्त करें। [हमारी] यह आहुति उन्हें स्वीकार हो।

विशेष – 'वेट्' वषट्कार है। वेटकार, वषट्कार और स्वाहाकार – इन्हीं के द्वारा देवों को हवि का समर्पण किया जाता है, जैसाकि श्रुति में ही कहा गया है – 'वषट्कारो हैष परोऽक्षं यद्वेटकारो वषट्कारेण वा वै स्वाहाकारेण वा देवेभ्योऽन्नं प्रदीयते।।'

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शान्ति पाठः

ऋचं वाचं प्रपद्ये मनो यजुः प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रं प्र पद्ये।
वागोजः सहौजो मयि प्राणापानौ।।१।। शु.य.वे. अ. ३६ मं-१

ऋग्वेदरूपी वेदवाणी संविद्स्वरूपिणी गायत्री की शरण में हूँ। मैं यजुर्वेदरूपी मन की तथा प्राणवायुरूप सामवेद की शरण ग्रहण करता हूँ। इसलिए वाणी, तेज, प्राण उदान सम्बन्धी श्वास-प्रश्वास वायु स्वस्थ होकर मुझमें सदा निवास करें, यही आपसे प्रार्थना करता हूँ।

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृष्णं बृहस्पतिर्मे तद्दधातु।
शं नो भवतु भुवनस्य यस्यपतिः।।२।। शु.य.वे. ३६.२

हे शिव! मेरे नेत्रों में जो त्रुटियाँ हैं अर्थात् यज्ञ करते समय मेरी इन्द्रिय, मन, बुद्धि द्वारा जो न्यूनता हो गई अथवा जो कुछ अनधिकार चेष्टा मैंने की हो, उसे देवगुरु बृहस्पति क्षमा करें। जगत् के स्वामी यज्ञपुरुष हमसे प्रसन्न रहें। बृहस्पति दोष मुक्त करें एवं यज्ञदेवता हमारा कल्याण करें।

ॐभूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो योः नः प्रचोदयात्।।३।। शु.य.वे. अ. ३६.३

प्रणव एवं त्रिव्याहतियों के सहित वे सूर्यदेवता हमारी बुद्धि को सत्कर्म के अनुष्ठान के लिए सदा प्रेरित करें। जगत् की रचना, पालन एवं संहार करने वाले, सर्वान्तर्यामी, सर्वश्रेष्ठ सूर्यदेव के सर्वोत्तम भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक के प्रकाशक तेज का हम सब ध्यान करते हैं।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।४।। ३६.४

हे परमशिव! हम सभी ऐसा कौन सा अनुष्ठान करें जिससे वे हम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

लोगों के रक्षक बनकर हमें सद्बुद्धि दें तथा मंगलदायी सखा बन जाएँ।

कस्त्वा सत्यो मदानांमꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु।।५।। ३६.५

हे इन्द्र! आनन्ददायक हवन करने योग्य पदार्थों में से कौन-सा पदार्थ आपको रुचिकर लगता है, जिस पदार्थ से प्रसन्न होकर तथा अपने सेवकों के हितार्थ अच्छे प्रकार के सुवर्णादि सम्पत्ति प्रदान करते हैं, सो बताने की कृपा करें।

अभीषुणः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः।।६।। ३६६

हे भगवन्! सखाओं एवं स्तुतिकर्त्ता यजमानों के आप प्रतिपालक हैं। आप ही स्वसेवकों की रक्षा के लिए विभिन्न रूप वाले होते हैं। अपने सेवकों के हितार्थ सम्यक् रूप से प्रयत्न करते हैं इसलिए हमारे सामने आप अपना सुन्दर रूप प्रकट करें।

कया त्वं न ऊत्याभि प्र मन्दसे वृषन्। कया स्तोतृभ्य आ भर।।७।। ३६.७

हे सफल मनोरथकारी इन्द्र! आप पदार्थों से कैसे सन्तुष्ट होते हैं। आप अपने यजमानों पर कैसे सन्तुष्ट होते हैं, यह हमें बताने की कृपा करें। हम लोग आपकी सेवा उसी प्रकार से करेंगे।

इन्द्रो विश्वस्य राजति। शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे।।८।। ३६.८

जगत् के राजास्वरूप सूर्यदेवता के रूप में जो इन्द्र विराजमान हो रहे हैं वे हमारे दो पैर वालों के, चार पैर वालों के तथा हम लोगों के कल्याणकारी बनें।

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः।।९।। ३६.९

हे भगवान्! आप 'मित्र' रूप से हम लोगों के मंगल करने वाले हैं। 'वरुण' रूप से भी आप कल्याणकारी रहें, 'अर्यमा' रूप से हमें सुख देने वाले हों, 'इन्द्र' रूप से कल्याणकारी हों तथा सुरगुरु रूप में 'बृहस्पति' सदा मंगलदाई हों। इसी तरह 'वामन' रूपधारी विष्णु भगवान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हम लोगों का सर्वदा सर्वत्र कल्याण करें।

शं नो वातः पवता छं शं नस्तपतु सूर्यः।
शं नः कनिक्रद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।।१०।। ३६.१०

हे देव! आपकी कृपा सें पवन हमारे लिए सुखदायी हो, सूर्य कल्याणकारी हो उसकी किरणें ताप-रहित होकर हमारे लिए महौषधि बनें। मेघ भी यथासमय सुन्दर वृष्टि करें तथा अपने गर्जनों से हमारे शत्रुओं तथा कीट-पतंगों का नाश करके अमृत के समान जल बरसाएँ।

अहानि शं भवन्तु नः श छं रात्रीः प्रति धीयताम्।
शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शंन इन्द्रावरुणा रातहव्या।
शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः।।११।।
३६.११

यज्ञ देव की कृपा से हमारे सभी दिन मंगलदायी हों। रात भी आनन्ददायिनी हो। अग्नि देवता तथा इन्द्र हमारा कल्याण करें। अच्छी वर्षा से इन्द्र और वरुण देवता भी अधिक अन्न पैदा करके हमारे लिए सुभिक्षप्रद एवं सुखकारी सिद्ध हों। सूर्य और इन्द्र हमारे लिए सुखदायी बनें, इन्द्र और चन्द्रमा भी हम लोगों को नाना प्रकार के रोगों से बचाकर सुख-शान्ति दें।

शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।१२।। ३६.१२

स्वच्छ जल हमारे स्नान के लिए सुखदायी हो, पीने के लिए स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्यकर हो, रोग और भय को नष्ट करने के लिए यह जल स्रोत सलिल के समान नीरोगप्रद होकर सर्वदा सुख एवं शान्ति प्रदान करे। परमात्मा की परम अनुकम्पा से यह जल हमारा कल्याण करे।

स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।१३।। ३६-१३

हे भूमि देवता! दुःख देने वाले काँटों से रहित लोगों के घर के योग्य एवं सब प्रकार के सुख-साधन से सम्पन्न होकर चारों तरफ से प्रशस्त एवं स्थूल रूपवाली आप सबके लिए शरणदायिनी बनें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।१४।। ३६-१४

हे सलिल समूह! आप स्वयं सुख-स्वरूप होकर, स्नान-पानादि के कारण हम लोगों को जैसे सुख प्राप्त हो, वैसा विधान करें। साथ ही अत्यन्त रमणीय ब्रह्म के साक्षात्कार योग्य हमें बनाएँ, जिससे हम लोग ऐहिक एवं पारलौकिक सुख का अनुभव कर सकें।

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।१५।। ३६-१५

हे जलदेव! आप सुख-शान्ति प्रदायक 'रस' रूप हैं, अतः हमें उस दिव्य रस का पान करने वाला उसी प्रकार बनाएँ जिस प्रकार माता अपने पुत्रों को प्रीतियुक्त अपना स्तनपय पिलाती है अर्थात् अनिर्वचनीय ब्रह्मानन्दरूपी अमृत रस का अधिकारी हमें बनाएँ।

तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।१६।। ३६-१६

हे जल! आप अपने अमृतमय रस से हमें शीघ्र तृप्त करें, जिससे ब्रह्मा से लेकर तृण पर्यन्त समस्त जगत् तृप्त होता रहता है। इसलिए हम लोगों के सुखापभोग के लिए आप यहाँ ठहरें और हमें ऐसी शक्ति दें जिससे हम सन्तानोत्पादन में सर्वथा समर्थ बने रहें।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व (ꣳ)
शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१७।। ३६-१७

हे परमशिव! हम सब प्रकार से इस संसार में शान्ति का अनुभव करें। शान्ति द्युलोक में, अन्तरिक्ष में, पृथिवी में, जल में, औषधियों एवं वनस्पतियों में विराजती है, वह हम लोगों में भी रहे। जो शान्ति सब देवताओं में, परब्रह्म परमात्मा में है, वह हममें भी हो। जो समस्त संसार में स्वभावतः शान्ति रहती है—वह शान्ति आपकी कृपा से हमें मिले।

दृते दृ ꣳ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणिभूतानि समीक्षे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।।१८।। ३६-१८

जरा-रोग ग्रसित शरीर होने पर भी मुझे आप सुदृढ़ रखें, कर्म से त्रुटि रहने पर भी मैं निर्दोष कर्म करूँ तथा अभिषेक कर्म में भी सुदृढ़ रहें। मैं सबको और सब मुझे मित्र की दृष्टि से देखें। मैं सम्पूर्ण जीवों का प्रिय बनूँ, यही प्रार्थना है।

दृते दृ ꣳह मा। ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।।१९।।

हे भगवन्! आप हमें मजबूत बनाएँ, आपकी दृष्टि में आपके दर्शन मैं दीर्घकाल तक जीता रहूँ। इस मन्त्र में 'जीव्यासम्' पद की आवृति आदरार्थक है।

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे।
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यं ꣳ शिवो भव।।२०।।

हे अग्नि देव! सब रसों को सोखने वाली आपकी तेजोमयी ज्वाला को नमस्कार है। सम्पूर्ण पदार्थों को दिखाने वाले आपके तेज को प्रणाम है। आपका प्रज्वलित तेज हमारे शत्रुओं को जलाए तथा हमारे लिए वह शीतल बनकर कल्याण हो।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे। नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे।।२१।।

हे इन्द्रदेव! आपकी विद्युत् शक्ति को नमस्कार है। आपके मेघ के समान गर्जन को नमस्कार है। आप सदा स्वर्ग सुख देने वाले हैं इस कारण आपको नमस्कार है। आप विविध रूप वाले हैं अतः सब प्राणियों के लिए सुख-सुविधा की व्यवस्था रखने वाले को मेरा पुनः-पुनः प्रणाम है।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।२२।।

हे प्रभो! जिस दुष्कर्म से आपका अपमान अथवा हमारी हानि होने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को हो उस कर्म से हम सबको आप अभयदान दें। हमारी प्रजाओं को सुख देकर अभय कर दें तथा हमारे पशुओं को भी सुखी कीजिए। हम सब निर्भयता से भोग भोगने में समर्थ हों।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै।
सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।२३।।

हे भगवन्! जल और वन से पैदा हुई औषधियाँ हमारे लिए सुखदायी हों। साथ ही जो हमसे द्वेष करता है अथवा हम जिससे द्वेष करते हैं, उन दोनों प्रकार के शत्रुओं के लिए जल एवं वन्यौषधियाँ दुःखदायी हों।

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः।
शत (ꣳ) शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।२४।।

मन्त्रों से जो अभिनन्दित है, देवताओं से जो प्रतिष्ठित है, जगत् का जो चक्षु है, रजस्तमः से रहित शुद्ध रूप वाला, पूर्व दिशा में उगने वाले सूर्य देव अपनी दिव्य तेजोमयी कृपा से हमें सौ वर्ष तक ठीक-ठीक देखने की सामर्थ्य दे। सौ वर्ष तक जीएँ, सौ वर्ष तक सुनें, सौ वर्ष तक इन्द्रियों में विकार न हो, सौ वर्ष तक दीनता प्रकट न हो। हम सौ वर्ष से अधिक मनुष्य की पूर्ण आयु (१२० वर्ष) तक सुखपूर्वक जियें।

स्वस्ति मन्त्र पाठः

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१।।
२५-१९

हमारे लिए इन्द्रदेवता मंगलदायी हो। निखिल वैदिक विज्ञान के विश्वपालक पूषादेव मंगलकारी हों। अप्रतिहत वेगशाली सूर्यदेव कल्याणदायी हों। सुरगुरु बृहस्पति हमारे लिए स्वस्तिदायक हों।

पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।२।। १८-३६

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे सर्वहुतवह देव! यह वसुन्धरा रसधारिणी बने, औषधियों से सुधा रस का संचार हो, देवलोक और अन्तरिक्ष लोक भी अमृतरस मय हो, सम्पूर्ण दिशाएँ आनन्द रस से ओत-प्रोत हों। ये सभी हम लोगों का कल्याण करने वाले हों।

विष्णो॑ र॒राट॑मसि॒ विष्णो॒: श्नप्त्रे॑ स्थो॒ विष्णो॒: स्यूर॑सि॒ विष्णो॑-ध्रुवो॒ऽसि।
वै॒ष्ण॒वम॑सि॒ विष्ण॑वे त्वा।।३।। ५-२१

यज्ञपुरुष विष्णु के ललाट तुम हो। ये दोनों लगे हुए बाँस उनके अधरयुगल के सदृश हैं, तिरछे गोलाकार निर्मित हुआ तुम्हारा शीर्ष शोभित हो रहा है। तुम भगवान् के स्वरूप हो। हे रस्सी ग्रन्थि! तुम इस होम की ध्वजा हो। हे प्राग्वंश! तुम इस यज्ञ-मण्डप के खम्भे एवं आधार हो इसलिए यज्ञ पुरुष विष्णु की तृप्ति के लिए मैं तुम्हें छूता हूँ।

अ॒ग्निर्दे॒वता॒ वातो॑ दे॒वता॒ सूर्यो॑ दे॒वता॑ च॒न्द्रमा॑ दे॒वता॒
वस॑वो दे॒वता॑ रु॒द्रा दे॒वता॒ऽऽदि॒त्या दे॒वता॑
म॒रुतो॑ दे॒वता॒ विश्वे॑दे॒वा देवता॒ बृह॒स्पति-
र्दे॒वतेन्द्रो॑ दे॒वता॒ वरु॑णो दे॒वता॑।।४।। १४-२०

हे परमात्मन्! अग्नि, अनिल, सूर्य, सोम, वसुदेव, रुद्रदेव, आदित्य, मरुत्, विश्वेदेव, बृहस्पति, इन्द्र तथा वरुण आदि द्वादश देवताओं का स्मरण करके मैं अपने इष्ट-देव की स्थापना करता हूँ।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।
भवे भवेन अतिभवेभवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।५।।

पंचमुखमहादेव के पश्चिमवर्ती मुख सद्योजात की मैं शरण लेता हूँ। सद्योजात भगवान् को मैं नमस्कार करता हूँ। हे महादेव! आप हमें संसार-चक्र में बार-बार भ्रमण करने के लिए प्रेरित न करें। ऐसी अनुकम्पा करें कि मैं इस जगज्जाल में फिर न फसूँ। जगत् के जन्म के कारण भगवान् भव को मैं बार-बार नमस्कार करता हूँ।

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कलाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।।६।।

वामदेव! (जो पंचमुख महादेव के उत्तरवर्ती मुख हैं) को नमस्कार करता हूँ। ज्येष्ठ को, श्रेष्ठ को, रुद्र को, काल को, कलविकरण को, बलविकरण को, बलप्रमथन तथा मनोन्मन को जो सभी शिव के रूप हैं, मैं नमस्कार करता हूँ।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्ये घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तुरुद्ररूपेभ्यः।।७।।

उत्तरोत्तराशावर्ती सत्वगुण सम्पन्न अघोर महादेब्व को मैं नमस्कार करता हूँ। राजसगुणान्वित घोर नामक शिव को, तामस गुण वाले घोरतर नामक रुद्र को मैं प्रणाम करता हूँ। हे शर्व! मैं त्रिविध रुद्रदेव को सदा प्रणाम करता हूँ।

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।।८।।

गुरु वचन एवं अतिधन्य देव से हम लोग महादेव के पूर्वाभिमुख 'तत्पुरुष' को जानते हैं। उस ज्ञात महादेव का हम लोग ध्यान करते हैं। इसलिए वह शिव अपने ध्यान के लिए हमें प्रेरित करें।

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्।
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।।९।।

पंचमुख में ऊपर वाले मुख ईशान नामक रुद्र को मैं प्रणाम करता हूँ। वे सभी विद्याओं के स्वामी हैं। सभी जीवों के अधिपति एवं हिरण्यगर्भ के भी प्रभु हैं। इस प्रकार परमशिव को जानकर मैं शिव रूप ही हो जाऊँ।

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेअस्तु मा माहि ꣳसीः।

नि वर्त्तयाम्यायुऽषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।।१०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे वपनशस्त्र उस्तरा! तुम लोहे से पैदा हो, तुम शान्तरूप वाले हो जाओ। मैं तुम्हें प्रणाम करता हूँ। मुझे किसी तरह की हानि न पहुँचाना। हे यजमान! मैं इस क्रिया के फलस्वरूप तुम्हारे जीवन, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र एवं कीर्ति के लिए तुम्हारा शिरोमुण्डन सम्पन्न करता हूँ।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रं तन्न आ सुव।।११।।
३०-३

हे सूर्य देवता! इस संसार में हमारे सभी दुष्कृतों को आप भस्मीभूत करें। जो भी जीवन में मंगलदायी पदार्थ है उसे आप अपनी शक्ति से अवश्य हमें प्राप्त कराएँ।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः।
पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः
सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।१२।।
३६-१९

हे परमशिव! जो शान्ति द्युलोक में, अन्तरिक्ष में, भूमि में, पानी में, औषधियों में और वनस्पतियों में रहती है, वह शान्ति हमें भी प्राप्त हों। जो शान्ति सम्पूर्ण विश्व में स्वाभाविकता से विराजती है वह शान्ति हममें भी आपकी कृपा से स्फुरित होती रहे।

ॐ सर्वेषां वा एष वेदानां ꣳ रसो यत्साम सर्वेषाम्।
एवैनमेतद् वेदानां ꣳ रसेनाभिषिञ्चति।।१३।।

सम्पूर्ण त्रयी का तत्वरूप जो रस वह सामदेव है उसी सामस्यन्दितरस से सम्पूर्ण वेदों को अभिषिञ्चित करते हैं।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु। अनेन रुद्राभिषेककर्मणा श्री महारुद्रः प्रीयतां न मम ॐ सदाशिवार्पणमस्तु।।१४।।

अखिल पाप पल्लवित दुःखों की शान्ति हो। तीनों—दैहिक, भौतिक तापों की शान्ति हो। इस रुद्राभिषेक से महारुद्र सदाशिव प्रसन्न हों। सम्पूर्ण वस्तुएँ भगवान् सदाशिव की हैं उन्हीं को हम समर्पित करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सामवेदीयो रुद्राध्यायः

गुरुभ्यो नमः। गणतपये नमः। श्रीसदाशिवाय नमः।

'गुरुभ्यो नमः' 'गणपतये नमः' तथा 'सदाशिवाय नमः' का उच्चारण करते हुए गुरु, गणपति तथा सदाशिव को नमस्कार करे।

इति नमस्कृत्य ताम्रपात्रे जलपुष्पाक्षतानि कृत्वा तत्पात्रं हस्तेनादाय अत्राद्य मासे पक्षे तिथौ वासर इति उच्चार्य श्रीशिवप्रीतये नित्यविधिरूपं श्रीमहादेवस्य पूजापूर्वकं साङ्गरुद्राध्यायस्य जपमहं करिष्ये। रुद्राभिषकं वा। इति संकल्प्य–ॐ नमो भगवते रुद्राय। इति मन्त्रेण स्वात्मानं रुद्ररूपं भावयेत्(१)

इस प्रकार यजमान नमस्कार करने के बाद ताँबे के बर्त्तन में जल, पुष्प तथा अक्षत को रखकर और उसके सहित उस बर्त्तन को हाथ में लेकर उस दिन, पक्ष, तिथि तथा महीने का नाम लेकर श्री महादेव जी की पूजा करने के बाद 'मैं शिव-प्रीत्यर्थ नित्यविधिस्वरूप साङ्ग (अङ्गोंसहित) रुद्राध्याय का जप अथवा रुद्राभिषेक करता हूँ' ऐसा संकल्प करे। तत्पश्चात् 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' इस मन्त्र से अपनी आत्मा को रुद्ररूप में भावित करे; जैसा कि शास्त्र-वाक्य है कि 'देवो भूत्वा देवं यजेत्' अर्थात् तद्रूप होकर उसकी उपासना या पूजा करे।

ततोऽङ्गषडङ्गन्यासान् कुर्यात्। ते यथा–

तदनन्तर अङ्गभूत छै अङ्गों का न्यास करे। वे इस प्रकार हैं–

ओंकारस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री छन्दः परमात्मा देवता शिखायां न्यासे विनियोगः॥ॐ॥

प्रस्तुत मन्त्र में शिखा के न्यास का विनियोग है, क्योंकि प्रत्येक मन्त्र का विनियोग, ऋषि, छन्द तथा देवता होता है। नीचे लिखे हुए मन्त्र का ब्रह्मा ऋषि, देवी और गायत्री छन्द तथा परमात्मा देवता है अतः इसे शिखा के न्यास का विनियोग मन्त्र समझना चाहिये।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्याहृतीनां विश्वामित्रजमदग्निभरद्वाजऋषयो गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांस्यग्निवायुसूर्या देवताः। तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता। हिङ्कारस्य वसिष्ठ ऋषिः, दैवी गायत्री च्छन्दः, प्रजापतिर्देवता। शिरसि न्यासे विनियोगः।

यह शिर के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२उ ३कं २र १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
ॐ भूर्भुवः स्वः।। तत्सवितु र्वरेण्यं भग्गों देवस्य धीमहि।

२ ३ १ २ ३ १ २
धियो यो नः प्रचोदयात् ।।१४६२।।

१ र २र र
ॐ तत्सवितुर्वरेणियोम्। भार्गोदेवस्य धीमाही २।

२ १२र २ १ - १ २
धियोयोनः प्रचो १ २ १ २। हुम्। आ २। दायो। आ

२ १ १
३ ४ ५ ।।१।।

पद पाठः

२ ३ २ १२र १२ ३१ २ ३
तत्। सवितुः। वरेणयम्। भर्गः। देवस्य। धीमहि।

१ २र ३ १ २ ३ १ २
धियः। यः। नः। प्रचोदयात्। प्र। चोदयात् ।।१४६२।।

नमस्त इति अग्निर्ऋषिर्गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता ललाटन्यासे विनियोगः।

यह मस्तक के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४५ र ४५ १ २ १ ३
ॐ नमस्तौ। होग्नाइ। ओजसा ३ इ । गृणा २ न्ता

५ १ ७ - १ २ १ ३
२ ३ ४ इदे । वाकृष्टया २ः । अमाये ३ः । आ २ मा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५र र २ ३ १ १ १ १
२ ३ ४ औहोवा । त्रमर्दया २ ३ ४ ५ ॥ २ ॥

१२ ३ १२ ३१ २ ३ १ २
नमस्ते अग्न ओजसे गृणन्ति देव कृष्टयः।

१ २३ १ २
अमैर मित्रम्मर्दय ॥११॥

१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
नमः । ते । अग्ने । ओजसे । गृणन्ति । देव । कृष्टयः ।

२र ३ १ २ ३ १ २र ३
अमैः । अमित्रम् । अ । मित्रम् । अर्द्दय ॥१॥

हे अग्ने! हे देव! मनुष्य-गण आपको बल के लिये नमस्कार करते हैं। आप बल से शत्रु को पीड़ित करें। (हे प्रकाशमय परमात्मन्! नमस्ते। मनुष्य अधिक बल पाने के लिए आप की स्तुति करते हैं। आप अपने बल तथा प्रभाव से बाहर और भीतर के शत्रुओं-काम, क्रोध, लोभ, मोह, मत्सर, अहंकार आदि-को नष्ट कीजिये।

रौरवयौधाजयोः साम्नो रुरुयुधाजिनौ ऋषी बृहती छन्दः सोमो देवता नेत्रयोर्न्यासे विनियोगः।

यह नेत्र के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२ र र १ ५ १ र
ॐ पुनानः सोमा ३ धारा २ ३ ४ या । आपोव-

र र र र र ३ २ १ २
सानोअर्षस्यारत्नधायोनिमृतस्यसा २ इदसाइ। ओहा

२ १ र र र २ १ २ २
३ उवा। उत्सोदेवोहिरा २ ३ हाइ । ओहा ३ उवा ।

२ १ २ ४ ५ ४ ५ ३ २
ण्यया । औ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥ ३ ॥ ॐ पुना

२ ४र ५ २ ३ ५ १ २
३ १ । ना ३ः सो । म । धारा २ ३ ४ या । आपो ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ३ २ ३ ५ २र १ २ १
वसा २ । नआ ३ ४ ५ । षा २ ३ ४ सो । आरात्नधाः ।
२र १ ३ २ ३ ५
यो । निमृता २ । स्यसा ३ ४ ५ इ । दा २ ३ ४ सी ।
२ १ ३ २ ३
उत्सा २ः । दाइवो २ । हिरा ३ ४ ५ । ण्या २ ३ ४
५
याः ॥ ४ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
पु ना नः सोम धारयापो वसानो अर्षसि।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
आ रत्नधा योनि मृतस्यसीदस्युत्सो देवो हिरण्ययः॥५११॥

३ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ २
पुनानः । सोम । धारया । अपः । वसानः । अर्षसि । आ ।
३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
रत्नधाः। रत्न । धाः । योनिम् । ऋतस्य । सीदसि ॥ उत्सः । उत्।
३ २ ३ १ २
सः । देवः । हिरण्ययः ॥५११॥

हे उपासक! भक्ति से पवित्र होता हुआ तू कर्मों को करते हुए विराजमान हो। रत्नों तथा श्रेष्ठ वस्तुओं को धारण करने वाला होकर ज्ञान के मूल कारण प्रभु को प्राप्त कर तथा देव बन कर सुख के साथ स्थित हो।

प्राणापानयोः साम्नोर्वशिष्ठऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता नासिकयोर्न्यासे विनियोगः।

यह नासिका के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १र १र २ १ २
ओ३म् हाउ । ३ । आयुः । ३ । सात्यं ।३। इन्द्रन्नरो। ने

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५
३ मधि । ताहवन्ताइ । यत्पारियाः । यूनज । ताइधियस्ताः ।

२र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १२
शूरोनृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ । आगोमताइ ।

२१र २र ३ ४ ५ २र १र १र
व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ ।३। आयुः । ३ । सात्यं । २ ।

३ २ ५र र ३ १ १ १ १ २र
सत्या ३ ४ । औहोवा । इ २ ३ ४ ५ ।।५।। ॐ हाउ

१र र २ र १ २ १ १
। ३ । आनोहिय । ३ । मनदोहं । ३ । इंद्रन्नरो । ने ३

१ २र ३ ४ ५ २ १र २ १ २ ३ ४ ५
मधि । ताहवन्ताइ । यत्पारियाः । यूनज । ताइधियस्ताः ।

२र १र २ १ २ ३ ४र ५ २र १र
शूरोनृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ । आगोमताइ ।

२ १र २र ३ ४ ५ २र १र र २ र १
व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ । ३ । आनोहिय ३ । मनदोहं

१ ३र २ ५र र ३ १ १
। २ । मना २ ३ । दोहा ३ ४ । औहोवा । इ २ ३

१ १
४ ५ ।। ६ ।।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रम् । नरः । नेमधिता । नेम । धिता । हवन्ते । यत्।

१ २र ३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३
पार्याः। युनजते । धियः । ताः । शूरः । नृषाता । नृ । साता ।

१ २र ३ १ २र १ २र ३ २ ३ २ ३
श्रवसः। च । कामे । आ । गोमति । व्रजे । भज । त्वम् । नः ॥३१८॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावे।

बृहद्रथन्तरयोः साम्नोर्भरद्वाजवशिष्ठौ ऋषी बृहती छन्द इन्द्रो देवता कर्णयोर्न्यासे विनियोगः।

यह कान के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र र र र २ २र १र र
ॐ औहोयित्वामिद्धिहवामहा ३ ए । सातौवाजा ।

१ २ ३ ५ १ २ ३र ४र ५
स्याकारा २ ३ ४ वाः । तुवा ३ ४। औहोवा ।

२ १ १ २ १ २ ३ ५
वृत्रायिषुवाइ । द्रासा ३ १ त् । पतिंन्ना २ ३ ४ राः ।

१र र २ ३र ४र ५ १ – १
त्वाङ्काष्ठा ३ ४ । औहोवा । सू २ अर्वा २ ३ ४ । ताः।

५ ५ १
उहुवा ६ हाउ । वा । हस् ॥ ७ ॥

१र २र ३ १ २र ३ १ २
त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ १ २
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काठास्वर्वतः ॥ २३४ ॥

२ १ २र ३ २ १ २र ३ १ २
त्वाम्। इत् । हि । ह वामहे । सातौ । वाजस्य । कारवः।

२ ३ १ २ ३ १ २र २ ३ १ २र
त्वाम् । वृत्रेषु । इन्द्र । सत्पतिम् । सत् । पतिम् । नरः । त्वाम् ।

१ २र १ २र
काष्ठासु । अर्वतः ॥ २२४ ॥

हे परमेश्वर ! ज्ञान, बल, धन तथा अन्न की प्राप्ति के लिए हम उपासक आप का ही स्मरण करते हैं। विघ्नों के समय श्रेष्ठ स्वामी तथा सज्जनों के पालक ! आपको मनुष्य स्मरण करते हैं। संग्रामों में अश्वारोही विजय के लिए आपको ही याद करते हैं।

२ऽ. . र र र १ १ २र र र
ॐ आभित्वाशूरनोनुमोवा । आदुग्धाइवधेनवई-

र १ २ १ र २ १
शानमस्यजगतः । सुवा २ ३ दृशाम् । आइशानमा २ ३

४ १ र ४र ५ ५
इन्द्रा ३ । तास्थू २ ३ ४ षा । ओवा ६ । हाउवा ।

१
अस् ॥ ८ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अभित्वा शूर नो नुमोऽदुग्धा इव धेनवः ।

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्रतस्थुषः ॥ २३३ ॥

३ २ ३ १ २र ३ ३
अभि । त्वा । शूर । नोनुमः । अदुग्धाः । अ । दुग्धाः। इव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ १ २र ३ र १ २र ३ १ २ ३ १ २
धेनव : । ईशानम् । अस्य । जगतः । स्वर्दृशम् । स्वः । दृशम् ।
१ २र ३ ३ १ २
ईशानम् । इन्द्र तस्थुषः ॥ २२३ ॥

हे इन्द्र! जैसे बिना दुही गायें अपने प्यारे वत्स को देखकर नम्र बनी हुई रंभाती हैं उसी प्रकार भक्ति से नम्र होकर हम आपको नमस्कार करते हैं। आप इस गतिशील तथा स्थिर दोनों प्रकार के जगत् के स्वामी हैं और सूर्य के समान स्वयं प्रकाशित तथा अन्यों को और सूर्य आदि को प्रकाशित करने वाले हैं।

सेतुषाम्णः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः परमात्मा देवता मुखे न्यासे विनियोगः।

यह मुख के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १र र २ २ १
ॐ हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।
१र २र १र र २ २र २ र १
दानेनादानं । ३ । हाउ । ३ । अहमस्मिप्रथमजाऋता २ ३
२ १ १ १ १ २र १र र २ २ १
स्या २ ३ ४ ५ । हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान्
१ र २र १र २र १ र २र १र २र
। ३ । अक्रोधेनक्रोधं । २ । अक्रोधेनक्रोधं । हाउ । ३ ।
र रर र १ २ १ १ १ १ २र
पूर्वन्देवेभ्यो अमृतस्यना २ ३ मा २ ३ ४ ५ । हाउ । ३ ।
१र र २ २ १ २ १ र २र
सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ । श्रद्धयाश्रद्धां । ३ ।
२र र र र र१ २ १ १ १ १
हाउ । ३ । योमाददातिसइदेवमा २ ३ वा २ ३ ४ ५

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १र र २ २ १
त् । हाउ । ३ । सेतूङ्स्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।

२ १र २ र २र २ १
सत्येनानृतं । ३ । हाउ । ३ । अहमन्नमन्नमदन्तमा २ ३

२ १ १ १ १ २ऽ २र १र २र १ २ १
द्मी २ ३ ४ ५ । हाउ ३ वा । एषागतिः । ३ । एतदमृतं

१ २ १र २ १र र र र २ १
। ३ । स्वर्गच्छ । ३ । ज्योतिर्गच्छ । ३ । सेतूङ्स्तीर्त्वाचतुरा

१ १ १ १
२ ३ ४ ५ः ॥ ९ ॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वन् देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।

२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २ उ ३ १ २ ३ १ २
यो मा ददाति स इदेवमा वदह मन्न मन्न मदन्त मद्मि ॥५९४॥

३ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र
अहम् । अस्मि । प्रथमजाः । प्रथम । जाः । ऋतस्य । पूर्वम् ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र २ ३ १ २र
देवेभ्यः । अमृतस्य । अ । मृतस्य । नाम । यः । मा । ददाति

२ २ ३ २ ३ ३ ३ २ १ २र १ २र
। सः । इत् । एव । मा । अवत् । अहम् । अन्नम् । अन्नम् ।

३ १ ३
अदन्तम् । अद्मि ॥

ब्रह्म (ईश्वर का) वाक्य है कि मैं (परमात्मा) इस जगत् की उत्पत्ति के पहले ही से हिरण्यगर्भ रूप में वर्त्तमान हूँ। सब देवों से भी पूर्व विद्यमान हूँ। मैं अमृत का स्वरूप हूँ। जो मुझको इस प्रकार जानकर अन्न आदि दान करता है वही सब की रक्षा करता है। मैं अन्न हूँ। प्राण

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को धारण करता हूँ। मैं ही कर्मफल भोग करने वालो प्राणी को अपने में लीन कर लेता हूँ।

सन्ते पयाꣳसीति सोमऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सोमो देवता जिह्वायां न्यासे विनियोगः।

यह जिह्वा के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

१र – २ १र २ १ २ ३
ॐ ओवा २ । ३ । सन्तेपया । सी ३ समु । यन्तु-

४ ५ २ १ ३ १ २र ३ ४ ५
वाजाः । संवृष्णिया । नी ३ अभि । मातिषाहाः ।

२र १र २ – १ २र ३ ४ ५ २ १ २
आप्यायमा । नो ३ अमृ । तायसोमा । दिविश्रवा । सी

१ २ ३ ४ ५ १र – १र ३
३ उत्त । मानिधिष्वा । ओवा २ । २ । ओ २ । वा २

५र र १
३ ४ । औहोवा । प्न्य । ३ । ॥ १० ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
सन्ते पयाꣳसि समु यन्तु वाजाः सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाहः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवाꣳस्युत्तमानि धिष्व ॥६०३॥

२ ३ १ २र २ ३ ३ १ २र २
सम् । ते । पयाꣳसि । सम् । उ । यन्तु । वाजाः । सम् ।

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
वृष्ण्यानि । अभिमातिषाहः । अभिमाति । साहः । आप्यायमानः।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ ३ २
आ । प्यायमानः । अमृताय । अ । मृताय । सोम । दिवि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ १ २ ३
श्रवाꣳसि । उत्तमानि । धिष्व ॥६०३॥

हे सोम परमात्मन्! अभिमानियों को दण्ड देने वाले आपके ज्ञान, रस, अन्न तथा समस्त बल हमें प्राप्त हों। परिपूर्ण आप अमृतस्वरूप उपासक जीवात्मा के लिए मोक्ष में उत्त ज्ञान तथा सुखों को धारण कराइये।

जराबोधेति अग्निर्ऋषिर्गायत्री छन्द रुद्रो देवता ग्रीवायां न्यासे विनियोगः।

यह ग्रीवा (गर्दन) के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५ र र ४ ५ १ २ १ २ १
ॐ जराबोधोवा। ताद्विविद्ढाइ। विशाइवा २ ३

२ १र र ७ ४ ५ ३र २
इशे । यज्ञियाया । स्तोमाङ्रुद्रा २ ३ या । दृ । शीको

५
३ ४ ५ इ । डा ॥ ११ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
जराबोध तद्विविद्ढि विशेविशे यज्ञियाय ।

१ २ ३ १ २ ३ २
स्तोमꣳ रुद्राय दृशीकम् ॥ १५ ॥

१ २र १ २र ३ २ ३ ३ १ २
जराबोध । जरा । बोध । तत् । विविद्ढि। विशेविशे ।

३ २ ३ ३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ २
विशे । विशे । यज्ञियाय । स्तोमम् । रुद्राय । दृशीकम् ॥१५॥

हे स्तुति द्वारा जानने योग्य अग्ने परमात्मन्! प्राणी मात्र के हित के लिए आप हमारे उस मन में प्राप्त होइये जहां यज्ञ के योग्य रुद्र की मनोहर स्तुति हो रही है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

व्रतपक्षयोः साम्नोः प्रजापतिर्ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता स्कन्धयोर्न्यासे विनियोगः।

यह कन्धे के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १ २ २र
ॐ हाउ । ३ । हङ् हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ । ३ ।

२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १
इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवंताइ । यत्पारियाः । यूनज ।

२ ३ ४ ५ २र १र २ १ २ ३ ४र ५
तायिधियस्ताः । शूरोनृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ ।

२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ । ३ । हङ्

२ २ऽ २ ३ १ १ १ १
हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ ३ । वा ३ । ई २ ३ ४ ५
॥१२॥

२र १ २ २र
ॐ हाउ । ३ । इहा । हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ । ३ ।

२ १ २ १ २र ३ ४ ५ २ १र २ १
इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवन्ताइ । यत्पारियाः । यूनज ।

२ ३ ४ ५ २र २र २ १ २ ३ ४र ५
तायिधियस्ताः । शूरोनृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ ।

२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २र १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । हाउ । ३ । इहा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ऽ ३ १ १ १ १
हङ् हङ् हङ् । ३ । हाउ ३ । वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥१३॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्र न्नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आगोमति व्रजे भजा त्व न्नः ॥३१८॥

पूर्ववत् ३१८

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारंभ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हम को अन्न, बल और यश (गौवों) की प्राप्ति करावें।

अश्विनोर्व्रतयोः साम्नोरश्विनौ बृहत्यांश्विनौ बाह्वोर्न्यासे विनियोगः।

यह बाहु के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र २र २र र र
ॐ होइहा ३ । इहोइहा ३ । ३ । इमाउवांदिविष्टया

१ २ र र र १ २ र र र र र
ओहाउ । उस्त्राहवन्तेअश्विनाओहाउ । अयंवामह्वेवसेशचीवसू-

१ २ र १ २ २र
ओहाउ । विशंविशङ्हिगच्छथाओहाउ । होइहा ३ ।

२ र २र २ र ३
इहोइहा ३ । २ । होइहा ३ । इहो इहा २ ३ ४ ।

५र र १ १ २र ३र २ १ ३ २
औहोवा । इ ५ हीहीहीहीही ॥ १४ ॥ ॐ होइहा ।

१ ३ २ २र र र १ २ र र
इहोइहा । ३ । इमाउवांदिविष्टया होहाउ । उस्त्राहवन्ते

२ १ २ र र र र र १ २
अश्विनाहोहाउ । अयंवामह्वेवसेशचीवसूहोहाउ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ १ ३ २ १ ३ २
विशंविशङ्हिगच्छथाहोहाउ । होइहा । इहोइहा । २ ।

१ ३ २ १ ३ २ ५२ २ १
होइहा । इहोइहा ३ ४ । औहोवा । इ २ । ३ ॥ १५ ॥

३ २ १ ३ १ २ ३ १ २
इमा उ वा न्दिविष्टय उस्त्रा हवन्ते अश्विना ।

३ २२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२
अयं वामह्वेऽवसे शचीवसू विशंविशंᳫहि गच्छथः ॥७५३॥

३ २ ३ १ २२ ३ २ ३ २ ३
इमाः । उ । वाम् । दिविष्टयः । उस्त्रा । उ । स्त्रा । हवन्ते ।

३ २ ३ १ २२ ३ १ २
अश्विना । अयम् । वाम् । अह्वे । अवसे । शचीवसू । शची ।

१ २ १ २२ १ २२ ३ २ १ २२
वसू इति । विशंविशम् । विशम् । विशम् । हि । गच्छथः ॥७५३॥

हे अश्विनी, प्राण व अपान, ये इन्द्रियां तुम्हारी महिमा को प्रकट करती हैं। मैं उपासक तुम्हारी रक्षा के लिए प्राणायाम द्वारा दूर तक तुम दोनों को शरीर के भीतर व बाहर ले जाता हूँ। अपने कर्म द्वारा जीवात्मा का शरीर में वास करानेवाले तुम दोनों प्रत्येक शरीर में गति कर रहे हो।

इमाः प्रजा इति प्रजापतिर्यजुः प्रजापतिः। मनोजयिदिति दिशोनुष्टुब्विश्वेदेवाः हृदि न्यासे विनियोगः।

यह हृदय के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२२ १ २ १ २ १ २२ २ १
ओं हाउ । ३ । इमाः । ३ । प्रजाः । ३ । प्रजापते । होइ

२ २ २ २ २२ १ २
। २ । प्रजापते । हा ३ १ उ । वा २ । ए । हृदयम् ।

२२ १ २ १२ २ २२
२ । ए । हृदया ३ १ उ । वा २ । प्रजारूपमजीजने ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ३ १ १ १ १ २र
इट्इडा २ ३ ४ ५ ॥ १६ ॥ * ॐ हाउ । ३ ।
१ र २ १ २ १ २२
मनोजयित् । ३ । हृदयमजयित् । ३ । इन्द्रोजयित् । ३ ।
१ २र २र १ २र १ २ १
अहमजैषम् । ३ । हाउ । ३ । यद्वर्चोहिरण्य । स्या ।
१ २र १ २र १ र २ १ २ १ २ १ २र १
यद्वावर्चोगवामू । ता । सत्यस्यब्रह्मणोव । चाः ।
र २र १ २र १ २र १ र २
तेनमासङ्सृजाम । साइ । हाउ । ३ । मनोजयित् । ३ ।
१ २ १ र २ २ १ २र
हृदयमजयित् । ३ । इन्द्रोजयित् । ३ । अहमजैषम्
२ऽ २र १ र २ १ २ १
। ३ । हाउ ३ । वा । ए । मनोजयिद्धृदयमजयिदिं-
र २ १ २र २र २ १ र ३ १ १ १
द्रोजयिदहमजैषम् । ३ । ए । अहङ्सुवर्ज्यो ती २ ३ ४
१
५: ॥ १७ ॥

---

* अस्य मूलं न ऋक् अपि तु स्तोभः स चैषः–

३ २ ३ २ ३ २ १ २र १ २र ३ १ २र
इमाः । प्रजाः । प्र । जाः । प्रजापते । प्रजा । पते । हृदयम् ।
३ २ ३ २ ३ २ ३
प्रजाः । प्र । जाः । रूपम् । अजीजने ॥ (स्तोभ पद पाठे २-७)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सꣳसृजामसि ॥६२४॥

२ १ २र १ २र २ ३ १ २र १ २र
यत् । वर्च्चः । हिरण्यस्य । यत् । वा । वर्च्चः । गवाम् ।

३ २ ३ १ २ १ २र १ २ १ २र ३ २ ३
उत ॥ सत्यस्य । ब्रह्मणः । वर्चः । तेन । मा । सम् सृजामसि ॥६२४॥

सूर्य का जो तेज है और जो तेज उसकी किरणों का है तथा सत्यस्वरूप ब्रह्म का जो तेज है उससे हम उपासक अपने को संयुक्त करें।

पिबासुत इति जमदग्निर्बृहतीन्द्रः पृष्ठे न्यासे विनियोगः।

यह पीठ के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५ ४ २ ३ ४ ५ १ र र
ॐ पिबा ३ सुतस्यरसिनाः । मत्स्वानइन्द्रगोमता

१ २र १ र र र र १
२ ३ होइया । आपिर्नोबोधिसधमाद्येवृधा २ ३ होइया ।

२ १ २ २ १ २
अस्माङ्आ २ ३ वा । तुताइधा २ ३ या ३ ४ ३ः ।

१
ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥ १८ ॥

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोमतः ।

३ १ २ २ १ २ ३ २ १ २ ३ १ २
आपिर्नो बोधि सधमाद्ये वृधे३ऽस्माँ अवन्तु ते धियः ॥२३९॥

१ २र ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ १ २र
पिब । सुतस्य । रसिनः । मत्स्व । नः । इन्द्र । गोमतः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ ३ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २
आपिः । नः । बोधि । सधमाद्ये । सध । माद्ये । वृधे । अस्मान्।
३ ३ १ २र
अवन्तु । ते । धियः ॥२३९॥

हे परमेश्वर ! आप जितेन्द्रिय तथा श्रेष्ठ वाणीवाले हम लोगों की रस से पूर्ण भक्ति को स्वीकार कीजिये और हम पर प्रसन्न होइये। सर्वव्यापक आप हमको ज्ञान दीजिये। योगरूपी यज्ञ में वृद्धि के लिए आपकी दी हुई बुद्धियां हमारी रक्षा करें।

वात आवात्विति काशीत ऋषिर्गायत्री छन्द इन्द्रो देवता उदरन्यासे विनियोगः।

यह पेट के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५ ४र ५र ४ ४ १ र २
वात आवातु । भा ५ इषजाम् । शाम्भूमयः ।
२ १ ७ ३र २ १ र २ २
भूनोहृदा २ ३ ४ इ । हाहोइ । प्रन आयूꣳषी ३ ता
१ ४ ५ ४ ५
रिषात् । औ २ ३ होवा । इडा । ग्रा० ५।२।८ ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
वात आवातु भेषजꣳ शम्भुमयोभुनो हृदे ।
२ ३ १ २
प्र न आयूꣳषि तारिषत् ॥१८४॥

१ २र २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
वातः । आ । वातु । भेषजम् । शम्भु । शम् । भु । मयोभु।
३ २ ३ ३ २ २ ३ १ २र ३
मयः । भु । नः । हृदे ॥ प्र । नः । आयूꣳषि । तारिषत् ॥१८४॥

वायु हमारे हृदय में रोगशान्तिकारक, सुखप्रद, ओषध (जल) को संवर्धित करे और हमारी आयु को बढ़ावे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आजुहोतेति श्यावाश्वस्त्रिष्टुबग्निः नाभौ न्यासे विनियोगः।

यह नाभि के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५ र ४ २ १ र – १ –
ॐ आजूहोता । हविषामर्जया २ ध्वाउवा २ ।
१ र र – १ ३ २
निहोतारंगृहपतिंदधा २ इ । ध्वाउवा २ ३ ४ । इडा
३ २ १ रर२१ – १ २१
३ ४ स्पदाइ । नमसारातहाव्या २ म् । सापर्यता ।
१ २१ ४ ५ ४ ५
याजतंपा २ ३ । स्तियोवा । आ ५ नो ६ हाइ ॥ १९ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
आ जुहोता हविषा मर्जयध्वं नि होतारं गृहपतिं दधिध्वम् ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र
इडस्पदे नमसा रातहव्यंःसपर्यता यजतं पस्त्यानाम् ॥६३॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ १ २र
आ । जुहोत । हविषा । मर्ज्जयध्वम् । नि । होतारम् ।
३ १ २ ३ २ २ ३ ३ २ ३ २ १ २
गृहपतिम् । गृह । पतिम् । दधिध्वम् ॥ इडः । पदे । नमसा ।
३ १ २ ३ २ ३ ३ ३ २ ३कं २र
रातहव्यम् । रात । हव्यम् । सपर्यत । यजतम् । पस्त्यानाम् ॥६३॥

हे उपासको! तुम परमात्मा की अच्छी प्रकार उपासना करो। उसे ध्यान के द्वारा प्रसन्न करो तथा अपने आत्मा और शरीर को शुद्ध करो। सुख के देने वाले विश्व रूपी घर के स्वामी, परमात्मा की वाणी के स्थान, वेद के वचनों में व हृदय देश में तथा इडा नामक नाड़ी के अधिष्ठान में अच्छी प्रकार ध्यान करो। भक्ति को स्वीकार करने वाले गृहस्थों के लिए संगति करने योग्य पूजनीय परमात्मा की तुम अपने हृदय रूपी घरों के मध्य में नमस्कार के साथ पूजा करो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतून् इति प्रथमद्विकस्य गौरीवितिर्गायत्रीन्द्रः कट्योर्न्यासे विनियोगः।

यह कमर के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५र र २ १ २ १ २र १
ॐ आतूनआ । द्रक्षुमा २ ३ न्ताम् । चायित्रङ्ग्राभा

२ १ - १ २र ३ ५
२ ३ ङ्हाइ । संगृ - २ भाया । महाहस्तो २ ३ ४ हाइ ।

१ - १ १ १ ३
दक्षा २ इणाइना । महा २ ३ । हा २ स्ता २ ३ ४

५र र १ २ २ १ १ १ १
औहोवा । दक्षिणे ३ ना २ ३ ४ ५ ॥ २० ॥ ॐ

५र र ४ ५ १ ० ३ ५
आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम् । चित्रा २ ङ्ग्रा २ ३ ४ भाम् ।

२ ३ ५ ९ २ १ ३
संगृभा २ ३ ४ या । मा ३ हा ३ । हा २ स्ता २ ३

५र र १ २र ३ १ १ १ १
४ औहोवा । दक्षिणेना २ ३ ४ ५ ॥ २१ ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
आतू न इन्द्र क्षुमन्तङ्क्षित्रङ् ग्राभꣳसंगृभाय ।

३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २ २
आ । तू । नः । इन्द्र । क्षुमन्तम् । चित्रम् । ग्राभम् । सम्।

३ ३ २ ३ २ १ २र
गृभाय । महाहस्ती । महा । हस्ती । दक्षिणेन ॥१६७॥

हे इन्द्र, बड़े भारी हस्त वाले पानी हे धारक शक्तियों से युक्त महान्

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परमेश्वर आप हमारे लिये अन्न, निवास आदि विज्ञान से युक्त ग्रहण के योग्य अद्भुत आश्चर्यजनक ज्ञान उत्तम साधनों से अच्छे प्रकार ग्रहण कराइये।

उत्तर द्विकस्य आकूपारो गायत्रीन्द्रः कुक्षौ न्यासे विनियोगः ।

यह कांख के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५र र ४ ५ ५ २ १ र
ॐ आतूनइ । द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंग्राभङ्संगृभा

१ २ १ र १ २ २ ३
२ या । चित्रंग्राभङ्सम् । गृ । औ ३ होइ । भा २

५ २र १ र र १ २र १
३ ४ या । ऐहोइ । महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ । औहो ।

३र ५ ४ ५
वाहो २ ३ ४ वा । णा ५ इनो ६ हाइ ॥ २२ ॥ ॐ

५र र ५ २ १ र र
आतूनइन्द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंग्राभङ्संगृभाया ।

२ १ र १ ३ ५ ३
चित्रंग्राभङ्सम् । गृ २ ३ । इ २ ३ ४ हा । भा २

५ २र १ र र १ २र १
३ ४ या । ऐहोइ । महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ । औहो ।

३र ५ ४ ५
वाहो २ ३ ४ वा । णा ५ यिनो ६ हाइ ॥ २३ ॥

सफपौष्कलयोर्देवाः प्रजापतिरुष्णिक् सोमः । वृषणयोर्न्यासे विनियोगः।

यह वृषण के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५
ॐ पवस्वा ३ मधु । मत्ता २ ३ ४ माः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १र २ १ – २ १ २ ४ २
इन्द्रायसोमा २ । क्रतुवाइत्ता ३ मो ३ । मा ३ २ ३ ४

५ २ १ २ ४ २
दाः । महाइ । द्युक्षाता ३ मो ३ । मा ३ ४ ५ दो ६

५
हाइ ॥२४॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रुत्तवित्तमो मदः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २
महि द्युक्षतमो मदः ॥ ५९८ ॥

१ २र १ २र १ २र ३ १ २ ३
पवस्व । मधुमत्तमः । इन्द्राय । सोम । क्रतुवित्तमः । क्रतु।

१ २र १ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २र १ २र
वित्तमः । मदः ॥ महि । द्युक्षतमः । द्यु। क्षतमः । मदः ॥५९८॥

सब से अधिक ज्ञान-सम्पन्न, ज्ञान प्राप्त कराने वालों में श्रेष्ठ, आनन्दस्वरूप हे परमात्मन् सोम! आप उपासक जीवात्मा के लिये प्रकट होइये और पवित्र कीजिये। आप हर्ष की मूर्त्ति और महान् हैं।

२ १ २ ४ ५ २ ३ ५ २ १ २ १
ॐ इन्द्रमा ३ च्छसु । ताइ २ ३ ४ माइ । वृषाणंया।

१ २ ३ ५ २ १ र १ ० ३
तूहारा २ ३ ४ याः । श्रुष्टइजाता । संइ २ न्दा २ ३

२ १ ३ १ १ १ १
४ ५ वा ६ ५ ६ः । सुवर्विदा २ ३ ४ ५ : ॥ २५ ॥

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ र
इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
श्रुष्टे जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥ ५६६ ॥

१ २र १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ १२र
इन्द्रम् । अच्छ । सुताः । इमे । वृषणम् । यन्तु । हरयः ॥

३ ३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
श्रुष्टे । जातासः । इन्दवः । स्वर्विदः । स्वः । विदः ॥ ५६६ ॥

शीघ्र सुन्दर रीति से सिद्ध हुये पात्रों में झरते हुये सर्वज्ञ, हरे रंग के अर्क खींच कर निकाले हुये ये सोम अभिलाषों की वर्षा करने वाले इन्द्र को प्राप्त हों।

श्यावाश्वांधीगवयोः श्यावाश्वोऽनुष्टुप् सोमः। ऊर्वोर्न्यासे विनियोगः।

यह जंघा के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

३ २ २ ४ ४र ५ २ ४
ॐ पुरो ३ १ । जी ३ ती । वोअ । धा ३ सः ।

४र ५ १ र र २ १ – १र –
एहिया । सू । तायमादा । यि त्वा २ इ । एहिया २ ।

१ १र २ ४ ३ ५ २र –
अपश्वानाङ्श्ना ३ थी ३ । ष्टा २ ३ ४ ना । ऐहा २

१र – २ र १र २ ४ २
इ । एहिया २ । सखायोदाइर्घा ३ जी ३ । ह्वा ३ ४

५ ५र र ५
५ यो ६ हाइ ॥ २६ ॥ ॐ पुरोजितीवो ४ न्धासाः ।

२ १र र २ १ – १ र र
सुताय । मादा २ ३ या । हुम्मा २ १ २ । त्वेअपश्वा-

२र १ २ २ १ – १ १
नङ्श्नथिष्टन । साखा ३ उवा । यो २ दी । घा २ ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ १ ४ ५ ४
जी । ह्वियाम् । औ २ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥ २७ ॥

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।

२ ३ १ २ ३ १ २ ३क २र
अपश्वानꣳश्नथिष्टन् सखायो दीर्घ जिह्व्यम् ॥५४५॥

३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २
पुरोजिती । पुरः । जिती । वः । अन्धसः । सुताय ।

३ १ २ १ २र १ २र ३
मादयित्नवे । अप । श्वानम् । श्नथिष्टन । श्नथिष्ट । न ।

१ २र ३ ३क २र ३ ३क २र
सखायः । स । खाय् : । दीर्घ जिह्व्यम् । दीर्घ । जिह्व्यम् ॥ ५४५॥

हे मित्रो! उपासको! सभी वस्तुएँ तुम्हारे लिये मिल सकती हैं। यदि तुम आनन्दिन करने वाली भक्ति (सोम) की रक्षा के लिये लम्बी जीभ वाले कुत्ते समान अपने लालची मन को सांसारिक विषयों से दूर रक्खो।

राजनरौहिणयोरिन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः । जान्वोर्न्यासे विनियोगः ।

यह घुटनों के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

१ १ १ ३र २र
ओ३म् हुम् । ३ । हो । ३ । हङ् । ३ । ओहां । ३ ।

३र २र – २ १ २ १ २र ३ ४ ५
औहोइ । ३ । इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवंताइ । ३ ।

१ र २।१ १र २र१ २ र २ १र
वयोबृहत् । ३ । विभ्राष्ट्येविधर्मणे । ३ । यत्पारियाः ।

२ १ २ ३ ४ ५ २ १ र १
युनज । तायिधियस्ताः । ३ । सत्यमोजः । ३ । रजः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १र २ १ २ ३ ४र ५
सुवः । ३ । शूरोनृषा । ता३श्रव । सश्चकामाइ । ३ ।
२ १ र २ १ र १र १ र
भद्रङ्सुधा । २ । भद्रङ्सुधे । षमूर्जं । इषमूर्जं । २ ।
२र १र २ १र २र ३ ४ ५ २ १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । ३ । बृहद्यशः । ३ ।
२ १ २ १ २ १ २ २ऽ
दिविदधे ३ हस् । २ । दिविदधे ३ । हाउवा ।
१र र र र र र २ ३ १ १ १ १ २र
वागीडासुवोबृहद्धा २ ३ ४ ५ः ॥ २८ ॥ ॐ हाउ
१ २ १ २ १ २
। ३ । आइही । ३ । आइहीया । ३ । आसाउ । ३ ।
१ २ १ २ १ र र र
आयाम् । ३ । नामाः । ३ । किट् । २ । इन्द्रन्नरोनेमधिताहवा
– १ र र र – १ र र र र
२ न्ताइ । यत्पार्यायुनजतेधिया २ स्ताः । शूरोनृषाता-
– १ र र र र – १
श्रवसश्चका २ माइ । आगोमतिव्रजेभजातुवा २ न्नाः ।
१ १ र १ १
मना २ ३ होइ । प्राणा २ ३ होइ। चक्षू २ ३ होंइ ।
र १ र १
श्रोत्रा २ ३ ४ होइ । घोषा २ ३ होइ । व्रता २ ३
र १ र १
४ होइ । भूता २ ३ ४ होइ । पाना २ ३ ४ होइ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ १
चित्ता २ ३ थ्ठं होइ । धीता २ ३ थ्ठं होइ । सुवा
१ २ १ ^ ३ ५२ २
२ ३ होंइ । ज्योता २ ३ इर्हों २ । वा २ ३ ४ औहोवा ।
३ १ १ १ १
ऊ २ ३ ४ ५ ॥ २९ ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ २ ३ २
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २२ ३ १ २ ३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥३१८॥

पूर्ववत् ३१८

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावें।

प्रथेति दिशोऽनुष्टुब्विश्वेदेवाः । प्रतिष्ठासीति द्यौर्जगतीद्यावापृथिव्यौ। पादयोर्न्यासे विनियोगः ।

यह पैरों के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२२ १२ १ २२ २२
ॐ हाउ । ३ । प्रथे । ३ । प्रत्यष्ठां । ३ । हाउ । ३ ।
१ २२ १ २ १ २२ १ २२ १ २ २ १
यद्वर्चोहिरण्य । स्या । यद्वावर्चोगवामू । ता ।
२ १ २ १ २२ १ २ २२ १ २२ १
सत्यस्यब्रह्मणोव । चाः । तेनमासङ्सृजाम । साइ ।
२२ १ २ १ २२ २ऽ
हाउ । ३ । प्रथे । ३ । प्रत्यष्ठां । ३ । हाउ ३ । वा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १ र २र २र १ र ३ १ १ १
ए । प्रथेप्रत्यष्ठां । ३ । ए । अहङ्सुवर्ज्योती २ ३ ४
१
५: ॥ ३० ॥

२उ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २
यद्वर्चो हिरण्यस्य यद्वा वर्चो गवामुत ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
सत्यस्य ब्रह्मणो वर्चस्तेन मा सँसृजामसि ॥ ६२४॥

पूर्ववत् ॥६२४॥

जो तेज सूर्य का है, जो तेज उसकी किरणों का है और जो तेज सत्यस्वरूप ब्रह्म का है उससे हम उपासक अपने को संयुक्त करें।

२ १र २ १ २ र र र र
ॐ प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । ३ । वर्चोसिमनोसिऐही ।
र र र र र रर र र रर
मन्येवांद्यावापृथिवीसुभोजसावैही । येअप्रथेथाममित-
र रर र र र र र र र र
मभियोजनामैही । द्यावापृथिवीभवतङ्स्योनाऐही ।
र र २ र र २ १र २ १
तेनोमुञ्चतमङ्हसाऐही । प्रतिष्ठासिप्रति । ष्ठा । ३ ।
२ र र र २ऽ २र १
वर्चोसिमनोसिऐही ३ । हाउवा । ए । भूतम् । ३ ॥ ३१ ॥

१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र
मन्ये वां द्यावा पृथिवी सुभोजसौ ये अप्रथेथाममित मभि योजनम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
द्यावा पृथिवी भवतꣳ स्योने ते नो मुञ्चत मꣳहसः ॥६२२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ ३ ३ ३ १ २
मन्ये । वाम् । द्यावा पृथिवी । द्यावा । पृथिवी इति ।

३ १ २ ३ १ २र १ २ १ २र १ २र
सुभोजसौ । सु । भो जसौ । ये इति । अप्प्रथेथाम् । अमीतम् ।

२ ३ ३ २ १ २र १ २र १ २र
अ । मीतम् । अभि । योजनम् ॥ द्यावा पृथिवी । द्यावा ।

३ १ २ १ २ ३ १ २ १ २ ३ ३
पृथिवी इति । भवतम् । स्योने इति । ते इति । नः । मुञ्चतम् ।

१ २र
अꣳहसः ॥६२२॥

हे सूर्य के समान प्रकाशक परमात्मन् ! और हे पृथिवी के समान विस्तृत प्रकृति! मैं आप दोनों को उत्तम पालक मानता व जानता हूँ। आप दोनों पुरुष और प्रकृति हमारे लिए सुखकारक हों। दोनों हमें पाप से मुक्त करें।

एषोउषेति उषागायत्र्यश्विनौ कवचे न्यासे विनियोगः ।

यह भुजा के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५र र १ र२ र १ २ १ २
ओ३म् एषोउषाः । आपूर्विया । व्युच्छति । होवा ३

र २ १र २ ३ २ ३र २
हाइ । प्रियादा २ ३ इवा ३ ४ः । स्तुषा ३ ४ इवामा

२ १ ५ ४ ५
३ । श्विनो २ ३ ४ वा । बृ ५ हो ६ हाइ ॥ ३२ ॥

३ २ ३ १ २र ३ क २र ३ २ ३ २
एषो उषा अपूर्व्या व्युच्छति प्रिया दिवः ।

३ १ २ ३ २
स्तुषे वामश्विना बृहत् ॥१७८॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ ३ २ १ २ २ ३ २ ३
एषा । उ । उषाः । अपूर्व्या । अ । पूर्व्या । वि । उच्छति ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ ३ २
प्रिया । दिवः ॥ स्तुषे । वाम् । अश्विना । बृहत् ॥१७८॥

अपूर्व सिद्धि देने वाली बड़ी प्यारी यह उषा की बेला आकाश में फैल रही है। मुझ उपासक के मस्तिष्क को पूर्ण करने वाली ज्योतिष्मती प्रज्ञा उदय हो रही है। अतः प्राण अपान का मैं गुण वर्णन करता हूँ। हे अध्यापको तथा शिष्यो! तुम महान् परमात्मा की स्तुति करो।

आक्रन्दयेति शर्वऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः।

यह अस्त्र (घेरा) न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १ २ १ र – १ –
ॐ आक्रन्दयोवा । कुरुघोषं महा २ । आन्ता २

र र र – १ – र१ र
म् । हरीइन्द्रस्याभियोजया २ । आशू २ । मर्माविधन्ददतामन्यो

– १ – २ १र र र १
२ । आन्या २ म् । शल्यात्मापततुश्लोकमा २ ३ । आ

३ २र र १
२ । छा २ ३ ४ । औहोवा । अस् ॥ ३३ ॥

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
आक्रन्दय कुरुघोषंमहान्तꣳहरीइन्द्रस्याभियो जयाशू ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
मर्म्माविधन्द दतामन्यो अन्यꣳशल्यात्मा पततु श्लोकमच्छ ।

(आ० गा० ७८)

२ ३ ३ २ १ २र ३ १ २ २ ३ १ २
आ । क्रन्दय । कुरु । घोषम् । महान्तम् । हरि इति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३
इन्द्रस्य । अभि । योजय । आशू इति ॥ मर्माविधम् । मर्म ।

१ २ ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २
विधम् । ददताम् । अन्यः । अन् । यः । अन्यम् । अन्। यम् ।

३ १ २ ३ २ ३ १ २र १ २र
शल्यात्मा । शल्य । आत्मा । पततु । श्लोकम् । अच्छ ॥
(आ. गा. ७९)

हे संकट को हरने वाले प्रभु! आप शत्रु के हृदय को भेद डाले ऐसा महान् शब्द करें, शत्रुओं को परस्पर संहार करने वाला कीजिये। शत्रुओं को रुदन कराइए और सब दिशाओं में निवास करने वाले इन्द्र के शत्रुओं का शीघ्र नाश होवे।

मानस्तोकेति कुत्सो जगती रुद्रः । दिग्बन्धने विनियोगः ।

यह दिग्बन्धन का विनियोग मन्त्र है।

ॐ मानस्तोकेतनयेमानआयौमानोगोषुमानोअश्वे-षुरीरिषः। वीरान्मानोरुद्रभामिनोवधीर्हविष्मन्तः-सदमित्वाहवामहे ॥३४॥ (छा० मं० ब्रा० २) इत्यङ्गन्यासः।

यह अंगन्यास का मन्त्र है।

अथ षडङ्गन्यासः

भ्राजेति सूर्यो गायत्र्यग्निः । हृदये न्यासे विनियोगः।

यह हृदय के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

२र १ २र –
ॐ भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ ।

१ २ १र र २ र १र २ १र २ १ २ २र १र र २
अग्नआयूङ्‌षिपवसे । आसूर्वार्जमिषञ्चनः । आरेबाध-

१ र २र १ २र – २र
स्वदुछुनाम् । भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ । ए ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र
भ्राज । ३ । ॥ १ ॥ इति हृदयाय नमः ।

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः ।

३ १ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥६२७॥

हे अग्नि! ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! हमें बल, आयु और अन्न प्रदान कीजिये । बुरे, लोभी तथा क्रोधान्ध जनों को हम से दूर रख कर पीडित कीजिये (या दुखदायी पीडा व दुख को दूर कीजिये)।

अबोध्यग्नेः प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्निः । शिरसि न्यासे विनियोगः ।

यह शिरोन्यास का विनियोग मन्त्र है।

४ ५र ४ १ २ १ २र १ ९२ Ω र
ॐ अबोधिया । ग्नाइः समिधाजना २ नाम् ।

१ २ २ र १र र २ १ २ २ १ ९र
प्रताइधे ३ नूम् । इवायतीमुषासम् । यह्वाइ ३ वा । प्रवा

१र २ १ २र र १र २ २ र १र २ १ २
२ यामुज्जिहानाः । प्रभाना २ ३ वाः । सस्त्रतेनाकमच्छ ।

१ २ १
इडा २ ३ भा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा । ॥ २ ॥
इति शिरसे स्वाहा ।

१ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायती मुषासम् ।

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
यह्वा इव प्रवया मुज्जिहानाः प्रभानवः सस्त्रते नाकमच्छ ॥७३॥

लोगों की लगाई हुई लकड़ी से जिस प्रकार अगिन, दुधार गाय के समान आते हुए, प्रत्येक उषःकाल में प्रदीप्त होता है उसी प्रकार

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

परमात्मा उपासकों की आत्मा में योगानुष्ठान के साधान द्वारा प्रबुद्ध किया जाता है। जिस प्रकार अग्नि की बड़ी बड़ी ज्वालायें शांखा को ऊपर उठाने वाले वृक्षों के समान अन्तरिक्ष की ओर फैलती हैं उसी प्रकार उपासक के प्राण व आत्मा परमेश्वर की ओर और आनन्दमय मोक्ष की ओर अच्छे प्रकार फैलती है।

अदर्द्दरुदिति उरुक्षय ऋषि स्त्रिष्टुप्छन्दः इन्द्रो देवता शिखायां न्यासे विनियोगः।

यह शिखा (चोटी) के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४ ५ ४ २ र १ २ २ १

ॐ अदर्द्दरुत् । समसृजोविखानि । त्वमर्णा २ ३ ४

५ २ र र १ २ २र ५

वान् । बद्धधानाङ्अराम्णाः । महांता २ ३ ४ मी ।

२ १ २ २ १ ५ १ २ १ २ १

द्रपर्वतंवियाद्वः । सृजाद्धा २ ३ ४ राः । अवयद्दान् । वा

२ १

२ ३ न्हा ३ ४ ३ न् । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥ ३ ॥

इति शिखायै वषट् ।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २

अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानाः अरम्णाः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २

महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद् दानवान् हन् ॥३१५॥

हे इन्द्र ! आप ऊर्ध्व स्थान मूर्धा भाग को विदीर्ण करते हैं और इन्द्रिय द्वारों को रचते हैं। आप गतिशील आघात-प्रतिघात करने वाले प्राणों को व्यवस्थित करते हैं। आप हमारे महान् पर्वों (पोरुओं) वाले शरीर को विशेष रूप से प्रकट करते हैं और ज्ञान देने वाले प्राणों को प्रेरित करते हैं तथा ज्ञान स्मृति रूप धाराओं को विशेष रूप से प्रेरित करते हैं। आप ही अज्ञान आदि को नष्ट करते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आमन्द्रैरिति वाम्रो ऋषि र्वृहती छन्दः इन्द्रो देवता कवचे न्यासे विनियोगः।

यह कवच के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५र र २ र र र १ २
ॐ आमन्द्रैरा । द्रहरिभाइर्याहिमयूरा ३ रोमाभा ३

४ ५४ ५ २ ३ ५ २र १
इः । मात्वाकाइचीत् । नियेमू २ ३ ४ रीत् । नपाशिनाः ।

२ १ — २१ १ ३
अतिधान्वे २ । वता २ ३ ङ् । आ २ इहा २ ३ ४

५र र ३ ५
औहोवा । वा २ ३ ४ याः ॥ ४ ॥ इति कवचाय हुम् ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूर रोमभिः ।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
मा त्वा के चिन्नियेमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥२४६॥

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप मोर के शब्दों के समान उत्तम हर्षप्रद स्वरों से स्तुति किये जाने पर अपनी हर्षप्रद शक्तियों से हमारे अन्तःकरण में प्रत्यक्ष होइये। पाशधारी मनुष्यों के समान कोई भी आप को बाँध नहीं सकता। शस्त्रधारी के समान आप उन जाल रचने वालों का निग्रह करते हैं।

इदं विष्णुरिति विष्णुर्गायत्री विष्णुः। नेत्रयोर्न्यासे विनियोगः।

यह आँख के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

५ ५ १ ३ २ ३ ५
ॐ इदा ६ मे । विष्णू २ः । विचक्रा २ ३ ४ माइ ।

१ र २ १ २ — १ — १
त्राइधानि । दधाइपा १ दा २ म् । समू २ हो १ । ढा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ ३ ५र र २
२ ३ मा ३ । स्या २ पा २ ३ ४ औहोवा । ए ३ ।

२
सुले १ ॥ ५ ॥ इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम् ।

१ २ ३ २
समूढमस्य पां॑सुले ॥२२२॥

सर्वव्यापक परमेश्वर इस जगत् में सर्वत्र गति कर रहा है, वह अपनी शक्ति से पृथिवी, अन्तरिक्ष और द्यौ, इन तीनों लोकों में स्थापित किये हुए है। इस जगत् के धूल कण-कण तक में उसका स्वरूप और शक्ति व्याप्त है।

आवोराजेति वामदेवस्त्रिष्टुब् रुद्रः । अस्त्रे न्यासे विनियोगः ।

यह घेरे के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

४र ५र र ४ ३ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २र
ॐ आवोराजा । नमध्व । रस्यरुद्राम् । हो । ता ।

१ २ २ २र ३ ४ ५ २ १
राम् । स । त्ययजा ३ म् । रोदसीयोः । अग्निपु । रा ।

२ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ २ १
तनयि । त्नारचित्तांत् । हिरण्य । रू । पा ३ मव ।

२ २ ४
सा ३ ४ ३ इ । का ३ र्णू ५ ध्वा ६ ५ ६ म् ॥ ६ ॥

इति-अस्त्रायफट् ॥ इति षडङ्गन्यासः ॥

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
आ वो राजान मध्वरस्य रुद्रं॑ होतारं॑ सत्ययजं॑ रोदस्योः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३   २ ३ १ २ ३   २ ३ २ ३ १ २   ३ १ २
अग्निं पुरातनयित्नो रचिताद्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम्॥६९॥

हे मनुष्यो! तुम सब हिंसारहित यज्ञ के स्वामी, कर्मफल प्राप्त करने वालों, दुष्टों के सन्तापक द्यौ तथा पृथिवी के बीच सच्चा यज्ञ करने वाले, ज्योतिर्मय, हितकारी तथा रमणीय प्रकाश वाले परमेश्वर की–अपनी रक्षा के लिये बिजली के समान अकस्मात् आ जाने वाली अचेतन, ज्ञानरहित मृत्यु के आने से पहले ही उपासना कर लो।

अथ दशाक्षरन्यासः

ॐ दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्विराट् रुद्रः। न्यासे विनियोगः।

अब इसके पश्चात् दश अक्षर वाले मन्त्र (ॐ नमो भगवते रुद्राय) का न्यास आरम्भ होता है।

यह दशाक्षर मन्त्र के न्यास का विनियोग मन्त्र है।

ॐ ॐ नमो मूर्ध्नि । ॐ नं नमो नासिकायाम् । ॐ मों नमो ललाटे। ॐ भं नमो मुखे । ॐ गं नमः कण्ठे । ॐ वं नमो हृदये । ॐ तें नमो दक्षिणकरे । ॐ रुं नमो वामकरे । ॐ द्रां नमो नाभौ । ॐ यं नमः पादयोः । इति दशाक्षरन्यासः ॥

इस प्रकार यजमान को चाहिये कि वह दशाक्षरमन्त्र का विनियोग पढ़ कर उस मन्त्र के एक-एक अक्षर का उच्चारण कर मूर्धा आदि अङ्गों का स्पर्श करे। जैसे ॐ नमः कह कर शिर का स्पर्श करे। ॐ नं नमः से नाक का। ॐ मों नमः से मस्तक का। ॐ भं नमः से मुख का। ॐ गं नमः से कण्ठ का। ॐ वं नमः से हृदय का। ॐ तें नमः से दाहिने हाथ का। ॐ रुं नमः से बाँयें हाथ का। ॐ द्रां नमः से नाभि का और ॐ यं नमः से दोनों पैरों का।

अथ ध्यानम्

इसके पश्चात् यजमान को रुद्ररूप शङ्कर भगंवान् का ध्यान करना चाहिये। ध्यान के श्लोक निम्नलिखित हैं–

अथात्मानं रुद्ररूपं ध्यायेत्पञ्चमुखं शिवम् ।
प्रतिवक्त्रं त्रिनेत्रञ्च दशहस्तन्दशायुधम् ॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अपनी आत्मा का रुद्ररूप में ध्यान करे। वह रुद्र रूप पाँच मुखों वाला, प्रति मुख में तीन नेत्र वाला, दस हाथ और दस आयुध वाला है ।।१।।

कमण्डल्वक्षसूत्राहिबाणशूलधरं हरम् ।
दण्डंडमरुखट्वाङ्गाभयपात्रपिनाकिनम् ।।२।।

कमण्डलु, जपमाला, सर्प, बाण, त्रिशूल, दण्ड, डमरू, खट्वाङ्ग, अभयपात्र और पिनाक को वह धारण किये हुए है ।।२।।

अष्टसिद्धियुतं सौम्यं सर्वाऽऽभरणभूषितम् ।
नीलग्रीवं शशाङ्कार्द्धशेखरं स्मितसुन्दरम् ।।३।।

वह आठों सिद्धियों से युक्त, सौम्य, संपूर्ण आभरणों से विभूषित, नीलग्रीवा वाला, आधे चन्द्र से विभूषित शेखर वाला, मन्द मुस्कान से सुन्दर ।।३।।

शुद्धस्फटिकसङ्काशं नागयज्ञोपवीतिनम्।
गजचर्मपरीधानं व्याघ्रचर्मोत्तरीयकम् ।।४।।

शुद्ध स्फटिक के समान गौर वर्ण, सर्पों का यज्ञोपवीत, गजचर्म का वस्त्र तथा व्याघ्रचर्म का दुपट्टा धारण किये हुये है ।।४।।

वृषस्कन्धसमारूढमुमादेहार्धधारिणम्।
दुर्दन्तङ्कपिलजटँशिखामुद्योतकारिणम् ।।५।।

वह बैल के ऊपर बैठा उमारूप अर्धाङ्गधारी, भयंकर दाँत वाला, पीली जटा वाला और ऊपर खड़ी हुई चोटी वाला है ।।५।।

अमृतेनाप्लुतं हृष्टं दिव्यभोगसमाकुलम् ।
दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरैर्नमस्कृतम् ।।६।।

वह अमृत से आप्लावित, हृष्ट, दिव्य भोगों से युक्त, दिक्पालों से युक्त और देव-दानवों से नमस्कृत है ।।६।।

शाश्वतं सच्चिदानन्दं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ।
अजेयममृतन्नित्यं सर्वव्यापिनमीश्वरम् ।।७।।

वह ईश्वर शाश्वत, सच्चिदानन्द, ध्रुव, अक्षर, अव्यय, अजेय, अमृत, नित्य और सर्वव्यापक है ।।७।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एवं रुद्रतनुं सर्वे यक्षराक्षसपन्नगाः ।
डाकिनीशाकिनीभूतपिशाचा जृम्भका ग्रहाः ॥८॥

इस प्रकार रुद्र के शरीर को सब यक्ष, राक्षस, पन्नग, डाकिनी, शाकिनी, भूत, पिशाच, जृम्भक और ग्रह ॥८॥

ज्वलन्तं ते प्रपश्यन्ति प्रलयानलसन्निभम् ॥९॥

ज्वलन्त (जलती हुई) प्रलय काल की अग्नि के समान देखते हैं ॥९॥

इति श्रीमहादेवं स्वहृदि ध्यात्वा पञ्चमानसोपचारैः पूजयते।

अथ मानसिकपूजा

इस प्रकार यजमान श्री महादेव जी का अपने हृदय में ध्यान कर के फिर पञ्चोपचार से श्री शङ्कर जी की मानसिक पूजा करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं चन्दनं समर्पयामि ।

यह मन्त्र पढ़कर श्री महादेव जी को मानसिक चन्दन अर्पित करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवाय मानसिकं पुष्पं समर्पयामि ।

इस मंत्र से मानिसक फूल अर्पित करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय। श्रीमहादेवाय मानसिकं धूपमाघ्रापयामि।

इस मंत्र से मानसिक धूप देवे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय। श्रीमहादेवाय मानसिकं दीपं दर्शयामि।

इस मंत्र से मानसिक दीप प्रदर्शित करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय। श्रीमहादेवाय मानसिकं नैवेद्यं निवदेयाम्नि।

इस मन्त्र से मानसिक नैवेद्य अर्पित करें।

एवं सम्पूज्य क्षणं तद्ग तमनास्तिष्ठेत् ।

इति मानसिकपूजा ।

ततो बाह्यपूजां कुर्यात् ।

अथ बाह्यपूजा

इस प्रकार शिव की मानसिक पूजा करके क्षणमात्र तन्मय होकर स्थित रहे। इस तरह से मानस पूजा समाप्त कर बाहरी पूजा करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तत्रादौ कलशवरुणावाहनादिघटपूजनान्तमुक्तवत्कृत्वा स्वाग्रे साधारं ताम्रपात्रं संस्थाप्य । ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । इति रुद्रगायत्र्या शुद्धोदकेनापूर्य तत्र गन्धादीन् निक्षिप्य। ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । इति रुद्रगायत्र्या तज्जलमभिमन्त्र्य तेनोदकेन पूजासामग्रीं सम्प्रोक्ष्य । ॐ नमो भगवते रुद्राय । इति दशाक्षरमन्त्रेण स्वपुरोवर्त्तिपीठे लिङ्ग संस्थाप्य तस्मिन्। ॐ नमो भगवते रुद्राय । श्रीमहादेवमावाहयामि। इत्यावाह्य दशाक्षरमन्त्रेणैवोपचारान् कुर्यात् ।

बाह्य पूजा में सर्वप्रथम यजमान कलशस्थापन तथा वरुण-आवाहनादि से घट-पूजन तक कहे हुए विधान से पूजन करके अपने आगे आधार के सहित ताँबे का बर्त्तन स्थापित कर 'ॐ तत्पुरुषाय विद्महे०' इस रुद्रगायत्री के द्वारा शुद्ध जल से उस बर्त्तन को भरकर उसमें गन्धाक्षत आदि छोड़कर रुद्रगायत्री के ही द्वारा उस जल को अभिमंत्रित कर तथा उस जल से पूजन-सामग्री को पवित्र कर 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' इस दश अक्षर वाले मन्त्र से अपने सम्मुख विद्यमान आसन पर शिवलिङ्ग तथा प्रतिमा स्थापित कर 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' यह दशाक्षर मन्त्र पढ़कर आवाहन कर दशाक्षर मन्त्र से ही षोडश उपचारों से पूजन करे।

षोडशोपचार पूजन की विधि इस प्रकार है-

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवायासनं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से महादेव जी को आसन देवे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय पाद्यं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से पाद्य देवे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय अर्घ्यं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से अर्घ्य देवे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल समर्पित करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय स्नानं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से स्नानार्थ जल दे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय वस्त्रं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से वस्त्र चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय उपवीतं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से जनेऊ अर्पित करे (पहना दे)।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय चन्दनं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से चन्दन लगावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय पुष्पं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से फूल चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय धूपमाघ्रापयामि ।

इस मन्त्र से धूप (अगरबत्ती) चढ़ावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय दीपं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से दीप दिखावे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय नैवेद्यं निवेदयामि ।

इस मन्त्र से नैवेद्य अर्पित करे।

ॐ नमो भगवते रुद्राय श्रीमहादेवाय आचमनीयं समर्पयामि ।

इस मन्त्र से आचमन के लिये जल चढ़ावे।

एवं नैवेद्यान्तैरुपचारैः सम्पूज्य षडङ्गस्य रुद्राध्यायस्य ऋष्यादीन् संस्मृत्य पठेत्।

इस प्रकार आसन से लेकर नैवेद्य तक षोडशोपचारों के द्वारा शङ्कर जी का पूजन करके ऋषि आदि (ऋषि-गणों) का स्मरण करते हुए छह अङ्गों वाले रुद्राध्याय का पाठ करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ ऋष्यादयः

ऋषिगणों के नाम इस प्रकार हैं–

भ्राजाभ्राजेति द्वयोः सूर्यो गायत्र्यग्निः।

भ्राजा भ्राजेति० इन दोनों साम के सूर्य ऋषि, गायत्री छन्द और अग्नि देवता हैं।

शुक्रचन्द्रेति द्वयोः प्रजापतिर्गायत्री वायुः ।

आद्यस्य द्वितीयस्य त्वष्टा रश्मिश्चन्द्रमसः ।

शुक्रचन्द्रेति० इन दोनों साम के प्रजापति ऋषि, गायत्री छन्द, और पहले साम के वायु देवता तथा, दूसरे साम के चन्द्रमा-देवता हैं।

राजनरौहिणयोरिन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

राजनरौहिणयोः० इन दोनों साम के इन्द्र ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं।

अग्नेर्व्रतस्याग्निर्गायत्र्यग्निः।

अग्नेर्व्रतस्य० इस साम का अग्नि ऋषि, गायत्री छन्द और अग्नि देवता है।

वायोर्व्रतस्य वायुरत्यष्टिः सोमः ।

वायोर्व्रतस्य० इस साम का वायु ऋषि, अत्यष्टि छन्द और सोम देवता है।

श्लोकानुश्लोकानां प्रजापतिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

नवस्तेत्यस्य त्वष्टा ।

श्लोकानुश्लोकानां० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

सेतुसाम्नः प्रजापतिस्त्रिष्टुबात्मा ॥ १ ॥

सेतुसाम्नः० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और आत्मा देवता है।

अबोध्यग्नेरिति प्रजापतिस्त्रिष्टुबग्न्युषसौ ।

अबोध्यग्निः० इस साम का प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और अग्नि उषस् देवता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

महित्रीणामिति द्वयोः पृष्ठवाड् गायत्रीन्द्रः ।

महित्रीणाम्० इन दोनों साम के पृष्ठवाड् ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं।

त्वावत इति धुरासाकमश्वो गायत्रीन्द्रः ।

त्वावतः० इस साम का धुरासाकमश्व ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता है।

इन्द्रन्नरो इति गौरीवितिस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

इन्द्रन्नरः० इस साम का गौरीविति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द इन्द्र देवता है।

त्यमूष्विति द्वयोस्ताक्ष्यस्त्रिष्टुबिन्द्रः।

त्यमूषु० इस साम का तार्श्यं ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

त्रातारमितीन्द्रस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

त्रातारम्० इस साम का इन्द्र ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता है।

सोमः पुनान इति प्रजापतिरुष्णिक् सोमः ।

सोमः पुनानः० इस साम का प्रजापति ऋषि, उष्णिक् छन्द और सोम देवता है।

ससुन्वेत्यस्य प्रजापतिरुष्णिक् सोमः ।

ससुन्वे० इस साम का प्रजापति ऋषि, उष्णिक् छन्द और सोम देवता है।

विश्वतो दावन्निति प्रजापतिर्विष्टारपंक्तिरिन्द्रः ।

विश्वतोदावन्० इस साम का प्रजापति ऋषि, विष्टारपङ्क्ति छन्द और इन्द्र देवता है।

उदुत्तममिति वरुणगौतमौ त्रिष्टुब् वरुणादित्यौ ॥

उदुत्तमम्० इस साम के वरुण और गौतम ये दो ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और वरुण तथा आदित्य ये दो देवता हैं।

अदर्द्दरुदिति द्वयोरुरुक्षयस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

अदर्द्दरुत्० इन दोनों साम के उरुक्षय ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं।

सुष्वाणास इति द्वयोः पृथुस्त्रिष्टुबिन्द्रः ।

सुष्वाणास० इन दोनों साम के पृथु ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और इन्द्र देवता हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आतून इति पूर्वद्वयोर्गौरीवितिरुत्तरयोराकुपारो गायत्रीन्द्रः ।

आतून० इन पहले दोनों साम के गौरीविति ऋषि, इसके बाद के दोनों साम के आकुपार ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं।

मृज्यमानः सुहस्त्येति पूर्वस्य उक्ष्णोरन्ध्रः ।

षष्ठस्याग्निर्बृहती सोमः ॥ ३ ॥

मृज्यमानः० पहले साम का उक्ष्णोरन्ध्र ऋषि, दूसरे का अग्नि ऋषि, बृहती छन्द और सोम देवता है।

आमन्द्रैरिति वाम्रो बृहतीन्द्रः ।

आमन्द्रैः० इन तीनों साम के वाम्र ऋषि, बृहती छन्द और इन्द्र देवता हैं।

आनोविश्वेति त्रयाणां वसिष्ठो बृहतीन्द्रः ।

आनोविश्वा० इन तीनों साम के वसिष्ठ ऋषि, बृहती छन्द और इन्द्र देवता हैं।

प्रसेनानीरिति त्रयाणां कुत्सस्त्रिष्टुप् सोमः ।

प्रसेनानीः० इन तीनों साम के कुत्स ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और सोम देवता हैं।

पवित्रन्त इति द्वयोरादित्यो जगती ब्रह्मणस्पतिः ॥

पवित्रन्ते० इन दोनों साम के आदित्य ऋषि, जगती छन्द और ब्रह्मणस्पति देवता हैं।

इदं विष्णुरिति विष्णुर्गायत्री विष्णुः ।

इदं विष्णुः० इस साम का विष्णु ऋषि, गायत्री छन्द और विष्णु देवता है।

प्रक्षस्यविष्णोरिति विष्णुर्जगती वैश्वानरः ।

प्रक्षस्य० इस साम का विष्णु ऋषि, जगती छन्द और वैश्वानर देवता है।

प्रकाव्यमिति वराहस्त्रिष्टब् वराहः ।

प्रकाव्यम्० इस साम का वराह ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और वराह देवता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सहस्रशीर्षेत्यादिपञ्चानां नारायणोऽनुष्टुप् पुरुषः ।

सहस्रशीर्षा० इन पांच साम के नारायण ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और पुरुष देवता हैं।

षष्ठस्य नारायणो गायत्र्यात्मा ।।५।।

षष्ठ साम का नारायण ऋषि, गायत्री छन्द और आत्मा देवता है।

आवोराजेति वामदेवस्त्रिष्टुबुरुद्रः ।

आवारोजा० इस साम का वामदेव ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और रुद्र देवता है।

तद्वोगायेति पूर्वद्वयो रुद्र उत्तरद्वयोर्मृगयुर्गायत्रीन्द्रः ।

तद्वोगाय० इन चारों साम के मृगयु ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता हैं।

आज्यदोहत्रयाणांमग्निर्वैश्वानरस्त्रिष्टुबग्निर्वैश्वानरः ।

आज्यदोह:० इन तीनों साम के अग्निवैश्वानर ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द और अग्निवैश्वानर देवता हैं।

देवव्रतानां देवा उत्कृती रुद्रः ॥ ६ ॥

देवव्रतानां० इन तीनों साम के देवा ऋषि, उत्कृती छन्द और रुद्र देवता हैं।

श्रीमहारुद्रप्रतीये जपे विनियोगः ।

(अभिषकेपक्षे–अभिषेके विनियोगः। हवनात्मकपक्षे–होमे विनियोगः।) इति–ऋष्यादयः॥

श्रीमहारुद्रप्रीत्यर्थ जप-अभिषेक-हवन करने में इन सब सामों का विनियोग है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ रुद्रारम्भः

२उ ३कं २र १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य
२ ३ १ २ ३ १ २
धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥१४६२॥

१ २ २र २ –
ॐ तत्सवितुर्वरेणियोम् । भार्गोदेवस्य धीमाही २।
२ १र २ २ १ – १
धियोयोनः प्रचो १ २ १ २ । हुम् । आ २ । दायो ।
२ २ १ १
आ ३ ४ ५ ॥ १ ॥

पदपाठः

२ ३ २ १२र १ २ ३ १ २ ३
तत् । सवितुः । वरेण्यम् । भर्गः । देवस्य । धीमहि ।
१ २र ३ १ २ ३ १ २
धियः । यः । नः । प्रचोदयात् । प्र । चोदयात् ॥१४६२॥

जो पापों का नाश करता है और हमारी बुद्धि को शुद्ध करता है उसी भर्ग का हम ध्यान करते हैं।

२र १ २र –
ॐ भ्राजां । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ ।
१ २ १र र २ र १र २ १र २ १ २ २र १र र २
अग्नआयूꣳषिपवसे । आसूवोर्जमिषञ्चनः । आरेबाधस्व-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ र २र १ २र २र
दुछुनाम् । भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ । ए।

१र
भ्राज । ३ ॥१॥ (आ०गा०२५५)

२ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
अग्न आयूंषि पवस आसुवोर्जमिषं च नः।

३ १ २ ३ १ २
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥६२७॥

१ २र १ २र ३ २ ३ १ २र १ २र ३
अग्ने । आयूंषि । पवसे । आ । सुव । ऊर्जम् । इषम् । च ।

३ २ ३ ३ १ २
नः ॥ आरे । बाधस्व । दुच्छुनाम् ॥६२७॥

हे अग्नि! ज्ञानस्वरूप परमेश्वर! हमें बल, आयु और अन्न प्रदान कीजिये। बुरे, लोभी तथा क्रोधान्ध जनों को हम से दूर रख कर पीडित कीजिये (या दुखदायी पीडा व दुख को दूर कीजिये)।

१ र २ २ रर १ २
ॐ आ । भ्राज । ३ । अग्निर्मूर्द्धादी ३ वाः का १

– २ र १ २ –
कृ २ त् । तिः पृथिवी ३ या आ १ या २ म् ।

र र र १ २ – १ र २
अपाꣳरेताꣳसी ३ जाइन्वा १ ती २ । आ । भ्राज । २ ।

१ र ९ २ २र १र र २
आ । भ्राजा ३ उ वा । ए । आ भ्राज । ३ ॥ २ ॥

(आ० गा० २५६)

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २
अग्निर्मूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २र
अपाᳪरेताᳪसि जिन्वति ॥२७॥

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २
अग्निः । मूर्द्धा । दिवः । ककुत् । पतिः । पृथिव्याः ।

३ २ ३ २ १ २ ३
अयम् ॥ अपाम् । रेताᳪसि । जिन्वति ॥२७॥

वह अग्नि सब को शिरोमणि, द्यौ लोक या सूर्य का ककुद् अर्थात् सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि भाग के समान वहन करने वाला, सर्व-आश्रय और पृथिवी का आश्रय है। वही सब लोगों के बीजभूत समस्त स्थावर और जंगम प्राणियों को तृप्त करता, उत्पन्न करता तथा जीवन देता है।

२र १ २ १ २
हाउ । ३ । शुक्रम् । ३ । शुक्रᳪशुक्रम् । ३ ।

३ २ १ २ २ र र १ २ –
शुक्रᳪशूक्रम् । ३ । नियुत्वान्वाया ३ वागा १ ही २ ।

२ र १ २ – र
अयᳪशुक्रोआ ३ यामा १ इता २ इ । गन्तासिसुन्वा

१ २ २र १
३ तोगृ १ हा २ ३ म् । हाउ । ३ । शुक्रम् । ३ ।

२ १ २ ३ २ १ २ ३ २ १
शुक्रᳪशुक्रम् । ३ । शुक्रᳪशूक्रम् । २ । शुक्रम् । शू २ ।

३ ५र र २र १
क्रा २ ३ ४ । औहोवा । ए । शुक्रम् । ३ ॥ ३ ॥

(आ० गा० १४८)

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
नियुत्वान् वायवा गह्य यᳪशुक्रो अयामिते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ २ ३ २
गन्तासि सुन्वतो गृहम् ॥६००॥

३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ ३ २ ३ २
नियुत्वान् । नि । युत्वान् । वायो । आ । गाहि । अयम् । शुक्रः ।

३ ३ १ २र १ २र ३ २ ३ २
अयामि । ते ॥ गन्ता । असि । सुन्वतः । गृहम् ॥६००॥

हे शक्तिसम्पन्न गतियुक्त प्रभो! आप हमें प्राप्त होइये। यह कान्तिमान् सूर्य आप के नियम में है। आप साधक, उपासक, योगी के हृदय रूपी घर में प्रकट होते हैं।

२र २ १ २ १ २
हाउ । ३ । चन्द्रम् । ३ । चन्द्रश्चन्द्रम् । ३ ।

३ २ १ २ र र १ २ –
चन्द्रश्चान्द्रम् । ३ । अत्राहगोरा ३ मान्वा १ ता २ ।

र र १ २ – र
नामत्वष्टुरा ३ पाइचा १ या २ म् । इत्थाचन्द्रमा ३

१ २ २र १
सोगृ १ हा २ ३ इ । हाउ । ३ । चन्द्रम् । ३ ।

२ १ २ ३ २ १ २ ३ २ १
चन्द्रश्चन्द्रम् । ३ । चन्द्रश्चान्द्रम् । २ । चन्द्रम् । चा २ ।

३ ५र र २र १
द्रा २ ३ ४ । औहोवा । ए । चन्द्रम् । ३ ॥ ४ ॥

(आ० गा० १४९)

२उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
अत्राह गोरमन्वत नाम त्वष्टुरपीच्यम् ।

३ २ ३ १ २ ३ २
इत्था चन्द्रमसो गृहे ॥१४७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र १ २र ३ १ २र १ २र ३क २
अत्र । अह । गोः । अमन्वत । नाम । त्वष्टुः । अपीच्यम् ॥

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ २
इत्था । चन्द्रमसः । चन्द्र । मसः। गृहे ॥१४७॥

तेजस्वी, दीप्तमान् सूर्य की गमनशील किरणों के तेज का कुछ गुप्तांश चन्द्रमा के बिम्ब में है। इसी तरह सूर्यनाड़ी यानी सुषुम्ना का कुछ न ढका हुआ अंश भृकुटी के बीच वाम भाग में अथवा तालु के बीच में ऊपर की ओर मूर्धास्थान में गया है और वहीं परमेश्वर यानी आत्मा, ब्रह्म व परमात्मा का साक्षात्कार होता है। जगत् विधाता का गुप्त तेज ही सब को प्रकाशित करता है जैसे सूर्य का गुप्त प्रकाश चन्द्रमा को प्रकाशित करता है।

१ १ १ ३र २र
ॐ हुम् । ३ । हो । ३ । हः । ३ । ओहा । ३ ।

३र २र २ १ २ १ २र ३ ४ ५
औहोइ । ३ । इन्द्रन्नरो । ने ३ मधि । ताहवन्ताइ । ३ ।

१ र २ १ र २ र १ २ र २ १र
वयोबृहत् । ३ । भिभ्राष्ट्येविधर्मणे । ३ । यत्यारियाः ।

२ १ र ३ ४ ५ २ १ र १
यूनज । ताइधियस्ताः । ३ । सत्यमोजः । ३ । रजः

२र १ ३ १ २ ३ ४र ५
सुवः । ३ । शूरोनृषा । ता ३ श्रव । सश्चकामाइ । ३ ।

२ १ र २ १ र १ र १ र
भद्रंसुधा । २ । भद्रंसुधे । षमूर्जम् । इषमूर्जम् । २ ।

२र १र १ १र २र ३ ४ ५ २ १
आगोमताइ । व्रजेभ । जातुवन्नाः । ३ । बृहद्यशः । ३ ।

२ १ २ १ २ १ २ ३ऽ
दिविदधे ३ हस् । २ । दिविदधे ३ । हाउवा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र र र ररर २ ३ १ १ १ १
वागीडासुवोबृहद्धा २ ३ ४ ५: ॥ ५ ॥

(आ० गा० २०५)

२र १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । आइही । ३ । आइहीया । ३ ।
१ २ १ २ १ २ १
आसाउ । ३ । आयाम् । ३ । नामाः । ३ । किट् । २ ।
१ रर र – १ रर र –
इन्द्रन्नरोनेमधिताहवा २ न्ताइ । यत्पार्यायुनजतेधिया २
१ रर र र – १ र र र
स्ताः । शूरोनृषाताश्रवसश्चका २ माइ । आगोमतिव्रजे-
र – १ १ १ र १
भजातुवा २ न्नाः । मना २ ३ होइ । प्राणा २ ३ होइ ।
र १ २ १ २ १
चक्षु २ ३ होंइ । श्रोत्रा २ ३ ॅ होइ । घोषा २ ३ होइ ।
र १ र १ र १
व्रता २ ३ ॅहोइ । भूता २ ३ ॅहोइ । पाना २ ३ ॅहोइ ।
र १ र १ र
चित्ता २ ३ ॅहोइ । धीता २ ३ ॅहोइ । सुवा २ ३
१ र १ ३ ५रर
होंइ । ज्योता २ ३ इ हों २ । वा २ ३ ४ । औहोवा ।
३ १ १ १ १
ऊ २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥

(आ० गा० २०६)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १२ ३१ २ ३ १ २र ३१२३ २३ २
इन्द्रं नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।

३ १२३ १२३ २३ १ २र ३१ २३ १२
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आ गोमति व्रजे भजा त्वं नः ॥३१८॥

१ २र १ २र ३ १२ ३२ ३ २
इन्द्रम् । नरः । नेमधिता । नेम । धिता । हवन्ते । यत् ।

१ २र ३ १ २ १ २र १ २र १ २र ३
पार्याः । युनजते । धियः । ताः । शूरः । नृषाता । नृ । साता ।

१ २र ३ १ २र १ २र ३२ ३ २ ३
श्रवसः । च । कामे । आ । गोमति । व्रजे । भज । त्वम् । नः
॥३१८॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारम्भ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हमको अन्न, बल और यश (गौओं) की प्राप्ति करावे।

२र २र ३र २र ३र र २ र र
ॐ हाउ । २ । हाउ । भ्राजाओवा । ३ । अग्निर्मूर्धादी

१ २ – २ र १२
३ वाःका १ कू २ त् । पतिः पृथिवी ३ याआ १ या

– र र र २ २र
२ म् । अपाꣳरेताꣳसी ३ जाइन्वा १ ती २ ३ । हाउ ।

२र ३र २र ३र र ३र २ ४
२ । हाउ । भ्राजाओवा । २ । भ्राजा ३ ओ ५ वा ६

२र १ २१ २र १र३ १ १ १ १
५ ६ । ए । विश्वस्यजगतोज्योति २ ३ ४ ५ः ॥ ७ ॥

(आ० गा० २५१)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ २
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् ।
३ १ २र
अपाꣳरेताꣳसि जिन्वति ॥ २७ ॥

पूर्ववत् ॥ २७ ॥

वह अग्नि सबका शिरोमणि, द्यौलोक या सूर्य के सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि भाग के समान वहन करने वाला, सब का आश्रय और पृथिवी का स्वामी है। वही सब लोकों का बीजभूत, समस्त स्थावर-जङ्गम और जलों की वीचि को उत्पन्न करता है और तृप्त करता तथा जीवन देता है। वही परमात्मा ही सबको रचता और तृप्त करता है।

२र १ २र –
ॐ भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ ।
१र २ १र २र र १ २र १र र २ १ २
अयारूचाहरिण्यापुनानः। विश्वाद्वेषाꣳसितरतिसयुग्वभिः।
१र २र १ २ १ २ १र र २ १ २र र र १र २ १र
सूरोनसयुग्वभिः । धारापृष्ठस्यरोचते । पुनानोअरुषोहरिः ।
१ २र १ २ १र २ १र २ १र र २ १ २
विश्वायद्रुपापरियास्यृक्कभिः । सप्तास्येभिर्ऋक्कभिः ।
२र १ २र – २र
भ्राजा । २ । भ्राजा ३ १ उ । वा २ । ए ।
१ २र १ २र १र २ १ ३ ५र र
विश्वस्मैजगतेज्योतिः। ज्यो २ । ता २ ३ ४ औहोवा ।
१ १ १ १ १
इट्इडा २ ३ ४ ५ ॥ ८ ॥

(आ० गा० २५२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २
अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषाꣳसि

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
तरति सयुग्वभिः सूरो न सयुग्वभिः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र
धारा पृष्ठस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
विश्वा यद्रूपा परियास्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥४६३॥

३ २ ३ २ १ २र ३ २ १ २र १ २र
अया । रुचा । हरिण्या । पुनानः । विश्वा । द्वेषाꣳसि ।

३ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २
तरति । सयुग्वभिः । स । युग्वभिः । सूरः । न । सयुग्वभिः ।

३ १ २र १ २र ३ १ २ ३ २ ३ २
स । युग्वभिः । धारा । पृष्ठस्य । रोचते । पुनानः । अरुषः ।

१ २र १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हरिः । विश्वा । यत् । रूपा । परियासि । परि । यासि ।

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
ऋक्वभिः । सप्तास्येभिः । सप्त । आस्येभिः । ऋक्वभिः ॥४६३॥

शूरवीर उपासक इस अज्ञान को हरनेवाली ज्योति से अपनी सहायक इन्द्रियों तथा योग-साधनों के द्वारा पवित्र होकर सब द्वेषों को तथा द्वेष करने वालों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है जिस प्रकार सूर्य अपनी किरणों से पवित्र करता हुआ गन्दगी को दूर करता है और जिस प्रकार वीर नेता अपने सहायकों के द्वारा सब दुष्टों को पराजित करता है। धारण करनेवाले परमात्मा की धारने की शक्ति सब जगह प्रकाशित हो रही है। पवित्र,सबका प्रेरक, प्रकाशमान, सर्वव्यापक परमात्मा वह है जो सब रूप वाली वस्तुओं तथा आकाश में स्थित पिण्डों को प्रकाशज्ञानयुक्त, शिर में स्थित सात प्राणों द्वारा व ब्रह्माण्ड में नक्षत्रों को चलानेवाली सात वायुओं द्वारा घेरे हुए सब ओर व्याप्त हो रहा है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यह मन्त्र 'श्लोके द्वे' नाम का गायन है–

५र २ १ – १ २ १
ॐ हाउस्वरता । ब्रह्माणा २ः । इन्द्रम् । आ । महया
३ ५ १ – १ २ र ३ २
२ न्तो २ ३ ४ । कैः । अवा २ र्द्धयान् । अहयेह । तवा
२र १ ३ १ १ १ १
३ ४ ५ इ । ऊ ६ ५ ६ । श्लोकयता २ ३ ४ ५ः ॥९॥
(वे० गा० ७७२)

५ २ १र –
ॐ हाउ । अभि । स्वरता । ब्रह्माणआइन्द्रा २ म् ।
२ १ ३ ५ २ १ – २ र
महया २ न्तो २ ३ ४ । कैः । अवर्द्धाया २ न् । अहयेह
१ ३ ५
न्त्वा २ ३ ४ ५ ऊ ६ ५ ६ । श्लो २ ३ ४ काः ॥१०॥
(वे० गा० ७७३)

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १२३ २ ३ १ २
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अर्कैरवर्धयन्नहये हन्तवा उ ॥४३९॥

३ १ २ १ २र ३ १ २ ३ २ १ २र १ २र
ब्रह्माणः । इन्द्रम् । महयन्तः । अर्कैः । अवर्द्धयन् । अहये।
२ ३ २ ३
हम् । तवै । उ ॥४३९॥

वृत्रासुर को मारने के निमित्त प्रशंसा योग्य स्तोत्रों से पूजते हुए ब्राह्मण इन्द्र को प्रसन्न करते हैं।

यह मन्त्र 'अनुश्लोके द्वे' नाम का गायन है–

५र २ १ २ १ २ १ २र १ २
ॐ हाउस्वरता । स्वरतस्वरा २ ३ ता । आनवस्तेरथम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

र १ २ ५र २ १
श्वायाता १ क्षू २ ३ः । हाउस्वरता । स्वरतस्वरा
२ १ २र १ २ १ २ १ ७
२ ३ ता । त्वष्टावज्रंपुरुहु । ताद्युमान्ता २ ३ ४ म् ।
५र २ १ ३ ५र र
हाउस्वरता । स्वरतस्व । रा २ । ता २ ३ ४ । औहोवा।
२ १ १ १ १
स्वरा ३ ता २ ३ ४ ५ ॥ ११ ॥

(वे० गा० ७७४)

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षुस्त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ॥४४०॥
१ २र ३ १ २र १ २र ३ १ २र १ २र
अनवः । ते । रथम् अश्वाय । तक्षुः । त्वष्टा । वज्रम् ।
३ ३ १ २
पुरुहूत । पुरु । हूत । द्युमन्तम् ॥४४०॥

हे इन्द्र! मनुष्य तथा देवताओं ने तुम्हारे घोड़े के लिये रथ का निर्माण किया। हे अनेकों से पुकारे गये इन्द्र! विश्वकर्मा ने तुम्हारे वज्र को प्रकाशयुक्त किया।

३र २ ३ ४ ५ २ १ २
ओ३म् औहोइ । सम्पदाम् । मघंरया ३ १ २ ३ ४
१ र र र २ २ ३
इ । म्रिणाइ । नकाममव्रतोहिनोतिनस्पृशत् । रयिमो
२ ३ ४ ५ इ । डा ॥ १२ ॥

(वे० गा० ७७५)

२ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
शं पदं मघंरयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३
शम् । पदम् । मघम् । रयीषिणे । न । कामम् । अव्रतः । अ।
२ ३ २ ३ ३ २
व्रतः । हिनोति । न । स्पृशत् । रयिम् ॥ ४४१ ॥

कल्याणकारी और शान्तिकारक स्थान, ज्ञान और धन-धान्य, अपने धन व ज्ञान को परोपकार में लगानेवाले और ऐश्वर्याभिलाषी को ही प्राप्त होता है। व्रत तथा निमय से रहित, निकम्मा, मूर्ख मनुष्य यथेष्ट फल को नहीं प्राप्त कर पाता। न कामना ही पूरी कर पाता है और धन का स्पर्श भी नहीं कर पाता।

सेतुषाम नाम का गायन–

२र १र र २ १
ॐ हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।
१र २र १र र २ २र र १
दानेनादानम् । ३ । हाउ । ३ । अहमस्मिप्रथमजात्र्कृता
२ १ १ १ २र १र र २ १
२ ३ स्या ३ ४ ५ ॥ हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त
१ र २र १र २ १ र २र १र
। ३ । रान् । ३ । अक्रोधेनक्रोधं । २ । अक्रोधेनक्रोधं ।
२र र २र र र १ २ १ १ १
हाउ । ३ । पूर्वन्देवेभ्योअमृतस्यना २ ३ मा ३ ४ ५ ॥
२र १र र २ १
हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ । दुस्त । रान् । ३ ।
२ १ र २र २र र र र र१
श्रद्धयाश्रद्धाम् । ३ । हाउ । ३ । योमाददातिसइदेवमा
२ १ १ १ २र १र र २
२ ३ वा ३ ४ ५ त् ॥ हाउ । ३ । सेतूंःस्तर । ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ १र २ २र
दुस्त । रान् । ३ । सत्येनानृतम् । ३ । हाउ । ३ ।
२ १ २ १ १ १ २ऽ
अहमन्नमन्नमदन्तमा २ ३ द्मी ३ ४ ५ ॥ हाउ ३ वा ।
२र १र २र १ २ १ १ २
एषागतिः । ३ । एतदमृतं । ३ । स्वर्गच्छ । ३ ।
१र २ १र र २र १र २ १ १ १ १
ज्योतिर्गच्छ । ३ । सेतूंस्तीर्त्त्वाचतुरा २ ३ ४ ५ः ॥१२॥*

(आ० गा० ८९)

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य नाम ।
२ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ २र ३ १ २ ३ १ २
यो मा ददाति स इदेवमावदहमन्न मन्न मदन्त मद्मि ॥५९४॥

पूर्ववत् ॥५९४॥

ब्रह्म (ईश्वर) का वाक्य है कि मैं (परमात्मा) इस जगत् की उत्पत्ति के पहले से वर्त्तमान हूँ। सब देवों से भी पूर्व विद्यमान हूँ। मैं अमृत का स्वरूप हूँ। जो मुझको इस प्रकार जान कर अन्न आदि का दान करता है वही सब की रक्षा करता है। मैं अन्न हूँ। प्राण को धारण करता हूँ। मैं ही कर्मफल भोग करनेवाले प्राणी को अपने में लीन कर लेता हूँ।

४ ५र ४ १ २ १ २र १ ९र र
ॐ अबोधिया । ग्नाइः समिधाजना २ नाम् ।

---

* भ्राजाभ्राजे शुक्र चन्द्रे राजनरौहिणके शुक्रियाद्ये हाउस्वरतादीनि चत्वारि सेतुषाम चैषा पवित्रवर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणि वा प्रयुज्जानः पूतो भवति ॥ इति पवित्रवर्गः ॥ (सामवि० ब्रा० २।१)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २ र १र र २ १ ९ २
प्रताइधे ३ नूम् । इवायतीमुषासम् । यह्वाई ३ वा ।
१ ९र १र २ १ २र र १ र २
प्रवा २ यामुज्जिहानाः । प्रभाना २ ३ वाः ।
र १र २ १ २ १ २ १
सस्त्रतेनाकमच्छ। इडा २ ३ भा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४
५ इ । डा ॥ १ ॥

(वे० गा० १२०)

३ २ ३ ५ १ १
ॐ महाइन्त्रा २ ३ ४ इणाम् । अवा २ रस्तू ।
३ २ ३ ५ १ १ ३ २ ३
द्युक्षंमा २ ३ ४·इन्त्रा । स्या २ र्यम्णाः । दुराधा २ ३
५ २ १र ५ ५
४ र्षाम् । वरौहो २ ३ ४ । वा । णा ५ स्यो ६ हाइ ॥२॥
(वे० गा० ३३३)

५ र र ५ २१ र
ॐ महित्रीणामवरस्तू ६ ए । द्युक्षंमित्रस्यार्यम्णाः ।
२ १र २ १र १ २ १
दुराधा २ ३ र्षाम् । वरौहो २ । हुम्मा २ । ण । स्यो
३ ५र र २र १ २ १ ३ १ १
२ । या २ ३ ४ । औहोवा । हा ओवा । ओवा २ ३
१ १
४ ५ ॥

(वे० गा० ३३४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ २
महि त्रीणामवरस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ १ २
दुराधर्षं वरुणस्य ॥ १९२ ॥

१ २र ३ २ २ ३ १ २ ३ ३ २ ३ २
महि । त्रीणाम् । अवरिति । अस्तु । द्युक्षम् । द्यु। क्षम् ।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
मित्रस्य। मि । त्रस्य । अर्यम्णः ॥ दुराधर्षम् । दुः । आधर्षम् ।
१ २र
वरुणस्य ॥१९२॥

हे परमेश्वर! मित्र, न्यायकारी तथा स्वीकार करने योग्य आप की रक्षा और असह्य तेज हमें प्राप्त हो।

१र २ ९ २ र २
ॐ त्वावतो ३ । हौ ३ हो ३ १ इ । पुरूवसो ३।
९ २ १ २ ९ २
हौ ३ हो ३ १ इ । वयमिन्द्रा ३ । हौ ३ हो ३ १ इ।
र २ ९ २ १ २र ९
प्रणेता ३ः । हौ ३ हो ३ १ इ । स्मसिस्थाता ३ः । हौ
२ १ र २ ९ २
३ हो ३ १ इ । हरीणा ३ म् । हौ ३ हो ३ १ २ ३
४ ५ इ । डा ॥ ४ ॥

(वे० गा० ३३५)

१ २ ३ १ २
त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः ।
१ २
स्मसि स्थातर्हरीणाम् ॥१९३॥

१ २र ३ ३ ३ ३ २ ३ ३
त्वावतः । पुरूवसो । पुरू । वसो । वयम् । इन्द्र । प्रणेतः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ ३ १२ १२र ३ ३
। प्र । नेतरिति । स्मसि । स्थातः । हरीणाम् ॥१९३॥

हे बहुधन सम्पन्न, सर्वव्यापक और मनुष्यों तथा इन्द्रियों के प्रेरक तथा अधिष्ठाता इन्द्र परमेश्वर! हम सब आप के समान स्वामी के ही सेवक हैं।

२ ३ ५ २ ३ ५
ॐ इन्द्रन्ना २ ३ ४ रो । नेमाधा २ ३ ४ इता ।
२१ २ ३ ५ २ ३
हवन्ता २ ३ इ । यत्पारा २ ३ ४ याः । यूनाजा २ ३
५ २१ २ ३ ५
४ ताइ । धियास्ता २ ३ः । शूरोना २ ३ ४ र्षा ।
२ ३ ५ २१ २ ३
ताश्रावा २ ३ ४ साः । चकामा २ ३ इ । आगो मा
५ २ ३ ५ १ ९ २
२ ३ ४ ती । व्रजाइभा २ ३ ४ जा । त्वन्ना ३ उ वा
२ १र३ १ १ १ १
३ । ए ३ । आयू २ ३ ४ ५ः ॥ ५ ॥

(वे० गा० ५४०)

२ ३१२ ३१ २ ३ १ २र ३१२३२३ २
इन्द्र न्नरो नेमधिता हवन्ते यत्पार्या युनजते धियस्ताः ।
३१२३ १२ ३ २३ १ २र ३१ २३ १ २
शूरो नृषाता श्रवसश्च काम आगोमति व्रजे भजा त्व न्नः॥३१८॥

पूर्ववत् ॥ ३१८ ॥

यज्ञ तथा युद्ध के प्रारंभ में लोग इन्द्र का आवाहन करते हैं और प्रार्थना करते हैं। वही इन्द्र हम को अन्न, बल और यश (गौवों) की प्राप्ति करावे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५ र २र ३ १ १ १ १ २र ३
ॐ त्यमूषू । वाजि । ना २ ३ ४ ५ म् । देवजूता
५ र ३र २ १ २ २ ३ ४ ५
२ ३ ४ म् । सहोवानन्ता । रुता ३ । रꣳरथानाम् ।
२ ३ ५ २ २ ३र ५
अरिष्टना २ ३ ४ इमीम् । पृतना ३ ४ ३ जमाशुम् ।
२ १ र २ ३ २ २ ३
स्वस्त । याइ । तार्क्ष्यमिहा ३ ४ ३ । हू ३ वा ५
इमा ६ ५ ६ ॥ ६ ॥

(वे० गा० ५६३)

२ २ र र ४ २ ३र ५
ॐ ईयइया ३ हाइ । त्यमूषुवाजिना ३ न्दे ३ वजूतम् ।
३ ५ ४ ५र ३ ५ र ३र २ १ २
इ ४ यइया । हा २ ३ ४ इ । सहोवानन्ता । रुता
२ ३ ४ ५ २ २ २ १
३ । रꣳरथानाम् । ईयइया ३ हाइ । अरिष्टा ३ । नाइ ।
२ १ २ ३ ४र ५ २ ५ ४ ५र ३ १ १ १ १
मी ३ म्पृत । नाजमाशूम् । इ ४ यइया । हा २ ३ ४ ५
२ १ १र २ ३ २ २ ४
इ । स्वस्त । याइ । तार्क्ष्यमीहा ३ ४ ३ । हू ३ वा ५
इमा ६ ५ ६ ॥ ७ ॥

(वे० गा० ५६४)

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
त्यमूषु वाजिनं देवजूतꣳसहोवानं तरुतारꣳरथानाम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अरिष्टनेमिं पृतनाजमाशुꣳस्वस्तये ताक्ष्यर्मिहा हुवेम ॥३३२॥

२ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३
त्यम् । ऊ । सु । वाजिनम् । देवजूतम् । देव । जूतम् ।

३ १ २ ३ १ २ १ २र १ २र १ २र
सहोवानम् । तरुतारम् । रथानाम् ॥ अरिष्टनेमिम् । अरिष्ट ।

३ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ ३ १ २
नेमिम् । पृतनाजम् । आशुम् । स्वस्तये । सु । अस्तये ।

१ २र ३ २ ३
ताक्ष्यर्म् । इह । हुवेम ॥

हम ज्ञान तथा वेग से युक्त, धनदाता, विद्वानों से पूजित, स्वयं बलशाली, प्राणों, शरीरों, नक्षत्रों आदि को गति देने वाले, अहिंसक, आत्मिक शत्रुओं–काम-क्रोध आदि–को जीतने वाले, सर्वव्यापक, कर्मफलदाता और अत्यन्त वेगवान् उस परमेश्वर का अपने अन्तःकरण में आह्वान करते हैं और कल्याण के लिये स्मरण करते हैं।

२र १र ७ २ १ र
ॐ त्रातारमिन्द्रमविता । रमी २ ३ न्द्राम् । हवे-

र ७ २ १
हवेसुहवꣳशू । रमी २ ३ न्द्राम् । हुवाइनुशक्रंपुरूहू ।

७ २ २ १ २ १ र २ १ र २
तमी २ ३ न्द्राम् । इदꣳस्वस्तिनो मघवा । वा ३ ४ ३

२ ४
इ । तू ३ वा ५ इन्द्रा ६ ५ ६: ॥ ८ ॥

(वे० गा० ५६५)

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
त्रातार मिन्द्र मवितार मिन्द्रꣳहवेहवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
हुवे नु शक्रं पुरुहुतमिन्द्रमिदꣳहविर्मघवा वेत्विन्द्रः ॥३३३॥

३ १ २ १ २र ३ १ २ १ २र १ २र १ २र
त्रातारम् । इन्द्रम् । अवितारम् । इन्द्रम् । हवेहवे । हवे ।

३ ३ १ २ ३ १ २ १ २र १ २र ३ २
हवे । सुहवम् । सु । हवम् ॥ शूरम् । इन्द्रम् ॥ हुवे । नु ।

३ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३ २
शक्रम् । पुरुहुतम् । पुरु । हुतम् । इन्द्रम् । इदम् । हविः ।

३ १ २ ३ १ २र
मघवा । वेतु । इन्द्रः ॥३३३॥

अन्न आदि से पालन करने वाले तथा शत्रुओं से बचाने वाले, प्रत्येक प्रार्थना तथा संग्राम में सरलता से प्रसन्न होनेवाले, शूर, शक्तिशाली तथा प्रजाओं से पूजित इन्द्र का मैं आह्वान और स्मरण करता हूँ । मेरी इस स्तुति को इन्द्र स्वीकार करे।

३र ४ ५र २ ३ ४र ५ ५ १ र २
ॐ सोमः पुना । हो । नऊर्मिणा ६ ए । अव्यंवारंविधा

२ २ २ ३ ३ १ १ १
१ वा ३ ती । अग्रे वा २ ३ ४ ५ । चा २ ३ ४

१ २ १ २ १ ३
५ः । पवमा २ ३ ना ३ः । का २ ना २ ३ ४

५र र २ ३ १ १ १ १
औहोवा । क्रददे २ ३ ४ ५ ॥ ९ ॥

(वे० गा० ११५४)

१ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २
सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यं वारं वि धावति ।

१ २ ३ १ २र ३ १ २
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥५७२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ २ ३ १ २ १ २र १ २र ३
सोमः । पुनानः । ऊर्मिणा । अव्यम् । वारम् । वि । धावति ॥

१ २र १ २ १ २र १ २र
अग्रे । वाचः । पवमानः । कनिक्रदत् ॥५७२॥

सोम, स्वच्छ कान्तिमान् आनन्दरस या मल आदि से रहित अन्तःकरणवाला, शम आदि गुणों से सम्पन्न योगी वा प्रभु ऊर्ध्व गति से अज्ञान के आवरण को पार करता है। वह और अधिक उज्ज्वल, पवित्र सर्वप्रथम वेदवाणी का उपदेश करता है।

४ ५ १र र २ १ — १
ॐ सासू । न्वेयोवसू २ ३ नाम् । योरा २ यामा

-- र र १ २ १ २ १ २ १
२ । नेतायइडा २ ३ नाम् । सो २ ३ माः । यः सुक्षिता

५ ५
२ ३ ४ इनो ६ हाइ ॥ १० ॥

(वे० गा० ११८४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २र
स सुन्वेयो वसूनां यो रायामानेता य इडानाम् ।

२ ३ १ २ ३ २
सोमो यः सुक्षिती नाम् ॥ ५८२ ॥

२ ३ २ १ २र ३ २ ३ २
सः । सुन्वे । यः । वसूनाम् । यः । रायाम् । आनेता ।

३ २ १ २र १ २र ३ २ ३
आ । नेता। यः । इडानाम् । सोमः । यः । सुक्षितीनाम् । सु ।

२
क्षितीनाम् ॥५८२॥

जो धनों का, जो दुग्ध आदि देने वाली गायों का, जो भूमियों का,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो श्रेष्ठ मनुष्यों का लानेवाला है, वह सोम ऋत्विजों द्वारा अर्क निकाल कर खींचा गया।

२ऽ १ २र र १ र २ १र २ २ऽ
ॐ हाउ ३ वा। विश्वतोदावन्विश्वतोनआभर । हाउ
१ र २ १र २र २ऽ १र
३ वा । यन्त्वाशविष्ठमीमहे । हाउ ३ वा । आयुः ।
२ऽ १र २ऽ १र २ऽ
हाउ ३ वा । सूवः । हाउ ३ वा । ज्योतिः । हाउ ३
३ १ १ १ १
वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥ ११ ॥

(आ० गा० १२४)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
विश्वतोदावन् विश्वतो न आ भर यं त्वा शविष्ठमीमहे ॥४३७॥
१ २र १ २र ३ ३ १ २ ३ २
विश्वतोदावन् । विश्वतः । दावन् । विश्वतः । नः । आ ।
३ २ ३ १ २र १ २र
भर । यम् । त्वा । शविष्ठम् । ईमहे ॥४३७॥

हे सब ओर से दान करने वाले तथा प्रलय काल में सब का संहार करनेवाले परमेश्वर बलवान् आप से प्रार्थना करते हैं कि हमें सब ओर से सुख से पूर्ण कीजिये।

२र १र र २र १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहोवा । ईया ।
१ र २ १ २ १र २ १
उदुत्तमम्वरुणपाशमा २ ३ स्मात् । अवाधमम्विमध्यमꣳश्रथा
२ १ र र २ १ २
२ ३ या । अथादित्यव्रतेवयन्ता २ ३ वा ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ र १ र र २ १ २ २र
अनागसोअदितयेसिया २ ३ मा ३ । हाउ । ३ ।
१र र २र १ २ १ ३
आयुश्चक्षुर्ज्योतिः । औहोवा । इ २ । या २ ३ ४ ।
५र र ३ १ १ १ १
औहोवा । ई २ ३ ४ ५ ॥ १२ ॥ २ ॥ * इत्यरिष्टवर्गः ॥

(आ० गा० ४०)

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय ।
१ २ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
अथादित्यव्रते वयं तवानागसो अदितये स्याम ॥५८९॥

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ १ २र ३ २
उत्। उत्तमम् । वरुण । पाशम् । अस्मत् । अव । अधमम् ।
२ ३ २ ३ १ २र ३ ३ २
वि । मध्यमम् । श्रथाय ॥ अथ । आदित्य । आ । दित्य । व्रते ।
३ २ १ २र ३ १ २ ३ ३ १ २ १ २र
वयम् । तव । अनागसः । अन् । आगसः । अदितये । अ ।
३
दितये । स्याम ॥

हे वरणीय विघ्ननिवारक परमात्मन् वरुण! प्रकृति के सात्त्विक तेजोमय बन्धनों को ऊपर से ही उत्तम भोगों द्वारा शिथिल कर दीजिये।

---

* अबोध्यग्निर्महित्रीणामिति द्वे त्वावत इन्द्रत्नरो ग्रामे गेयमायुरिति चास्य निधनं कुर्यात्-त्यमूषु द्वे त्रातारमिन्द्रꣳहविरित्थेतस्य स्थाने स्वस्तिन इति सोमः पुनान्त्यꣳससुप्रथमं विश्वतोदावन्निति पूर्वं रहस्य उदुत्तमं वरुणपाश मित्येषोऽरिष्ट वर्ग एतेषामेकमनेकं वा सर्वाणि वा प्रयुञ्जानः शतं वर्षाणि जीवति जरयैव विस्रꣳसते ॥ सामवि० ब्रा० २ । १ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निकृष्ट तामस बन्धन काम, मोह आदि के बन्धन नीचे, निम्न कोटि के भोगों द्वारा गिरा कर ढीला कर दीजिये और मध्यम राजस बन्धन आवेश, क्रोध, लौकैषणा को अनेक प्रकार से विशेष रूप से शिथिल कीजिये। हे अखण्ड, अदीन, सबको अपने भीतर लेने में समर्थ तेजस्विन् प्रभो! आप के नियम व्यवस्था में हम निरपराध, निष्पाप होकर दीनतारहित होने के लिए समर्थ हों।

अथ विनायकसंहिता

४ ५ ४ २ २ १ २ १
ॐ अदर्दरूत् । समसृजोविखानि । त्वमर्णा २ ३ ४

५ २ २ २ १ २ २ १र ५
वान् । बद्वधानाꣳअराम्णाः । महांता २ ३ ४ मी ।

२ १ २ १ ५ १ २ १ २ १
द्रपर्वतंवियाद्वः । सृजाद्धा २ ३ ४ राः । अवयद्दान । वा

२ १
२ ३ न्हा ३ ४ ३ न् । ओ २ ३ ४ ५ इ । डा ॥१॥

(वे० गा० ५३१)

४ ५ ४ ५ ४ ५ ४ १ २ १ २
ॐ अदर्दरूत्समसृजाः । विखानि । त्वमर्णवान्-

२ २ २ १ २ १र २ १
बब्दधानाꣳअरा २ ३ म्णाः । महान्तमिन्द्रपर्वतंविया २

२ १ २र – १ ९र १ २र १
३ द्वाः । सृजाद्धारा २ः । अवा २ यद्दान । वा २ ।

३ ५र र ३ १ १ १ १
या २ ३ ४ औहोवा । हा २ ३ ४ ५ न् ॥ २ ॥

(वे० गा० ५३२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अदर्दरुत् समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्बधानाᳯ अरम्णाः।
३ १ २ ३१२३ २उ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ २
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद्वः सृजद्धारा अव यद् दानवान् हन्॥
१ २र १ २र २ ३ १ २र २ १ २र २
अदर्द्दः । उत्सम् । उत् । सम् । असृजः । वि । खानि । त्वम् ।
३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र
अर्णवान् । बद्बधानान् । अरम्णाः ॥ महान्तम् । इन्द्र । पर्वतम्
२ ३ १ २ ३ २ १ २र १ २र २ ३ १ २
। वि । यत् । वरिति । सृजत् । धाराः । अव । यत् । दानवान् ।
२
हन् ॥३१५॥

हे इन्द्र! आप ऊर्ध्व स्थान मूर्धा भाग को विदीर्ण करते हैं और इन्द्रिय द्वारों को रचते हैं। आप गतिशील आघात-प्रतिघात करनेवाले प्राणों को व्यवस्थित करते हैं। आप हमारे महान् पर्वों (पोरुओं) वाले शरीर को विशेष रूप से प्रकट करते हैं और ज्ञान देनेवाले प्राणों को प्रेरित करते हैं आप ही अज्ञान आदि को नष्ट करते हैं।

४ ५ ४ ५ ३ २ ३ २ ३ ५ ४ ३ ४
ॐ सूष्वाणासाः । इन्द्रस्तु । मसित्वा । सनिष्यन्त-
५ ३ ५ र ३ २ ३
श्चित्तुविनृ । म्णवा २ ३ ४ जाम् । आनः । भराओ २
५ ४ ५ र ४ ५ ४ ५ २ र
३ ४ वा । सुवितंयस्यको । ना । तानात्माना । सहिया ।
२ २ ४
मा ३ ४ ३ । तू ३ वो ५ ता ६ ५ ६ः ॥ ३ ॥

(वे० गा० ५३३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ २ २ ३ ५ १र
ॐ ओ ३ हो ३ होइ । सू २ ३ ४ ष्वा । णासाः ।
३ २ ३ २ ३ ५ २ २ २ ३
इन्द्रस्तु । मसित्वा । ओ ३ हो ३ होइ । सा २ ३ ४
५ १ २ १ २ ३ ४ ५ २ २
नी । ष्यन्ताः । ची ३ त्तुवि । नृम्णवाजाम् । ओ ३ हो
२ ३ ५ १ २ २ ३
३ होइ । आ २ ३ ४ नाः । भरा । सुविता ३ म् । यस्य-
४ ५ २ २ २ ३ ५ १
कोना । ओ ३ हो ३ होइ । ता २ ३ ४ ना । त्मना ।
२ १र २ २ ४ ५
सहिया । मा ३ ४ ३ । तू ३ वो ५ ता ६ ५ ६ः ॥४॥
(वे० गा० ५३४)

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
सुष्वाणास इन्द्र स्तुमसि त्वा सनिश्यन्तश्चित् तु विनृम्ण वाजम्।
१ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ १ २
आ नो भर सुवितं यस्य कोना तना त्मना सह्यामा त्वोताः ॥३१६॥

३ १ २ ३ ३ १ २ ३ ३ १ २ ३
सुष्वाणसः । इन्द्र । स्तुमसि । त्वा । सनिष्यन्तः । चित्।
३ ३ ३ १ २र २ ३ ३ ३ १ २
तुविनृम्ण । तुवि । नृम्ण । वाजम् ॥ आ । नः । भर । सुवितम्।
१ २र १ २ १ २र १ २र ३ १ २र २ ३
यस्य । कोना । तना । त्मना । सह्याम । त्वोताः । त्वा । उताः
॥३१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे इन्द्र! भक्ति करते हुए तथा अन्नादि भोग्य पदार्थ का सेवन करते हुए तेरे आनन्द रसों का सम्पादन करते हुए हम उपासक आप से बहुत धन सम्पन्न करने की स्तुति करते हैं। आप से रक्षित हम जिस की कामना करते हैं, उस उत्तम व कल्याणकारी बल, धन, ऐश्वर्य को हमें प्रदान कीजिए। हम स्वयं अपने आप विस्तृत अनुभव तथा धनों को प्राप्त करें। हमें ऐसा पुत्र दीजिये जिससे हम शत्रुओं को जीत सकें और हमें ऐसा ज्ञान दीजिये जिससे हम काम, क्रोध आदि को नष्ट कर सकें।

५र र २ १ २ १ २र १
ॐ आतूनआ । द्रक्षुमा २ ३ न्ताम् । चायित्रङ्ग्राभा
२ १ – १ १ २र ३ ५
२ ३ ५ हाइ । संगृ २ भाया । महाहस्तो २ ३ ४ हाइ।
१ – १ १ १ ३
दक्षा २ इणाइना । महा २ ३ । हा २ स्ता २ ३ ४
५र र १ २ १ १ १ १ १
औहोवा । दक्षिणे ३ ना २ ३ ४ ५ ॥ ५ ॥

५र र ४ ५ १ ० ३
ॐ आतूनइन्द्रक्षुमान्ताम् । चित्रा २ ग्रा २ ३ ४
५ २ ३ ५ ९ २ १ ३
भाम् । संगृभा २ ३ ४ या । मा ३ हा ३ । हा २ स्ता
५र र १ २ र ३ १ १ १ १
२ ३ ४ औहोवा । दक्षिणेना २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥
४र ५र र ४ ५ ५ २ १ र
ॐ आतूनइ । द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंग्राभङ्संगृभा
– १ २ १ र १ २ २ ३
२ या । चित्रंग्राभङ्सम् । गृ । औ ३ होइ । भा २ ३

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५ २र १ र र १ २र १
४ या । ऐहोइ । महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ । औहो ।

३र ५ ४ ५
वाहो २ ३ ४ वा । णा ५ इनो ६ हाइ ॥ ७ ॥

५र र ५ २ १ र र
ॐ आतूनइन्द्रक्षुमा ६ न्ताम् । चित्रंग्राभ ँ संगृभाया ।

२ १ र १ ३ ५ ३
चित्रंग्राभँसम् । गृ २ ३ । इ २ ३ ४ हा । भा

५ २र १ र र १ २र १
२ ३ ४ या । ऐहोइ । महाहस्तीदक्षा २ ३ होइ । औहो।

३र ५ ४ ५
वाहो २ ३ ४ वा । णा ५ यिनो ६ हाइ ॥ ८ ॥

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ १ २र
आतू न इन्द्र क्षुमन्तञ्चित्रङ् ग्राभथंसंगृभाय ।

३ १ २र
महाहस्ती दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

२ ३ ३ १ २ ३ २ ३ २ २
आ । तू । नः । इन्द्र । क्षुमन्तम् । चित्रम् । ग्राभम् । सम्।

३ ३ २ ३ २ १ २र
गृभाय । महाहस्ती । महा । हस्ती । दक्षिणेन ॥ १६७ ॥

हे इन्द्र, बड़े भारी हस्तवाले यानी हे धारक शक्तियों से युक्त महान् परमेश्वर, आप हमारे लिये अन्न, निवास आदि विज्ञान से युक्त ग्रहण के योग्य अद्भुत आर्श्चजनक ज्ञान उत्तम साधनो से अच्छे प्रकार ग्रहण कराइये।

५ र २ १ २ ४ ५
ॐ मृज्यमानाः । सुहस्तिया ३ । सामू ३ द्रायिवा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २ ४ ५ २
चमिन्वसा ३ इ । रायी ३ म्पाइशा । गंबहुला ३ म् ।

१ ३ ५ १ २र १ २ २
पूरू २ स्पृ २ ३ ४ हाम् । पवमा । ना । औ ३ हो।

२ १ ५ ४ ५
भियो २ ३ ४ वा । षा ५ सो ६ हाइ ॥ ९ ॥

(वे० गा० ९८९)

४ र ४ १ – १ –
ॐ मृज्यमाना ५ः सुहस्तिया । समू २ द्राइवा २ ।

१ – १ – १ २
चमा २ इन्वासी २ । रयिंपिशंगंबहुलंपुरुस्पृहा औ ३

२ १ २ २ १ ५ ४
हो । पवमा २ ३ ना ३ । भियो २ ३ ४ वा । षा ५

५
सो ६ हाइ ॥ १० ॥ ३ ॥ *इति विनासंहिता ॥

(वे० गा० ९९४)

३ १ २ ३ १ २र
मृज्यमानः सुहस्त्या समुद्रे वाचमिन्वसि ।

---

* अदर्दृः सुष्वाणास आतून इति वर्गा मृज्यमानः सुहस्त्येति प्रथम षष्ठे चैषा वैनायकी नाम सर्ंहितै प्रयुञ्जन् विनायकं प्रीणाति ॥ साम वि० ब्रा० १।४।३३; ३४ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३क २र
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥ ५१७ ॥

३ १ २ ३ ३ ३ ३ २ ३
मृज्यमानः । सुहस्त्य । सु । हस्त्य । समुद्रे । सम् ।

३ २ १ २र ३ ३ २ ३ १ २ ३ २
उद्रे । वाचम्। इन्वसि ॥ रयिम् । पिशङ्गम् । बहुलम् ।

३ १ २र ३ १ २र १ २र ३ २ ३
पुरुस्पृहम् । पुरु । स्पृहम् । पवमान । अभि । अर्षसि ॥ ५१७ ॥

हे उत्तम हाथ की उगंगलियों के समान दश प्राण साधनों से युक्त! पवित्र करनेवाले सुन्दर प्रकाश युक्त पवमान प्रभो, सोम आत्मन् अन्वेषण किये जाते हुए आप आनन्द रस के भण्डार हृदय में वेदवाणी को प्रेरित करते हैं। हे हृदय को पाप से शून्य एवं पवित्र करने वाले आप पीले, और स्पृहणीय सुवर्ण आदि सुन्दर लोकप्रिय ऐश्वर्य को सब ओर प्राप्त कराते हैं।

अथ स्कन्दसंहिता

५र र २ र र र १ २
ॐ आमन्द्रैरा । द्रहरिभाइर्याहिमयूरा ३ रोमाभा ३

४ ५ ४ ५ २ ३ ५ २र १
इः । मात्वाकाइचीत् । नियेमू २ ३ ४ रीत् । नपाशिनाः।

२ १ – २१ १ ३
अतिधान्वे २ । वताङ् २ ३ । आ २ इहा २ ३ ४

५र र ३ ५
औहोवा । वा २ ३ ४ याः ॥ ४ ॥

(वे० गा० ४१५)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

४र ५ ४र ५ ४ ४ २र १ २ १र
ॐ आमन्द्रैरिन्द्र । हा ५ रिभाइः । याहिमयूररोम-

र र २ १ र२ १र
भाइः। मात्वाका २ ३ इचीत् । नाइयेमुरित् । नपाशा

२ १ २ १ १
२ ३ इनाः । अताइधा २ ३ न्वे । वता ः २ ३ । आ

३ ५र र २ १ १ १ १ १
२ इहा २ ३ ४ औहोवा । वयो ३ भी २ ३ ४ ५ः
॥ २ ॥

(वे० गा० ४१६)

४र ५ ४र ५ ४ ४ २र १ २ १र
ॐ आमन्द्रैरिन्द्र । हा ५ रिभीः । याहिमयूररोमभाउ।

१ – १ – १र र २ १र
वा २ । मात्वा २ । केचिन्नियेमुरिन्नपाशिनाउ ।

१ – १ – १ र२
वा २ । आतो २ । धन्वेवता ३ १ उवा २ ३ । ई २

५
३ ४ ही ॥ ३ ॥

(वे० गा० ४१७)

२ ३१२३ १२ ३ २ ३१२
आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूर रोमभिः ।

३ २ ३ १ २ ३ २उ ३ २उ ३ १२३ १ २
मा त्वा के चिन्नियेमुरिन्न पाशिनोऽति धन्वेव ताँ इहि ॥२४६॥

२ ३ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
आ । मन्द्रैः । इन्द्र । हरिभिः । याहि । मयूररोमभिः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २   ३   २   ३   २   ३   २   ३   २
मयूर । रोमभिः ॥ मा । त्वा । के । चित् । नि । येमुः । इत् ।

२   ३ १ २   १ २र   १ २र   ३   २   ३
न । पाशिनः । अति । धन्व । इव । तान् । इहि ॥ २४६ ॥

हे इन्द्र परमेश्वर ! आप मोर के शब्दों के समान उत्तम हर्षप्रद स्वरों से स्तुति किये जाने पर अपनी हर्षप्रद शक्तियों से हमारे अन्तःकरण में प्रत्यक्ष होइये। पाशधारी मनुष्यों के समान कोई भी आप को बाँध नहीं सकता। शस्त्रधारी के समान आप उन जाल रचनेवालों का निग्रह करते हैं।

४र ५   ४   ५   २ १   –   १   २
ॐ आनः । एविश्वा । सुहाव्या २ म् । आइन्द्रंसम।

१ २   २   ३   ५   २   ३
त्सुभू १ षाता । ऊ २ ३ ४ पा । हा ३ हाइ ।

१ २र   १ २र   ३ २ १   २ १   २   १ २
ब्रह्माणिसवना। निवृत्रहान् । परमा २ ३ ज्याः । आर्चा

२   १   २   ४ ५   ४
३ हाइ । षमा । औ ३ होवा । हो ५ इ । डा ॥४॥

(वे० गा० ४६३)

५र र   र   र ४   ५   १   र   र
ॐ आनोविश्वासुहाहाव्याम् । इन्द्रंसमत्सुभूषतो ।

१   २   १   २ १   २ १
पब्रा २ ३ ह्मा । णिसवना । निवृत्रहान् । परमा २ ३

२   १ २   २   २ १   २   ४ ५   ४
ज्याः । आर्चा ३ हाइ । षमा । औ ३ होवा । हो ५
इ । डा ॥ ५ ॥

(वे० गा० ४६४)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

५र र र ४ ५ १ र
ॐ आनोविश्वासुहाव्याम् । इन्द्राम् । समत्सुभूषत ।
२ १ २ - २ र १ २
उपाब्रा १ ह्मा २ । णिसवनानिवृत्रहन् । परामा १ ज्या
- २ १र २ १
२ः । ऋचीषा २ ३ मा ३ ४ ३ । ओ २ ३ ४ ५ इ ।
डा ॥ ६ ॥

(वे० गा० ४६५)

२ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
आनो विश्वासु हव्यमिन्द्रँ समत्सु भूषत ।
२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
उप ब्रह्माणि सवनानि वृत्रहन् परमज्या ऋचीषम ॥२६९॥

२ ३ १ २र १ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २र
आनः । विश्वासु । हव्यम् । इन्द्रम् । समत्सु । भूषत । उप ।
१ २र १ २र ३ ३ ३ २ ३
ब्रह्माणि । सवनानि । वृत्रहन् । वृत्र । हन् । परमज्याः । परम।
२ ३
ज्याः । ऋचीषम ॥ २६९ ॥

मनुष्यो! सब आनन्द-उत्सवों के अवसर पर तथा संग्रामों में हमारे पूज्य इन्द्र, ईश्वर की उपासना व गुणगान करो। हे विघ्नों के दूर करनेवाले शत्रुओं को जीतनेवाले स्तुति के योग्य परमात्मन्! आप हमारे स्तोत्रों तथा यज्ञों को शोभायुक्त कीजिये ।

३ ४ ३ २ ४ ५ २ १र २र १
ॐ हो ४ वा । उहुवा ३ । होवा । प्रसेनानाइः ।
र र २ २ ३ ४ ५ २ १ २र १ १ २
शूरोआ ३ । ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ ४ ५ २ १र २ १ १ २ २र ३ ४ ५
अस्यसेना । भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्तसखिभ्याः।

२र १र २र १ २ १ २ ३ ४ ५ ३ ५
आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ । सानिदत्ताइ । हो ४ वा ।

३ २ ४ ५ ५
उहुवा ३ । होवा ६ । हाउवा ॥ ७ ॥

(वे० गा० १०३५)

५र ४ २ १ १ १ १ २ १र २र १ र र २
ॐ औहो ३ वा २ ३ ४ ५ । प्रसेनानाइः । शूरोआ

२ ३ ४ ५ २ १ २र १ १ २ २ ३
३ । ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ । अस्यसेना।

२ १र र १ १ २ २ ३ ४ ५ ५र ४
भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्तसखिभ्याः । औहो ३

२ १ १ १ १ २र १र २र १ २ १ २
वा २ ३ ४ ५ । आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ । सा ३ ४

२ ४
३ । नी ३ दा ५ त्ता ६ ५ ६ इ ॥ ८ ॥

(वे० गा० १०३६)

५र ४ २ १ १ १ ३ र २र १ र र २
ॐ ओहो ३ वा ३ ४ ५ । प्रसेनानाइः । शूरोआ ३।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ ३ ४ ५ ३ २र १ १ २ २ ३ ४ ५
ग्राइरथानाम् । गव्यन्नेताइ । हर्षता ३ इ । अस्यसेना ।

३ र २ १ १ २ २ ३ ४ ५ ५र ४
भद्रान्कृण्वान् । इन्द्रहा ३ । वान्तसखिभ्याः। ओहो ३

२ १ १ १ ३र र २र १ २ १ २
वा ३ ४ ५ । आसोमोवा । स्त्रा ३ रभ । सा ३ ४ ३

२ ४ ३ १ १ १ १
नी ३ दा ५ । ता २ ३ ४ ५ इ ॥ ९ ॥

(वे० गा० १०३६)

१ २ ३ २उ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
प्रसेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।

३ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ २ १ २
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्तसखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥

२ ३ २ ३ २ १ २ १ २र १ २र
प्र । सेनानीः । सेना । नीः । शूरः । अग्रे । रथानाम् ।

३ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ २ ३ २
गव्यन् । एति। हर्षते । अस्य । सेना ॥ भद्रान् । कृण्वन् ।

३ २ ३ २ १ २र ३ २
इन्द्रहवान् । इन्द्र । हवान् । सखिभ्यः । स । खिभ्यः । आ ।

१ २र १ २र ३ १ २ ३
सोमः । वस्त्रा । रभसानि । दत्ते ॥ ५३३ ॥

सेना का नायक, बलवान्, शूरवीर सेनापति जिस प्रकार रथों,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रथारोही सैनिकों के आगे पृथिवी की विजय के लिये बढ़ता है और उसकी सेना उत्साह से प्रसन्न होती है। वह वीर राजा अपने मित्रों के लिये अति कल्याणकारी, सुखदायक, ऐश्वर्ययुक्त राजोचित आज्ञा वचन करता हुआ अति उत्तम वस्त्र धारण करता है, उसी प्रकार सोम यानी आत्मा इन्द्रियों का नेता शरीरों आगे इन्द्रियों की वृद्धि चाहता हुआ आगे आगे चलता है। इसकी सेना यानी इन्द्रियाँ प्रसन्न होती हैं। वह भक्त सौम्य उपासक अपने मित्रों यानी इन्द्रियों के लिये परमेश्वर के आह्वानों को कल्याणकारी करता हुआ अति चञ्चल आच्छादक आवरणों को हटा लेता है।

२ १ २२ १ २ १ २ १

ॐ पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पते ३ । हुवे २ ३ । २ ।

१ २ २ २ १ २ २२ १ २२ १

होवा ३ हा ३ । हाइ । प्रभुर्गात्राणिपरियेषिविश्वता २

१ १ २ २ २

३ः । हुवे २ ३ । २ । होवा ३ हा ३ हाइ ।

१ २ २ १ १२ १२ २ १ १ २

अतप्तनूर्नतदा २ मोअश्नुते ३ । हुवे २ ३ । २ । होवा

२ २ १२ २ १ २ १ १२ १

३ हा ३ हाइ । शृतासइद्वहन्तःसन्तदा २ शत । हुवे २

१ २ २ २ ५२ २

३ । २ । होवा ३ हा ३ । हा ३ ४ । औहोवा ।

२ १२ २ २ १२ १२ १२ ३ १ १ १ १

अर्कोदेवाना २ म्परमेवियो २ मा २ ३ ४ ५ न् ॥ १०॥

(वे० गा० ११२२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २र १ २ १ २ १ २र १

ॐ पवित्रन्तेविततंब्रह्मणस्पते ३ । हुवाइ । औहोवा

– २ १ र २र १ २र १ १

२ । प्रभुर्गात्राणिपरियेषिविश्वता २ ३ः । हुवाइ ।

२र १ – १ २ र १ ९र १र २ १

औहोवा २ । अतप्ततनूर्नतदा २ मोअश्नुते ३ । हुवाइ ।

२र १ – १र २ १ २ १ ९र १

औहोवा २ । शृतासइद्वहन्तःसन्तदा २ शत । हुवाइ ।

२र १ ३ २र र २ १ २ र १र २ १र ९र

औ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । अर्कस्यदेवाःपरमेवियो

३ १ १ १ १

२ मा २ ३ ४ ५ न् ॥ ११ ॥ ४ ॥ *इति स्कन्दसंहिता ॥

(वे० गा० ११२३)

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ २ १ २

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभु र्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।

१ २ ३ ३उ ३ १ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २र

अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तः सं तदासत ॥५६५॥

३ १ २ ३ १ २र २ ३ ३ ३

पवित्रम् । ते । विततम् । वि । ततम् । ब्रह्मणः । पते ।

३ २ ३ २ १ २र १ २र ३ ३ १ २

प्रभुः । प्र । भुः । गात्राणि । परि । एषि । विश्वतः ॥

---

* आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिरानो विश्वासु हव्यम्प्रसेनानीरिति वर्गाः पवित्रन्त इति द्वे एषा स्कन्दस्य सꣳहितैताम् प्रयुञ्जन् स्कन्दं प्रीणाति ॥ साम वि० ब्रा० ४।१।३५, ३६ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र २ २ ३ २ ३ ३ १ २ २
अतप्तातनूः । न । तत् । आमः अश्नुते । शृतासः । इत् ।
१ २र २ २ ३
वहन्तः । सम् । तत् । आशत॥

हे ब्रह्मणस्पति! ज्ञान रूप ब्रह्म और महान् ब्रह्माण्ड के स्वामिन् आपका पवित्र ज्ञान, सामर्थ्य, प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ है, आप शरीरों में अन्दर बाहर सर्वत्र व्याप्त हैं। इस शरीर को तपस्या द्वारा तप्त न करने वाला, तपोहीन कच्चा पुरुष आप के ज्ञानमय स्वरूप व भक्ति को नहीं पा सकता। तपोमय उपासना में परिपक्व मनुष्य ही आप की भक्ति रूपी परम सुख को पाकर भोग सकते हैं।

अथ विष्णु-संहिता

५ ५ १ ३ २ ३ ५
ॐ इदा ६ मे । विष्णू २ः । विचक्रा २ ३ ४ माइ ।
१ र २ १ २ १ १
त्राइधानि । दधाइपा १ दा २ म् । समू २ हो १ । ढा
२ १ ३ ५र र २
२ ३ मा ३ । स्या २ पा २ ३ ४ औहोवा । ए ३ ।
२
सुले १ ॥ ५ ॥

(गे० गा० ३६५)

३ २उ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानि दधे पदम् ।
१ २ ३ २
समूढमस्य पाꣳसुले ॥ २२२ ॥
३ २ १ २र २ ३ ३ २ २ ३ ३ २
इदम् । विष्णुः । वि । चक्रमे । त्रेधा । नि । दधे । पदम् ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र २ ३ ३ ३ १ २
समूढम् । सम् । ऊढम् । अस्य । पाꣳसुले ॥ २२२ ॥

सर्वव्यापक परमेश्वर इस जगत् में सर्वत्र गति कर रहा है। वह अपनी शक्ति को पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौ इन तीनों लोकों में स्थापित किये हुए है। इस जगत् की धूल के कण-कण तक में उसका स्वरूप और शक्ति व्याप्त है।

२र १ – १ २ २
ॐ हाउ । ३ । ऊ २ । २ । ऊ २ । वा ३ । हाउवा
१ २ १ २ १ र र २ १ र
३ । हस्हहस् । अर्चिःशोचिस्तपोहरः । प्रक्षस्यवृष्णो-
२ १र २ १ र र र र २ १र
अरुषस्यनूमा २ ३ हाः । प्रनोवचोविदथाजातवेदा २ ३
२ २र र १र २ १र २ १र
साइ । वैश्वानरायमतिर्नव्यसेशू २ ३ चीः । सोमइव-
र र २ १ २ २र १ –
पवतेचारुरग्ना २ ३ या ३ इ । हाउ । ३ । ऊ २ । २ ।
१ २ २ ३ १ १ १ १
ऊ २ । वा ३ । हाउवा ३ । इ २ ३ ४ ५ ॥ २ ॥

(आ० गा० १९३)

३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २उ ३ २ ३ १ ३ ३ १ २ ३ १ २
पक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू महः प्रनोवचोविदथाजातवेदसे ।
३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
वैश्वानराय मतिर्नव्यसे शुचिः सोम इव पवते चारुरग्नये ॥६०९॥

३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २ २ १ २र २
प्रक्षस्य । प्र । क्षस्य । वृष्णः । अरुषस्य । नु । महः । प्र ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ १ २
नः । वचः । विदथा । जादवेदसे । जात । वेदसे ॥ वैश्वानराय ।
३ ३ १ २ ३ २ १ २र १ २र १ २र ३ ३
वैश्व । नराय । मतिः । नव्यसे । शुचिः । सोम : । इव । पवते ।
१ २र ३ १ २
चारुः । अग्नये ॥६०९॥

हे वैश्वानर! सर्वत्र व्याप्त अथवा हविरूप अन्नवाले, कामनाओं की वर्षा करनेवाले दीप्यमान तुम्हारे पूजनीय बल या तेज की शीघ्र ही स्तुति करता हूँ। इसीलिये हम लोगों का वचन याग में सब मनुष्यों के अभिलाषों की वर्षा करने वाले अग्निदेव के लिये प्राप्त होता है अर्थात् स्तुति करता है। अत्यन्त नवीन अर्थात् हवि से अत्यन्त प्रदीप्त हुये प्राणिमात्र को जाननेवाले अग्निदेव के लिये निर्मल अथवा स्तुति करनेवालों के लिये शोधन करनेवाली, कल्याणकारिणी मनन करने योग्य अथवा स्तुति जैसे सोम दशा पवित्र से झरता है वैसे ही मेरे हृदय में से स्वयं ही निकलती है।

५र र १ २ १र २ १ र २ ३ ४ ५
ॐ हाउहाउ । हुप् । प्रकावियाम् । उशने । वब्रुवाणाः ।
२र १र र ^२ १ २ ३ ४ ५ २ १
देवोदेवा । ना ३ ञ्जनि । माविवक्ती । महिव्रताः ।
१ २ २ ३ ४ ५ र र १ २ १र
शुचिबा ३ । धुःपवाकाः । हाउहाउ । हुप् । पदावरा ।
^२ १ २ ^२ ४
हो ३ अभि । आ ३ ४ ३ इ । ती ३ रा ५ इभा ६
५ ६ न् ॥ ३ ॥

(वे० गा० १०१९)

१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३क २र ३ १ २
महि व्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येतिरेभन् ॥५२४॥

२ १ २र ३ १ २ ३ ३ २ ३ २ ३ १ २
प्र । काव्यम् । उशना । इव। ब्रुवाणः । देवः । देवानाम् ।

१ २र ३ १ २र १ २र ३ १ २र
जनिमा । विवक्ति । महिव्रतः । महि । व्रतः । शुचिबन्धुः ।

१ २र ३ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र
शुचि । बन्धुः । पावकः । पदा । वराहः । अभि । एति । रेभन्
॥५२४॥

उशना के समान काव्य (स्तोत्र) को कहता हुआ स्तोता इन्द्रादि देवतों के अवतारों का विशद वर्णन करता है। बहुत से कर्मोंवाला, दीप्त तेजोंवाला पापों का शोधन करनेवाला श्रेष्ठ दिन में निर्मित सोम शब्द करता हुआ पात्रों में आ रहा है।

२ १ २ १ र र २
ॐ उहुवाहाउ । ३ । सहस्त्रशीर्षाःपुरु २ ३ षाः ।

र १ २ १ २ र २ १र
सहस्त्राक्षः सहस्त्रा २ ३ पात् । सभूमिꣳसर्वतोवा २ ३

२ १ २ १र २ १ २
र्त्वा । अत्यतिष्ठद्दशांगू २ ३ लाम् । उहुवाहाउ । २ ।

१ ९ २ २ १ १ १ १ १
उहुवा ३ हाउ । वा ३ । इट्इडा २ ३ ४ ५ ॥ ४ ॥

(आ० गा० २१९)

३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २
सहस्त्रशीर्षाः पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ।

१ २र ३ १ २ ३ १ २ ३ २
स भूमिꣳ सर्वतो वृत्वात्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ॥ ६१७ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३
सहस्त्रशीर्षाः । सहस्त्र । शीर्षाः । पुरुषः । सहस्त्राक्षः । सहस्त्र ।
३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ १ २
अक्षः । सहस्त्रपात् । सहस्त्र । पात् । सः । भूमिम् । सर्वतः ।
३ २ १ २र ३ ३ २ ३ ३ २
वृत्वा । अति । अतिष्ठत् । दशाङ्गुलम् । दश । अङ्गुलम् ॥
६१७ ॥

सहस्त्रों शिरोंवाला, सहस्त्रों नेत्रोंवाल, और सहस्त्रों पैरोंवाला वह विराट् पुरुष भूमि को चारों तरफ से लपेट कर दश अङ्गुल नपे हुए स्थान में ज्ञान को प्राप्त होता है। यानी ईश्वर, परमेश्वर, परमात्मा, ब्रह्म संसार के भीतर और बाहर सर्वत्र व्याप्त है परन्तु उसका ज्ञान मनुष्य के हृदय में होता है।

२ १ र र — १र र र
ॐ उहुवौहोवा २ । ३ । त्रिपादूर्ध्वउदैत्पुरु २ ३
२ १र र र र २ १ २ र २ १
षाः । पादोस्येहाभवत्पू २ ३ नाः । तथाविष्वङ्वियक्रा
२ र १र २ २ १ र र —
२ ३ मात् । अशनानशनेआ २ ३ भी । उहुवौहोवा २ ।
२ १ र १ ३ ५र र ३
२ । उहुवौ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । ई २
५ २ १ र र — २ १ र १ ३
३ ४ डा । उहुवौहोवा २ । २ । उहुवौ । हो २ । वा
५र र ३ ५ २ १ र र —
२ ३ ४ । औहोवा । सू २ ३ ४ वाः । उहुवौहोवा २
३ १ र १ ३ ५र र ३
। २ । उहुवौ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । ऊ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ १ १ १
२ ३ ४ ५ ॥ ५ ॥

(आ० गा० २२०)

३ २ ३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।
२ ३ २ ३क २र ३ २ ३ २
तथा विष्वङ्व्यक्रामदशनानशने अभि ॥ ६१८ ॥

३ २ ३ २ ३ २ २ ३ १ २र १ २र
त्रिपात् । त्रि । पात्। ऊर्ध्वः । उत् । ऐत् । पुरुषः । पादः ।
३ ३ २ ३ २ ३ १ २ १ २र १ २र २ ३
अस्य । इह । अभवत् । पुनरिति । तथा । विष्वङ् । वि । स्वङ्।
२ ३ ३ २ ३ १ २ ३ २
वि । अक्रामत् । अशनानशने । अशन । अनशनेइति । अभि
॥६१८॥

जो कि यह अधिकांश संसार के स्पर्श से रहित ब्रह्म स्वरूप पुरुष, परमात्मा इस कार्य जगत् के ऊपर उदय को प्राप्त होता है, उसके एक अंश में यह सारा ब्रह्माण्ड विद्यमान है और उसकी माया से यह विष्वङ् यानी देवयोनि से मृतक योनि तक वह व्याप्त है और जड़ और चेतन यानी खानेवाले और न खानेवाले दोनों प्रकार की सृष्टि में व्याप्त है। मतलब यह हुआ कि परमात्मा ईश्वर ब्रह्म के एक अंश से समस्त ब्रह्माण्ड है और उसके अधिकांश में कोई भी वस्तु नहीं है, यानी अधिकांश शुद्ध सत्त्व है।

१ २र — १ रर २
ॐ इयौहोवा २ । ३ । पुरुषएवेदꣳसा २ ३ र्वाम् ।
१ र २ १र २ १र र रर
यद्भूतंयच्चभावा २ ३ याम् । पादोस्यसर्वाभूता २ ३
२ १र र २ १ २ १ र र —
नी । त्रिपादस्यामृतंदा २ ३ इवी । इयौहोवा २ । २।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ र १ ३ ५र र ३ ५
इयौ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा । इ २ ३ ४ डा ।
१ रर – १र १ ३ ५रर
इयौहोवा २ । २ । इयौ । हो २ । वा २ ३ ४ । औहोवा ।
३ ५ १रर – १र १
ज्यो २ ३ ४ तीः । इयौहोवा २ । २ । इयौ । हो २ ।
३ ५र र ३ १ १ १ १
वा २ ३ ४ । औहोवा । ई २ ३ ४ ५ ॥ ६ ॥

(आ० गा० २२१)

१ २ ३ २उ ३ २ ३ २उ ३ १ २
पुरुष एवेदꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
पादोऽस्य सर्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥ ६१९ ॥

१ २र ३ २ ३ २ १ २र २ ३ २ २ ३
पुरुषः । एव । इदम् । सर्वम् । यत् । भूतम् । यत् । च।
१ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ २
भाव्यम् ॥ पादः । अस्य । सर्वा । भूतानि। त्रिपात् ।
३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र ३ २
त्रि । पात् । अस्य । अमृतम् । अ । मृतम् । दिवि ॥ ६२९॥

यह सब जगत् पुरुष ही है जो कि हो चुका है और जो आगे होने वाला है। इस पुरुष के एक अंश में सारी दुनिया व्याप्त है और इसका अधिकांश विनाशरहित प्रकाशस्वरूप ब्रह्माण्ड के बाहर विद्यमान है।

२र २र र २ १ २
ॐ हाउ । ३ । तावानस्य । महा २ ३ इमा ३ ।
२ र १र र र २ १ २ २र
हाउ । ३ । ततोज्यायाꣳश्चपूरु २ ३ षा ३ः । हाउ । ३ ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१र र २ २र १ र र २ १र
उतामृतत्वस्येशा २ ३ ना ३ः । हाउ । ३ । यदन्नेनातिरोहा

२ २ऽ १ १ १ १ १
२ ३ ती ३ । हाउ ३ । वा ३ । इट्इडा २ ३ ४ ५ ॥

(आ० गा० २२२)

१ २ ३ २ड ३ १ २ ३ १ २
तावानस्य महिमा ततो ज्यायाँश्च पूरुषः ।

३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥६२०॥

१ २र ३ ३ २ १ २र १ २र ३ १ २र
तावान् । अस्य । महिमा । ततः । ज्यायान् । च । पूरुषः ॥

३ २ ३ १ २ ३ १ २ १ २र २ १ २र
उत । अमृतत्वस्य । अ । मृतत्वस्य । ईशानः । यत् । अन्नेन ।

३ १ २र ३ १ २र
अतिरोहति । अति । रोहति ॥ ६२० ॥

भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान जितना जगत् है, वह सब इस पुरुष का उतना सामर्थ्य है न कि वह जगत् वास्तव पुरुष है। क्योंकि वह पुरुष इस जगत् से कहीं बड़ा है और वह देवत्त्व का स्वामी है। इसी कारण प्राणियों के भोग करने की सामग्री को अपनी कारण-अवस्था को छोड़ कर जगत्-अवस्था में प्राप्त होता है। अर्थात् इस परमात्मा की महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह देवताओं के अन्दर जो अमृतत्व धर्म है उसका स्वामी है और इस दिखाई देनेवाले जगत् का आदि कारण है।

२ऽ १ र २ १र २र २ऽ
ॐ हाउ ३ वा । ततोविराडजायत । हाउ ३ वा ।

२ १र २र १ २ १ २ २ऽ १ २र १र २
विराजोअधिपूरुषः । हाउ ३ वा । सजातोअत्यरिच्यत ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ऽ २ १र र २ १ र २ १ २ऽ ३
हाउ ३ वा । पश्चाद्भूमिमथोपुरः । हाउ ३ वा ३ । इ
१ १ १ १
२ ३ ४ ५ ॥ ८ ॥

(आ० गा० २२३)

१ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
२ ३ १ २र ३ २उ ३ १ २ ३ २
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥६२१॥
१ २र ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ ३
ततः । विराट् । वि । राट् । अजायत । विराजः । वि ।
१ २र १ २र १ २र २ ३ २ १ २र ३
राजः। अधि । पूरुषः ॥ सः । जातः । अति । अरिच्यत ।
३ २ १ २र १ २र २ ३ २
पश्चात् । भूमिम् । अथ । ऊ । पुरः ॥६२१॥

उस शुद्ध ब्रह्म से ब्रह्माण्ड रूपी देह उत्पन्न हुई । इसी ब्रह्माण्ड को लेकर उसके अन्दर विराट् देह का अभिमानी पुरुष यानी ब्रह्मा उत्पन्न हुए तथा उस ब्रह्माण्ड में जीव रूप से प्रविष्ट होकर नाना जीवों को उत्पन्न किया। वह विराट पुरुष उत्पन्न होकर नाना प्रकार की योनियों में उत्पन्न होनेवाले प्राणियों के निवास के लिये पृथिवी को बंनाया। उसके बाद पुरः जीवों को यानी प्राणियों को बनाया।

२र १ २ १ २ १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । अस्मिनस्मिन् । ३ । नृम्णाइनृम्णम्।
१ २ र १ २ –
३ । निधाइमाहे । ३ । कयानश्चित्रा ३ आभू १ वा २
र र १ २ – र
त् । ऊतीसदावृ ३ धाः सा १ खा २ । कयाशचिष्ठा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २ २र १ २ १ २
३ यावा १ र्त्ता २ ३ । हाउ । ३ । अस्मिनस्मिन् । ३ ।
१ २ १ २ १ २ १
नृम्णाइनृम्णम् । ३ । निधाइमाहे । २ । निधा २ ३ इ ।
१ ३ ५र र १ र ३ १ १ १
मा २ । हा २ ३ ४ । औहोवा । सुवर्ज्योती २ ३ ४
१
५: ॥ ९ ॥ * इति विष्णुसंहिता ॥

(आ० गा० २२४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २ ३ १ २
कयानश्चित्र आ भुव दूती सदा वृधः सखा ।
२ ३ १ २ ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥ १६९ ॥

१ २र ३ ३ २ २ ३ ३ २ ३ १ २
कया । नः । चित्रः । आ । भुवत् । ऊती । सदावृधः ।
३ २ ३ १ २र २ ३ १ २र १ २र ३ २
सदा । वृधः । सखा । स । खा ॥ कया । शचिष्ठया । वृता
॥१६९॥

सत्य के बल से बढ़नेवाला, इन्द्र, प्रभु ज्ञान करने योग्य, पूज्य अद्भुत्, किस अपूर्व रक्षण करनेवाले सामर्थ्य या ज्ञान से और किस अति शक्तिसम्पन्न, बलयुक्त बुद्धियुक्त, कर्म और व्यवहार से हमारा मित्र हो रहा है, इसका विचार करो।

---

* इदं विष्णुः प्रक्षस्य वृष्णः प्रकाव्य मुशने वब्रुवाण इति वाराहमन्त्यं पुरुषे व्रते चैषा वैष्णवी नाम सꣳहितैतां प्रयुञ्जन् विष्णुं प्रीणाति ॥ सामवि० ब्रा० १।४।३१, ३२ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ रुद्रसंहिता

४र ५र र ४ ३ २ ३ २ ३ ४ ५ १ २र
ॐ आवोराजा । नमध्व । रस्यरुद्राम् । हो । ता ।
१ २ २ २र ३ ४ ५ २ १
राम् । स । त्ययजा ३ म् । रोदसीयोः । अग्निंपु । रा ।
२ ३ २ ३ ४ ५ १ २ १ २ १
तनयि । त्लोरचित्तात् । हिरण्य । रू । पा ३ मव ।
२ २ ४
सा ३ ४ ३ इ । का ३ र्णू ५ ध्वा ६ ५ ६ म् ॥१॥

(वे० गा० ११३)

२ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
आ वो राजान मध्वरस्य रुद्रं होतारं सत्ययजं रोदस्योः ।
३ २ ३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
अग्निं पुरा तनयित्लोरचिताद्धिरण्य रूप मवसे कृणुध्वम् ॥६९॥

२ ३ १ २र ३ १ २ ३ २ १ २र
आ । वः । राजानम् । अध्वरस्य । रुद्रम् । होतारम् ।
३ १ २ ३ १ २र १ २र ३ २ ३ २
सत्ययजम्। सत्य । यजम् । रोदस्योः ॥ अग्निम् । पुरा ।
३ २ ३ १ २र ३ १ २र १ २र
तनयित्लोः । अचित्तात् । अ । चित्तात् । हिरण्यरूपम् ।
१ २र ३ १ २र ३
हिरण्य । रूपम् । अवसे । कृणुध्वम् ॥

हे मनुष्यो! तुम सब हिंसारहित यज्ञ के स्वामी, कर्मफल प्राप्त करनेवाले दुष्टों के सन्तापक, द्यौ तथा पृथिवी के बीच सच्चा यज्ञ करने वाले, ज्योतिर्मय हितकारी, तथा रमणीय प्रकाशवाले परमेश्वर की–अपनी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

रक्षा के लिये बिजली के समान अकस्मात् आ जानेवाली अचेतन, ज्ञानरहित मृत्यु के आने से पहले ही उपासना कर लो।

५ र४ ५ १ ३ २ ३ ५
ॐ तद्वौहोवा । गाया २ । सुताइसा २ ३ ४ चा ।

१ २र र २ १ २ १ ऽऽ २
पुरुहूता । यसात्वा १ ना २ इ । शंयत् । हा । औ ३

२ ३ ५ १ ३ ५र र
होइ । गा २ ३ ४ वाइ । ना २ शा २ ३ ४ औहोवा ।

२ १ १ १ १ १
ए ३ । किने २ ३ ४ ५ ॥ २ ॥

(वे० गा० १८१)

५र र २ १ र २
ॐ तद्वोगाया । सुताइसचा ३ । पूरू २ ३ हूता

३र २ १ २ ३ ५ २१
३ ४ । हाहो ३ । यासत्वा २ ३ ४ नाइ । शंयद्गा २

२ २ १ ५ ४
३ वे । नशौ २ । हौ २ । हुवो २ ३ ४ । वा । का

५
५ इनो ६ हाइ ॥ ३ ॥

(वे० गा० १८२)

५ रर र ५ २ र१र २र १ २र र
ॐ तद्वोगायस्तेसचा ६ ए । पुरुहूतायसत्वने । पुरुहूता ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ ७ २ ४ ५ २ ३
यासत्त्वा २ ३ ना ३ ४ इ । शंयत् । गौवाओ
५ १ ४ २
२ ३ ४ वा । ना २ ३ शा ३ । का ३ ४ ५ इनो ६
५
हाइ ॥ ४ ॥

(वे० गा० १८३)

५ र र र ५ २ र १र
ॐ तद्वोगायसुतेसचा ६ ए । पुरुहूतायसत्वनाइ ।
१ २ २ १
शंयद्गा २ ३ वे । ऐ २ हो १ आ २ ३ इही । नशा २
१ ३ ५र र ३ १ १ १ १
३ । का २ इना २ ३ ४ औहोवा । ई २ ३ ४ ५ ॥५॥

(वे० गा० १८४)

१ २ ३ १ २र ३ २ ३ १ २
तद्वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने ।
२उ ३ २ ३ १ २
शं यद्गवे न शाकिने ॥ ११५ ॥

२ ३ ३ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ ३ १ २
तत् । वः । गाय । सुते । सचा । पुरुहूताय । पुरु । हूताय।
१ २र २ ३ १ २र २ ३ १ २
सत्वने ॥ शम् । यत् । गवे । न । शाकिने ॥११५॥

हे मनुष्यों तुम लोग वीर्यवान्, सत्य स्वरूप,सदा विद्यमान रहनेवाले इन्द्रिय गण प्रजाओं और अनेक मनुष्यों द्वारा पूजित गौ, पृथिवी, सूर्य और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वेदवाणी के तुल्य शक्तिमान और जो कल्याणकारी है उस अपर्ने यज्ञ में एक साथ मिल कर कीर्तन करो।

२र २र ३ ४ ५ २र १र २

ॐ हाउ । ३ । आज्यदोहम् । ३ । मूर्धानन्दाइ । वा

१ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ र २र ३ ४ ५

३ अर । तिंपृथिव्याः । वैश्वानराम् । ऋतआ । जातमग्निम्।

२ १ २ १ २ ३ ४र ५

कविंःसंम्रा । जा ३ मति । थिंजनानाम् ।

२र १ २ १ २ २ ४र ५ २र

आसन्नःपा । त्रा३ञ्जन । यन्तदेवाः । हाउ । ३ ।

२र ३ ४ ५ २ र ३ ४ २ २र

आज्यदोहम् । २ । आज्यदो ५ हाउ । वा । ए ।

२ १ २ २र र १ ३ १ १ १ १

आज्यदोहम् । २ । ए । आज्यदोहा २ ३ ४ ५ म् ॥६॥

(आ० गा० ४३)

३ १२ ३१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ २र ३ २ ३ २

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वा नरमृत आ जात मग्निम्।

३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २ ३ १ २ ३ २

कविंःसंम्राजमतिथिं जनानामासन्नः पात्रं जनयन्त देवाः ॥६७॥

३ १ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३

मूर्धानम् । दिवः । अरतिम् । पृथिव्याः । वैश्वानरम् । वैश्व ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २ ३ २ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
नरम् । ऋते । आ । जातम् । अग्निम् । कविम् । सम्म्राजम् ।
३ १ २र १ २र १ २र ३ २ ३ १ २र
संम् । राजम् । अतिथिम् । जनानाम् । आसन् । नः । पात्रम्
३ ३ २
जनयन्त । देवाः ॥६७॥

विद्वान् पुरुष मुख्य रूप से वा मुख द्वारा वाणी से बतलाते हैं कि ज्ञानवान् तेजोमय 'अग्नि', परमेश्वर ही द्यौ लोक के शिर के तुल्य उसका अधिष्ठाता है, वही पृथिवी का स्वामी है, वह सत्य यज्ञ गतिमत् जगत् में प्रादुर्भूत है। वही सब प्राणियों में व्यापक वैश्वानर है, वह सब में प्रकाशमान् सम्राट् है, वही मनुष्यों में अतिथि के तुल्य पूजनीय है, वही हम सब का पालक है।

२र र १ २ १ २
ॐ हाउ । ३ । हुम्चिदोहम् । चिदोहम् । २ ।
२र १र २ १ २ ३ ४ ५ २र १र
मूर्धानन्दाइ । वा ३ अर । तिंपृथिव्याः । वैश्वानराम् ।
२ १ र २ र ३ ४ ५ २ १ २ १
ऋतआ । जातमग्निम् । कविंःसंम्रा । जा ३ मति ।
२ ३ ४र ५ २र १ २ १ २ ३ ४र ५
र्थिजनानाम् । आसन्नःपा । त्रा ३ ञ्ञ । यन्तदेवाः ।
२र र १ २ १ २ २ ९
हाउ । ३ । हुम्चिदोहम् । चिदोहम् । चिदो २ हाउ ।
३ १ १ १ १
वा ३ । ई २ ३ ४ ५ ॥ ७ ॥

(आ० गा० ४४)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२र १ २ २र १र २
ॐ हाउ । ३ । च्योहम् । ३ । मूर्धानन्दाइ । वा

१ २ ३ ४ ५ २र १र २ १ र २र ३
३ अर । तिंपृथिव्याः । वैश्वानराम् । ऋतआ । जात-

४ ५ २ १ २ १ २ ३ ४ र ५
मग्निम् । कविंसंम्रा । जा३मति । थिंजनानाम् ।

२र १ २ १ २ ३ ४ र ५ २र
आसन्नःपा । त्रा ३ ञ्जन । यन्तदेवाः । हाउ । ३ ।

१ २ १ २ २ २ १
च्योहम् । २ । च्यो ३ हाउ । वा ३ । ए ३ । ऋतम् ॥८॥
(आ० गा० ४५)

१ २ १ १ २ १ १ २ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ ।

१ २ १ १ २ — — १ २ १ र २
स्वःप । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । मन्युनावृत्र-

१र र र २ १र २ १र २ १ २र १ २र १र २ १र र २र १
हासूर्येणस्वराड्यज्ञेनमघवादक्षिणास्यप्रियातनूराज्ञाविशं-

२र र १ र २ १र २ र १ २ १ र २ १ २
दाधार। वृषभस्त्वष्टावृत्रेणशचीपतिरन्नेनगयःपृथि-

१र २ १र र २र १ २ र र १ र र
व्यासृणिकोग्निनाविश्वंभूतम । भ्व्यभवोवायुनाविश्वाः-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १र २ र र १र र २ १र र र २ र १र
प्रजाअभ्यपवथावषट्कारेणार्द्धभाक्सोमेनसोमपाःसमि-
२र र १र र र २र र र २ १ २ १ र र २र र र
त्यारमेष्ठी। येदेवादेवाः । दिविषदः । स्थतेभ्योवोदेवा-
२ १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
देवेभ्योनमः । येदेवादेवाः । अन्तरिक्षसदः । स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ र १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः । येदेवादेवाः । पृथिवीषदः । स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः । येदेवादेवाः । अप्सुषदः । स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २ १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः । येदेवादेवाः । दिक्षुसदः । स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १र र २र र र २र र १ २ १ र र
वोदेवादेवेभ्योनमः । येदेवादेवाः । आशासदः । स्थतेभ्यो-
२र र र र १र २र १ २ १ २ १र २ १ २र १ र २ १ २र
वोदेवादेवेभ्योनमः । अवज्यामिवधन्वनोवितेमन्युन्नया-
१ र २ १ २ १ २ १ २ १
मसिमृडतान्नइहअस्मभ्यम् । इडा २ ३ भा । यइदं
र २ १ ३
विश्वंभूतम् । युयो ३ । आउ । वा २ ३ । ना २ ३
५
४ माः ॥ ९ ॥

(आ० गा० २१२)

१ २ १ २ ३ १ २र १ २र ३ १ २र
अधिपते । अधि । प्रते । मित्रपते । मित्र । पते । क्षत्रपते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ १२ २ १ २ ३ १ २र १ २र ३
क्षत्र। पते । स्वःपते । स्वाऽ३रिति । पते । धनपते । धन । पते।
१ २र ३ १ २ ३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३
नमः ॥ मन्युना । वृत्रहा । वृत्र। हा । सूर्येण । स्वराट् । स्व ।
२ ३ १ २ ३ १ २ १ २र ३ २ ३ २ १ २र
राट् । यज्ञेन । मघवा । दक्षिणा । अस्य । प्रिया । तनूः । राज्ञा ।
१ २र ३ ३ २ १ २र ३ १ २ ३ १ २
विशम् । दाधार । वृषभः । त्वष्टा । वृत्रेण । शचीपतिः ।
३ १ २र १ २र १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २
शची । पतिः । अन्नेन । गयः । पृथिव्या । सृणिकः । अग्निना ।
१ २र ३ २ ३ २ ३ ३ १ २ १ २र ३ २
विश्वम् । भूतम् । अभि । अभवः । वायुना । विश्वाः । प्रजाः।
३ २ ३ २ ३ १ २ ३ १ २
प्र । जाः । अभि । अपवथाः । वषट्कारेण । वैषट् । कारेण।
३ २ ३ २ १ २र ३ २ ३
अर्द्धभाक् । अर्द्ध । भाक् । सोमेन । सोमपाः । सोम ।
३ १ २र ३ २ ३ २
पाः । समित्या । सम् । इत्या । परमेष्ठी । परमे । स्थी । ये ।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
देवाः । देवाः । दिविषदः । दिवि । सदः । अन्तरिक्षसदः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २
अन्तरिक्ष । सदः । पृथिवीषदः । पृथिवी । सदः । अप्सुषदः ।
३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३
अप्सु । सदः । दिक्षसुदः । दिक्षु । सदः । आशासदः । आशा।
१ २र ३ १ २र २ १ २ १ २र १ २र
सदः । स्थ । तेभ्यः । वः। देवाः। देवेभ्यः । नमः ॥ अव ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २र ३ २ ३ १ २
ज्याम् । इव । धन्वनः । वि। ते । मन्युम् । नयामसि । मृडताम्।
३ २ ३ १ २ ३ २ १ २र ३ २ १ २र
नः । इह । अस्मभ्यम् । यः। इदम् । विश्वम् । भूतम् । युया ।
१ २र
नमः ॥ (स्तोभ पद पाठः २।५)

१ २ १ १ २ १ १ २ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ ।
१ २ १ १ २ – – १ १ २ १
स्वः प । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । नमउत्तति-
२र २ १र २ १ २ २ १ २र २ १ २ १ २
भ्यश्चोत्तन्वानेभ्यश्चनमोनिषंगिभ्यश्चोपवीतिभ्यश्चनमोस्य-
२ १ २ २र १ २ १ २ २ १
द्भयश्चप्र । तिदधानेभ्यश्चनमःप्रविध्यद्भ्यश्चप्रव्याधिभ्य-
२ १ २ १ २ २ १ २ १ २ १र २ २ १
श्चनमत्सरद्भ्यश्चत्सारिभ्यश्चनमःश्रि । तेभ्यश्चश्रायिभ्य-
२ १ २ १ २ २ १ २ १ २ २ १र २ १र २ १ २
श्चनमस्तिष्ठद्भ्यश्चोपतिष्ठद्भ्यश्चनमोयतेचवियतेचनमःप-
१र २ १ २र १ २ १र २ १ २र १ २ २ १ २र
थेचविपथायच । अवज्यामि वधन्वनोविते मन्युन्नयाम-
१ २ २ १ २ १ २ १ २ १
सिमृडतान्नइह अस्मभ्यम् । इडा २ ३ भा । यइदं विश्वं-
२ २ १ ५
भूतम् । युयो ३ । आउ । वा २ ३ । ना २ ३ ४ माः ॥१०॥

(आ० गा० २१३)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१ २र ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
नमः । उत्ततिभ्यः । उत् । ततिभ्यः । च । उत्तन्वानेभ्यः । उत् ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
तन्वानेभ्यः । च । नमः । नीषङ्गिभ्यः । नी । सङ्गिभ्यः । च ।
१ २ ३ १ २ ३ १ २र १ २र ३
उपवीतिभ्यः । उप । वीतिभ्यः । च । नमः । अस्यद्भ्यः । च ।
१ २ ३ १ २र ३ १ २र ३ १ २
प्रतिदधानेभ्यः । प्रति । दधानेभ्यः । च । नमः । प्रविध्यद्भ्यः ।
३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र १ २र
च । प्रव्याधिभ्यः। प्र । व्याधिभ्यः । च । नमः । त्सरद्भ्यः ।
३ ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २ ३
च । त्सारिभ्यः । च । नमः । श्रितेभ्यः । च । श्रायिभ्यः । च ।
१ २र १ २र ३ १ २ ३ १ २र
नमः । तिष्ठद्भ्यः । च । उपतिष्ठद्भ्यः । उप । तिष्ठद्भ्यः ।
३ १ २र ३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र ३ २
च । नमः । यते । च । वियते । वि । यते । च । नमः । पथे ।
३ १ २ ३
च । विपथाय । वि । पथाय । च ॥ (स्तोभ पद पाठ; २।५)

१ २ १ १ २ १ १ २ १ १
ॐ अधिप । ताइ । मित्रप । ताइ । क्षत्रप । ताइ । स्वः
२ १ १ २ – – १ १ र र २ १ र
प । ताइ । धनपता २ इ । ना २ माः । नमोन्नायनमोन्न-
२ र र १र २र र १र २ १ २र १ २ १र २र
पतयएकाऽक्षायचावपन्नादावचनमोनमः । रुद्रायतीर-
१ २र १ २ १र २ १ २ र १ २ १ २ र १ र
सदेनमः स्थिरायस्थिरधन्वनेनमः प्रतिपदायचपटरिणे-

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

२ १ २   १   २   र   २ १ र २ १   २र   र १र   २
चनमस्त्रियंबकायचक । पर्द्दिनेचनमआश्रायेभ्यश्च-
र   र १र   २ १   २   १र   २   १र   २ १   २ १ र २
प्रत्याश्रायेभ्यश्चनमःक्रव्येभ्यश्चविरिंफेभ्यश्चनमः संवृतेच-
१ २र   १ २ १र   २ १   २र १ र   २ १   २र
विवृतेच । अवज्यामिवधन्वनोविते मन्युन्नयामसि-
१ र २ १ २ १ २   १   २   १
मृडतान्नइह अस्मभ्यम् । इडा २ ३ भा । यइदं विश्वं-
र   २   १   ५
भूतम् । युयो ३ आउ । वा २ ३ । ना २ ३ ४ माः ॥*

(आ० गा० २१४)

१ २र   १ २   १ २र   १ २र   १ २र   ३
नमः । अन्नाय । नमः । अन्नपतये । अन्न । पतये ।
१ २   ३   १ २ ३   १ २   ३
एकाक्षाय । एक । अक्षाय । च । अवपन्नादाय । अव ।
१ २ ३   १ २र   १ २र   ३ १ २   ३ १ २   ३   १ २र
पन्नादाय । च । नमः । नमः । रुद्राय । तीरसदे । तीर । सदे ।
१ २र   ३ १ २   ३ १ २   ३ २   ३   १ २र
नमः । स्थिराय । स्थिरधन्वने । स्थिर । धन्वने । नमः ।
१ २र   १ २र   ३   १ २   ३   १ २र
प्रतिपदाय । प्रति । पदाय । च । पटरिणे । च । नमः ।

---

* आवोराजा तद्वोवर्ग आज्यदोहानि देवव्रतानि चैषा रौद्रीनाम सꣳहितैतां प्रयुञ्जन् रुद्रं प्रीणाति। सामवि० ब्रा० १।४।२९, ३० ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

१२ ३ १ २ ३ १ २र
त्र्यम्बकाय । त्रि । अम्बकाय । च । कपर्द्दिने । च । नमः ।

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३
आश्रायेभ्यः । च । प्रत्याश्रायेभ्यः । प्रति । आश्रायेभ्यः । च ।

१ २र ३ १ २ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३
नमः । क्रव्येभ्यः। च । विरिंफेभ्यः । वि । रिंफेभ्यः । च ।

१ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३
नमः । संवृते । सम् । वृते । च । विवृते । वि । वृते । च ॥
(स्तोभ पद पाठः २१५)

इति रुद्रसंहिता

वसन्त इति प्रजापतिर्बृहत्यृतवः ॥

यह साम का प्रजापति ऋषि, बृहती छन्द और ऋतु देवता है।

३ ४ २ ४ ५ १र २
ॐ वा ५ सन्तः । ई ३ न्नू ३ रन्ताया: । ग्रीष्मइन्नूरा

२ २ २ १र २ १ २ २
१ न्ती ३ याः । वर्षाण्यनुशा ३ । हुम् । रा ३ दाः ।

१र ३ २ २ १ १ १ १
हेमंतः शिशिरइन्नुरा २ न्तीयाउ । वा २ ३ ४ ५ ॥१॥

(आ० गा० २१५)

३ १ २र ३ १ २र
वसन्त इन्नु रन्त्यो ग्रीष्म इन्नु रन्त्यः ।

३ १ २र ३ १ २ ३ १ २र ३ १ २र
वर्षाण्यनु शरदो हेमन्तः शिशिर इन्नु रन्त्यः ॥ ६१६ ॥

३ २ २ २ १ २र ३ २ २ २ १ २र
वसन्तः । इत् । नु । रन्त्यः । ग्रीष्मः । इत् । नु । रन्त्यः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ १ २   १ २र ३ १ २   ३ १ २   १ २र   २   २   १ २र
वर्षाणि । अनु । शरदः । हेमन्तः । शिशिरः । इत् । नु । रन्त्यः ॥६१६॥

चैत्र-वैशाखरूप वसन्त ऋतु ही रमणीय होता है। ज्येष्ठ-आषाढ़रूप ग्रीष्म ऋतु ही रमणीय होता है। श्रावण-भाद्रपदरूप वर्षा ऋतु के अनन्तर आश्विन-कार्तिकरूप शरद, मार्गशीर्ष-पौषरूप हेमन्त और माघ-फाल्गुनरूप शिशिर ऋतु ही रमणीय होता है।

वामदेव्यस्य वामदेवो गायत्रीन्द्रः । शान्त्यर्थं जपे विनियोगः ॥

यह साम का वामदेव ऋषि, गायत्री छन्द और इन्द्र देवता है। शान्त्यर्थ जप करने में इसका विनियोग है॥

३   र   ५ ४   २   ४र   ५   १
ॐ का ५ या । नश्चा ३ इत्रा ३ आभूवात् । ऊ ।

र   २ १र   २   १   २   र २   १
ती सदावृधः स । खा । औ ३ होहाइ । कया २ ३

२   ३   र २   १   –   १   २
शचाइ । ष्ठयौहो ३ । हुम्मा २ । वा २ तों ३ ५ हाइ ॥१॥

१ २   ३ १   २र   ३ २   ३ १   २ ३   १ २
कयानश्चित्र आ भुव दूती सदा वृधः सखा ।

२   ३   १ २   ३ २
कया शचिष्ठया वृता ॥६८२॥

१ २र   ३   ३ २   २   ३   ३ २   ३ १ २
कया । नः । चित्रः । आ । भुवत् । ऊती । सदावृधः ।

३ २   ३   १ २र   २   ३   १ २र   १ २र   ३ २
सदा । वृधः । सखा । स । खा ॥ कया । शचिष्ठया । वृता ॥६८२॥

विचित्र पूज्य तथा सदा वृद्धि को प्राप्त इन्द्र परमेश्वर किसी रक्षा के सामर्थ्य और किसी बुद्धि-बलयुक्त व्यवहार के द्वारा मित्र हो जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ र ४ २ ४र ५ १
ॐ का ५ स्त्वा । सत्यो ३ मा ३ दानाम् । मा ।
२र १ २ १ २ र २ १
हिष्ठोमात्सादन्ध । सा । औ ३ होहाइ । दृढा २ ३
२ ३ र २ १ — १ ˆ २
चिदा । रुजौहो ३ । हुम्मा २ । वा २ सो ३ ५ हाइ ॥२॥

१ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ १ २
कस्त्वा सत्यो मदानान्मं हिष्ठो मत्सदन्धसः ।
३ १ २ ३ २ ३ १ २
दृढाचिदा रुजे वसु ॥ ६८३ ॥

२ ३ २ १ २र १ २र ३
कः । त्वा । सत्यः । मदानाम् । मंहिष्ठः । मत्सत् ।
१ २र ३ २ ३ ३ १ २ ३ १ २र १ २र
अन्धसः ॥ दृढा । चित् । आरुजे । आ । रुजे । वसु ॥६८३॥

पूजनीय, सत्यस्वरूप, हर्षों, आनन्दों के बीच कौन सा जीवन धारण करानेवाला या अंधकार का नाश करनेवाला परम रस है जो दृढ़वास योग्य दुर्गादि रूप बन्धनों को तोड़ने के लिये आप को आनन्दित व उत्साहित करता है।

३ र ४ २ ४र ५ १
ॐ आ ५ भी । षुणा ३ः सा ३ रवीनाम् । आ।
२र १ २र १ १ र २ १
विताजराइतॄ । णाम् । औ २ ३ होहाइ । शता २ ३
२ ३ र २ १ — १ ˆ २
म्भवा । सियौहो ३ । हुम्मा २ । ता २ यो ३ ५ हाइ ॥

(उह गा० ५)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३ २उ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
अभीषुणः सखीना मविता जरितॄणाम् ।
३ १ २ ३ १ २
शतं भावास्यूतये ॥६८४॥

३ २ ३ १ २र २ ३ ३ २
अभि । सु । नः । सखीनाम् । स । खीनाम् । अविता ।
३ २ ३ २ ३ ३ १ २
जरितॄणाम् । शतम् । भवासि । ऊतये ॥ ६८४ ॥

हे इन्द्र, परमेश्वर आप हमारे मित्र तथा उपासकों के लिये सौ वर्ष तक अर्थात् जीवन भर रक्षक बने रहें।

३ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ २
ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध श्रवाः स्वस्ति नः पूषा
३ १ २ ३ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३
विश्व वेदाः । स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो
२ ३ १ २
बृहस्पतिर्दधातु ॥

१ ३ २ ३ २ ३ १ २
ॐ स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।
इति सामवेदीयं साङ्गरुद्राध्यायजपः ॥

३ २ ३ २ ३ १ २र ३ १ २ ३ २
स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । इन्द्रः । वृद्धश्रवाः । वृद्धः ।
३ ३ २ ३ २ ३ ३ ३ १ २ ३ २
श्रवाः। स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । पूषा । विश्ववेदाः । विश्व ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

३   ३   २   ३   २   ३   १ २र   १ २र
वेदाः॥ स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । तार्क्ष्यः । अरिष्टनेमिः ।

१ २र   ३   ३   २   ३   २   ३   १ २र   १ २र
अरिष्ट । नेमिः । स्वस्ति । सु । अस्ति । नः । बृहः । पतिः ।

३
दधातु ॥१८७५॥

महान्, यशस्वी और ज्ञानवान् इन्द्र परमेश्वर हमारा कल्याण करे। हे सर्वज्ञ सब पदार्थों के स्वामी और पुष्टिकारक पूषन् हमारा कल्याण करें जिसके काल रूप महान् शासन और नियमों को कोई नहीं तोड़ सकता वह तार्क्ष्य हमारा कल्याण करे। वेदवाणी का रक्षक, स्वामी, पालक, परम प्रभु बृहस्पति हमारा कल्याण करे। वेद वाणी का रक्षक, स्वामी, पालक, परम प्रभु बृहस्पति हमारा कल्याण करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आरती

ततः पञ्चोपचारेण शिवं सम्पूज्य आरार्तिक्यं कुर्यात् ।

इस कृत्य के पश्चात् यजमान पञ्चोपचार सामग्री से शंकर जी की पूजा करके आरती करे।

उद्यं लोकेति इन्द्रोनुष्टुप् सूर्यः। आरार्तिके विनियोगः ।

इस साम का इन्द्र ऋषि, अनुष्टुप् छन्द और सूर्य देवता है। आरती करने में इसका विनियोग है।

२ १ र र २ १ २ १ र र

ॐ उद्यँल्लोकानरोचयः । होयि । इमाँल्लोकान

२ १ २ १र र २ १ १ २र १

रोचयः । होयि । प्रजाभूत मरोचयः । होयि । विश्वम्भूत-

२ १ ३ ५र र २ १र

मरोचयः । हो २ । हा २ ३ ४ । औहोवा । घर्मो

र ३ १ १ १ १

ज्योती २ ३ ४ ५ः ॥

(आ० गा० २७९)

---

३ २ ३ २ ३ २ ३ २ ३ २

उद्यन् । उत् । यन् । लोकान् । अरोचयः । इमान् । लोकान् ।

३ २ ३ २ ३ २ ३ १ २र

अरोचयः । प्रजाः । प्र । जाः । भूतम् । अरोचयः । विश्वम् ।

३ २ ३

भूतम् । अरोचयः ॥ (स्तोभ पद पाठे २-१०)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अथ मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

१ – १ २ १ –
ॐ पाती २ः । ३ । दिवआ । पाती २ः । ३ ।
१ २ १ – १र २ १
अन्तरिक्ष । स्या । पाती २ः । ३ । पार्थिव । स्या । पाती
– २ १र र २र १ – १ २
२ः । ३ । अपा मोषधी । नाम् । पाती २ः । ३ । विश्वस्य
र १ – १ १ ३
भूत । स्या । पाती २ः । पाती २ ३ः । पा २ । ता २
५र र २र १ २ १ २र १ २ १
३ ४ । औहोवा । ए । पति र्द्दिवः । ए । पतिरन्त-
२ र १ २ १र २ र १ २ १र र
रिक्षस्य । ए । पतिः पार्थिवस्य । ए । पतिरपा मोष-
२र र र १ २ १ २ र १ २र १ र ३
धोनाम् । ए । पतिर्विश्वस्यभूतस्य । ए । सुवर्ज्योती
१ १ १ १ \
२ ३ ४ ५ः ॥* (आ० गा० ३९)

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्म्महे। स मे कामान् काम कामाय मह्यं

---

१ २र ३ २ ३ १ २ १ २र ३ २
* पतिः । दिवः । अन्तरिक्षस्य । पार्थिवस्य । अपाम् ।
१ २र १ २र ३ १ २र ३ १ २
ओषधीनाम्। ओष । धीनाम् । विश्वस्य । भूतस्य ॥ (स्तोभपद पाठे १-६-२)

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठयं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति । तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे । आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति ।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुख विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

ॐ साङ्गाय सायुधाय सवाहनाय सपरिवाराय सशक्तिकाय ॐ नमो भगवते रुद्राय नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ॐ जय गङ्गाधर हर जय गिरिजाधीशा,
शिव जय गिरिजाधीशा ।
त्वं मां पालय नित्यं २ कृपया जगदीशा,
ॐ हर हर हर महादेव ।
कैलाशे गिरि शिखरे कल्पद्रुम विपिने,
शिव कल्पद्रुम विपिने ।
गुञ्जति मधुकर पुञ्जे २ कुञ्ज बने गहने,
हर हर हर महादेव ॥
ॐ कोकिल कूजति खेलति हंसावन ललिता,
शिव हंसा वन ललिता ।
रचयति कला कलापं नृत्यति मुदसहिता,
हर हर हर महादेव ॥
तस्मिंल्ललित सुदेशे शाला मणि रचिता,
शिव शाला मणि रचिता ।
तन्मध्ये हर निकटे २ गौरी मदु सहिता,
हर हर हर महादेव ॥
क्रीडा रचयति भूषा रञ्जित निज मीशम्,
शिव रञ्जित निज मीशम् ।
ब्रह्मादिक सुर सेवित २ प्रणमति ते शीर्षम्,
हर हर हर महादेव ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीः

॥ जैमिनीय सामवेद रुद्र सामानि ॥

हरिः ओम्

वामदेव्यच्च ।

आवोराजा । नमध्वरस्यरूद्रं । होतारम् ।
ती खु श क्य च
सत्ययजंरो दसीयोः । अग्निं पूरा तनइत्नोराचीक्तात् ।
खृ व्य च्य च्य खृ श
हिरण्य रूपामवसा इकाणूर्ध्वाम् ॥१॥
च्य- ठि पि खि त्र

मार्गीयवच्च ।

तद्वौ होवा । गाया सुताइसाचा । पुरूहु
ती ट्य खी ण कि
ता यासा त्वा ना इ । शय्यदो औ होइ गा वा इ।
तच क्य य ट श कि खि ण श
नाशा औ होवा । ए की ने ॥२॥
टट ख शि तव ट ख

रौद्रेद्वे ।

तद्वो गाया । सुता इ स चा पुरू हुता
ती त्य ति ट्य ख्य
हा हा इया सत्वा ना इ । शंयत्गावे ।
प्य त च ख ण श टि त
नाशौ हौ हू वो बा काइनो हाइ ॥३॥
ट्य टच क प व्य व्य श

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तद्वो गाय सुते साचाए। पुरूहु ताय सत्वाने ।
तृ त क्य कू
पुरूहुता या सा त्वा ना इ शंयात्
च्य ध्य च य ट ख फि
गौवा उवोवा । नाशा का इनो हाइ ॥४॥
खि ण प श ख व्य श
मार्गीयवंचैव।
तद्वो गाय सुते साचा ए । पुरूहु ताय
तु त कि
सत्वनाइ शंयत्गा वे । ऐ हा या ऐ हि ।
ष टी न च य ट त
नाशाका इना औ हो वा । ई ॥५॥
टीट ख शि ख
रौद्राणि आजिदोहानि मारूतानि वा ऋतनिधनम्
ई निधनं त्रीनिधनं ऐन्द्राणि वा प्राजापत्यानिवा ।
हाबु हाबु हाबु । हिच्चो । त्रिः। मूर्द्धा नन्दा इवो आ रताइं
तु श क च क कु क चि
पृथिव्याः । वैश्वा नरा मृत आजातमग्निं । काविं सम्राज मातिथा
कु कि कि कु चि श क
इं जनानां । आ संन्नापात्रं जनयन्त देवाः । हाबु हाबु हाबु।
कु क कि कु तु श
हिच्चो । द्विः । हिच्चो हा उवा । ए र्त्त म् ॥६॥
क च क ट ति त च
हाबु हाबु हाबु । हिच्चि दो। त्रिः। मूर्द्धा नन्दा इवो आ रताइं
तु श क चि क कु क चि
पृथिव्याः । वैश्वा नरा मृत आजातमग्निं । काविं सम्राज मातिथा
कु शि कि कु चि क क
इं जनानां । आ सन्नापात्रं जनयन्त देवाः । हाबु हाबु हाबु।
कू क कि कु तु श
हिच्चि दो। द्विः । हिच्चि दो हा उवा । ई ॥७॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

क चि टि ति ख
हाबु हाबु हावाजिदो हमाजिदो हमाजिदोहां । मूर्द्धा नन्दा इवो आ
ति क कु क
रताइं पृथिव्याः । वैश्वा नरा मृत आजातमग्निं । काविं सम्राज
च कु कि कि कु चि क
मातिथा इं जनानां । आ सन्नापात्रं जनयन्त देवाः । हाबु हाबु
क कू क कि कु
हावाजिदो हमाजिदो हामाजिदो हा और होवा । ए आ जीदो हमे आ
क थ टभ शिं त क क्य क
जीदो हमे आ जीदोहाम् ॥८॥
क्य क टभ ख

त्रीणि रेवस्य व्रतानि ।

अधीपाताइ मित्रापाताइ क्षत्रा पाताइ सुवाः पाताइ । मन्युना वृ त्राहा
फि फि फि फि ण श ण ण ण
सूर्येणा स्वाराड्यज्ञेना मघवा दक्षीणास्या प्रिया तानुरन्ये ना गयाः ॥
णि ण णि णी ण्य ण ण्य ण
पृथिव्या सृणी कस्समीत्या परमे ष्ठीरा । ज्ञाविशन्दाधारा वृषाभा
णि क्य फू श्य फ्य फू ण
स्त्वष्टा । वृत्रेण शाची पातिर्वषाट् का रेणा र्द्धा भात् । सो मे नासो
ण ण्य फि फु फि ण फी
मापा ग्नी ना विश्वं भू ता तमभ्यमा वो वायुना विश्वाः प्राजा
ण्य ण्य णि णि णि फ णि ण्य ण्य
अभ्या पवथाः । यें एदेवा देवा दिविषां दस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो
फल शि फि शु फ फु णि क
नमाः । ए देवा देवा अन्तरिक्षसा दस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो
ट्य फि श फ्ल फि णि क
नमाः । ए देवा देवा पृथिविषा दस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो नमाः।
ट्य फि श फू फि णी क ट्य
ए देवा देवा अप्सुषादस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो नमाः । ए देवा
फि शी फि णी क ट्य फि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देवा दिक्षुषा दस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो नमाः । ए देवा देवा
श फ्ल फि णि णी क ट फि
भूतसा दस्था तेभ्यो वो देवा देवेभ्यो नमाः । आवज्यामीवा धन्वनो
शु फच्य फ्य णी क टच कि कच कि
वितेमन्युन्नयामसी मृळा तान इहा । अस्मभ्यामिळा भायइत विश्वं भू
कि कु क्य शि टुच क कि कि
तय्यूयो आ उवा । नामाः ॥९॥
ति टि ख ण
अधीपाताइ मित्रा पाताइ क्षत्रा पाताइ सुवाः पा ताइ । नमो नीषं
फि फि फि फि ण श फी
गीभ्याश्चो पवीतिभ्याच्छा नम उत्ततिभ्याश्च उत्तन्वाने भ्याश्चा नमो
फि ण फि फु फि फ
स्यत् भ्याच्छा प्रतिदधा नेभ्याश्चा। नमः प्राविद्वयत्भ्याश्चा
कि कि फ़ि फि फु
प्रव्याधिभ्याश्च । नामो धावत्भ्याश्चा भीधावभ्याश्चा नामो
णी फ ण्य फ फि फु क्य
ध्नत्भ्याश्चा । जीघांसत्भ्याच्छा । नम श्री तेभ्याच्छा श्रायेभ्याच्छा ।
फि फु फी फ फ
आवज्यामीवा धन्वनो वितेमन्युन्नयामसी मृळा तान इहा ।
कि क्य फि कि कु क्य शि
अस्मभ्यामिळा भायइत विश्वं भू तय्यूयो आ उवा । नामाः ॥१०॥
टिच क कि कि ति टि ख ण
अधीपाताइ मित्रा पाताइ क्षत्रा पाताइ सुवाः पा ताइ । नमोन्नाया
फि फि फि फि ण श फी
नमोन्नपतया एकाक्षाया वा पन्नादाया । नमस्थिराया स्थिरधन्वाने चा
फू ण श ण्य श फु फु
नमस्त्यंबका यच कपार्दीने चा नमस्तिष्ठाते चो पतिष्ठाते चा
फु फ ण फ णी फ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्सय्यते च वियते चा नमस्संवृते च विवृते चा। नमः पाथेचा
फ कि फु फु फु
वीपाथा याचा । आवज्यामीवा धन्वनो वितेमन्युन्नयामसी मृळा तान
फु कि कच कि कि कु क्य
इहा । अस्मभ्ळयामिळा भायइत विश्वं भू तय्यूयो आ उवा ।
शि टृच क कि कि ति टि
नामाः ॥११॥
ख ण

प्राजापत्यं गायत्रम्।

तस्सवितुर्वरेण्यो। भर्गोदेवस्यधीमाहा । ई धीयोयोनः ।
चु श ट च टी
प्रा चाहिं भा। ओवा ओवा ।
सट च्य ट सटच सट च
हिम्भा ओवा ॥ हरिः ओम्॥
च श क च

॥ श्री जैमिनीय सामवेद रूद्र सामानि समाप्तानिः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रीः

।। श्री जैमिनीय सामवेद चमक सामानि ।।

वैश्वानरव्रते द्वे।

ओं । त्रिः । आ यु रा यु रा यु । ज्योंतिः । त्रिः ।
च क च क च क च कच श

ज्योतोवा । त्रिः । ज्योतोवा हाइ । द्विः।
क च श कीश

ज्योतोवा हा उवा । इहस्ववैंश्वा नाराय
यी ट कूच च श

प्रादिशो ज्योतिर्बृहात् । प्र । इन्दुरिळा
चि क च च श

सत्यं सत्यं सत्यम्। सत्योवा । त्रिः ।
च च च च श

सत्योवाहाइ । द्विः । सत्योवा हा उवा । प्र ।
किश यि ट

कायमानो वना तुवां तुवां तुवां । तूवो वा । त्रिः ।
चि क च च च च श

तूवोवा हाइ । द्विः । तूवोवा हा उवा । प्र ।
क श यि ट

द्यौर्भु तं । पृथिवी । त्रिः । पृथिव्योवा । त्रिः ।
क च चि चि श

पृथिव्योवा हाइ । द्विः । पृथिव्योवा हा उवा ।
कु श यि श

।प्र। यन्मातृरजगन् । अपा अपा अपा ।
चृ च च च

आपोवा । त्रिः । आपोहवाहा । द्विः । आपोवाहा
च श क यि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उवा । प्र । सहस्तेजा अपा अपा अपा ।

च च च

आपोवा । त्रिः । ओपोवाहा । द्विः । आपोवा हा

च श क यि

उवा । प्र । न तक्ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनां

ट च

तनां तनाम् । तानोवा । त्रिः । तानोवाहाइ । द्विः ।

च च च श की इ

तानोवा हा उवा । प्र । ऊषा दीशो

यि ट की

ज्योति ज्र्योति ज्र्योतिः । ज्योतो वा । त्रिः ।

क क क श च श

ज्योतोवा हाइ । द्विः । ज्योतोवाहा उवा । प्र ।

की श यि ट

यद्दूरे सन्निहा भुवा । त्रिः । भुवोवा । त्रिः ।

चु च च श

भुयोवाहाइ । द्विः । भुवोवाहा उवा । प्र ।

की श चि ट

ओम् । त्रिः । आयु रांयु रायु । ज्योतिः । त्रिः ।

च क च क च क च कच श

ज्योतोवा । त्रिः । ज्योती वा हा इ ज्योतो वा

क च श की श

हाइ ज्योतो वा हा उवा । प्र । धर्मो मारूत्भी

की श यी ट क कि

र्भुवनानि चक्रदत् । इट् इळा ॥१॥

क नि

पच्चनिधनच्च वामदेव्यम् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

होवा हाइ । हाबु हाबु हाबु । एहिया हाबु । द्विः ।
क्य ख श तु श कि श
ए हि या हा औहोवा । प्र । इहा प्राजा
टि ख शि च्य च
मीहा रायीं रराणो हास् । होवा हा इ ।
च्य च्य कि चि क्य ख श
हाबु हाबु हाबु । एहिया हाबु । त्रिः । काया
तु श कि श
नश्च इत्र या भूवात् । प्र । रायस्पोषाया सुकृता
ट ख ण थ चि श चि
यभूयसे हास् । होवा हाइ । हाबु हाबु हाबु ।
कि च क्य ख श तु श
एहिया हाबु । त्रिः । ऊताइ स्सदा वा
कि श क कु
र्धस्साखा । प्र । आगन्वा ममिदं बृहद्धास् ।
ख ण कि कि चि
होवा हाइ । हाबु हाबु हाबु । एहिया हाबु । त्रिः ।
क ख श तु श कि श
काया शचीष्ठया वार्त्ताः । प्र । ईदं वा
ट ख ण क्य
ममिदं बृहद्धास् । होवा हाइ । हाबु हाबु हाबु ।
कि चि क ख श तु श
एहिया हाबु । त्रिः । काया सचाइष्ठया वार्त्ताः ।
कि श ट ख ण
। प्र । चरा चारा या बृहता ईदं वा ममिदं
क्यच च्य श चि क कि
बृहद्धास ॥२॥
चि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सर्प साम।

विहा याबु । त्रिः । विहायौ । त्रिः । काया

क्य च श क्य च

नाश्ची त्रा आ भूवात् । ऊती स्सादा वृधा

चि क्य य ट ची क्य

स्साखा । कया शाचीष्ठाया वार्त्ताः । विहा

य ट ची क्य य ट

याबु । त्रिः । विहायौ । द्विः । विहा या औ हो

च श क्य च ट्य ख

वा । सव्च्यत न्नवव्यायम न्यायत न्नसय्यमन्येके

शि की कि की की

चोदरा सर्पिणाः । तेभ्यो नमाः ॥३॥

कु नि थ्य न्य

स्वज्योतिषी ।

हाबु हाबु हाबु । स्वर्विश्वं । द्विः । स्वर्विस्वा

तु श कि क

मरू रूचा दरू रूचा । द्विः । दूषसः प्रश्निरा

कि च्य श क ट

ग्रायुः । उक्षामिमा । द्विः । उक्षामिमाति भुवना

च श की कू

इषुव जायुः । माया विनो । द्विः । माया विनो

टि च श की

ममिरे यस्य मा या या । नृचाक्षसो । द्विः ।

कू टि च श की

नृचक्षसः पितरो गर्भमा दाधुः । हाबु हाबु

कू टि च श

हाबु । स्वर्विश्वं । द्विः । सुवा विंश्वा उवा ।

तु श कि ट्य क्य त्य

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ए सुवाः ॥४॥

त न

हाबु हाबु हाबु । ज्योति र्विश्वं । द्विः । ज्योति

तु श कि

र्वीश्वा मरू रूचा दरू रूचा दरू रूचा

च्य क की कि कि

दूषसः प्रश्निरा ग्रायूः । उक्षामिमा । द्विः ।

क ट ख ण कि

उक्षामिमाति भुवना इषु वा जायुः । माया

कू टि ख ण

विनो । द्विः । मायाविनो ममिरे यस्यमा याया ।

कि ट टि ख ण

नृचाक्षसो । द्विः । नृचाक्षसः पितरो गर्भमा

कि कू टि

दाधूः । हाबु हाबु हाबु । ज्योतिर्विश्वं । द्विः ।

ख ण तु श क

ज्योता इर्विश्वा उवा । ए ज्योतीः ॥५॥

ट्य क त त ट ख

उदयन् लोका नरों चयो होंइमान् लो का

कि कु कि

नरो चयो होइ दिवं सुर्यमरोचयो होइ

क कू कू

विश्वंभुतमरो चयो हो हा औहोवा ।

कू कू ट ख श

धर्मोरो चीः ॥६॥

क ट्य ख

स्वयं स्तुन्वाइ । द्विः । स्वयं स्तुन्वा औहोवा ।

टीश ख शि

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ए स्तुन्व ए स्तुन्व ए स्तुन्वाइ ॥७॥

त कि कि ट ख श

प्राजापत्यं गायत्रम् ।

तस्सवितुर्वरेण्यों । भर्गोदेवस्यधीमाहा ।

चू श ट

ई धीयोयोनः ।

चक टी

प्रा चाहिं भा । ओवा ओवा ।

सट च ट सट च सट च

हिम्भा ओवा ॥ हरिः ओम् ॥८॥

च श क च

॥ श्री जैमिनीय सामवेद चमक सामानि समाप्तः ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

॥ श्रीः ॥

अथ शान्ति कल्पानुसारी अथर्ववेदीयो 'रुद्रः'

॥ तत्र प्रथमं ऋषिच्छन्दो-देवता-विनियोंगाः॥

(१) रुद्रजलाषेत्येकः कपिञ्जलो रुद्रोऽनुष्टुप ॥

(२) ये ३ स्यां स्तोतिषण्णामथर्वारुद्रः पञ्चपदाविपरीतपादलक्ष्मा ॥

(३) प्राचीदिगग्निरितिषण्णामथर्वा रुद्रः पञ्चपदाककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ॥

(४) उदितरिति सप्तानामथर्वारुद्रोऽनुष्टुप् । प्रथमा पथ्या पङ्क्तिः, तृतीया गायत्री अन्त्या ककुम्मती गर्भोपरिष्टाद् बृहती ॥

(५) भवाशर्वौमन्वेति सप्तानां मृगोरोऽथर्वावा रुद्रस्त्रिष्टप्। आद्याऽति जागतगर्भा भूरिक् ॥

(६) ब्रह्मजज्ञानमिति चतुर्दशाना मथर्वारुद्रस्त्रिष्टुबनुष्टप् जगत्यनुष्टुवुष्णिक्त्रिष्टुप्गर्भा पञ्चपदा जगती त्रिपदाविराङ्गायत्र्येका वसाना द्विपदाऽर्यनुष्टुप्प्रस्तार पङ्क्तिः पङ्क्तिः स्वराट् पङ्क्तिश्च॥

(७) ग्रीष्मोहेमन्तरितिद्वयोब्रह्मारुद्रस्त्रिष्टुवंत्या जगती ॥

(८) अनडुद्भ्यरिति तिसृणा मथर्वा रुद्रोऽनुष्टुप् ॥

(९) मह्य मापरिति तिसृणा मथर्वा रुद्रस्त्रिष्टप् द्वितीया तृतीया भूरिक् ॥

(१०) वैश्वानर इति तिसृणामथर्वा रुद्रस्त्रिष्टुप् ॥

(११) यांते रुद्र इति तिसृणा मथर्वा रुद्रस्त्रिष्टुप्, तृतीया आर्षीभूरि गुष्णिक्।

(१२) यमोमृत्युरिति तिसृणां शन्ताती रुद्रस्त्रिष्टप् ।

(१३) योअग्नावथर्वा रुद्रो जगती ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(१४) भवाशर्वावित्येकत्रिंशानामथर्वा रुद्रस्त्रिष्टुप्परातिजागता विराड् जगत्युनुष्टुष्गर्भा पञ्चपदा पथ्या जगती चतुष्पदा स्वराडुष्णिगनुष्टुवार्षी गायत्री महावृहत्यार्षी पुरोकृति त्रिपदा विराट् पञ्चपदाविराड् जगती गर्भाशक्करी भूरिग्विराड् गायत्री भूरिग्गायत्री विषमपाद लक्ष्मा त्रिपदा महा बृहती जगती पञ्चपदाति शक्करी चतुष्पदा उष्णिक् त्र्यवसाना विपरीत पादलक्ष्मा षट् पदा च ।

(१५) तस्मैप्राच्येत्यष्टादशानामथर्वा रुद्रा दैवी जगती प्राजापत्या गायत्र्यार्ची अनुष्टुप् द्विपदा प्राजापत्या जगती गायत्री भौमार्ची त्रिष्टुप् साम्नीत्रिण्टुप्राजापत्याबृहती द्विपदाऽऽर्ची पंक्ति रार्ची उष्णिक् ।

(१६) तस्मैप्राच्या दिशइत्येक विंशाना मथर्वारुद्रस्त्रिपदा समविषमा गायत्री त्रिपदा भूरिगार्ची त्रिष्टुप् द्विपदा प्राजापत्याऽनुष्टुप् त्रिपदा स्वराट्प्राजापत्या पंक्ति स्त्रिपदा ब्राह्मी गायत्री त्रिपदा ककुब्भूरिग्विषमागायत्री निचृद् ब्राह्मी गायत्री विराडादिच्छन्दांसि । श्रीपरमेश्वर प्रीत्यर्थे जपे-पाठे-अभिषेके-हवने-तर्पणे-मार्जने-स्वाध्याये वा विनियोगः ।

तत्रादौशान्ति पाठः ।

ॐ पृथिवि शान्तिं रुन्तरिक्षं शान्ति द्यौः शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शान्तिर्व नस्पतयः शान्ति विश्वैमे देवाः शान्तिः सर्वेमे देवाः शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिभिः ।। ताभिः शान्तिभिः सर्व शान्तिभिः शर्मयामोऽहं यदिह घोरं यदि हक्रूरं यदिह पापं तच्छान्तं तच्छिवं सर्वमेव शर्मस्तुनः ।। ।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

।। हरिः ॐ ।।

(१)

रुद्र जलाष भेषज नीलशिखण्ड कर्मकृत् ।।
प्राशं प्रतिप्राशो जह्यरसान् कृण्वोषधे ।।१।।

– (जलाषभेषज) ज़लचिकित्सा के द्वारा रोगों का निवारण करने वाले हे रुद्रदेव! नीले (अथवा) काले जटाजूटवाले तथा [निरन्तर] सक्रिय रहने वाले! [तुम] (प्राशम्) अधिक भोजन करने वाले को तुम मार देते हो। (प्रतिप्राशः) तुम अतिभोजन के प्रतिकूल रहते हो। हे औषध स्वरूपरुद्र! तुम रसरहित द्रव्यों को भी [सरस बना दो]।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(२)

[ऋषि-अथर्वा; अथर्वसंहिता ३.२६.]

ये ३ स्यां स्थ प्राच्यां दिशि हेतयो नाम देवास्तेषां वो अग्निरिषवः।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।२।।

हे देवों! पूर्व दिशा में जो 'हेति' संज्ञक अथवा आयुध स्वरूप देव [कहे जाते] हैं, तुम वही हो। तुम्हारे अग्नि [मय] बाण हैं। तुम हमें सुखी करो, तुम अपने वचन [से हमें आश्वासन] प्रदान करो। तुम्हें नमन। 'स्वाहा' [शब्द बोलकर हम] तुम्हें [हविष् समर्पण करते] हैं।

ये ३ स्यां स्थ दक्षिणायां दिश्यऽविष्यवो नाम देवास्तेषांवः काम इषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।३।।

हे देवों! दक्षिण दिशा में जो 'अविष्यु' संज्ञक अथवा हमारे संरक्षक स्वरूप जो देव [कहे जाते] हैं, तुम वही हो। काम तुम्हारा बाण है शेष पूर्ववत्।

ये ३ स्यांस्थप्रतीच्यां दिशि वैराजा नाम देवास्तेषां व आप इषवः ।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।४।।

हे देवों! पश्चिम दिशा में जो 'वैराज' संज्ञक देव [कहे जाते] हैं, तुम वही हो। जलराशि ही तुम्हारे बाणों का काम करती है। शेष पूर्ववत्।

ये ३ स्यां स्थोदीच्यां दिशि प्रविध्यन्तो नाम देवास्तेषां वो वात इषवः।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।५।।

हे देवों! उत्तर दिशा में 'प्रविध्यन्त' नाम के जिन देवों [का अस्तित्व माना जाता है], तुम वही हो। वायु तुम्हारा बाण है। शेष पूर्ववत्।

ये ३ स्यांस्थध्रुवायां दिशि निलिम्पा नाम देवास्तेषां व ओषधी रिषवः।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।६।।

हे देवों! पृथ्वी के नीचे, रसातल में, 'ध्रुव' नाम्नी दिशा में जो 'निलिम्प' संज्ञक देव [बतलाये जाते] हैं, तुम वही हो। ओषधियाँ अथवा वनस्पतियाँ ही तुम्हारे बाण हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ये ३ स्यां स्थोर्ध्वायां दिश्यवस्वन्तो नाम देवास्तेषां वो वृहस्पतिरिषवः।
ते नो मृडत ते नोऽधि ब्रूत तेभ्यो वो नमस्तेभ्यो वः स्वाहा ।।७।।

हे देवों! ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर की दिशा में जो 'अवस्वान्' संज्ञक देव स्थित [बतलायें जाते] हैं, तुम वही हो। तुम हमें सुखी करो। हमें आशीर्वाद दो। तुम्हें नमस्कार। 'स्वाहा' [के उच्चारण पूर्वक] तुम्हें हम यह [हवि समर्पित करते] हैं।

[अथर्व सं० ३.२७.१-६; ऋषि-अथर्वा, विविध देव]

प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्योनम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो ३ स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।८।।

पूर्व दिशा के स्वामी अग्निदेव हैं। 'असित' नाम [का सर्प उस दिशा का] रक्षक है। [द्वादश] आदित्य [ही उसके] बाण हैं। उन अधिपतियों को नमस्कार। रक्षकों को नमस्कार।उन बाणों को नमन।जो हमसे द्वेष करता है [और] जिससे हमारा द्वेष है, उसे हम [हे देवगण!] तुम्हारी दाढ़ों के मध्य [कुचल देने के लिए] रखते हैं।

दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो ३ स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।९।।

दक्षिण दिशा के स्वामी इन्द्र हैं। [उस दिशा में] (तिरश्चि-राजी) मर्यादा का अतिक्रमण न करने वाला रक्षक है। [उस दिशा में स्थित] पितर [गण] ही बाण हैं। शेष पूर्ववत्।

प्रतीची दिग् वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
यो ३ स्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१०।।

पश्चिम दिशा के स्वामी वरुण हैं। (पृत् + आ + कुः = पृदाकुः) अत्यन्त उत्साही व्यक्ति अथवा कुत्सित ध्वनि करने वाला सर्प उस दिशा का रक्ष है। [गेहूँ, जौ, चना इत्यादि विविध प्रकार के] अन्न ही

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बाण हैं। शेष पूर्ववत्।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।११।।

उत्तर दिशा का स्वामी सोम है। [उस दिशा का] रक्षक स्वयम्भू वीर पुरुष है। विद्युत् [ही] बाण है। शेष पूर्ववत्।

ध्रुवा दिग् विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१२।।

पृथिवी के तल में स्थित 'ध्रुवा' नाम्नी दिशा का स्वामी विष्णु है। उसका रक्षक कृष्ण ग्रीवा वाला सर्प है, औषधियों की लताएँ बाण है। शेष पूर्ववत्।

ऊर्ध्वा दिग् बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ।।१३।।

ऊपर स्थित 'ऊर्ध्व' दिशा का स्वामी बृहस्पति है। श्वेतवर्णी सर्प उसका रक्षक है। वर्षा बाण है। शेष पूर्ववत्।

विशेष - उपर्युक्त मन्त्रों में उल्लिखित प्राची दिशा अभ्युदय और उन्नति, दक्षिण दिशा चतुरता और कुशलता, पश्चिम दिशा विश्राम, उत्तर दिशा उच्चतर अवस्था, ध्रुव दिशा स्थिरता और दृढ़ता, तथा ऊर्ध्व दिशा आध्यात्मिक ऊँचाई की प्रतीक है।

(४)

[अथर्व सं० ४.३.१-७; ऋषि-अथर्वा, देवता-रुद्रादि; छन्द-अनुष्टुप्, १-पथ्यापंक्ति, ३-गायत्री]

उदितस्त्रयो अक्रमन् व्याघ्रः पुरुषो वृकः ।
हिरुग्धि यन्ति सिन्धवो हिरुग् देवो वनस्पतिर्हिरुङ्नमन्तु शत्रवः ।।१४।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

[हे रुद्रदेव!] बाघ, भेड़िया [और आपराधिक प्रवृत्ति का] पुरुष - ये तीनों (इतः उदक्रमन्) [आपके प्रभाव से] यहाँ से भागकर चले गये [अथवा चले जाएँ], [जिस प्रकार] नदियाँ (हिरुक्) निम्नाभिमुखी होकर बहती हैं, दिव्य वनस्पति भी (हिरुक्) रोगों को उतार देती है, [उसी प्रकार हमारे] (शत्रवः हिरुक् नमन्तु) शत्रुगण नीचे रहें तथा झुके रहें।

परैणैतु पथा वृकः परमेणोत तस्करः ।

परैण दुत्वती रज्जुः परैणाघायुरर्षतु ॥१५॥

भेड़िया हमसे (परेण पथा एतु) दूर मार्ग से चले। तस्कर उससे भी ज्यादा दूर रहे। (दत्वती रज्जुः) दाँतेदार रस्सी [की तरह दिखने वाली साँपिन भी] दूर रहे। (अघायुः परेण अर्षतु) पापी व्यक्ति भी हमसे अलग-थलग ही रहे।

अक्ष्यौऽच ते मुखं च ते व्याघ्र जम्भयामसि ।

आत् सर्वान् विंशतिं नखान् ॥१६॥

ओ व्याघ्र! [हम] तेरी आँखों और तेरे मुख को स्तम्भित कर रहे हैं। बस अब तेरे बीसों नाखूनों को भी नष्ट किये दे रहे हैं।

व्याघ्रं दुत्वतां वयं प्रथमं जम्भयामसि ।

आदुष्टे नमथो अहिं यातुधानमथो वृकम् ॥१७॥

(दत्वताम) दाँत से फाड़ खाने वालों में सर्वप्रथम मैं बाघ को स्तम्भित करता हूँ। तदनन्तर चोर, सर्प, राक्षस और अन्त में भेड़िये को स्तम्भित करता हूँ।

यो अद्य स्तेन आयति स संपिष्टो अपायति ।

पथामपध्वंसेनैत्विन्द्रो वज्रेण हन्तु तम् ॥१८॥

जो चोर आज [यहाँ] आ रहा है, वह हमारे द्वारा पिसकर [उल्टे पैर] भाग जाये। (पथाम अप ध्वंसेन एतु) मार्गों के मध्य, जब वह आने लगे, तो अपना रास्ता भूल जाये। इन्द्र के वज्र का वह शिकार हो जाये।

मूर्णा मृगस्य दन्ता अपिशीर्णा उ पृष्टयः ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

निम्रुक्तें गोधा भवतु नीचायच्छशयुर्मृगः ।।१९।।

(मृगस्य दन्ताः मूर्णा) हिंस्र पशु के दाँत तोड़ दिये गये हैं। (उ पृष्टयः अपिशीर्णाः) उसकी पसलियाँ तक गल-सड़ गयी हैं। (ते गोधा निभ्रुक भवतु) तेरी गोह नीचे ही रहे [ऊपर न चढ़ सके], (मृगः शशयुः नीचा अयत्) हिंस्र पशु नीचे लेटे-लेटे ही चला जाये।

यत् संयमो न वि यमो वियमो यन्न संयमः ।
इन्द्रजाः सोमजा आथर्वणमसि व्याघ्रजम्भनम् ।।२०।।

[हिंस्र पशुओं अथवा आपराधिक प्रवृत्ति के व्यक्तियों में से] जिसे भलीभाँति नियन्त्रित करके रखा जाता है, वह [फिर] उच्छृङ्खल नहीं हो पाता। लेकिन जिसे [प्रारम्भ में ही] नियन्त्रण में नहीं कर लिया जाता, वह उच्छृङ्खल हो जाता है। अथर्वा ऋषि के द्वारा इन्द्र और सोम की कृपा से प्राप्त यही वह उपाय है, जिसे अपनाकर तुम व्याघ्रादि का नियन्त्रण करने में समर्थ हो सकते है।

(५)

भवाशर्वौ मन्वे वां तस्य वित्तं ययोर्वामिदं प्रदिशि यद् विरोचते ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नौ मुञ्चतमंहसः ।।२१।।

[अथर्व संहिता, ४.२८.१-७; ऋषि-मृगार अथवा अथर्वा; देवता-भव, शर्व अथवा रुद्र; छन्दप्रथम मन्त्र - अतिजाग्रतगर्भा भुरिक्, शेष त्रिष्टुप्]

२१. (भव-शर्वौ) हे जगत् के उत्पत्ति और प्रलय करने वाले देवों! (वां मन्वे) मैं तुम दोनों का मनन अथवा ध्यान करता हूँ। (तस्य वित्तम्) उसे तुम दोनों जानते हो। (यत् इदं प्रदिशि विरोचते ययोः वाम्) दिशाओं में यह जो कुछ भी दीप्तमान् है, वह तुम दोनों का ही [प्रकाश] है। (अस्य द्विपदः यौ ईशाथे) तुम दोनों इस दो पैरों वाले मनुष्य-समुदाय के स्वामी हो, चतुष्पाद अर्थात् पशुओं के भी तुम्हीं स्वामी हो। तुम दोनों हमें पाप से मुक्त करो।

ययोरभ्यध्व उत यद् दूरे चिद् यौ विदिताविषुमृतामसिष्ठौ ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नौ मुञ्चतमंहसः ।।२२।।

(ययोः अभ्यध्वे उत् यत् दूरे) निकटस्थ और दूरस्थ सभी पदार्थ

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम्हारे नियन्त्रण में हैं। (यौ चित् इषुभृतां असिष्टौ विदितौ) निश्चय ही यह तथ्य सर्व विदित है कि शर-सन्धान करने वालों के तुम्हीं प्रेरक हो, शेष पूर्ववत्।

सहस्राक्षौ वृत्रहणा हुवेऽहं दूरेगव्यूती स्तुवन्नेम्युग्रौ ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ।।२३।।

(सहस्राक्षौ शत्रुहणौ) तुम दोनों सहस्रों नेत्रों वाले और शत्रुविनाशक हो। (दूरे गव्यूती उग्रौ) तुम दूर तक गमन करने वाले और उग्र हो। (अहं हुवे स्तुवन् ऐमि) मैं तुम्हें पुकारता हूँ और स्तुति करते हुए तुम्हारे समीप आ रहा हूँ। शेष पूर्ववत्।

यावारेभाथे बहु साकमग्रे प्रचेदस्राष्ट्र मभिभां जनेषु ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ।।२४।।

(अग्रे यौ साकं बहु आरेभाथे) प्रारम्भ में तुम दोनों ने एक साथ मिलकर बहुत-से कार्यों को आरम्भ किया। (जनेषु च अभिभाम् इत् प्र अस्त्राष्ट्रम्) जनसमुदाय के चतुर्दिक् विद्यमान समस्त तेजोराशि भी तुम्हीं ने उत्पन्न की है। द्विपादात्मक और चतुष्पादात्मक समस्त जगत् के स्वामी के रूप में ऐसे तुम दोनों हमें पाप से बचाओ।

ययोर्बधान्नापपद्यते कञ्चनान्तर्देवेषूत मानुषेषु ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ।।२५।।

मनुष्यों आर दवा के मध्य भी जिनके प्रहर से कोई नहीं बच पाता, ऐसे तुम दोनों हमें पाप से बचाओ।

यः कृत्याकृन्मूलकृद् यातुधानो नि तस्मिन् धत्तं वज्रमुग्रौ ।
यावस्येशाथे द्विपदो यौ चतुष्पदस्तौ नो मुञ्चतमंहसः ।।२६ ।।

कृत्या का प्रयोग करने वाला जो राक्षस हमारे [वंश के] मूल को काटने में लगा हो (तस्मिन् उग्रौ वजम् विधत्तम्) उस पर, हे उग्रवीरों! तुम अपने वज्र का प्रहार करो। शेष पूर्ववत्।

अधि नो ब्रूतं पृतनासूग्रौ सं वज्रेण सृजतं यः किमीदी ।
स्तौमि भवाशर्वौ नाथितो जोहवीमि तौ नो मुञ्चतमंहसः ।।२७।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे उग्रस्वभाव वालों! (नः पृतनासु अधिब्रूतम्) हमारी सेनाओं के मध्य में तुम सुरक्षा का आश्वासन दो, कुशल रणनीति पर प्रवचन दो अथवा उन्हें विजय का आशीर्वाद दो। (यः किमीदी वज्रेण सं सृजताम्) जो राक्षस है, उन पर वज्र का सन्धान करो। हे भव और शर्व! मैं तुम दोनों की स्तुति करता हूँ। तुम्हें अपना स्वामी समझकर [सहायता के लिए] पुकार रहा हूँ। तुम दोनों हमें पाप से बचाओ।

ब्रह्म॑ ज॒ज्ञा॒नं प्र॑थ॒मं पु॒रस्ता॒द् वि सी॑म॒तः सु॒रुचो॑ वे॒न आ॑वः ।
स बु॒ध्न्या॒ऽउ॑प॒मा अ॑स्य वि॒ष्ठाः स॒तश्च॒ योनि॒मस॑तश्च॒ विव॑ः ॥२८॥

[ऋ० सं० ५.६.१-१४; ऋषि-अथर्वा., देवता-सोम और रुद्र; छन्द-विविध]

पूर्व दिशा की सुदूर सीमा से सर्वप्रथम ब्रह्म का प्रतिभान करानेवाला सुदीप्तिसम्पन्न और देव काम्य सूर्य प्रकट हुआ। (स बुध्न्याः विस्थाः, उपमा) अन्तरिक्ष में विद्यमान वह [परब्रह्म के] उपमान-सा है। वह समस्त सत् और असत् पदार्थों के मूलकारण परमात्मा का ज्ञापक अथवा अनुमापक है।

अना॑प्ता॒ ये व॑ः प्रथ॒मा यानि॒ कर्मा॑णि चक्रि॒रे ।
वी॒रान् नो॒ अत्र॒ मा द॑भ॒न् तद् व॑ ए॒तत् पु॒रो द॑धे ॥२९॥

(अनाप्ताः) पुनः जन्म न ग्रहण करने वाले [हमारे-तुम्हारे] पूर्वजों ने पहले जिन कार्यों को किया है [हम भी उन्हीं कार्यों को करें।] (नः वीरान् अत्र मा दभन्) हमारे वीर पुत्रादि को [शत्रुगण] यहाँ आघात न पहुँचाने पायें (तत एतत् वः पुरः दधे) यह [दायित्त्व] मैं तुम्हारे सम्मुख रख रहा हूँ)

स॒हस्र॑धार ए॒व ते सम॑स्वरन् दि॒वो नाके॒ मधु॑जिह्वा अस॒श्चत॑ः ।
तस्य॒ स्पशो॒ न नि मि॑षन्ति॒ भूर्ण॑यः प॒देप॑दे पा॒शिन॑ः सन्ति॒ सेत॑वे॥३०॥

(दिवः सहस्रधारे नाके एव) द्युलोक की सहस्रों [मधुर] धाराओं से युक्त सुखमय स्थान पर ही (ते असश्चतः मधुजिह्वाः समस्वरन्) वे निश्चल शान्त स्वभाव वाले और मधुरभाषी जन एक स्वर से मिलकर कहते हैं कि (तस्य भूर्णयः स्पशः न निमिषान्ति) उस [परमात्मा] के गुप्तचर कभी पलक नहीं झपकाते। वे कदम-कदम पर [अपराधियों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

को] पकड़ने के लिए पाश लिये खड़े ही रहते हैं।

पर्यूषु प्रधन्वा वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तदर्यर्णवेनेयसे सनिस्रसो नामासि त्रयोदशो मास इन्द्रस्य गृहः॥३१॥

(वाजसातये वृत्राणि सक्षणिः) अन्नदान-हेतु तुम बाधक शत्रुओं को दूर भगाने वाले के रूप में (उपरि सु प्रधन्व) उन्हें सब ओर से भगा दो। (तत् द्विषः अर्णवेन अधि ईयसे) शत्रुओं पर तुम समुद्र की ओर से भी चढ़ाई करते हो। इस कारण तुम्हारा (सनिस्रसः नाम असि) 'सनिस्रस्' अर्थात् चढ़ाई करने में कुशल - यह नाम ठीक ही है। [मलमास अथवा अधिक मास के रूप में प्रसिद्ध] १३वाँ मास [वास्तव में] इन्द्र का आवास है।

न्वे ३ तेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमा रुद्राविह सु मृडतं नः ॥३२॥

(नु एतेन असौ अरात्सीः) निश्चय ही, इस विधि से तुमने सफलता प्राप्त की है। (तिग्मायुधौ तिग्महेती) तीक्ष्ण शस्त्र और तीक्ष्ण आयुधवाले तथा सेवा करने योग्य सोम और रुद्र यहाँ हमें सुखी करें।

अवैतेनारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः ॥३३॥

(एतेन असौ अव अरात्सीः) इसी तरह तुमने यह छोटी सफलता भी पाई है। शेष पूर्ववत्।

अपैते नारात्सीरसौ स्वाहा ।
तिग्मायुधौ तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृडतं नः ॥३४॥

(एतेन असौ अप अरात्सी;) इसी प्रकार तुमने यह साधारण सिद्धि प्राप्त की है। शेष पूर्ववत्।

मुमुक्तमस्मान् दुरितादवद्याज्जुषेथां यज्ञममृतमस्मासुधत्तम् ॥३५॥

हे रुद्र-सोम! हमें निन्दा योग्य पाप से मुक्त करो। हमारे द्वारा [अनुष्ठित] यज्ञ का सेवन करो। हममें अमृत का आधान करो।

चक्षुषो हेते मनसो हेते ब्रह्मणो हेते तपसश्च हेते ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

मेन्या मेनिरस्यमेनयस्ते सन्तु ये ३ स्मा अभ्यधायन्ति ।।३६।।

मन, (ब्रह्मणः) ज्ञान और तपस्या - इन सबके रूप में विद्यमान हे (हेते) आयुध [गण]! (मेन्याः मेनिः असि) तुम शस्त्र के भी शस्त्र हो। - अर्थात् नेत्र से लेकर तपस् पर्यन्त सभी तत्त्व सर्वाधिक प्रभावशाली शस्त्र की भूमिका का निर्वाह करते हैं। (ये अस्मान् अभ्यधायन्ति) जो हमें उत्पीड़ित करते रहते हैं, (ते अमेनयः सन्तु) वे [उपर्युक्त शस्त्रों के प्रभाव से निः शस्त्र हो जाएँ - अर्थात् हमारे सन्दर्भ में उनके शस्त्र निष्प्रभावी रहें।]

यो ३ स्मांश्चक्षुषा मनसा चित्त्याकूत्या च यो अघायुरभिदासात् ।
त्वं तानग्ने मेन्यामेनीन् कृणु स्वाहा । ।।३७।।

जो (अघायुः) पापी व्यक्ति हमें चक्षु, मन, चित्त और आकूति (संकल्प) से (अभिदासात्) अपना दास बनाने का इच्छुक है, हे अग्निदेव! तुम उन्हें (मेन्या) अपने शस्त्र से (अमेनीन्) शस्त्ररहित (कृणु) कर दो। 'स्वाहा' [शब्द के साथ यह हवि तुम्हें समर्पित है]।

इन्द्रस्य गृहोऽसि । तं त्वा प्रपद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः सह यन्मेऽति तेन ।।३८।।

तुम इन्द्र [शक्ति] के निवास हो। मैं तुम्हारे पास पहुँच रहा हूँ। मैं सर्वत्र गमन करनेवाला, सब मनुष्यों से युक्त, सर्वात्मा, सर्वशरीर (अर्थात् सबकी शारीरिक शक्तियों से युक्त) और [इन सबके अतिरिक्त] जो कुछ भी मेरा है, उस सबके साथ मैं तुममें प्रवेश कर रहा हूँ।

इन्द्रस्य शर्मासि । तं त्वा प्र पद्ये तं त्वा प्र विशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः सहः यन्मेऽति तेन ।।३९।।

इन्द्र के [भी] तुम कल्याण स्वरूप हो। शेष पूर्ववत्।

इन्द्रस्य वर्मासि । तं त्वा प्रपद्ये तं त्वा प्रविशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः सहः यन्मेऽस्ति तेन ।।४०।।

तुम इन्द्र के कवच हो। शेष पूर्ववत्

इन्द्रस्य वरूथमसि । तं त्वा प्रपद्ये तं त्वा प्रविशामि सर्वगुः सर्वपूरुषः सर्वात्मा सर्वतनूः सहः यन्मेऽति तेन ५/६/१-१४ अथर्व. ।।४१।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तुम इन्द्र के (वरूकम - असि) संरक्षक हो। शेष पूर्ववत्

(७)

ग्रीष्मो हैमन्तः शिशिरो वसन्तः शरद् वर्षाः स्विते नो दधात ।
आ नो गोपु भजता प्रजायां निवात इद् वः शरणे स्याम ।।४२।।

[अथर्व संहिता ६.५५. २-३; ऋषि-ब्रह्मा; देवता-रुद्र]

ग्रीष्म, हेमन्त, शिशिर, वसन्त, शरद् और वर्षा ऋतु हमें सुस्थिति में धारण करें। गायों और सन्तानों का हमें सुख प्राप्त हो। तुम्हारी छत्रछाया में, हम ऐसे घर में रहें, जिसमें वायु प्रभृति अर्थात् आँधी इत्यादि से कष्ट न हो।

इदावत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम ।।४३।।

इदावत्सर, परिवत्सर और संवत्सर - नाम से क्रमशः आने वाले प्रथम, द्वितीय और तृतीय - इन तीन वर्षों के लिए (बृहत् नमः) बहुत अन्न (कृणुत) उत्पन्न करो। हम उन यजनीय देवों की सुमति अर्थात् सद्भावना, कल्याण भावना और सौमनस्यपूर्ण सुख में रहें।

(८)

अनडुद्भ्यस्त्वं प्रथमं धेनुभ्यस्त्व मरुन्धति ।
अधेनवे वयसे शर्म यच्छ चतुष्पदे ।।४४।।

[अथर्व संहिता ६.५९.१-३; ऋषि-अथर्वा; देवता-रुद्र]

४४. हे 'अरुन्धति' (सहदेवी) संज्ञक औषधे! तुम सर्वप्रथम बैलों का क़ल्याण करो। [तदनन्तर] गायों, गायों से भिन्न अन्य चौपाये पशुओं तथा पक्षियों का कल्याण करो।

विशेष - 'अरुन्धती' औषधि विशेष है, जिसकी जानकारी सुयोग्य आयुर्वेदज्ञ से प्राप्त करनी चाहिए। सम्भवतः यह पशुओं की चिकित्सा में व्यवहृत होने वाली औषधिक है।

शर्म यच्छत्वोषधिः सह देवीररुन्धती ।
करत् पयस्वन्तं गोष्ठमयक्ष्माँ उत पूरुषान् ।।४५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(अरुन्धती) रोगनिवारिणी सहदेवी नाम्नी ओषधि हमारा कल्याण करे। [उसके प्रभाव से] हमारी (गोष्ठम्) गोशाला की गायें अधिकाधिक दूध दें तथा हमारे कुटुम्ब के सभी लोग यक्ष्मादि रोगों से मुक्त रहें।

विश्वरूपां सुभगामच्छावदामि जीवलाम् ।

सा नो रुद्रस्यास्तां हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः ।।४६।।

अनेक रूप-रंगों वाली, सौभाग्य प्रदात्री, 'जीवला' नाम्नी जीवनदायिनी औषध से हम रोग-निवारण हेतु निवेदन करते हैं। (नाराज) रुद्र की हेति (आयुध) से उत्पन्न रोगों को वह हम से और हमारी गायों से दूर हटा दे।

विशेष - 'जीवला' भी विशेष औषध के रूप में प्रयुक्त होती रही है - वैद्यों को इसकी पहचान का प्रयत्न करना चाहिए।

(९)

मह्यमापो मधुमदेरयन्तां मह्यं सूरो अभरज्ज्योतिषे कम् ।

मह्यं देवा उत विश्वे तपोजा मह्यं देवः सविता व्यचो धात् ।।४७।।

[अथर्व संहिता ६.६१.१-३; देवता - रुद्र]

(आपः मह्यं मधुमत् आ ईरयन्ताम) मेरे लिए जलराशि अपनी मिठास प्रदान करे। (सूरः मह्यं ज्योतिषे कम् अभरत्) मेरे सुख के लिए सूर्य ने अपनी किरणें [चारों ओर] बिखेर दी हैं। विश्वेदेव, समस्त तपस्वी ऋषि-मुनि और सविता देव (मह्यं व्यचः धात्) मेरे लिए उदारता को धारण करें।

अहं विवेच पृथिवीमुत द्यामहमृतूँरजनयं सप्त साकम् ।

अहं सत्यमनृतं यद् वदाम्यहं दैवीं परि वाचं विशश्च ।।४८।।

[ऋषि का कथन है -] मैंने पृथिवी और द्युलोक को (विवेच) अलग-अलग किया है। मैंने ही सात ऋतुओं को एक-एक के क्रम से बनाया है। सांसारिक जनों में जो भी सत्य और असत्य विद्यमान है, वह सब मैं ही बोलता हूँ। [इसके साथ ही] मेरे माध्यम से [कभी-कभी] दैवी वाणी का भी आविर्भाव होता है।

अहं जजान पृथिवीमुत द्यामहमृतूँरजनयं सप्त सिन्धून् ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अहं सत्यमनृतं यद् वदामि यो अग्नीषोमावजुषे सखाया ।।४९।।

मैंने ही पृथिवी और द्युलोक को उत्पन्न किया है। मैंने ही ऋतुओं तथा सात सागरों अथवा नदियों को उत्पन्न किया है। जो भी सच और झूठ है, वह सब मैं ही बोलता हूँ। अग्नि और सोम को मैत्रीभाव से मैं ही एक साथ मिलाता हूँ।

विशेष - उपर्युक्त तीनों मन्त्रों में, आत्म-साक्षात्कार अथवा रुद्राविष्ट अवस्था में ऋषि का कथन है। सच और झूठ दोनों की स्वीकृति ऋषि के अन्तःकरण की निर्मलता की द्योतक है।

(१०)

वैश्वानरो रश्मिभिर्नः पुनातु वातः प्राणेनैषिरो नमोभिः ।
द्यावापृथिवी पयसा पयस्वती ऋतावरी यज्ञिये नः पुनीताम् ।।५०।।

[अथर्व संहिता ६.६२; ऋषि-अथर्वा; देवता रुद्र; छन्द-त्रिष्टुप्]

५०. [समस्त मानवों में विद्यमान] वैश्वानर अग्नि हमें अपनी अर्चियों अथवा ज्वालाओं से पवित्र करे। अन्तरिक्ष भर में संचरण करने वाली वायु अपनी प्राणशक्ति [का हममें संचार करे]। जलराशि से सरस, निरन्तर गतिशील और यज्ञानुष्ठानके लिए उपयुक्त पृथिवी और द्युलोक हमें पावनता प्रदान करें।

वैश्वानरीं सूनृतामा रभध्वं यस्या आशास्तन्वो वीतपृष्ठाः ।
तया गृणन्तः सधमादेषु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।५१।।

[हे कवियों! गायकों अथवा ऋत्विजों! अब] परमात्मा की सत्य और माधुर्य समन्वित उस वाङ्मयी स्तुति का वाचन प्रारम्भ करो, जिसका शरीर पृष्ठभाग रहित दिशाएँ हैं। उससे स्तुति करते हुए हम (सध-मादेषु) उत्सवों के अवसरोंपर, जब हम एकसाथ मिलकर आनन्दित होते हैं, (रयीणाम् पतयः स्याम) विविध प्रकार की सम्पदा के स्वामी बनें।

वैश्वानरीं वर्चस आ रभध्वं शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।
इहेडया सधमादं मदन्तो ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तम्

(७/७/१-३ अथर्व.)

[हे सुकवियों !] ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति के लिए [तुम लोग] शुद्ध,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पवित्र और पावनताकारी होकर वैश्वानर (परमात्मा) की स्तुति का वाचन आरम्भ करो। इस संसार में हम (इडया सधमादं मदन्तः) अन्नादि की उपलब्धि और अपनी वाणी से एक साथ आनन्द की अनुभूति करते हुए (ज्याक्) सुदीर्घ काल तक (उच्चरन्तं सूर्यं पश्येम) उदय होते हुए सूर्य के दर्शन करें।

(११)

यांते रुद्र इषुमास्यदङ्गेभ्यो हृदयायच ।
इदं तामद्य त्वद् वयं विषूचीं वि वृहामसि ।।५३।।

[अथर्व संहिता ६.९०; ऋषि-अथर्वा; देवता-रुद्र; छन्द १-२ अनुष्टुप्]
३ - आर्षी भुरिग् उष्णिक्]

[हे पीड़ित जनों!] रुद्र ने जिस बाण को तुम्हारे हृदय तथा अन्य अंगों को लक्षित कर फेंका था, उसे आज तुम्हारे शरीर से निकालकर बहुत दूर [फेक रहे हैं]।

यास्ते शतं धमनयोऽङ्गान्यनु विष्ठिताः ।
तासां ते सर्वासां वयं निर्विषाणि ह्वयामसि ।।५४।।

[हे व्याधिग्रस्त जनों!] तुम्हारे शरीर के विभिन्न अंगों में जो सैकड़ों धमनियाँ फैली हुइ हैं, उन सबसे हम विषों अथवा हानिकारक तत्त्वों को निकाल रहे हैं।

नमस्ते रुद्रास्यते नमः प्रतिहितायै ।
नमो विसृज्यमानायै नमो निपतितायै ।।५५।।

हे रुद्र! तुम्हारे फेंके गये बाण को नमन। उसे फेंकने वाले तुम्हें नमन। छोड़े जा रहे बाण को नमन और लक्ष्य पर लगे बाण को [भी] नमन।

(१२)

यमो मृत्युरघमारो निर्ऋथो बभ्रुः शर्वोऽस्ता नीलशिखण्डः ।
देवजनाः सेनयोत्तस्थिवांसस्ते अस्माकं परि वृञ्जन्तु वीरान् ।।५६।।

[अथर्वसंहिता, ६.९३; ऋषि-शन्ताति; देवता-रुद्र; छन्द-त्रिष्टुप्]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

यमराज, मृत्यु, (अघमारः) पाप के रूप में मारनेवाला, (निर्ऋथः) उत्पीडक, (बभ्रु) पोषक, (शर्व) हिंसक, (अस्ता) अस्त्र-प्रयोक्ता, (नीलशिखण्डः) नीले ध्वज से युक्त, सभी देवगण तथा (सेनया उत्तस्थिवांसः) सेना लेकर चढ़ाई करने वाले ये सभी (अस्माकं वीरान् परिवृञ्जन्तु) हमारे वीर जनों को [विनाश से] बचाये रखें।

मनसा होमैर्हरसा घृतेन शर्वायास्त्र उत राज्ञे भवाय।

नमस्येभ्यो नम एभ्यः कृणोम्यन्यत्रास्मदघविषा नयन्तु ।।५७।।

मैं मन से, घी से, होभों से और (हरसा) शक्ति से (अस्त्रे शर्वाय) अस्त्र चलाने वाले हिंसक के लिए, (उत भवाय राज्ञे) और उन्नति की दिशा में अग्रसर राजा के लिए तथा अन्य सभी नमस्कारयोग्य व्यक्तियों को नमन करता हूँ। (अघविषः अस्मद् अन्यत्र नयन्तु)- ये सभी पापरूपी विष से परिपूर्ण [हानिकारक शक्तियों] से हमें अन्य दूरस्थ स्थान पर ले जायें।

त्रायध्वं नो अघविषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम ।।५८।।

हे विश्वदेवों! हे सर्वज्ञ मरुद्गण! अग्नि और सोम तथा पवित्र बलवाले वरुण - सभी पापियों के आघातों से हमें बचायें। हम सदैव वायु और पर्जन्य के [द्वारा प्रदत्त] सद्बुद्धि [के प्रभाव में] रहकर [अपना कार्य-कलाप करें]।

(१३)

अथर्व संहिता ७.८६; ऋषि-अथर्वाः देवता रुद्र; छन्दजगती

यो अग्नौ रुद्रो यो अप्स्वं१न्तर्य ओषधीर्वीरुध आविवेश ।

य इमा विश्वा भुवनानि चाक्लृपे तस्मै रुद्राय नमो अस्त्वग्नये।।५९।।

– जो रुद्र अग्नि में स्थित है, जो जलराशि में विद्यमान है, तथा जो औषधियों एवं वृक्ष-लताओं में प्रविष्ट हो गया है, जिसने इन सभी भुवनों का निर्माण किया है, उस रुद्र के लिए नमन। अग्नि के लिए नमन।

(१४)

[अथर्व संहिता ११;२; ऋषि-अथर्वा; देवता-रुद्र]

भवाशर्वौ मृडतं माभि यातं भूतपती पशुपती नमो वाम् ।

प्रतिहितामायतां मा वि स्त्राष्टं मा नो हिंसिष्टं द्विपदो मा चतुष्पदः ।।६०।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे भव (उत्पादक) और शर्व (संहारक)! आप दोनों (मृडतम्) हमें सुखी करें। (मा अभियातम्) हम पर हमला न करें। आप दोनों भूतों और पशुओं के पालक हैं - आप को नमन। (प्रतिहिताम् आयताम् मा वि स्राष्टम्) धनुषपर रखे और खींचे गये बाण को हम पर न छोड़ें। हमारे दोपायों और चौपायों की हिंसा न करें।

शुनें क्रोष्ट्रे मा शरींराणि कर्तमलिक्लवेभ्यो गृध्रेभ्यो ये च कृष्णा अविष्यवः ।
मक्षिकास्ते पशुपते वयांसि ते विघसे मा विंदन्त ।।६१।।

हे पशुपतिनाथ! कुत्तों और गीदड़ों तथा (अलिक्लवेभ्यः) क्रूर शब्द करने वाले गीधों के लिए हमारे शरीरों को मत काटो। तुम्हारे (कृष्णा अविष्यवः) काले और हिंसक कृमि, (मक्षिकाः) मक्खियाँ तथा (वयांसि) कौवे (विघसे मा विदन्त) खाने के लिए हमारे उन कटे शरीरों को न प्राप्त करें। [अभिप्राय यह कि रुद्र की कृपा से न तो हमारे शरीरों को चोट-चपेट पहुँचे और न पशु-पक्षियों के वे आहार बनें]।

क्रन्दाय ते प्राणाय याश्चते भव रोपयः ।
नमस्ते रुद्र कृण्मः सहस्राक्षायामर्त्य ।।६२।।

हे (अमर्त्य) अमर रुद्रदेव! हे भव! तुम्हारे शब्द स्वरूप प्राण के लिए नमन। हे सहस्राक्ष रुद्र! तुम्हें नमन! (या ते रोपयः) तुम्हारी जो शक्तियाँ हैं [उनका प्रयोग तुम हमारे मंगल के लिए करो]।

पुरस्तात् ते नमः कृण्म उत्तरादधरादुत ।
अभीवर्गाद् दिवस्पर्यन्तरिक्षाय ते नमः ।।६३।।

[हे रुद्र!] हम तुम्हें सामने से, ऊपर से, नीचे से, सब ओर से नमस्कार करते हैं। द्युलोक और अन्तरिक्ष में तुम्हारी जो स्थिति है, उसे भी नमन।

मुखाय ते पशुपते यानि चक्षूंषि ते भव ।
त्वचे रूपाय संदृशे प्रतीचीनाय ते नमः ।।६४।।

हे पशुपतिनाथ! हे भव! तुम्हारे मुख को नमन। तुम्हारी जो आँखें हैं, उन्हें नमस्कार। तुम्हारी त्वचा, सुदर्शन स्वरूप और पृष्ठ भाग - सबको

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नमस्कार।

अङ्गेभ्यस्त उदराय जिह्वायां आस्यांऽयते ।
दद्भ्यो गन्धाय ते नमः ।।६५।।

हे रुद्र! तुम्हारे अंगों, उदर, जिह्वा और मुख के लिए नमस्कार तुम्हारें दाँतों और [शरीर से निकलने वाली] गन्ध को नमस्कार।

अस्त्रा नीलशिखण्डेन सहस्राक्षेणं वाजिना ।
रुद्रेणार्धक घातिना तेन मा समरामहि ।।६५।।

(नीलशिखण्डेन) नीली शिखावाले, (वाजिना) अन्नयुक्त अथवा शक्तिशाली, सहस्त्र नेत्रों वाले, (अर्धकधातिना) समाज के आधे लोगों अर्थात् पापियों के संहारक रुद्र से (मा समरामहि) हम कभी विरोध न करें।

सनोंभवः परिवृणक्तुविश्वतआपइवाग्निः परिवृणक्तुनोभवः ।
मानोऽभि मांस्तु नमो अस्त्वस्मै ।।६७।।

सृष्टि कर्ता रुद्रदेव हमें सभी ओर से [आपत्तियों-विपत्तियों से] बचाते रहें। वे हमें उस प्रकार बचायें, जैसे (आपः इव) आप्त अर्थात् विश्वस्त जन [अग्निहोत्र की] अग्नि की सुरक्षा करते हैं। (नः मा अभि मांस्त) वह हमारा विनाश न होने दें। उन्हें नमस्कार।

चतुर्नमो अष्टकृत्वो भवाय दश कृत्वः पशुपते नमस्ते ।
तवेमे पञ्च पशवो विभक्ता गावो अश्वाः पुरुषा अजावयः ।।६८।।

हे पशुपतिनाथ! [तुम्हारे] भव अर्थात् सृष्टिकर्ता रूप के लिए चार बार तथा आठ बार नमस्कार। तुम्हारे लिए दस बार नमस्कार। गायें - घोड़े, पुरुष, बकरियाँ और भेड़ें - इन पाँच प्रकार के पशुओं को हमने तुम्हारी [सेवा] के लिए पाल रखा है।

तव चतस्रः प्रदिशस्तव द्यौस्तव पृथिवी तवेदमुग्रोर्व१न्तरिक्षम् ।
तवेदं सर्वमात्मन्वद् यत् प्राणत् पृथिवीमनु ।।६९।।

[हे रुद्रदेव! पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण - ये] चारों दिशाएँ तुम्हारी हैं। द्युलोक और पृथिवी लोक [भी] तुम्हारें हैं। यह उग्र और

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विस्तृत अन्तरिक्ष [भी तुम्हारा ही] है। इस पृथिवी पर जितने भी चेतनायुक्त जीव हैं, [जो क्रियाशील रूप में अपने-अपने कार्यों में संलग्न हैं] वे सब तुम्हारे ही तो हैं।

उरुः कोशो वसुधानस्तवायं यस्मिन्निमा विश्वा भुवनान्यन्तः ।
सनोमृडपशुपतेनमस्तेपरः क्रोष्टारोअभिभाःश्वानःपरोयन्त्वघरुदोविकेश्यः ।।७०।।

जिसके भीतर ये सभी भुवन निहित हैं, वह वसुओं का निवास स्थान अथवा समृद्धि का भण्डार यह विश्वरूपी विशाल कोश तुम्हारा ही है। हे पशुपतिनाथ! (हे पशुपालक!) - ऐसे तुम हमें सुखी करो, तुम्हें नमस्कार। (क्रोष्टारः अभिभाः श्वानः परः) सियार, गीदड़ और कुत्ते - ये सब हमसे दूर रहें। (अघरुद्रः विकेश्यः) दहाड़ मारकर भयानक रूप में रोने वाली और बाल खोलकर चिल्लानेवाली स्त्रियाँ भी (परो यन्तु) हम से दूर रहें [-अर्थात् शोक का कोई प्रसंग हमारे घर-परिवार में न घटे।]

धनुर्बिभर्षि हरितं हिरण्ययं सहस्रघ्नि शतवधं शिखण्डिनम् ।
रुद्रस्येषुश्चरति देवहेतिस्तस्यै नमो यतमस्यां दिशी३तः ।।७१।।

[हे रुद्र!] तुम (शिखण्डिनम्) पताकायुक्त, (सहस्रघ्नि) हजारों का नाश करने वाले, (शतवधम्) सैकड़ों का संहार करने वाले, (हिरण्ययम्) स्वर्णजटित, (हरितम्) और हरे रंग [अर्थात् हरे-हरे बाँस के बने हुए] धनुष को धारण करते हो। रुद्र का [जो] बाण चल रहा है - [वह तो] देवों का आयुध है। वह यहाँ से जिस दिशा में बढ़ रहा है, उसे नमस्कार है।

यो३भियातो निलयते त्वां रुद्र निचिकीर्षति ।
पश्चादनुप्रयुङ्क्षे तं विद्धस्य पदनीरिव ।।७२।।

हे रुद्र! (यः अभियातः निलयते) हमला होने पर जो छिप जाता है, (त्वां निचिकीर्षति) और तुम्हें नीचा दिखाना चाहता है अथवा नीचे करना चाहता है, (विद्धस्य पदनीः इव) किसी घायल पशु की पदचाप के समान (तं पश्चात् अनु प्रयुंक्षे) तुम उसका पीछा करते हुए उसका प्रतिकार करते [रहते] हो।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

भवारुद्रौ सयुजा संविदानावुभावुग्रौ चरतो वीर्याय ।
ताभ्यां नमो यतमस्यां दिशीइतः ।।७३।।

भव और रुद्र [– क्रमशः सृष्टि और संहार के प्रतिनिधि ये दोनों देव] (सयुजा संविदानौ) परस्पर मिलकर रहते हैं और अत्यन्त संवेदनशील हैं। (उभौ उग्रौ वीर्याय चरतः) ये दोनों ही उग्रस्वभाव के देव पराक्रम करते हुए घूमते रहते हैं। वे यहाँ से जिस दिशा में भी हों, वहाँ उन्हें हम नमस्कार करते हैं।

नमस्तेऽस्त्वायते नमो अस्तु परायते ।
नमस्ते रुद्र तिष्ठत आसीनायोत ते नमः ।।७४।।

आनेवाले, दूरे जाने वाले, ठहरने वाले और विराजमान रहने वाले हे रुद्र! तुम्हें नमस्कार।

नमः सायं नमः प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा ।
भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नमः ।।७५।।

सायं – प्रातः, रात्रि के समय और दिन के समय तुम्हें नमस्कार। भव और शर्व इन दोनों को मैंने नमस्कार कर लिया है।

सहस्राक्षमतिपश्यं पुरस्ताद् रुद्रमस्यन्तं बहुधा विपश्चितम् ।
मोपाराम जिह्वयेयमानम् ।।७६।।

सहस्रनेत्रों वाले, ज्ञान सम्पन्न, बहुविध अस्त्र-प्रहार करते हुए रुद्र को [मैंने] (पुरस्तात् अति पश्यम्) सामने से भलीभाँति देखा है। (ईयमानं जिह्वया मा उपाराम) निरन्तर चलते हुए उन देव के प्रति हम अपनी जिह्वा से कोई आघात न पहुँचायें [–तात्पर्य यह कि हम अपनी वाणी से उनके विषय में कष्टप्रद वचन न बोलें।]

श्यावाश्वं कृष्णमसितं मृणन्तं भीमं रथं केशिनः पादयन्तम् ।
पूर्वे प्रतीमो नमो अस्त्वस्मै ।।७७।।

हम उन रुद्र के पास (पूर्वे प्रतीमः) सर्वप्रथम पहुँचते हैं, जो श्यामवर्णीय अश्वों से युक्त, कृष्णवर्णीय, बन्धनरहित और [अपने आराधकों के लिए] सुखप्रद हैं। (भीमं केशिनः रथं पादयन्तम्) केशी

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नामक दैत्य के भयानक रथ को वे ठोकरें मारकर [चूर-चूर कर देने वाले] हैं। उनके लिए नमस्कार।

मानोऽभि स्रांमत्यंदेवहेतिं मा नंः क्रुधः पशुपते नमस्ते ।

अन्यत्रास्मद् दिव्यां शाखां वि धूंनु ।।७८।।

हे पशुपते! (मत्यं देवहेतिं नः मा अभिस्राः) जानबूझकर फेंका गया देवों का आयुध हमारी ओर न आये। (नः मा क्रुधः) तुम हम पर क्रोध मत करो। (ते नमः) तुम्हें नमस्कार। (अस्मत् अन्यत् दिव्यां शाखाम् विधूनु) दिव्यवृक्ष की इस [विशाल] शाखा को तुम हमारी पहुँच से दूर स्थान पर हिलाओ।

मानों हिंसीरधिं नो ब्रूहि परिं णो वृङ्धि मा क्रुंधः ।

मा त्वया समंरामहि ।।७९।।

[हे रुद्र!] हमारी हिंसा न करो, हमें आश्वासन एवं आशीर्वाद दो। (नः परिवृङ्ग्धि) हमारी रक्षा करो। हम पर क्रोध न करो। (त्वयो मा समरामहि) तुम्हारे साथ हम कभी विरोध न करें।

मा नो गोषु पुरुंषेषु मा गृंधो नो अजाविषुं

अन्यत्रोंग्र वि वंर्तय पियांरूणां प्रजां जंहि ।।८०।।

हे उग्र प्रकृति वाले रुद्र! हमारी गायों, मनुष्यों, भेड़ों और बकरियों के विषय में [तुम्हारे मन में कभी] लोभ-लालसा [उत्पन्न] न हो। (अन्यत्र विवर्तय) [हिंसासम्बन्धी अपने कार्यकलापों को तुम] दूसरे स्थान पर चलाओ। (पियारूणां प्रजां जहि) तुम हिंसकों की सन्तानों का विनाश करो।

विशेष - 'पियारु' शब्द का अर्थ अस्पष्ट है। प्रतीत होता है कि यह कोई लूट-पाट करने वालों तथा हत्या-हिंसा करने वालों की कोई जमात थी, जो आनुवंशिक रूप से अपराधों में संलग्न रहते थे।

यस्यं तक्मा कासिका हेतिरेकमश्वंस्येव वृषंणः क्रन्द एतिं ।

अभिपूर्वं निर्णयंते नमों अस्त्वस्मै ।।८१।।

उस रुद्र के लिए नमस्कार, जिसके (हेति) हथियार हैं (तक्मा) क्षयरोगजन्य ज्वर और (कासिका) खाँसी, जिनकी आवाज [किसी भी]

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एक व्यक्ति पर प्रहार के समय बलवान अश्व की हिनहिनाहट के समान होती है। और जो (अभिपूर्व निर्णयते) जो [समय से] पहले [ही किसी विषय में] निर्णय कर लेता है।

योऽन्तरिक्षे तिष्ठति विष्टभितोऽयज्वनः प्रमृणन् देवपीयून् ।
तस्मै नमो दशभिः शक्करीभिः ।।८२।।

जो अन्तरिक्ष में [सामान्यतः] शान्त अवस्था में स्थिर रहता है, यज्ञ न करने वालों और देवविरोधियों को मसल डालता है, उसे हम दस 'शक्वरी' अर्थात् शक्तिशाली मन्त्रों से नमस्कार करते हैं।

तुभ्यमारण्याः पशवो मृगा वने हिता हंसाः सुपर्णाःशकुनावयांसि ।
तव यक्षं पशुपते अप्स्वऽन्तस्तुभ्यं क्षरन्ति दिव्या आपो वृधे ।।८३।।

हे पशुपते! अरण्य में रहनेवाले हिरन इत्यादि पशु तथा हंस, गरुड, शकुनि प्रभृति पक्षी [ये सब तुम्हारे अनुग्रह से ही पल रहे] हैं और ये सब तुम्हारे ही निमित्त हैं। तुम्हारा पूज्य हृदय तो आप्त अर्थात् विश्वस्त भक्तों में ही निहित रहता है। तुम्हारे संवर्धन के लिए आकाश से दिव्य जलराशि की वर्षा होती है।

शिंशुमारा अजगराः पुरीकया जपा मत्स्या रजसा येभ्यो अस्यसि ।
न ते दूरं न परिष्ठास्ति ते भव सद्यः सर्वान् परि-
पश्यसि भूमिं पूर्वस्माद्धंस्युत्तरस्मिन्त्समुद्रे ।।८४।।

[हे पशुपालक!] (शिंशुमाराः अजगराः पुरीकयाः) घड़ियाल, अजगर और कछुए, (जषाः मत्स्याः) जल जन्तु और मछलियाँ, (ये भ्यः रजसा अस्यसि) जिनके लिए तुम पृथ्वी से उत्पन्न चारा फेंकते हो, (ते दूरं न परिष्ठा अस्ति) इनमें से कोई न तो तुमसे दूर है और ना ही अलग है, (सर्वान् सद्यः परिपव्यसि) तुम सभी को तत्काल [और एक साथ] देख लेते हो। पूर्व से उत्तर समुद्र तक व्याप्तभूमि पर तुम [निरन्तर] चलते रहते हो।

विशेष - कहा जाता है कि उत्तर समुद्र पहले वहाँ पर था, जहाँ आज हिमालय पर्वत है।

मानो रुद्र तक्मना मना विषेण मा नः सं स्रा दिव्येनाग्निना ।
अन्यत्रास्मद् विद्युतं पातयैताम् ।।८५।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे रुद्र! (तक्मना नः मा सस्राः) हमें ज्वर से न पीड़ित करना। (विषेण मा) हमें विष बाधा न हो। (दिव्येन अग्निना मा) हमें दिव्य अग्नि अर्थात् आकाशीय विद्युत् से कष्ट न हो। (अस्माद् अन्यत्र एताम् विद्युतं पातय) इसबिजली को तुम हमसे दूर किसी अन्य स्थान पर गिराओ।

भवो दिवो भव ईशे पृथिव्या भव आ पप्र उर्व१न्तरिक्षम् ।
तस्मै नमो यतमस्यां दिशी३तः ।।८६।।

भव द्युलोक के स्वामी हैं। भव पृथिवी के [भी] स्वामी हैं। भव विशाल अन्तरिक्ष में सर्वत्र व्याप्त हैं। यहाँ से वे जिस दिशा में [भी] गये हों, वहीं उनके लिए हमारा नमस्कार है।

भवं राजन् यजमानाय मृड पशूनां हि पशुपतिर्बभूथ ।
यः श्रद्दधाति सन्ति देवा इति चतुष्पदे द्विपदेऽस्य मृड ।।८७।।

हे राजाभव! तुम यजमान को सुखी करो। पशुओं के तो तुम स्वामी और पालक हो ही। जो इस बात पर विश्वास रखता है कि [इस जगत् में] देवों का अस्तित्व है, उसके चौपायों और दोपायों अर्थात् मनुष्यों को तुम सुखी रखो।

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा नो वहन्तमुत मा नो वक्ष्यतः ।
मा नो हिंसीः पितरं मातरं च स्वां तन्वं रुद्र मारीरिषो नः ।।८८।।

[हमारे परिवार के] बड़े और बुजुर्ग व्यक्तियों की हिंसा तुम मत करो। हमारे बाल-बच्चों को भी आघात न पहुँचाओ। हमारे माता-पिता की भी तुम हिंसा मत करना। हे रुद्रदेव! तुम हमारे शरीरों को दुःखी न करना।

रुद्रस्यैलबकारेभ्योऽसंसूक्तगिलेभ्यः ।
इदं महास्येभ्यः श्वभ्यो अकरं नमः ।।८९।।

रुद्र के उन कुत्तों को मैं नमस्कार करता हूँ जो (ऐल बकारेभ्यः) भयानक शब्द करने वाले (असंसूक्तगिलेभ्यः) अस्पष्ट रूप से गुर्रानेवाले तथा (महा अस्येभ्यः) बड़े-बड़े मुखवाले हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नम॑स्ते घोषिणी॑भ्यो नम॑स्ते के॒शिनी॑भ्य॑ः ।
नमो॒ नम॑स्कृताभ्यो॒ नम॑ः संभुञ्ज॒तीभ्य॑ः ।
नम॑स्ते देव॒ सेना॑भ्यः स्व॒स्ति नो॒ अभ॑यं च नः ।।९०।।

हे देव! तुम्हारी उन सेनाओं के लिए नमस्कार, जो प्रचण्ड घोष करने वाली [बड़े-बड़े] केश रखनेवाली, [बार-बार] जिन्हें नमस्कार किया जाता है और जो खाद्यान्नों से परिपूर्ण हैं। (नः स्वस्ति अभयं च) हमारा कल्याण हो और हमें निर्भयता प्राप्त हो।

(१५)

तस्मै॒ प्राच्या॑ दि॒शः ।। ।।९१।।
वा॒स॒न्तौ मासौ॑ गो॒प्तारा॒वकु॑र्वन् बृ॒हच्च॑ रथं॒त॒रं चा॑नुष्ठा॒तारौ॑।। ।।९२।।
वा॒स॒न्तावे॑नं॒ मासौ॒ प्राच्या॑ दि॒शो गौ॑पायतो बृ॒हच्च॑ रथं॒त॒रं चानु॑ तिष्ठतो॒ य ए॒वं वेद॑।। ।।९३।।

[अथर्वसंहिता १५.४; ऋषि-अथर्वा; ये १५ मन्त्र अथर्व वेद के व्रात्य-प्रकरण के अंश हैं। ताण्ड्य ब्राह्मण में व्रात्य का जो विवरण मिलता है, तदनुसार व्रात्यगण संस्काररहित व्यक्ति थे - स्वेच्छाचरण करने वाले। इसीलिए उस ब्राह्मण ग्रन्थ में उनकी शुद्धि हेतु अनुष्ठानों की योजना की गई है, लेकिन अथर्ववेदीय व्रात्य आध्यात्मिक दृष्टि से उत्कृष्ट है। वह आत्मा और परमात्मा के स्तर को प्राप्त है। उसके द्वारा प्रेरित प्रजापति ही अपनी तपस्या के बल से महान् और महादेव बन गया। वह विलक्षण, ज्येष्ठ और ब्रह्म हो गया। उसी को 'ईशान' भी कहा गया है। उसने धनुष धारण किया। अप्रिय शत्रुओं को वह घेर कर मार डालता है। इसी क्रम में उससे विभिन्न सामों को भी सम्बद्ध कर दिया गया है। 'रुद्राध्याय' के इस अंश में विभिन्न ऋतुओं और मासों से उसका किस प्रकार का सम्बन्ध है, यह प्रदर्शित है।]

९१-९३. उसके लिए पूर्ववर्तिनी दिशाएँ [बनीं]। वसन्त ऋतु के दो मास [उसके] रक्षक बनाये गये। बृहत् और रथन्तर संज्ञक साम अनुष्ठाता या सेवक बनाये गये। जो यह जानता है, उसके प्राची दिशा, वसन्त ऋतु के दो मास रक्षक होते हैं और बृहत् तथा रथन्तर सेवक होते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

तस्मै दक्षिणाया दिशः ।।

ग्रैष्मौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् यज्ञायज्ञियं वामदेव्यं चानुष्ठातारौ।।९४।।

उसके लिए दक्षिण की दिशा [बनायी गई]। ग्रीष्म ऋतु के दो मास रक्षक बनाये गये; यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य साम अनुचर हुए। जो यह जानता है, उसके लिए दक्षिण दिशा, ग्रीष्म ऋतु के दो मास तथा यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य साम आनुचर्य करते हैं।

ग्रैष्मावेनं मासौ दक्षिणाया दिशो गौपायनो यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं चानु तिष्ठतो य एवं वेद।। तस्मै प्रतीच्या दिशः ।।९५।।

उसके लिए पश्चिम दिशा। वर्षा के दो मास रक्षक। वैरूप और वैराज साम अनुष्ठाता। इस रहस्य के ज्ञाता के लिए ये सब अनुचर की भूमिका निभाते हैं।

वार्षिकौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् वैरूपं च वैराजं चानुष्ठातारौ ।।९६।।

वार्षिकावेनं मासौ प्रतीच्या दिशो गौपायतो वैरूपं च वैराजं चानु तिष्ठतो य एवं वेद।। ।।९७।।

तस्मा उदीच्या दिशः।। ।।९८।।

शारदौ मासौ गोप्तारावकुर्वंछ्यैतं च नौधसं चानुष्ठातारौ।। ।।९९।।

शारदावेनं मासावुदीच्या दिशो गौपायतः श्यैतं च नौधसं चानु तिष्ठतो य एवं वेद।।१००।।

उसके लिए उत्तर की दिशा। शरद् ऋतु के दो मास रक्षक बनाये गये। श्येत और नौधस साम अनुचर हुए। जो यह जानता है, उसके लिए उत्तर दिशा, शरद् ऋतु के दो मास और श्येत और नौधस साम अनुचर बन जातेहैं।

तस्मै ध्रुवायां दिशः ।।

हैमनौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् भूमिं चाग्निं चानुष्ठातारौ।। ।।१०१।।

हैमनावेनं मासौ ध्रुवायां दिशो गौपायतो भूमिश्चाग्निश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद।। ।।१०२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

उसके लिए 'ध्रुव' दिशा। हेमन्त ऋतु के दो मास रक्षक बनाये गये। भूमि तथा अग्नि उसके अनुचर बने।जो यह जानता है, उसके लिए 'ध्रुव' दिशा, हेमन्त के दो मास रक्षक तथा भूमि और अग्नि अनुचर होते हैं।

तस्मा ऊर्ध्वाया दिशः।। ।।१०३।।

शैशिरौ मासौ गोप्तारावकुर्वन् दिवं चादित्यं चानुष्ठातारौ।। ।।१०४।।

शैशिरावेनं मासावूर्ध्वाया दिशो गोपायतो द्यौश्चादित्यश्चानु तिष्ठतो य एवं वेद ।।१०५।।

उसके लिए ऊर्ध्व दिशा। शिशिर के दो मास, गोप्ता अथवा रक्षक। द्युलोक और आदित्य अनुगामी। इस रहस्य के ज्ञाता के लिए भी ये सभी सहायक होते हैं।

(१६)

तस्मै प्राच्या दिशो अन्तर्देशाद् भवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन्।। ।।१०६।।

भव एनमिष्वासः प्राच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।१०७।।

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद ।।१०८।।

तस्मै दक्षिणाया दिशो अन्तर्देशाच्छर्वमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन्।। ।।१०९।।

शर्व एनमिष्वासो दक्षिणाया दिशो अन्तर्देषादनुष्ठातानु तिष्ठति नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।११०।।

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद।। ।।१११।।

[अथर्व संहिता १५. ५; ऋषि-अथर्वा; सन्दर्भ पूर्ववत्] १० ६-१०८. उसके लिए पूर्व दिशा के अन्तर्देश से (इष्वासं भवम्) धनुर्धारी भव को अनुष्ठाता बनाया गया। जो इसे जानता है, उनका धनुर्धारी भव प्राची दिशा के अन्तर्देश से अनुष्ठाता हो जाता है। शर्व, भव और ईशान इसे आघात नहीं पहुँचाते तथा इसके पशुओं और स्वजनों की हिंसा नहीं करते।

उसके लिए दक्षिण दिशा के अन्तर्देश से धनुर्धारी शर्व को अनुष्ठाता बनाया गया। जो इसे जानता है, दक्षिण दिशा के अन्तर्देश से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

धनुर्धर शर्व उसका अनुष्ठाता अथवा अनुचर हो जाता है। शर्व, भव और ईशान में से न तो कोई उसे आघात पहुँचाता है और ना ही इसके पशुओं और सजातीय बन्धुओं की ही हिंसा करता है।

तस्मै प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशात् पशुपतिमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ।।११२।।

पशुपतिरेनमिष्वासः प्रतीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति।
नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।११३।।

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद।।११४।।

[उपर्युक्त सन्दर्भ में ही] उसके लिए पश्चिम दिशा के अन्तर्देश से अनुष्ठाता बने धनुर्धारी पशुपति। शेष पूर्ववत्।

तस्मा उदीच्या दिशो अन्तर्देशादुग्रं देवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ।।११५।।

उग्र एनं देव इष्वास उदीच्या दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।११६।।

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद।। ।।११७।।

उसके लिए उत्तर दिशा के अन्तर्देश से धनुर्धारी उग्र देव को अनुष्ठाता बनाया गया। शेष की पूर्ववत् योजना।

तस्मै ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशाद् रुद्रमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन्।। ।।११८।।

रुद्र एनमिष्वासो ध्रुवाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।११९।।

नास्य पशून् न समानान् हिनस्ति य एवं वेद।। ।।१२०।।

उसके लिए 'ध्रुवा' दिशा के अन्तर्देश से धनुर्धारी रुद्र को अनुष्ठाता बनाया गया। शेष की पूर्ववत् योजना।

तस्मा ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशान्महादेवमिष्वासमनुष्ठातारमकुर्वन् ।।१२१।।

महादेव एनमिष्वास ऊर्ध्वाया दिशो अन्तर्देशादनुष्ठातानु तिष्ठति
नैनं शर्वो न भवो नेशानः।। ।।१२२।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नास्य॑ प॒शून् न स॑मा॒नान् हि॑नस्ति॒ य ए॒वं वेद॑।। ।।१२३।।

उसके लिए 'ऊर्ध्व' दिशा के अन्तर्देश से धनुर्धारी महादेव को अनुष्ठाता बनाया गया। शेष की पूर्ववत् योजना।

तस्मै॒ सर्वे॑भ्यो अन्तर्देशेभ्य॒ ईशा॑नमिष्वा॒सम॑नुष्ठा॒तार॑मकुर्वन्।। ।।१२४।।

ईशा॑न एनमिश्वा॒सः सर्वे॑भ्यो अन्तर्दे॒शेभ्यो॑ऽनुष्ठा॒तानु॑ तिष्ठति॒

नैनं॑ श॒र्वो न भ॒वो नेशा॑नः।। ।।१२५।।

नास्य॑ प॒शून् न स॑मा॒नान् हि॑नस्ति॒ य ए॒वं वेद॑ ।।१२६।।

उसके लिए सभी अन्तर्देशों से धनुर्धारी ईशान को अनुष्ठाता बनाया गया। जो इस [रहस्य] को जानता है, उसका धनुषधारी ईशान सब दिशाओं के अन्तर्देशों से अनुष्ठाता होकर रहता है। इसे शर्व, भव और ईशान में से कोई भी आघात नहीं पहुँचाता। इसके पशुओं और बन्धुबन्धवों की भी इनमें से कोई हिंसा नहीं करता है।

।। ॐ पृथिवी शान्तिरिति मन्त्र पाठः ।।

।। इत्यथर्व वेदीयो रुद्रः समाप्तः ।।

।। इति सर्ववेदरुद्राध्याय-संग्रहः ।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिव स्तोत्रावली

गन्धर्वराजाचार्य श्रीपुष्पदन्तविरचितम्

शिवमहिम्नः स्तोत्रम्

पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारन्ते परमविदुषो यद्यसदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधिगृणन्,
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः॥१॥

हे हर! जो तुम्हारी महिमा का वर्णन नहीं कर पाता, उस मनुष्य की की हुई प्रार्थना यदि तुम्हारे योग्य न ही है तो ब्रह्मा आदि देवता भी तुम्हारी प्रार्थना नहीं कर सकते हैं। अभिप्राय यह कि सभी मनुष्य तथा देव अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार प्रार्थना कर सकते हैं। इस कारण हे दुःखहरण! इस स्तोत्र से हमारी भी स्तुति का प्रारम्भ दोषरहित है।

अतीतः पंथानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधिगुणः कस्य विषयः,
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः॥२॥

हे महेश्वर! आपकी महिमा, वाणी और मन की प्रवृत्ति से बाहर है, इन दोनों की प्रवृत्ति से आश्चर्यचकित होकर वेद भी नेति-नेति रूप में ही आपका वर्णन करते हैं। इस प्रकार यह क्षमता किसकी है कि वह आपके गुणों का वर्णन कर सके?

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत-
स्तवब्रह्मन्! किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः,
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता॥३॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ब्रह्मन्! हे त्रिपुरारि! देवताओं के गुरु बृहस्पति की भी प्रार्थना क्या तुम्हें कुछ विस्मय करा सकती है? क्योंकि वह अमृत के तुल्य मधुर और अलंकार सहित वाणियों के कर्ता हैं। यदि उनकी यह रीति है, तो मेरी क्या सामर्थ्य है? आपके गुणानुवाद के पुण्य से मेरी यह वाणी पवित्र हो जाये, मैंने तो केवल इसी भाव से इस काम में अपनी बुद्धि लगाई है।

तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्,
त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं,
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः॥४॥

हे वरद्! तीनों वेदों के साररूप जगत की उत्पत्ति, रक्षा और प्रलय का कारण जो आपका ऐश्वर्य है, वह सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण के रूप में इस शरीर में वर्तमान है। अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, शिव ये तुम्हारे ही सामर्थ्य से उत्पत्ति, स्थिति और लय करते हैं। हे भगवन्! इस संसार में कुछ मूर्ख तुम्हारे ऐश्वर्य में भी 'सामर्थ्य सम्भव नहीं है' ऐसा कहते हैं, जिसको पापी मंगलकारी समझते हैं।

किमीहः किङ्कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं,
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्येत्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः,
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः॥५॥

कुछ महामूर्ख संसार के अज्ञान के निमित्त यह कुतर्क करते हैं कि ब्रह्मा जी किस इच्छा से, किस शरीर से व किस उपाय और किस कारण से तीनों लोकों को उत्पन्न करते हैं? क्योंकि तुम्हारे ऐश्वर्य में संसार उत्पन्न करने के लिए कोई सामग्री दुर्लभ नहीं है।

अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता-
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो,
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे॥६॥

हे भगवन्! भू आदि जो सात लोक हैं, वे सावयव हैं। इनकी उत्पत्ति क्या किसी से नहीं है? जो अवयव सहित हैं, वे उत्पत्ति सहित हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिना ईश्वर की कृपा के संसार की रचना सम्भव नहीं हो सकती और यदि बिना ईश्वर के संसार की उत्पत्ति है तो उत्पत्ति में क्या सामग्री आवश्यक है, इस प्रकार मूर्ख ही ईश्वर के होने में सन्देह करते हैं, अर्थात् आपके होने में कुछ सन्देह नहीं है।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति,
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां,
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥७॥

हे भगवन्! तीनों वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, शैवमत और वैष्णवमत इन पाँचों के अलग-अलग मार्ग हैं। अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार इन मार्गों पर चलने वाले, सभी मनुष्यों को लक्ष्य तक पहुँचाने में समर्थ एक तुम्हीं हो। जैसे सीधे व टेढ़े मार्ग में बहती हुई नदियों का रास्ता एक समुद्र ही है – उसी प्रकार प्रत्येक उपासक अपने-अपने ढंग से उपासना करके अन्त में आप ही तक पहुँच जाता है।

महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः,
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं विदधति भवद्भ्रूप्रणिहितां,
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति॥८॥

हे वरद्! आपकी-घर गृहस्थी की वस्तुएँ केवल इतनी ही हैं - महोक्ष अर्थात् बूढ़ा बैल, खटवांग अर्थात् खाट की पाटी, ब्रह्मा का कपाल, फरसा, सिंहचर्म, भस्म और सर्प, परन्तु देवता केवल आपके कृपाकटाक्ष से दी हुई ऋद्धियों को भोगते हैं क्योंकि विषयरूपी मृगतृष्णा (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दरूपी मृगतृष्णा) ब्रह्मज्ञान प्राप्त मनुष्य को भ्रम में नहीं डाल सकती।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं,
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव-
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता॥९॥

हे त्रिपुरारि! कोई-कोई बुद्धिमान् इस संसार को स्थिर और कोई अस्थिर और कोई स्थिरास्थिर (मिला हुआ) कहते हैं। इस संसार के स्थिर और अस्थिर और स्थिरास्थिर होने में प्रमाण न मिलने से बड़े भ्रम

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

में पड़कर मैं तुम्हारी बराबर स्तुति करता हुआ लज्जित होता हूँ तथापि मेरी वाचालता ढिठाई कर ही रही है।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चि र्हरिरधः,
परिच्छेत्तुं यातावनलमनिलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश! यत्,
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति॥१०॥

हे गिरिश (हे कैलाशवासी शिव!) आपके ऐश्वर्य का अन्त देखने के लिए बड़े यत्न से विष्णु तो पाताल और ब्रह्मा आकाश को गए तो भी आपके स्वरूप को न प्राप्त कर सके। भक्ति और श्रद्धा से बैठकर जब आपकी स्तुति करने लगे तभी वे आपके स्वरूप से परिचित हो सके। सेवा कहीं निष्फल होती है? नहीं, वह सर्वदा सफल ही होती है।

अयत्नादासाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं,
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहवलेः,
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥११॥

हे त्रिपुरासुर को मारने वाले शिव! रावण ने अपने शिररूपी कमलों की माला रचकर आपके चरणों का पूजन किया। इस दृढ़भक्ति के प्रताप से ही तीनों लोकों को बिना परिश्रम से शत्रुहीन अर्थात् निष्कण्टक करके अपनी भुजाओं को जो हर समय संग्राम के लिए खुज़ला रही थीं, धारण किया।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजबलं,
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि,
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः॥१२॥

हे भगवन्! जिस रावण ने आपकी सेवा से बड़ी बलवान् भुजाओं का समूह प्राप्त कर आपके निवास स्थान कैलाश को भी उठा लिया, फिर जब आपने स्वाभाविक पाँव के अँगूठे से पर्वत को दबाया तब रावण को पाताल में भी स्थिर रहना मुश्किल हो गया। मूर्ख मनुष्य बड़प्पन पाकर मोहजन्य अभिमान को प्राप्त हो जाते हैं।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद! परमोच्चैरपि सती-
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न,
कस्माप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः॥१३॥

हे वर देने वाले! आपके चरणों के प्रताप से त्रिभुवन को वशीभूत करके परम उच्च इन्द्रपद को भी बाणासुर ने छोड़ दिया तो कोई आश्चर्य नहीं, क्योंकि आपके सामने जो सिर झुकाता है वे सब प्रकार से उन्नति करते ही हैं।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा,
विधेयस्याऽसीद् यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो,
विकारोऽपिश्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः॥१४॥

हे त्रिलोचन! जिस समय समुद्र-मन्थन से हलाहल विष निकला, उस समय देवता और राक्षसों को भय हुआ कि कहीं असमय में ही संसार का नाश न हो जाए। तब कृपाकर उनकी रक्षा के लिए जो आपने काल के समान विष का पान कर किया, वह विष भी आपके कण्ठ में अत्यन्त शोभा दे रहा है।

संसार के भय को दूर करने वालों का विकार (नीलिमा) भी अच्छा लगता है।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे,
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्,
स्मरःस्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः॥१५॥

हे ईश! जिस कामदेव के बाण ऐसे प्रबल हैं कि देवता, राक्षस, मनुष्यों से व्याप्त इस संसार में बिना अपना कार्य सिद्ध किए कभी वापस नहीं लौटते हैं, ऐसा कामदेव भी हे शिव! आपको अन्य देवताओं के तुल्य-साधारण देखने से नाममात्र ही बाकी रह गया। नेत्राग्नि से उसका शरीर भस्म हो गया। अतः जितेन्द्रियों का अपमान करना लाभदायक नहीं होता है।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं,
पदं विष्णोर्भ्राम्यद् भुजपरिघरुग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा,
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता॥१६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे भगवन्! आप तो संसार की रक्षा के लिए नृत्य करते रहते हैं और नृत्य के समय पैर की धमक से पृथ्वी भी सन्देह में पड़ जाती है कि कहीं वह फट तो नहीं जायेगी। जिस प्रकार भुजाओं के घूमने से विष्णु के स्थान (आकाश) के तारागण टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। उसी प्रकार लम्बी-लम्बी जटा को बार-बार झटकारने से देवलोक मार खाकर कठिनता से थमा रहता है। हे शिव! आपकी प्रभुता बड़ी विचित्र है।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गम रुचिः,
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्य-
नेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः॥१७॥

हे शिव! फेन की तरह तारागणों से चमकती हुई आकाशगंगा की जल राशि जो आकाशपर्यन्त व्याप्त हो रही है, वह आपके सिर पर सूक्ष्म जलकणों के समान दिखती है, परन्तु आपने उतने ही जल से समुद्र की तरह इस महाद्वीपाकार संसार को चारों ओर से घेर लिया है, अतएव भगवन्! आपके दिव्य शरीर का महत्व-विस्तार इसी दृष्टान्त से अनुमानयोग्य है।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिनगेन्द्रो धनुरथो,
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि-
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः॥१८॥

हे भगवन्! तृणतुल्य त्रिपुरासुर को जलाने के लिए आपने इतना आडम्बर अर्थात् पृथ्वी को रथ, ब्रह्मा जी को सारथी, हिमालय पर्वत को धनुष, चन्द्रमा और सूर्य को रथ के पहिये तथा श्रीविष्णु को बाण बनाया है। तो क्या त्रिपुरासुररूपी तृण को तोड़ने के लिए ही इतने कठिन साधन आपने तैयार किए! जबकि संसार का संहार आप क्षणमात्र में ही कर सकते हैं। समर्थ लोग अपने अधीनों के साथ खेलने से पराधीन नहीं माने जाते हैं।

हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयो-
र्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा,
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर! जागर्ति जगताम्॥१९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे त्रिपुरान्तक! श्री विष्णु भगवान् ने सहस्र कमल लेकर आपके चरणों का पूजन करते समय पूजा की सामग्री में एक कमल कम देखकर, दृढ़भक्ति से अपना एक नेत्र निकाल और कमल की जगह उसका प्रयोग कर, पूजन को पूर्ण कर दिया। श्री विष्णु की यह दृढ़भक्ति ही सुदर्शन चक्र का रूप होकर तीनों लोकों की रक्षा कर रही है।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां,
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदामप्रतिभुवं,
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढ़परिकरः कर्मसु जनः॥२०॥

हे भगवन्! आप ही को यज्ञ का फल देने वाला जानकर और देवताओं में दृढ़ विश्वास कर मनुष्य कटिबद्ध होकर कर्मों को करते हैं, क्योंकि जब कार्य समाप्त होता है तो आप ही विद्यमान रहते हैं। यदि यह कहा जाये कि नष्टकर्म ही फल देता है तो निश्चय है कि चैतन्य पुरुष की उपासना के बिना नष्टकर्म भी फल देने वाले नहीं होते अर्थात् कर्ममात्र के फलदाता आप ही हैं।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृ-
षीणामार्त्विज्यं शरणद! सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो,
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः॥२१॥

हे शरणागतरक्षक! जिस यज्ञ में अनुष्ठान की क्रिया में कुशल दक्ष प्रजापति जैसा यज्ञकर्ता यजमान और सदस्य ब्रह्मादि देवताओं का समूह सदस्य तथा त्रिकालदर्शी ऋषि यज्ञ कराने वाले थे, वह यज्ञ भी यदि बिगड़ जाए तो आश्चर्य है। वास्तविकता यह है कि भगवन्! आपके प्रति अश्रद्धा ही से यज्ञ का नाश हुआ क्योंकि यज्ञ के फलदाता आप ही हैं। आपके प्रति श्रद्धा से जो किया जाए वह सब सफल ही होगा।

प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं,
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमति सपत्राकृतममुं,
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः॥२२॥

यहाँ उषा और सूर्यदेव के प्रातः कालिक संयोग का रुचिररूप रूपक के द्वारा वर्णन किया गया है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे नाथ! जिस समय ब्रह्मा काम के वश में हो, रमण की इच्छा से अपनी पुत्री के पीछे दौड़े तब वह कन्या पाप के डर से मृगी बनकर भाग चली। उस समय ब्रह्मा ने भी मृग का रूप धारण कर उसका पीछा किया। उस समय आपने ऐसी अनीति देखकर मृग पर धनुष हाथ में लेकर मृग का जो उत्सादन किया तो वह ब्रह्मा स्वर्ग तक भागे पर आपके धनुष ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। आपके धनुष-बाण अन्यायियों का पीछा कभी नहीं छोड़ते हैं।

स्वलावण्याशंसा धृतधनुषमह्नाय तृणवत्,
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन! पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटनादवैति,
त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः॥२३॥

हे भगवन्! आपने धनुष लेकर अपनी ओर दौड़ते हुए कामदेव को शीघ्र ही तृणवत् भस्म किया। उसका आधा शरीर उत्पन्न कर अपने शरीर में धारण किया। यह लीला देखकर निज स्वरूपाभिनिनी पार्वतीजी आपको स्त्री पर आसक्त समझती हैं, क्योंकि कामदेव को भस्म किया और फिर उत्पन्न कर अपने शरीर में धारण किया। परन्तु हे भगवन्! आप में यह दोष लगाना यथार्थ में सत्य नहीं है, क्योंकि युवती स्त्री अर्धांगिनी होती है, उनके कहने से क्या होता है।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर! पिशाचाः सहचरा-
श्चिताभस्मालेपः स्त्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं,
तथापि स्मर्तृणां वरद! परमं मंगलमसि॥२४॥

हे मदनदहन! [जिसके देखने या सुनने से ग्लानि तथा भय होता है ऐसा] श्मशान आपके खेलने का स्थान है, खिलाड़ी भूत-पिशाच आदि हैं, आभूषण चिता की भस्म है। ऊपर से आप मनुष्यों की खोपड़ियों की माला पहने हुए हैं, ये सब अमंगल वस्तुएँ आपके साथ सम्बद्ध हैं, तथापि हे वरद शिव! स्मरण करने वाले का आप सर्वदा मंगल ही करते हैं।

मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः,
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये,
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्॥२५॥

हे भगवन्! योगीजन प्राणायामपूर्वक और मन को हृदय के मध्य में

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

केन्द्रित करके इस अवर्णनीय तत्त्व को देखकर आनन्द प्राप्त करते हैं। इससे उनके रोएँ खड़े हो जाते हैं और नेत्र तृप्त हो जाते हैं, मानो अमृतमय सरोवर में स्नान कर रहे हों। वह अनिर्वचनीय तत्व आप ही का स्वरूप है।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह-
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं,
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि॥२६॥

हे शंकर! सूर्य, चन्द्रमा, पवन, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी और आत्मा आदि पदार्थ स्वरूप आप ही हैं। आपको जानने वाले आपके विषय में बहुत ही वर्णन कर सकते हैं, आगे उनकी बुद्धि चल नहीं सकती। अर्थात् ऐसा कोई पदार्थ हम नहीं देखते हैं जिसमें आप व्यापक न हों।

त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः,
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्॥२७॥

हे शरण देने वाले! आप सब में व्यापक होकर (अकार, उकार और मकार के योग से निष्पन्न) ओंकार से ऋग्, यजु; साम तीनों वेद; जाग्रत स्वप्न, सुषुप्ति तीनों अवस्थायें; स्वर्ग, मृत्यु और पाताल तीनों लोक तथा ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र इन तीनों देवताओं को धारण करते हुए आपका चौथा पवित्र धाम है, जिनको तुरीय कहते हैं, उस चैतन्य स्वरूप को भी स्मरण करता हुआ हे भगवन्! समस्त रूप में व्यस्त ऐसे आपकी स्तुति किया करता हूँ।

भवः शर्वो रुद्रःपशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन्प्रत्येकं प्रविचरित देवः श्रुतिरपि,
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते॥२८॥

हे देवाधिदेव! १. भव (उत्पत्तिकर्त्ता), २. शर्व (सर्वरूप शुभकर्ता), ३. रुद्र (रोदनकर्ता), ४. पशुपति (जीवों का पालक), ५. उग्र (क्रोधी), ६. महादेव सब में महान् विशिष्ट, ७. भीम (भयंकर), ८. ईशान

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(विशिष्ट, ऐश्वर्यवान्) आपके इन आठ नामों में से एक-एक नाम के विषय में श्रुति अर्थात् वेद विचार करते रहते हैं।इसलिए मैं आपके इस प्रिय और तेजोमय स्वरूप को प्रणाम करके ही अपने को कृतकृत्य मान रहा हूँ।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो,
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर! महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन! यविष्ठाय च नमो,
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः॥२९॥

हे स्मरारि! आप समीप रहने वाले हैं और दूर रहने वाले भी हैं सूक्ष्म से सूक्ष्म और बड़े से बड़े रूप को धारण करते हैं आप ज्येष्ठ भी हैं और कनिष्ठ भी हैं। हे त्रिनेत्र! आप सब कुछ हैं - यह जगत् आपका ही स्वरूप है - आपको बारम्बार नमस्कार।

बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः,
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः,
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः॥३०॥

संसार की उत्पत्ति के समय आपने रजोगुण सहित जो भवरूप धारण किया, और सृष्टि का पालन करने के लिए सत्व गुण सहित सत्यरूप और प्रलय करने के समय तमोगुण सहित हररूप धारण किया। मोक्ष के समय तीनों गुणों से रहित अर्थात् निर्गुण शिव-शान्तरूप धारण किया। इस प्रकार आपके भव, हर, मृड और शिव संज्ञक अनेक रूप हैं। हे भगवन्! आपके स्वयंप्रकाश इन सभी रूपों को नमस्कार है।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं,
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इतिचकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्-
वरद! चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्॥३१॥

हे वर देने वाले! आपकी महिमा का तो अन्त नहीं है और मेरा चित्त रागद्वेष और क्लेश आदि के वश होकर परिणाम में दुर्बल है। इसी प्रकार जब मैं आपके गुणों के वर्णन से भयभीत हुआ तब मेरी भक्ति ने उत्साह देकर वाणीरूपी पुष्प माला आपके चरणारविन्दों को पहना दी अर्थात् मेरी सामर्थ्य कहाँ जो आपके गुणों का वर्णन करूँ, यह मेरी भक्ति ने थोड़ा सा वर्णन कराया है।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश! पारं न याति॥३२॥

हे भगवन्! यदि स्वयं सरस्वती देवी भी नील पर्वत के बराबर काजलस्याही समुद्ररूपी पात्र में डालकर कल्पवृक्ष रूपी लेखनी से आपके गुणों को लिखें तो भी पार नहीं पा सकतीं, क्योंकि आपके गुण अनन्त हैं। [और हमारी तो सामर्थ्य ही क्या है जो आपके गुणों का वर्णन कर सकें।]

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो, रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार॥३३॥

सकल गुणों में श्रेष्ठ पुष्पदन्ताचार्य ने देवताओं, राक्षसों और मुनियों से पूजित और चन्द्रमा जिसके मस्तक पर शोभायमान है ऐसे देवाधिदेव महादेव के प्रसादन-हेतु इस सुन्दर स्तोत्र की रचना मनोहर और बडे छन्दों में की है।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्,
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र,
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च॥३४॥

जो मनुष्य श्री शिवजी के इस सुन्दर स्तोत्र को प्रतिदिन शुद्ध चित्त से पढ़ेगा वह शिवलोक में इन्द्र के समान गिना जायेगा और इस संसार में धन, आयु, सन्तान और अच्छी कीर्ति पाएगा।

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापराः स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्॥३५॥

सम्पूर्ण देवताओं में शिव के बराबर कोई दूसरा देवता नहीं है। शिव की महिमा की स्तुति करने के बाद किसी दूसरे देवता की स्तुति की आवश्कता नहीं है। अघोर मन्त्र से बड़ा कोई दूसरा मन्त्र नहीं है। और गुरु से बढ़कर कोई बड़ा तत्त्व नहीं है।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानयोगादिकाः क्रियाः।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥३६॥

दीक्षा, दान, तप, तीर्थ करना, ज्ञान और यज्ञादिक कर्म इस महिम्नः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्तोत्र के पाठ के फल के सोलहवें भाग के भी बराबर फल नहीं देते।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशुशशिधरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः॥३७॥

सभी गन्धर्वों के राजा पुष्पदन्त जो बालचन्द्र से विभूषित मस्तक वाले भगवान् शिव के परम सेवक थे, [किसी कारण वश] रूठ गये शिव के रोष से बाद में महत्त्वहीन हो गये। उन्होंने ही इस परम दिव्य शिव की महिमा से युक्त स्तोत्र की रचना की है।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्॥३८॥

पुष्पदन्ताचार्य का बनाया यह सुन्दर महिम्न स्तोत्र देवता और मुनियों से पूजित और स्वर्ग तथा मोक्ष को प्राप्त कराने वाला है। ऐसे स्तोत्र को जो मनुष्य एकाग्रचित्त हो हाथ जोड़कर पढ़ता है, वह शिव के समीप जाता है और उसकी स्तुति किन्नर आदि करते हैं।

असमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्॥३९॥

गन्धर्व अर्थात् पुष्पदन्ताचार्य का कहा हुआ पुण्यकारी यह महिम्न स्तोत्र पूर्ण होने पर भी समाप्त नहीं हुआ, क्योंकि शिव की महिमा का ही कोई अन्त नहीं है। इस सुन्दरस्तोत्र के बराबर कोई दूसरा स्तोत्र नहीं है, इसमें शंकर का ही वर्णन है।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः॥४०॥

यह वाङ्मयी अर्थात् स्तोत्ररूपी पूजा श्री महादेव जी के चरणकमलों में समर्पित है। भगवान् सदाशिव से प्रार्थना है कि वे इससे प्रसन्न हो [कर हम पर अनुग्रह करें]।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः॥४१॥

हे महेश्वर! हम आपकी वास्तविकता को नहीं जानते, कि आप

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

किस प्रकार के हैं। आप जैसे भी हैं, जहाँ भी हैं, मैं आपको प्रणाम करता हूँ।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते॥४२॥

जो मनुष्य इस महिम्न स्तोत्र को एक बार, दो बार या तीन बार नित्य पढ़ेगा, वह संसार के पापों से छुटकर शिवलोक को प्राप्त होगा।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिमर्हेशः॥४३॥

श्रीपुष्पदन्ताचार्य के मुख से कहा हुआ यह शिव प्रिय पापनाशक महिम्न स्तोत्र है। चित्त लगाकर इसको याद कर पाठ करने से भूतपति श्री महादेव जी अत्यन्त प्रसन्न होते हैं।

शिवषडक्षरस्तोत्रम्

ॐकारं बिन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः॥१॥
नमन्ति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः।
नरा नमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः॥२॥
महादेवं महात्मानं महाध्यानपरायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः॥३॥
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः॥४॥
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः॥५॥
यो गुरुः सर्वदेवानां यकाराय नमो नमः॥६॥
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसंनिधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥७॥

शिवमानसपूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम्।
जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे दयानिधे! हे पशुपते! हे देव! यह रत्ननिर्मित सिंहासन, शीतल जल से स्नान, नाना रत्नावलिविभूषित दिव्य वस्त्र, कस्तूरिका गन्ध समन्वित चन्दन, जुही, चम्पा और बिल्वपत्र से रचित पुष्पांजलि तथा धूप और दीप यह सब मानसिक (पूजोपहार) ग्रहण कीजिये।

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु॥२॥

मैंने नवीन रत्नखण्डों से खचित सुवर्ण पात्र में घृतयुक्त खीर, दूध और दधि सहित पाँच प्रकार का व्यंजन, कदलीफल, शर्बत, अनेकों शाक, कपूर से सुवासित और स्वच्छ किया हुआ मीठा जल और ताम्बूल—ये सब मन के द्वारा ही बनाकर प्रस्तुत किये हैं; प्रभो! कृपया इन्हें स्वीकार कीजिए।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो॥३॥

छत्र, दो चँवर, पंखा, निर्मल दर्पण, वीणा भेरी, मृदंग, दुन्दुभी के वाद्य, गान और नृत्य, साष्टांग प्रणाम, नानाविधि स्तुति—ये सब मैं संकल्प से ही आपको समर्पण करता हूँ; प्रभो! मेरी यह पूजा ग्रहण कीजिये।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्॥४॥

हे शम्भो! मेरी आत्मा तुम हो, बुद्धि पार्वती जी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय-भोग की रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है, मेरा चलना-फिरना आपकी परिक्रमा है तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं; इस प्रकार मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ, वह सब आपकी आराधना ही है।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥५॥

प्रभो! मैंने हाथ, पैर, वाणी, शरीर, कर्म, कर्ण, नेत्र अथवा मन से जो भी अपराध किये हों; वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको आप क्षमा कीजिए। हे करुणासागर श्री महादेव शंकर! आपकी जय हो।

शिव अपराध क्षमापन स्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसङ्गात् कलयति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विण्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद्वै तत्र दुःखं व्यथयति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥१॥

पहले कर्म प्रसंग से किया हुआ पाप मुझे माता की कुक्षि में ला बिठाता है, फिर उस अपवित्र विष्ठा-मूत्र के बीच जठराग्नि खूब सन्तप्त करता है। वहाँ जो-जो दुःख निरन्तर व्यथित करते रहते हैं उन्हें कौन कह सकता है? हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

बाल्ये दुःखातिरेको मललुलितवपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रियेभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगादिदुःखाद्रुदनपरवशः शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥२॥

बाल्यावस्था में दुःख की अधिकता रहती थी, शरीर मल-मूत्र से लिथड़ा रहता था और निरन्तर स्तनपान की लालसा रहती थी, इन्द्रियों में कोई कार्य करने की सामर्थ्य न थी; शैवी माया से उत्पन्न हुए नाना जन्तु मुझे काटते थे; नाना रोगादि दुःखों के कारण मैं रोता ही रहता था (उस समय भी) मुझसे शंकर का स्मरण नहीं बना, इसलिए हे शिव! हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टो विवेकः सुतधनयुवतिस्वादसौख्ये निषण्णः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥३॥

जब मैं युवा-अवस्था में आकर प्रौढ़ हुआ तो पाँच विषयरूपी सर्पों

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

ने मेरे मर्मस्थानों में डँसा, जिससे मेरा विवेक नष्ट हो गया और मैं धन, स्त्री और सन्तान के सुख भोगने में लग गया। उस समय भी आपके चिन्तन को भूलकर मेरा हृदय बड़े घमण्ड और अभिमान से भर गया। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

वार्द्धक्ये चेन्द्रियाणां विगतगतिमतिश्चाधिदैवादितापैः
पापै रोगैर्वियोगैस्त्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्यामोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेर्ध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥४॥

वृद्धावस्था में भी, जब इन्द्रियों की गति शिथिल हो गई है, बुद्धि मन्द पड़ गई है और आधिदैविकाादि तापों, पापों, रोगों और वियोगों से शरीर जर्जरित हो गया है, मेरा मन मिथ्या मोह और अभिलाषाओं से दुर्बल और दीन होकर (आप) श्री महादेव जी के चिन्तन से शून्य ही भ्रमित हो रहा है। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपदगहनप्रत्यवाचाकुलाख्यं
श्रौते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुसारे।
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥५॥

पद-पद पर अति गहन प्रायश्चितों से व्याप्त होने के कारण मुझसे तो स्मार्त कर्म भी नहीं हो सकते, फिर जो द्विजकुल के लिए विहित हैं, उन ब्रह्म प्राप्ति के मार्ग स्वरूप श्रौत कर्मों की तो बात ही क्या है? धर्म में आस्था नहीं है और श्रवण-मनन के विषय में विचार ही नहीं होता, निदिध्यासन (ध्यान) भी कैसे किया जाए? अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गाङ्गतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद्बहुतरगहनात्खण्डबिल्वीदलानि।
नानीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्धपुष्पे त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥६॥

प्रातः काल स्नान करके आपका अभिषेक करने के लिए मैं गंगाजल लेकर प्रस्तुत नहीं हुआ, न कभी आपकी पूजा के लिए वन से

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बिल्व पत्र ही लाया और न आपके लिए तालाब में खिले हुए कमलों की माला तथा गन्ध-पुष्प ही लाकर अर्पण किए। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरा अपराध क्षमा करो! क्षमा करो!

दुग्धैर्मध्वाज्ययुक्तैर्दधिसितसहितैः स्नापितं नैव लिङ्गं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनकविरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूरदीपैर्विविधरसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥७॥

मधु घृत, दधि और शर्करा युक्त दूध (पंचामृत) से मैंने शिव लिंग को स्नान नहीं कराया, चन्दन आदि से अनुलेपन नहीं किया, धतूरे के फूल, धूप, दीप, कपूर तथा नाना रसों से युक्त नैवेद्यों द्वारा पूजन भी नहीं किया। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरे अपराधों को क्षमा करो! क्षमा करो!

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचुरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
हव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नार्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गाङ्गतीरे व्रतजपनियमै रुद्रजाप्यैर्न वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥८॥

मैंने चित्त में शिव नाम से आपका स्मरण करके ब्राह्मणों को प्रचुर धन नहीं दिया, न आपके एक लक्ष बीज मन्त्रों द्वारा अग्नि में आहुतियाँ दीं और न व्रत एवं जप के नियम से तथा रुद्र-जप और वेद विधि से गंगा तट पर कोई साधना ही की। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरे अपराधों को क्षमा करो! क्षमा करो!

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत्कुण्डले सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटितविभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिङ्गज्ञे ब्रह्मवाक्ये सकलतनुगतं शङ्करं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो॥९॥

जिस सूक्ष्म मार्ग प्राप्य सहस्रदल कमल में पहुँचकर प्राण समूह प्रणवनाद में लीन हो जाते हैं और जहाँ जाकर वेद के वाक्यार्थ तथा तात्पर्यभूत पूर्णतया आविर्भूत ज्योति रूप शान्त परम तत्त्व में लीन हो जाता है, उस कमल में स्थित होकर मैं सर्वान्तर्यामी कल्याणकारी आपका स्मरण नहीं करता हूँ। अतः हे शिव! हे शँकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरे अपराधों को क्षमा करो! क्षमा करो!

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नग्नो निःसङ्गशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्यावस्थमा त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि।
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्रीमहादेव शम्भो।।१०।।

नग्न, निःसंग, शुद्ध और त्रिगुणातीत होकर, मोहान्धकार का ध्वंस कर तथा नासिकाग्र में दृष्टि स्थिर कर मैंने (आप) शंकर के गुणों को जानकर कभी आपका दर्शन नहीं किया और न उन्मनी-अवस्था से कलिमल रहित आप कल्याण स्वरूप का स्मरण ही करता हूँ। अतः हे शिव! हे शंकर! हे महादेव! हे शम्भो! अब मेरे अपराधों को क्षमा करो! क्षमा करो!

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गङ्गाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषितकण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृतसुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः।।११।।

चन्द्रकला से जिनका ललाट-प्रदेश भासित हो रहा है, जो कन्दर्पदर्पहारी हैं, गंगाधर हैं, कल्याण स्वरूप हैं, सर्पों से जिनके कण्ठ और कर्ण भूषित हैं, नेत्रों से अग्नि प्रकट हो रही है, हस्तिचर्म की जिनकी कन्था है तथा जो त्रिलोकी के सार हैं, उन शिव में मोक्ष के लिए अपनी सम्पूर्ण चित्तवृत्तियों को लगा दें; और कर्मों से क्या प्रयोजन है?

किं वानेन धनेन वाजिकरिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत्क्षणभङ्गुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्यतो भज भज श्रीपार्वतीवल्लभम्।।१२।।

इस धन, घोड़े, हाथी और राज्यादि की प्राप्ति से क्या? पुत्र, स्त्री, मित्र, पशु, देह और घर से क्या? इनको क्षणभंगुर जानकर रे मन! दूर ही से त्याग दे और आत्मानुभव के लिए गुरुवचनानुसार पार्वती वल्लभ श्री शंकर का भजन कर।

आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिनं याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाः कालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्तोयतरङ्गभङ्गचपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान्मां शरणागतं शरणद! त्वं रक्षं रक्षाधुना।।१३।।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देखते-देखते आयु नित्य नष्ट हो रही है, यौवन प्रतिदिन क्षीण हो रहा है; बीते हुए दिन फिर लौटकर नहीं आते; काल सम्पूर्ण जगत् को खा रहा है। लक्ष्मी जल की तरंग माला के समान चपल है; जीव बिजली के समान चंचल है; अतः मुझ शरणागत की हे शरणागतवत्सल शंकर! अब रक्षा करो! रक्षा करो!

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो॥१४॥

हाथों से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कर्णों से, नेत्रों से अथवा मन से भी जो अपराध किए हों, वे विहित हों अथवा अविहित, उन सबको हे करुणासागर महादेव शम्भो! क्षमा कीजिए। आपकी जय हो, जय हो।

वेदसार शिवस्तवः

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरदगाङ्गवारिं महादेवमेकं स्मरामि स्मरारिम्॥१॥

जो सम्पूर्ण प्राणियों के रक्षक हैं, पाप का ध्वंस करने वाले हैं, परमेश्वर हैं, गजराज का चर्म पहने हुए हैं तथा श्रेष्ठ हैं और जिनके जटा-जूट में श्री गंगा जी खेल रही हैं, उन एकमात्र कामारि श्री महादेव जी का मैं स्मरण करता हूँ।

महेशं सुरेशं सुरारार्तिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यङ्गभूषम्।
विरूपाक्षमिन्द्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥२॥

चन्द्र, सूर्य और अग्नि-तीनों जिनके नेत्र हैं, उन विरूपनयन महेश्वर, देवेश्वर देवदुःखदनल, विभु, विश्वनाथ, विभूति भूषण, नित्यानन्दस्वरूप, पंचमुख भगवान् महादेव की मैं स्तुति करता हूँ।

गिरीशं गणेशं गले नीलवर्णं गवेन्द्राधिरूढं गुणातीतरूपम्।
भवं भास्वरं भस्मना भूषिताङ्गं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्॥३॥

जो कैलाशनाथ हैं, गणनाथ हैं, नीलकण्ठ हैं, बैल पर चढ़े हुए हैं, निर्गुण रूप वाले हैं, संसार के आदिकारण हैं, प्रकाश स्वरूप हैं, शरीर में भस्म लगाए हुए हैं और श्री पार्वती जी जिनकी अर्द्धांगिनी हैं, उन पंचमुख महादेव जी को मैं भजता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शिवाकान्त शम्भो शशाङ्कार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्।
त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥४॥

हे पार्वती वल्लभ महादेव! हे चन्द्रशेखर! हे महेश्वर! हे त्रिशूलिन्! हे जटाजूटधारिन्! हे विश्व रूप! एकमात्र आप ही जगत् में व्यापक हैं। हे पूर्णरूप प्रभो! प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए।

परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोङ्कारवेद्यम्।
यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥५॥

जो परमात्मा हैं, एक हैं, जगत् के आदिकारण हैं, इच्छा रहित हैं, निराकार हैं और प्रणव द्वारा जानने योग्य हैं तथा जिनसे सम्पूर्ण विश्व की उत्पत्ति और पालन होता है और फिर जिनमें उसका लय हो जाता है उन प्रभु को मैं भजता हूँ।

न भूमिर्न चापो न वह्नि वायुर्न चाकाशमास्ते न तन्द्रा न निद्रा।
न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्ति तमीडे॥६॥

जो न पृथ्वी हैं, न जल हैं, न अग्नि हैं, न वायु हैं और न आकाश हैं; न तन्द्रा हैं, न निद्रा हैं, न ग्रीष्म हैं और न शीत हैं तथा जिनका न कोई देश है, न वेष है, उन मूर्तिहीन त्रिमूर्ति की मैं स्तुति करता हूँ।

अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्।
तुरीयं तमःपारमाद्यन्तहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥७॥

जो अजन्मा हैं, नित्य हैं, कारण के भी कारण हैं, कल्याण स्वरूप हैं, एक हैं, प्रकाशकों के भी प्रकाशक हैं, अवस्थात्रय से विलक्षण हैं, अज्ञान से परे हैं, अनादि और अनन्त हैं, उन परम पावन अद्वैत स्वरूप को मैं प्रणाम करता हूँ।

नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानन्दमूर्ते।
नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य॥८॥

हे विश्वमूर्ते! हे विभो! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे चिदानन्दमूर्ते! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। हे तप तथा योग से प्राप्य प्रभो! आपको नमस्कार है, नमस्कार है। वेदवेद्य भगवन्! आपको नमस्कार है, नमस्कार है।

प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शम्भो महेश त्रिनेत्र।
शिवाकान्त शान्त स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः॥९॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे प्रभो! हे त्रिशूलपाणे! हे विभो! हे विश्वनाथ! हे महादेव! हे शम्भो! हे महेश्वर! हे त्रिनेत्र! हे पार्वती प्राणवल्लभ! हे शान्त! हे कामारे! हे त्रिपुरारे! तुम्हारे अतिरिक्त न कोई श्रेष्ठ है, न माननीय है और न गणनीय है।

शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्।
काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि॥१०॥

हे शम्भो! हे महेश्वर! हे करुणामय! हे त्रिशूलिन्! हे गौरीपते! हे पशुपते! हे पशुबन्धमोचन! हे काशीश्वर! एक तुम्हीं करुणावश इस जगत् की उत्पत्ति, पालन और संहार करते हो; प्रभो! तुम ही इसके एकमात्र स्वामी हो।

त्वत्तो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ।
त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिङ्गात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन्॥११॥

हे देव! हे शंकर! हे कन्दर्पदलन! हे शिव! हे विश्वनाथ! हे ईश्वर! हे हर! हे चराचरजगद्रूप प्रभो! यह लिंग स्वरूप समस्त जगत तुम्हीं से उत्पन्न होता है, तुम्हीं से स्थिर रहता है और तुम्हीं में लय हो जाता है।

शिवाष्टकम्

तस्मै नमः परमकारणकारणाय दीप्तोज्ज्वलज्ज्वलितपिङ्गललोचनाय।
नागेन्द्रहारकृतकुण्डलभूषणाय ब्रह्मेन्द्रविष्णुवरदाय नमः शिवाय॥१॥

जो कारण के भी परम कारण हैं, (अग्नि शिखा के समान) अति देदीप्यमान उज्जवल और पिंगल नेत्रों वाले हैं, सर्पराजों के हार-कुण्डलादि से भूषित हैं तथा ब्रह्मा, विष्णुऔर इन्द्रादि को भी वर देने वाले हैं, उन श्री शंकर को नमस्कार करता हूँ।

श्रीमत्प्रसन्नशशिपन्नगभूषणाय शैलेन्द्रजावदनचुम्बितलोचनाय।
कैलासमन्दरमहेन्द्रनिकेतनाय लोकत्रयार्तिहरणाय नमः शिवाय॥२॥

शोभायमान एवं निर्मल चन्द्रकला तथा सर्प ही जिनके भूषण हैं, गिरिराजकुमारी अपने मुख से जिनके लोचनों का चुम्बन करती हैं, कैलास और महेन्द्रगिरि जिनके निवास स्थान हैं तथा जो त्रिलोकी के दुःख को दूर करने वाले हैं, उन श्री शंकर को नमस्कार करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पद्मावदातमणिकुण्डलगोवृषाय कृष्णागुरुप्रचुरचन्दनचर्चिताय। भस्मानुषक्तविकचोत्पलमल्लिकाय नीलाब्जकण्ठसदृशाय नमः शिवाय॥३॥

जो स्वच्छ पद्मराग मणि के कुण्डलों से किरणों की वर्षा करने वाले, अगरु और बहुत से चन्दन से चर्चित तथा भस्म, प्रफुल्लि कमल और जूही से सुशोभित हैं, ऐसे नीलकमल सदृश कण्ठ वाले शिव को नमस्कार है।

लम्बत्सपिङ्गलजटामुकुटोत्कटाय दंष्ट्राकरालविकटोत्कटभैरवाय।
व्याघ्राजिनाम्बरधराय मनोहराय त्रैलोक्यनाथनमिताय नमः शिवाय॥४॥

लटकती हुई पिंगलवर्ण जटाओं के सहित मुकुट धारण करने से जो उत्कट जान पड़ते हैं, तीक्ष्ण दाढ़ों के कारण जो अति विकट और भयानक प्रतीत होते हैं, व्याघ्रचर्म धारण किए हुए हैं, अति मनोहर हैं तथा तीनों लोकों के अधीश्वर भी जिनके चरणों में झुकते हैं, उन श्री शंकर को प्रणाम है।

दक्षप्रजापतिमहामखनाशनाय क्षिप्रं महात्रिपुरदानवघातनाय।
ब्रह्मोर्जितोर्ध्वगकरोटिनिकृन्तनाय योगाय योगनमिताय नमः शिवाय॥५॥

दक्ष प्रजापति के महायज्ञ को ध्वंस करने वाले, महान् त्रिपुरासुर को शीघ्र मार डालने वाले, दर्पयुक्त ब्रह्मा के ऊर्ध्वमुख पंचम सिर का छेदन करने वाले, योगस्वरूप, योग से नमस्कृत शिव को मैं नमस्कार करता हूँ।

संसारसृष्टिघटनापरिवर्तनाय रक्षः पिशाचगणसिद्धसमाकुलाय।
सिद्धोरगग्रहगणेन्द्रनिषेविताय शार्दूलचर्मवसनाय नमः शिवाय॥६॥

जो कल्प-कल्प में संसार रचना का परिवर्तन करने वाले हैं; राक्षस, पिशाच और सिद्ध गणों से घिरे रहते हैं, सिद्ध, सर्प, ग्रहगण तथा इन्द्रादि से सेवित हैं तथा जो व्याघ्रचर्म धारण किये हुए हैं, उन श्री शंकर को नमस्कार करता हूँ।

भस्माङ्गरागकृतरूपमनोहराय सौम्यावदातवनमाश्रितमाश्रिताय।
गौरीकटाक्षनयनार्धनिरीक्षणाय गोक्षीरधारधवलाय नमः शिवाय॥७॥

भस्मरूपी अंगराग से जिन्होंने अपने रूप को अत्यन्त मनोहर बनाया है, जो अति शान्त और सुन्दर वन का आश्रय करने वालों के आश्रित हैं, श्री पार्वती जी के कटाक्ष की ओर जो बाँकी चितवन से निहार रहे हैं और गोदुग्ध की धारा के समान जिनका श्वेत वर्ण है, उन श्री शंकर को मैं नमस्कार करता हूँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आदित्यसोमवरुणानिलसेविताय यज्ञाग्निहोत्रवरधूमनिकेतनाय।
ऋक्सामवेदमुनिभिः स्तुतिसंयुताय गोपाय गोपनमिताय नमः शिवाय॥८॥

सूर्य, चन्द्र, वरुण और पवन से जो सेवित हैं, यज्ञ और अग्निहोत्र के धूम में जिनका निवास है, ऋक्सामादि वेद और मुनिजन जिनकी स्तुति करते हैं, उन नन्दीश्वर पूजित गौओं का पालन करने वाले महादेवजी को नमस्कार करता हूँ।

शिवाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥९॥

जो इस पवित्र शिवाष्टक को श्री महादेव जी के समीप पढ़ता है, वह शिवलोक को प्राप्त होता है और शंकरजी के साथ आनन्द प्राप्त होता है।

शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥१॥

जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अंगराग (अनुलेपन) है; दिशाएँ ही जिनका वस्त्र हैं (अर्थात् जो नग्न हैं), उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर 'न' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

मन्दाकिनी सलिल चन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥२॥

गंगाजल और चन्दन से जिनकी अर्चा हुई है, मन्दार-पुष्प तथा अन्यान्य कुसुमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रमथ गणों के स्वामी महेश्वर 'म' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषभध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥३॥

जो कल्याण स्वरूप हैं, पार्वती जी के मुख कमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिये जो सूर्य स्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करनेवाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिह्न है, उन शोभाशाली नीलकण्ठ 'शि' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

वसिष्ठकुम्भोद्भव गौतमार्यमुनीन्द्र देवार्चितशेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥४॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

वसिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि जिनके नेत्र हैं, उन 'व' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥५॥

जिन्होंने यक्ष रूप धारण किया है, जो जटाधारी हैं, जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव 'य' कारस्वरूप शिव को नमस्कार है।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥

जो शिव के समीप इस पवित्र पंचाक्षर का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता और वहाँ शिव जी के साथ आनन्दित होता है।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥१॥

१. सौराष्ट्र प्रदेश (काठियावाड़) में श्री सोमनाथ, २. श्री शैल पर श्री मल्लिकार्जुन, ३. उज्जयिनी में श्री महाकाल, ४. ॐकारेश्वर अथवा अमलेश्वर।

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥२॥

५. परली में वैद्यनाथ, ६. डाकिनी नामक स्थान में श्री भीमशंकर, ७. सेतुबन्ध पर श्री रामेश्वर, ८. दारुकावन में श्री नागेश्वर।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये॥३॥

९. वाराणसी (क़ाशी) में श्री विश्वनाथ, १०. गौतमी (गोदावरी) के तट पर श्री त्र्यम्बकेश्वर, ११. हिमालय पर केदार खण्ड में श्री केदारनाथ और १२. शिवालय में श्रीघुश्मेश्वर को स्मरण करे।

एतानि ज्योतिर्लिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥४॥

जो मनुष्य प्रतिदिन प्रातः काल और सन्ध्या के समय इन बारह ज्योतिलिंगों का नाम लेता है, उसके सात जन्मों का किया हुआ पाप इन लिंगों के स्मरण मात्र से मिट जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये॥१॥

जो अपनी भक्ति प्रदान करने के लिए अत्यन्त रमणीय तथा निर्मल सौराष्ट्र प्रदेश (काठियावाड़) में दयापूर्वक अवतीर्ण हुए हैं, चन्द्रमा जिनके मस्तक का आभूषण है, उन ज्योतिर्लिंग स्वरूप भगवान् श्री सोमनाथ की शरण में मैं जाता हूँ।

श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदा वसन्तम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसारसमुद्रसेतुम्॥२॥

जो ऊँचाई के आदर्शभूत पर्वतों से भी बढ़कर ऊँचे श्री शैल के शिखर पर, जहाँ देवताओं का अत्यन्त समागम होता रहता है, प्रसन्नतापूर्वक निवास करते हैं तथा जो संसार-सागर से पार कराने के लिए पुल के समान हैं, उन एकमात्र प्रभु मल्लिकार्जुन को मैं नमस्कार करता हूँ।

अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम्॥३॥

संतजनों को मोक्ष देने के लिए जिन्होंने अवन्तिपुरी (उज्जैन) में अवतार धारण किया है, उन महाकाल नाम से विख्यात महादेवजी को मैं अकाल मृत्यु से बचाने के लिये नमस्कार करता हूँ।

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव मान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे॥४॥

जो सत्पुरुषों को संसार सागर से पार उतारने के लिये कावेरी और नर्मदा के पवित्र संगम के निकट मान्धाता के पुर में सदा निवास करते हैं, उन अद्वितीय कल्याणमय भगवान ॐकारेश्वर का मैं स्तवन करता हूँ।

पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम्।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि॥५॥

जो पूर्वोत्तर दिशा में चिताभूमि (वैद्यनाथ-धाम) के भीतर सदा ही गिरिजा के साथ वास करते हैं, देवता और असुर जिनके चरण-कमलों की आराधना करते हैं, उन श्री वैद्यनाथ को मैं प्रणाम करता हूँ।

याम्ये सदङ्गे नगरेऽतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्च भोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो दक्षिण के अत्यन्त रमणीय सदंग नगर में विविध भोगों से सम्पन्न होकर सुन्दर आभूषणों से भूषित हो रहे हैं, जो एकमात्र सद्भक्ति और मुक्ति को देने वाले हैं, उन प्रभु श्री नागनाथ की मैं शरण में जाता हूँ।

महाद्रिपार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे॥७॥

जो महागिरि हिमालय के पास केदारश्रृंग के तट पर सदा निवास करते हुए मुनीश्वरों द्वारा पूजित होते हैं तथा देवता, असुर, यज्ञ और महान् सर्प आदि भी जिनकी पूजा करते हैं, उन एक कल्याणकारक भगवान केदारनाथ का मैं स्तवन करता हूँ।

सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे॥८॥

जो गोदावरी तट के पवित्र देश में सह्य पर्वत के विमल शिखर पर वास करते हैं, जिनके दर्शन से तुरन्त ही पातक नष्ट हो जाता है, उन श्री त्र्यम्बकेश्वर का मैं स्तवन करता हूँ।

सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि॥९॥

जो भगवान श्री रामचन्द्र जी के द्वारा ताम्रपर्णी और सागर के संगम में अनेक बाणों द्वारा पुल बाँधकर स्थापित किये गये, उन श्री रामेश्वर को मैं नियम से प्रणाम करता हूँ।

यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि॥१०॥

जो डाकिनी और शाकिनी वृन्द में प्रेतों द्वारा सदैव सेवित होते हैं, उन भक्त हितकारी भगवान भीमशंकर को मैं प्रणाम करता हूँ।

सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये॥११॥

जो स्वयं आनन्द कन्द हैं और आनन्दपूर्वक आनन्द वन (काशीक्षेत्र) में वास करते हैं, जो पाप समूह के नाश करने वाले हैं, उन अनाथों के नाथ काशीपति श्री विश्वनाथ की शरण में मैं जाता हूँ।

इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये॥१२॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जो इलापुर के सुरम्य मन्दिर में विराजमान होकर समस्त जगत् के आराधनीय हो रहे हैं, जिनका स्वभाव बड़ा ही उदार है, उन घृष्णेश्वर नामक ज्योतिर्मय भगवान् शिव की शरण में मैं जाता हूँ।

ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च॥१३॥

यदि मनुष्य क्रमशः कहे गये इन द्वादश ज्योतिर्मय शिवलिंगों के स्तोत्र का भक्तिपूर्वक पाठ करे तो इनके दर्शन से होने वाला फल प्राप्त कर सकता है।

राणव कृत–

शिव ताण्डव स्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥१॥

जिन्होंने जटारूपी अटवी (वन) से निकलती हुई गंगा जी के गिरते हुए प्रवाहों से पवित्र किये गये गले में सर्पों की लटकती हुई विशाल माला को धारणकर, डमरू के डम-डम शब्दों से मण्डित प्रचण्ड ताण्डव (नृत्य) किया, वे शिवजी हमारे कल्याण का विस्तार करें।

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरीविलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलल्ललाटपट्टपावके किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम॥२॥

जिनका मस्तक जटारूपी कड़ाह में वेग से घूमती हुई गंगा की चंचल तरंग-लताओं से सुशोभित हो रहा है, ललाटाग्नि धक्-धक् जल रही है, सिर पर बाल चन्द्रमा विराजमान हैं, उन (भगवान् शिव) में मेरा निरन्तर अनुराग हो।

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुरस्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि॥३॥

गिरिराज किशोरी पार्वती के विलास कालोपयोगी शिरोभूषण से समस्त दिशाओं को प्रकाशित होते देख जिनका मन आनन्दित हो रहा है, जिनकी निरन्तर कृपादृष्टि से कठिन आपत्ति का भी निवारण हो जाता है, ऐसे किसी दिगम्बर तत्त्व में मेरा मन विनोद करे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

**जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभाकदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि॥४॥**

जिनके जटाजूटवर्ती भुजंगमों के फणों की मणियों का फैलता हुआ पिंगल प्रभापुंज दिशा रूपिणी अंगनाओं के मुख पर कुंकुम राग का अनुलेप कर रहा है, मतवाले हाथी के हिलते हुए चमड़े का उत्तरीय वस्त्र (चादर) धारण करने से स्निग्धवर्ण हुए उन भूतनाथ में मेरा चित्त अद्भुत विनोद करे।

सहस्त्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखरप्रसूनधूलिधोरणीविधूसराङ्घ्रिपीठभूः। भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः॥५॥

जिनकी चरण पादुकाएँ इन्द्र आदि समस्त देवताओं के (प्रणाम करते समय) मस्तकवर्ती कुसुमों की धूलि से धूसरित हो रही हैं; नागराज (शेष) के हार से बँधी हुई जटावाले वे भगवान् चन्द्रशेखर मेरे लिये चिरस्थायिनी सम्पत्ति के साधक हों।

**ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभानिपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः॥६॥**

जिसने ललाट-वेदी पर प्रज्वलित हुई अग्नि के स्फुलिंगों के तेज से कामदेव को नष्ट कर डाला था, जिसे इन्द्र नमस्कार किया करते हैं, सुधाकर की कला से सुशोभित मुकुटवाला वह (श्री महादेवजी का) उन्नत विशाल ललाटवाला जटिल मस्तक हमारी सम्पत्ति का साधक हो।

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्धनञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके। धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम॥७॥

जिन्होंने अपने विकराल भाल पट्ट पर धक्-धक् जलती हुई अग्नि में प्रचण्ड कामदेव को हवन कर दिया था, गिरिराज किशोरी के स्तनों पर पत्र-लेखा-रचना करने के एकमात्र शिल्पी उन भगवान् त्रिलोचन में मेरी धारणा लगी रहे।

**नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्कुहूनिशीथिनीतमःप्रबन्धबद्धकन्धरः।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः॥८॥**

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जिनके कण्ठ में नवीन मेघमाला से घिरी हुई अमावस्या की आधी रात के समय फैलते हुए दुरूह अन्धकार के समान श्यामता अंकित है; जो गज चर्म लपेटे हुए हैं, वे संसार भार को धारण करनेवाले चन्द्रमा (के सम्पर्क) से मनोहर कान्तिवाले भगवान् गंगाधर मेरी सम्पत्ति का विस्तार करें।

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभावलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे॥९॥

जिनका कण्ठ देश खिले हुए नील कमल समूह की श्याम प्रभा का अनुकरण करने वाली हरिणीकी-सी छवि वाले चिह्न से सुशोभित है तथा जो कामदेव, त्रिपुर, भव (संसार), दक्षयज्ञ, हाथी, अन्धकासुर और यमराज का भी उच्छेदन करने वाले हैं उन्हें मैं भजता हूँ

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरीरसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकंभजे॥१०॥

जो अभिमान रहित पार्वती की कलारूप कदम्ब मंजरी के मकरन्द स्त्रोत की बढ़ती हुई माधुरी के पान करनेवाले मधुप हैं तथा कामदेव, त्रिपुर, भव, दक्ष-यज्ञ, हाथी, अन्धकारसुर और यमराज का भी अन्त करनेवाले हैं, उन्हें मैं भजता हूँ।

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्विनिर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट्।
धिमिद्धिमिद्धिमिद्ध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गलध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः॥११॥

जिनके मस्तक पर बड़े वेग के साथ घूमते हुए भुजंग के फुफकारने से ललाट की भयंकर अग्नि क्रमशः धधकती हुई फैल रही है, धिमि-धिमि बजते हुए मृदंग के गम्भीर मंगल घोष के क्रमानुसार जिनका प्रचण्ड ताण्डव हो रहा है, उन भगवान् शंकर की जय हो।

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्गरिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्॥१२॥

पत्थर और सुन्दर बिछौनों में, साँप और मुक्ता की माला में,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बहुमूल्य रत्न तथा मिट्टी के ढेले में, मित्र या शत्रु पक्ष में, तृण अथवा कमललोचना तरुणी में, प्रजा और पृथ्वी के महाराज में समान भाव रखता हुआ मैं कब सदाशिव को भजूँगा।

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन् विमुक्तदुर्मतिः सदा शिरः स्थमञ्जलिं वहन्।

विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्॥१३॥

सुन्दर ललाटवाले भगवान् चन्द्रशेखर में दत्तचित्त हो अपने कुविचारों को त्यागकर गंगाजी के तटवर्ती निकुञ्ज के भीतर रहता हुआ सिर पर हाथ जोड़ डबडबायी हुई विह्वल आँखों से 'शिव' मन्त्र का उच्चारण करता हुआ मैं कब सुखी होऊँगा?

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।

हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्॥१४॥

जो मनुष्य इस प्रकार से उक्त इस उत्तमोत्तम स्तोत्र का नित्य पाठ, स्मरण और वर्णन करता रहता है, वह सदा शुद्ध रहता है और शीघ्र ही सुरगुरु श्री शंकरजी की अच्छी भक्ति प्राप्त कर लेता है, वह विरुद्ध गति को नहीं प्राप्त होता; क्योंकि श्री शिवजी का अच्छी प्रकार का चिन्तन प्राणी वर्ग के मोह का नाश करनेवाला है।

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।

तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः॥१५॥

सायंकाल में पूजा समाप्त होने पर रावण के गाये हुए इस शम्भु पूजन सम्बन्धी स्तोत्र का जो पाठ करता है, भगवान् शंकर उस मनुष्य को रथ, हाथी, घोड़ों से युक्त सदा स्थिर रहनेवाली अनुकूल सम्पत्ति देते हैं।

श्री गोस्वामीतुलसीदास विरचितं—

श्री रुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं॥१॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

हे ईशान! मैं मुक्तिस्वरूप, समर्थ, सर्वव्यापक, ब्रह्म, वेदस्वरूप, निजस्वरूप में स्थित, निर्गुण, निर्विकल्प, निरीह, अनन्त ज्ञानमय और आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त प्रभु को प्रणाम करता हूँ।

निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहं॥२॥

जो निराकार हैं, ओंकाररूप आदिकारण हैं, तुरीय हैं, वाणी, बुद्धि और इन्द्रियों के पथ से परे हैं, कैलासनाथ हैं, विकराल, और महाकाल के भी काल, कृपाल, गुणों के आगार और संसार से तारने वाले हैं, उन भगवान् को नमस्कार करता हूँ।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा॥३॥

जो हिमालय के समान श्वेत वर्ण, गम्भीर और करोड़ों कामदेव के समान कान्तिमान् शरीर वाले हैं, जिनमें मस्तक पर मनोहर गंगाजी लहरा रही हैं, भाल देश में बाल चन्द्रमा सुशोभित होते हैं और गले में सर्पों की माला शोभा देती है।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुंडमालं प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि॥४॥

जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, जिनके नेत्र एवं भृकुटी सुन्दर और विशाल हैं, जिनका मुख प्रसन्न और कण्ठ नील है, जो बड़े ही दयालु हैं, जो बाघ की खाल का वस्त्र और मुण्डों की माला पहनते हैं, उन सर्वाधीश्वर प्रियतम शिव का मैं भजन करता हूँ।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशमखंडमजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम्॥५॥

जो प्रचण्ड, सर्वश्रेष्ठ, प्रगल्भ, परमेश्वर, पूर्ण, अजन्मा, कोटि सूर्य के समान प्रकाशमान, त्रिभुवन के शूलनाशक और हाथ में त्रिशूल धारण करने वाले हैं, उन भावगम्य भवानी पति का मैं भजन करता हूँ।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंद संदोह मोहापहारी प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी॥६॥

हे प्रभो! आप कलारहित, कल्याणकारी और कल्प का अन्त करने वाले हैं। आप सर्वदा सत्पुरुषों को आनन्द देते हैं, आपने त्रिपुरासुर का

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नाश किया था, आप मोहनाशक और ज्ञानानन्दघन परमेश्वर हैं, कामदेव के आप शत्रु हैं, आप मुझ पर प्रसन्न हों, प्रसन्न हों।

न यावदुमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणाम्।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं॥७॥

मनुष्य जब तक उमाकान्त महादेवजी के चरणारविन्दों का भजन नहीं करते, उन्हें इहलोक या परलोक में कभी सुख और शान्ति की प्राप्ति नहीं होती और न उनका सन्ताप ही दूर होता है। हे समस्त भूतों के निवास स्थान भगवान् शिव! आप मुझ पर प्रसन्न हों।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो॥८॥

हे प्रभो! हे शम्भो! हे ईश! मैं योग, जप और पूजा कुछ भी नहीं जानता, हे शम्भो! मैं सदा-सर्वदा आपको नमस्कार करता हूँ। जरा, जन्म और दुःख समूह से सन्तप्त होते हुए मुझ दुःखी की दुःख से आप रक्षा कीजिये।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति॥९॥

जो मनुष्य भगवान् शंकर की तुष्टि के लिये ब्राह्मण द्वारा कहे हुए इस रुद्राष्टक का भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं, उन पर शंकर जी प्रसन्न होते हैं।

श्री पृथ्वीपति सूरि विरचितं–
श्री पशुपत्यष्टकम्
ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

चाँदी के पर्वत-समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारो से जिनका शरीर उज्जवल है, जिनके हाथों में परशु, मृग, वर और अभय है, जो प्रसन्न हैं, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व के आदि,

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

जगत् की उत्पत्ति के बीज और समस्त भयों को हरने वाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

अथ स्तोत्रम्

पशुपतिं द्युपतिं धरणीपतिं भुजगलोकपतिं च सतीपतिम्।
प्रणतभक्तजनार्तिहरं परं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥१॥

अरे मनुष्यो! जो समस्त प्राणियों, स्वर्ग, पृथ्वी और नागलोक के पति हैं, दक्ष-कन्या सती के स्वामी हैं, शरणागत प्राणियों और भक्तजनों की पीड़ा दूर करने वाले हैं, उन परम पुरुष पार्वती-वल्लभ शंकर जी को भजो।

न जनको जननी न च सोदरो न तनयो न च भूरिबलं कुलम्।
अवति कोऽपि न कालवशं गतं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥२॥

ऐ मनुष्यों! काल के वश में पड़े हुए जीव को, पिता, माता, भाई, बेटा, अत्यन्त बल और कुल–इनमें से कोई भी नहीं बचा सकता, इसलिए तुम गिरिजापति को भजो।

मुरजडिण्डिमवाद्यविलक्षणं मधुरपञ्चमनादविशारदम्।
प्रमथभूतगणैरपि सेवितं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥३॥

रे मनुष्यो! जो मृदंग और डमरू बजाने में निपुण हैं, मधुर पंचम स्वर के गायन में कुशल हैं, प्रमथ और भूतगण जिनकी सेवा में रहते हैं, उन गिरिजापति को भजो।

शरणदं सुखदं शरणान्वितं शिव शिवेति शिवेति नतं नृणाम्।
अभयदं करुणावरुणालयं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥४॥

हे मनुष्यो! 'शिव! शिव! शिव!' कहकर मनुष्य जिनको प्रणाम करते हैं, जो शरणागतों को शरण, सुख और अभय देने वाले हैं, उन दयासागर गिरिजापति का भजन करो।

नरशिरोरचितं मणिकुण्डलं भुजगहारमुदं वृषभध्वजम्।
चितिरजोधवलीकृतविग्रहं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥५॥

अरे मनुष्यो! जो नरमुण्डरूपी मणियों का कुण्डल और साँपों का हार पहनते हैं, जिनका शरीर चिता की धूलि से धूसर है, उन वृषभध्वज गिरिजापति को भजो।

मखविनाशकरं शशिशेखरं सततमध्वरभाजि फलप्रदम्।
प्रलयदग्धसुरासुरमानवं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्॥६॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अरे मनुष्यो! जिन्होंने दक्ष-यज्ञ का विध्वंस किया था; जिनके मस्तक पर चन्द्रमा सुशोभित हैं, जो यज्ञ करने वालों को सदा ही फल देने वाले हैं और जो प्रलय की अग्नि में देवता, दानव और मानवों को दग्ध करने वाले हैं, उन गिरिजापति को भजो।

मदमपास्य चिरं हृदि संस्थितं मरणजन्मजराभयपीडितम्।
जगदुदीक्ष्य समीपभयाकुलं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।७।।

अरे मनुष्यो! जगत् को जन्म, जरा और मरण के भय से पीड़ित, सामने उपस्थित भय से व्याकुल देखकर बहुत दिनों से हृदय में संचित मद का त्याग कर उन गिरिजापति को भजो।

हरिविरञ्चिसुराधिपपूजितं यमजनेशधनेशनमस्कृतम्।
त्रिनयनं भुवनत्रितयाधिपं भजत रे मनुजा गिरिजापतिम्।।८।।

अरे मनुष्यो! विष्णु, ब्रह्मा और इन्द्र जिनकी पूजा करते हैं, यम और कुबेर जिनको प्रणाम करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं तथा जो त्रिभुवन के स्वामी हैं, उन गिरिजापति को भजो।

पशुपतेरिदमष्टकमद्भुतं विरचितं पृथिवीपतिसूरिणा।
पठति संश्शृणुते मनुजः सदा शिवपुरीं वसते लभते मुदम्।।९।।

जो मनुष्य पृथिवीपति सूरि के बनाए हुए इस अद्भुत पशुपति अष्टक का सदा पाठ और श्रवण करता है वह शिवपुरी में निवास करता और आनन्दित होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सनातन हिन्दू-समाज में रुद्राभिषेक एवं रुद्राष्टाध्यायी के पाठ की परम्परा अत्यन्त प्राचीनकाल से ही चली आ रही है। वेदों की सभी शाखाओं में अपने-अपने रुद्रपाठ प्रचलित हैं, लेकिन उन सबके एकत्र संकलन की आवश्यकता बहुत दिनों से अनुभव की जा रही थी। भगवान् महाकाल की अनुकम्पा से इस संग्रह के रूप में उसकी पूर्ति हो रही है। इसमें संकलित सभी रुद्राध्यायों की हिन्दी व्याख्या इनमें सन्निहित तत्त्वज्ञान, कर्मकाण्ड और सदाचार सभी को विद्वानों और जनसाधारण दोनों के ही सम्मुख सरल-सुबोध रूप में उपस्थापित करेगी, यह असन्दिग्ध है। हमें विश्वास है, प्रतिष्ठान के अन्य प्रकाशनों के सदृश इस ग्रन्थ का स्वागत भी वैदिक जन उत्साहपूर्वक करेंगे।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

MAHARSHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDAVIDYA PRATISHTHANAM UJJAIN GRANTHMALA

अमूर्त वैदिक देवता - डॉ॰ लक्ष्मी मिश्रा
Demy 1/8 pp 196 2006 Rs.165.00

अश्वमेघवेवेक: - डॉ॰ दिवाकर महापात्र:
Demy 1/8 pp 164 2005 Rs.150.00

अथर्ववेदीय परिशिष्ट ग्रन्थों का परिशीलन
प्रधान सम्पादक : प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
लेखिका : डॉ. अंजु दुबे
Demy 1/8 pp 212 2005 Rs.175.00

चार शुल्बसूत्र
(बौधायन, मानव, आपस्तम्ब और कात्यायन शुल्वसूत्रों के हिन्दी अनुवाद)
अनुवादक- डॉ॰ र॰ पु॰ कुलकर्णी
Demy 1/8 pp 334 2003 Rs.320.00

THE CONCEPT OF PURUSĀRTHAS
- *DR. S.C. CHARKABARTI*
pp 100 2003 Rs.185.00

गौतम ऋषियों का वैदिक वाङ्मय में योगदान - वेदाचार्य : डॉ॰ केशव प्रसाद मिश्र
Demy 1/8 pp 186 2003 Rs.120.00

ISSUES IN VEDA AND ASTROLOGY
- *DR. HARIBHAI PANDYA*
Demy 1/8 pp 200 1995 Rs.150.00

ज्योतिषां ज्योति: (हिन्दी टीका)
- डॉ॰ जगन्नाथ वेदालंकार (हिन्दी रुपान्तकार)
Demy 1/8 pp 274 1998 Rs.250.00

काण्व-शतपथम् (मूल संस्कृत)
- डॉ॰ जी॰ डब्ल्यू॰ पिम्पलापुरे
Crown 1/4 2005 pp1352 Rs.1500.00

LAYOUT OF DIFFERENT SACRIFICES ACCORDING TO DIFFERENT SRAUTASUTRAS
- DR. R.P. KULKARNI
Demy 1/8 pp 248 1997 Rs.200.00

नाटय शास्त्र का वैदिक आधार
- डॉ॰ नीहारिका चतुर्वेदी
Demy 1/8 pp 228 2005 Rs.175.00

सामवेदीय साहित्य, संस्कृति, कला और धर्म-दर्शन
- प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
Demy 1/8 pp 440 2005
ISBN 81-7081-609-2 Rs.250.00

श्रीसायणाचार्य एवं पण्डित श्री पाददामोदर सातवलेकर कृत वेदभाष्यों का तुलनात्मक अनुशीलन
- डॉ. मीनाक्षी श्रीवास्तव
Demy 1/8 pp 456 2005 Rs.290.00

VEDAS : THE SOURCE OF ULTIMATE SCIENCE - SHRI RAM VERMA
Demy 1/8 pp 480 2005 Rs.300.00

वेदकालीन प्रौद्योगिकी (कुछ आयाम)
SOME ASPECTS OF TECHNOLOGY IN VEDIC PERIOD
सम्पादक- प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
डॉ॰ श्यामसुन्दर निगम
Demy 1/8 pp 158 2003
ISBN 81-7081-573-8 Rs.110.00

वैष्णव आगम के वैदिक आधार
- डॉ. श्रीमती चन्द्रा चतुर्वेदी
Demy 1/8 pp 280 2005 Rs.200.00

वेद मीमांसा मूल लेखक - श्री अनिर्वाण
हिन्दी अनुवादक - छविनाथ मिश्र
VOLUME - III Press
Demy 1/8 pp 964 (2 Vols) 2003
ISBN 81-7081-576-2 (Set) Rs.465.00

वैदिक अंनुष्ठानों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन
सम्पादक - प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
Demy 1/8 pp 208 2004
ISBN 81-7081-593-2 Rs.140.00

वैदिक इतिहास एवं पुरातत्त्व की अद्यतन प्रवृत्तियाँ (Recent Trends in History and Archaeology in Vedic Prespective)
सम्पादक - प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
- डॉ॰ श्यामसुन्दर निगम
Demy 1/8 pp 220 2003
ISBN 81-7081-575-4 Rs.135.00

वैदिक खिलसूक्त-मीमांसा
- प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
हिन्दी अनुवादक - छविनाथ मिश्र
Demy 1/8 pp 424 2004
ISBN 81-7081-594-0 Rs.225.00

वैदिक शिक्षा पद्धति - डॉ॰ भास्कर मिश्र
Demy 1/8 pp 281 2003 Rs.270.00

वैदिक वाङ्मय में महर्षि कात्यायन का योगदान - डॉ॰ अनूप मिश्र
Demy 1/8 pp 280 2004
ISBN 81-7081-596-7 Rs.175.00

वैदिक वाङ्मय में विज्ञान - रामेश्वर दयाल गुप्त
SCIENCE'S IN VEDIC LITERATURE
Demy 1/8 pp 324 1997 Rs.200.00

वैदिक यज्ञ संस्था और वेद विज्ञान
सम्पादक- प्रो॰ ओम्प्रकाश पाण्डेय
Crown 1/4 pp 362 Rs.500.00

NAG PUBLISHERS
11 A U.A. Jawahar Nagar, Delhi - 110007 (INDIA) Ph: 011-23857975, 23855883

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection